मई (प्रथम) 1992, रुपए 10.00
सरिता
पर्यटन
विशेषांक
पश्चिम अर्ध भारत के
35
से अधिक
पर्यटन स्थल

नया
बेहतर
क्लिनिक ऐक्टिव प्रो-वी
अब
प्रो-विटामिन बी5
से समृद्ध
नये क्लिनिक ऐक्टिव का चमत्कारी 2-इन-1 फ़ॉर्म्युलेशन अब समृद्ध है प्रो-विटामिन बी5 से. प्रो-विटामिन बी5 बालों के एक-एक रेशे में जाये और अंदर ही अंदर जड़ से सिरों तक पोषण दे – साथ ही शैम्पू टॉनिक कंडीशनर बाहर से साफ़ करे और बालों की रौनक उभारे.
आपके बाल हों मज़बूत और सेहतमंद तथा स्वास्थ्य की आभा से झलमलायें.
अंदर की सेहत से
बाहर यह रौनक
इतने शानदार बाल
पहले कभी नहीं दिखे!
2-IN-1
WITH PRO-V
NEW
Clinic
Active
PRO-V
ENRICHED WITH PRO-VITAMIN B5
SHAMPOO + TONIC CONDITIONER
स्वस्थ बालों के लिए क्लिनिक देखभाल
हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पादन
HTA 2456

उम्र कोई भी हो, सुडौल शरीर की चाहत हर किसी को होती है. और इस के लिए जरूरी हैं रोजाना व्यायाम. थोड़े से अभ्यास से आप भी वैसी ही सुडौल, सुगठित काया पा सकती हैं
जून, 1992
गृहशोभा
व्यायाम विशेषांक
• आंखों के लिए व्यायाम
• सुडौलता के लिए क्या खाएं
• सुदृढ़ वक्षस्थल के लिए व्यायाम
• तैराकी : स्वस्थ तन, प्रसन्न मन
• व्यायामों द्वारा सुगठित शरीर
• जब उम्र करीब हो चालीस के...
• शरीर की कमियां : छिपाएं वस्त्रों द्वारा
• चेहरे की खूबसूरती भी बढ़ाते हैं व्यायाम
इस के अतिरिक्त और भी ढेरों सामग्री. कथा साहित्य, स्वास्थ्य सौंदर्य व व्यक्तिगत उलझावसुलझाव. विदेशी सचित्र समाचार व गुदगुदाने व्यंग्य और सभी स्थायी स्तंभ.
अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं.

पर्यटन विशेषांक

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 889 मई (प्रथम) 1992

कथा साहित्य

धारावाहिक उपन्यास

पर्यटन

लेख

स्तंभ

कविताएं

सपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा. लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009.
बंगलौर : 302-बी, ए. क्वीन्स कार्नर एपार्टमेंट्स, 3, क्वीन्स रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीमस काम्प्लेक्स, 150/82, मार्टीअथ रोड, मद्रास-600008. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003. लखनऊ : फ्लैट न. बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, लखनऊ-226001. पटना : दिल्ली प्रेस, 111, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, पटना-800001.
कोचीन : दिल्ली प्रेस, जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, कोचीन-682031.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055, को ही भेजें चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते
मूल्य : विदेशों में (समुद्री डाक से) 450 रु., (हवाई डाक से) 1,080 रु.

मूल्य : एक प्रति 10.00 रुपए. वार्षिक 240 रुपए.
वायुसेवा अधिभार 75 पैसे प्रति.
सिलचर, डिब्रूगढ़, अगरतला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में

बूंद बूंद पसीना.
रिमझिम प्रेरणा.
Second Nature
सेकंड नेचर टाल्क. सफलता की मदमाती महक.
ा का एक उत्कृष्ट उत्पादन.
Avenues SN 95:92

The Thapar Group
JCT
JCT FABRICS
सूटिंग्स • शर्टिंग्स • ड्रैस मैटीरियल्स

सरित प्रवाह/मार्च/द्वितीय

समाजवाद और कम्यूनिज्म के टूटतेबिखरते तिलस्म पर संपादकीय टिप्पणी तर्कसंगत लगी.

लेख 'सरकार का व्यय बजट' (मार्च/द्वितीय) हमारे पैसों के दुरुपयोग से हमारा साक्षात्कार कराता है. इस महंगाई से त्रस्त एवं पस्त जनता द्वारा इतना कर चुकाने के बाद भी हमें किसी एक क्षेत्र में भी संतुष्टि/सुविधा हासिल नहीं हो पाई, फिर भी हम कर चुकाने को मजबूर हैं जो कि हमारी खरी मेहनत की कमाई का एक हिस्सा है.

हिंदी के प्रति रचनात्मक आंदोलन एवं तर्क दे कर 'सरिता' हमारी संस्कृति को बचा कर रखने की कोशिश कर रही है, जो एक स्तुत्य संकल्प है.

—गणपत सिंह सांखला

*

विनाशकारी सिगरेट कंपनियों द्वारा खेलों के माध्यम से सिगरेटों को लोकप्रिय बनाने की प्रवृत्ति पर आप के संपादकीय विचार (मार्च/द्वितीय) पढ़े.

निश्चय ही सिगरेट कंपनियों द्वारा प्रायोजित खेल प्रतियोगिताओं का बहिष्कार किया जाना चाहिए. भारत सरकार को क्रिकेट की (विल्स ट्राफी) और चारमीनार चैलेंज सीरीज' जैसी क्रिकेट प्रतियोगिताओं को दूरदर्शन पर दिखा कर सिगरेट कंपनियों का परोक्ष प्रचार करने से बाज आना चाहिए.

यह विडंबना ही मानी जाएगी कि सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान को प्रतिबंधित करने को सोच रही सरकार खेलों को प्रायोजित कर रही सिगरेट कंपनियों के खिलाफ कुछ करने के बजाय उन्हें प्रोत्साहित कर रही है.

—नलिनकुमार सिंह

*

सरित प्रवाह (मार्च/प्रथम) के अंतर्गत केंद्रीय भूतल परिवहन मंत्री द्वारा 3,000 नई बसों को निजी क्षेत्र में परमिट देना जहां डी.टी.सी. और निजी क्षेत्र में जबरदस्त प्रतिस्पर्धा को जन्म देगा, वहीं दैनिक यात्रियों को सुविधा के साथसाथ यह सोचने पर भी विवश करेगा कि सरकारी एवं निजी क्षेत्र में योग्य और बेहतर कार्यकुशल कौन है?

सरकारी उपक्रमों की कार्यकुशलता को देखते हुए अगर केंद्रीय नेतृत्व दृढ़ता और सख्ती से फैसले लागू करने का निश्चय कर ले तो इन सफेद हाथियों के कर्ताधर्ताओं और इन के कामचोर वेतनभोगियों को अपनी औकात दोतीन दिन में ही पता चल जाएगी. जो जनता की गाढ़ी कमाई को धुएं के छल्लों की भांति उड़ाना ही अपना कर्तव्य समझते हैं.

रही बात भाजपा के रवैए की. तो दिल्ली से शिमला तक जितनी दूरी है, उतनी ही इन की कथनी और करनी में अंतर है. हिमाचल में उन के मुख्यमंत्री 'काम नहीं वेतन नहीं' को सख्ती से लागू करने का निर्णय लेते हैं परंतु दिल्ली में आचरण उलट है. दिल्ली में बस किराए में बढ़ोतरी को ले कर मदनलाल खुराना आलोचना करते नहीं थकते परंतु हिमाचल में बस किराए की बढ़ोतरी को जायज ठहराया जाता है. क्या यही 'सही दिशा स्पष्ट नीति है?

—भूषण कुमार

*

संपादकीय में बजट को समझाने की कोशिश एवं दो लेख 'मनमोहन बजट में यथार्थवाद' और 'सरकार का व्यय बजट' (मार्च/द्वितीय) ज्ञानवर्धक लगे. इस से बजट को समझने में काफी सहायता मिली. सरकार को सफेद हाथी रूपी कर्मचारियों को दृढ़तापूर्वक दूसरे कामों को करने के लिए बाध्य करना चाहिए.

—संजयप्रसाद सिंह

*

पसंदीदा कहानी

कहानी 'सीली लकड़ी' (मार्च/द्वितीय) काफी पसंद आई. आज भी समाज में इतने दकियानूसी विचार हैं, यह सुन कर ही सिहरन होने लगती है, फिर जिन पर गुजरती है वे तो सीली लकड़ी सी तिलतिल जल कर ही अपनी जिंदगी गुजारती हैं.

अगर देखा जाए तो नारी ही नारी की दुश्मन होती है, लेकिन इस कहानी में एक नारी ने दूसरी नारी को समझने की कोशिश की, यह पढ़ कर बहुत अच्छा लगा.

—कमलेश आर्य

*

दो रुख

लेख 'बेंसन एंड हैजेज विश्व कप : नौ देशों का खेल तमाशा' (मार्च/द्वितीय) अच्छा लगा. वास्तव में पैसे और समय की बरबादी के बाद भारत को विश्वकप में निराशा ही हाथ लगी.

—बृजराज सिंह 'गुड्डू'

*

लेख 'बेंसन एंड हैजेज विश्वकप' के तहत लेखक का मूल्यांकन सटीक है. हर आयु के लोगों में आज क्रिकेट का नशा दीवानगी के आलम पर है. प्रबुद्ध, वयस्क, जिम्मेदार लोग भी क्रिकेट को ले कर फिजूल टीकाटिप्पणी करते एवं अपने काम में कोताही बरतते पाए जाते हैं. युवा वर्ग भी गुमराह हो रहा है उन में कर्तव्यबोध की जगह निठल्लापन जन्म ले रहा है.

—जयराम शर्मा 'गंभीर'

Scanned with CamScanner

पिछड़ेपन की निशानी

लेख 'हजारों साल बाद भी हम जाति के कूपमंडूक क्यों हैं?' (मार्च/द्वितीय) ने गहराई तक प्रभावित किया.

सच कहा जाए तो जातीय कूपमंडूकता हमारे पिछड़ेपन की निशानी और कारण दोनों हैं. हम आज भी जातीयता की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं. इस के लिए समाज के वे स्वार्थी तत्व अधिक जिम्मेदार हैं, जो सारे समाज को अपनी उंगलियों पर नचाते रहना चाहते हैं. वे समाज को अंधविश्वास के गर्त से नहीं निकलने देना चाहते हैं क्योंकि इस से उन का शोषण का द्वार बंद हो जाएगा. इतना ही नहीं, सारा समाज सुशिक्षित हो जाएगा तो शोषकों का जीवन निर्वाह कठिन हो जाएगा.

—प्रजापति चरणदास

*

यात्रा निरापद नहीं

कहानी 'चुप्पी की कीमत' (मार्च/द्वितीय) अच्छी लगी.

यह कहानी बिहार की इस आम बुराई को भी उजागर करती है कि यहां उच्च श्रेणी के आरक्षित डब्बों में द्वितीय श्रेणी के यात्री भेड़बकरियों की तरह ठुंसे रहते हैं. यहां रेलों का अभाव है पर इस की सजा दूर से आने वाले उच्च श्रेणी के यात्री क्यों भुगतें? यह रोज की बात है एवं यहां यात्रा करना निरापद कतई नहीं है.

—सुमन गर्ग

*

समीक्षा पर आपत्ति

चंचल छाया (मार्च/द्वितीय) में फिल्म 'पनाह' की समीक्षा में समीक्षक ने फिल्म निर्माता लारेंस डिसूजा (साजन फिल्म) की समीक्षा गलत की है. लारेंस डिसूजा की निर्माता के तौर पर फिल्म अभी तक प्रदर्शित नहीं हुई है. फिल्म 'पनाह' के निर्माता लारेंस डिसूजा कोई अन्य हैं.

—राजेश कुमार वर्मा

*

सबक लें

लेख 'क्या दामाद ससुराल का सदस्य नहीं' (मार्च/द्वितीय) बेहद अच्छा लगा.

मेरी बड़ी बहन भी उन तमाम भटकी हुई लड़कियों की तरह हैं जो अपने पति के सामने मायके वालों की झूठी प्रशंसा करती हैं. जबकि मैं ने शुरू से ही 'जो है सो है' की नीति अपनाई. परिणाम वही निकले, जो आप ने लेख में बताए. उम्मीद है इस लेख से मेरी तमाम बहनें सबक लेंगी और अपने पति को ससुराल का जमाई नहीं बल्कि बेटा बनाने में सहायक सिद्ध होंगी.

—नीता जैन

*

सार्थक लेख

लेख 'रुपया कैसे छिपाएं' (मार्च/द्वितीय) बड़ा सार्थक लगा. हर महिला को अपने भविष्य की सुरक्षा के लिए कुछ बचत अवश्य करनी चाहिए. अकसर देखा जाता है कि जिस परिवार के लिए एक महिला अपना सर्वस्व न्योछावर कर देती है उसी परिवार के सामने एकएक पैसे के लिए उसे हाथ फैलाना पड़ता है और सिवाय उपेक्षा के उसे कुछ नहीं मिलता.

—गीता श्रीवास्तव

*

अद्वितीय पत्रिका

'सरिता' की प्रशंसा के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं. आज के समाज में भरे कूड़ेकचरे को सरिता ही अपने तीव्र पावन वेग से हटा सकती है.

व्यक्ति के व्यवहार व समस्याओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने वाली यह अद्वितीय पत्रिका है.

—बालू राम सैनी

*

नेताओं पर जुर्माना लगना चाहिए

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी ने कहा है कि चुनावों में वोट देने का अधिकारी व्यक्ति यदि वोट न डाले तो उस पर जुर्माना लगना चाहिए. जुर्माना तो नेताओं पर लगना चाहिए जो जनता के प्रति किया गया कोई वायदा पूरा नहीं करते, साथ ही मध्यावधि चुनाव भी जनता पर थोप कर महंगाई को बढ़ावा देते हैं.

—दिलीपकुमार गुप्ता

सरिता के लेखक

निर्मला अर्गल

प्रकाशित कहानी 'मोहभंग' की लेखिका निर्मला अर्गल सामाजिक, पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक विषयों पर लिखती हैं. आपकी कहानी 'सुखों की धूप' पर लघु टेलीफिल्म दूरदर्शन से भी प्रसारित की गई थी.

प्रभा शर्मा

प्रकाशित लेख 'संयुक्त परिवार : नए आयाम' की लेखिका प्रभा शर्मा स्वतंत्र पत्रकारिता करती हैं. आप का कथा संग्रह 'चूड़ियां' व अन्य लेख, कथाएं समयसमय पर विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं.

सरित प्रवाह (मार्च/प्रथम) के अंतर्गत केंद्रीय भूतल परिवहन मंत्री द्वारा दिल्ली में 3,000 नई बसों को निजी क्षेत्र में परमिट देना जहां डी.टी.सी. और निजी क्षेत्र में जबरदस्त प्रतिस्पर्धा को जन्म देगा वहीं दैनिक बस यात्रियों को सुविधा के साथसाथ यह सोचने पर भी विवश करेगा कि सरकारी एवं निजी क्षेत्र में अधिक योग्य और कार्यकुशल कौन है?

सरकारी उपक्रमों की कार्यकुशलता को देखते हुए अगर केंद्रीय नेतृत्व दृढ़ता और सख्ती से फैसले लागू करने का निश्चय कर ले तो इन सफेद हाथियों के कर्ताधर्ताओं और इन के कामचोर वेतनभोगियों की अपनी औकात दो दिन में ही पता चल जाएगी.

—भूषणकुमार

*

समाधान संतुष्टिदायक नहीं

आप 'पाठकों की समस्याएं (मार्च/प्रथम) के अंतर्गत पाठकों की समस्याओं का सही समाधान नहीं निकालते. ऐसा परामर्श तो उन्हें अपने यारदोस्तों से भी मिल सकता है.

एक पाठक की समस्या थी कि वह अपने मित्र की बहन को बहनभाई के रिश्ते से प्यार करता है. लेकिन अब दोनों जज्बाती हो चुके हैं. एकदूसरे के दिल में घर कर गए हैं. अब यही उन की समस्या बन गई. आप से जब उन्होंने परामर्श ही मांगा था तो आप को उचित परामर्श देना चाहिए था. लेकिन आप ने दोतरफा परामर्श दिया.

यह तो वह भी जानते हैं कि बहनभाई का रिश्ता पवित्र है इसे बनाए रखना चाहिए. पर उन्होंने जो समाधान मांगा था वह आप ने नहीं दिया. आप उसे बताते कि आप स्वयं शादी कर लें या उस के घर वालों को सलाह दें कि वह उस का कहीं ब्याह करा दें. इस समस्या का यही समाधान हो सकता है.

—कुलदीप सिंह

*

कहानी 'धुंध' 'दूसरों का दिल कैसे जीतें' तथा 'हजारों साल बाद भी हम जाति के कूपमंडूक क्यों है?' काफी शिक्षाप्रद हैं.आशा है, आगे भी आप इसी प्रकार के शिक्षाप्रद कहानियां व लेख प्रकाशित करेंगे.

—धीरेंद्र शरण

*

धर्म का मुरब्बा

सरिता एवं अन्य सहयोगी पत्रिकाएं धर्म के खोखलेपन को उजागर कर वास्तविकता दर्शाने का कार्य पिछले कई दशकों से कर रही हैं. धर्म की सहिष्णुता का दावा करने वाले ही सदियों से मानव का रक्त बहा रहे हैं. मनुष्य की बुद्धि और विश्वासों का नियंत्रण जब तक सदियों पूर्व मर चुके तथाकथित महापुरुषों के प्रेतों द्वारा किया जाता रहेगा, तब तक बुद्धि और तर्क के लिए कुछ बातें अगम्य समझी जाती रहेंगी.

पिछले कुछ वर्षों से हो रहे सांप्रदायिक दंगों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि जब तक मनुष्य किसी विशेष ईश्वर, पीर, पैगंबर, गुरु या धर्मशास्त्रों को मानने वालों के रूप में पहचाना जाएगा, तब तक क्रूरता, अमानुषिकता, रक्तपिपासा तथा अन्य भयंकर विकृतियों से मुक्त नहीं हो सकता.

—अनिल पुरोहित

*

हिंदू धर्म का अवतारवाद

हिंदू धर्म अपनी सड़ीगली आस्थाओं के कारण भारत को सांप्रदायिकता की आग में झोंकने की कोशिश कर रहा है. इस के झूठे अवतारवाद के नाम पर ईश्वर की बड़ी दुर्दशा हुई है. मनुष्य को ईश्वर ही मान लिया गया है.

यहां तक कि कछुआ, मछली, सूअर आदि के रूप में भी ईश्वर के अवतार मान लिए जाते हैं इस से बढ़कर ईश्वर की विडंबना क्या होगी?

अनार्यों को जिंदा जलाने वाले, द्वारका की रक्षा न कर सकने वाले और शिकारी के बाण से मरने वाले श्रीकृष्ण ईश्वर थे? बाली को धोखे से मारने वाले, इंद्रजीत का वध करने वाले, निरपराध सीता को निकाल देने वाले, सरयू में डूब कर आत्महत्या करने वाले रामचंद्र ईश्वर थे? ऐसी सब बातें ईश्वर का बहुत भद्दा मजाक हैं. इन्हीं के नाम पर मंदिर मसजिद बना कर करोड़ों रुपए खर्च करना महामूर्खता है.

—सुमन शर्मा

*

लेख 'असम की महिलाएं' (मार्च/प्रथम) पढ़ कर बहुत खुशी हुई कि जहां हमारे देश के कई प्रांतों में आज भी नारी कुप्रथाओं के बंधन से बंधी, अपमानित व शोषित जिंदगी जी रही है, वहीं असम की महिलाएं अपना एक अलग व्यक्तित्व लिए स्वतंत्र व सम्मानित जीवन का सुख भोग रही हैं. इस का प्रमुख कारण यही है कि वहां की सभी नारियां शिक्षित हैं आज जहां कहीं भी नारी शोषित है उस का मुख्य कारण है उन में शिक्षा का अभाव. —अनीता शाह

*

सीखने के लिए ललक जरूरी

'लेख 'कुछ भी करने या सीखने के लिए उम्र का बंधन क्यों' (फरवरी/द्वितीय) अत्यंत प्रेरक लगा.

जिंदगी भर व्यक्ति कुछ न कुछ सीखता रहे, तब भी बहुत कुछ सीखने के लिए रह जाएगा. कहने का मतलब यह है कि सीखने के लिए उम्र का बंधन नहीं होना चाहिए.

मेरी पत्नी स्वेटर बुनने को काफी कठिन काम समझती थी. पिछले दिनों मेरे पड़ोसी की पत्नी ने उसे स्वेटर बुनने के लिए प्रेरित किया. यह काम उसे काफी रुचिकर लगा और उस ने स्वेटर बुनना सीख लिया. आजकल वह कटाईसिलाई सीखने को लालायित है.

—प्रकाशचंद्र कनेरिया ●

मई 1992
जासूसी
कथा
विशेषांक
सुमन
सौरभ

मई 1992

जासूसी कथा विशेषांक

मजेदार कहानियां

● वह अद्भुत जासूस ● कातिल पकड़ा गया ● बटालियन का गौरव ● हिटलर की जासूसी को चकमा ● जापानी घड़ी

ज्ञानवर्धक लेख

● जासूसों के दिलचस्प कारनामे ● जासूसी के आधुनिक एवं विचित्र तरीके ● सोर्गी : 20वीं सदी का महान जासूस ● जासूसी के क्षेत्र में पशुपक्षियों की भूमिका ● जासूसों की दुनिया में एक विशेष नाम : अगाथा क्रिस्टी ● जासूसनामा ● त्रासदी का शिकार एक जरमन जासूस

विशेष फीचर

● सीन कानरी (जेम्स बांड 007) का कैलेंडर युक्त ब्लोअप

इस के अलावा अन्य रोचक सामग्री, कई इनामी प्रतियोगिताएं एवं सभी स्थायी स्तंभ

नमूने की प्रति मुफ्त मंगाने के लिए इस कूपन के साथ एक रुपए का डाक टिकट भेजें:

सुमन सौरभ
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली-110055.

नाम ....
पता ....
....
पिनकोड ....

खरीदना न भूलें
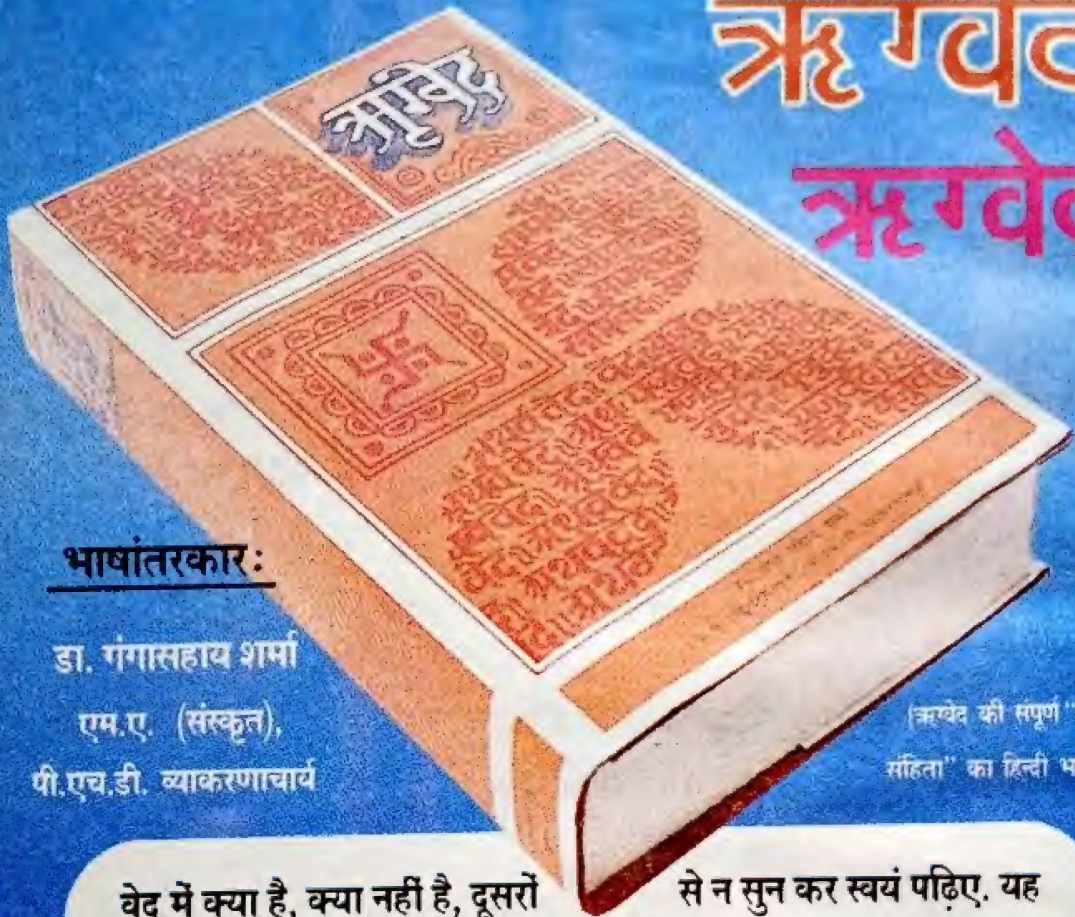
अप्रैल के पहले सप्ताह में केंद्रीय वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ज़ापान पहुंचे अपना भीख का कटोरा लिए हुए. वहां वह 1 अरब डालर (लगभग 3,000 करोड़ रुपए) का ऋण मांगने गए थे. पर जापान ने इसे नामंजूर कर के अपनी पुरानी पेशकश 1,500 करोड़ रुपए देने की बात कही.

इसी प्रकार लगभग प्रति सप्ताह नहीं तो प्रतिमाह, वित्त मंत्री कहीं न कहीं विदेशी ऋण मांगने जा पहुंचते हैं. और जब ऋण देना स्वीकृत हो जाता है तो बड़े ढोल पीटते हैं कि देखिए मैं ने क्या बढ़िया काम किया है.

इंदिरा गांधी के जमाने से अब तक सरकार बराबर विदेशों से एक के बाद दूसरा बड़ा कर्ज ले रही है और यह धन अधिकांशतः रोजमर्रा के खर्चों में, सरकारी अमले और राजनीतिबाजों के मोटे पेटों में समा जाता है.

आंकड़ों के मुताबिक, 1981 में जब वर्तमान राष्ट्रपति वेंकटरमण वित्त मंत्री थे, तब इन्होंने विश्व बैंक व मुद्रा कोष से 6 अरब डालर का विशाल कर्ज लिया था और कहा था कि इस कर्ज से सारे पिछले कर्ज चुका दिए जाएंगे. पर एक निकम्मे, बेहद उड़ाऊ व्यक्ति की तरह सरकार आगे भी लगातार कर्ज लेती रही जिस की अति राजीव गांधी के जमाने में हुई. नतीजा यह है कि जहां 1981 में भारत का विदेशी कर्ज 20 अरब डालर था, आज वह बढ़ कर 82 अरब डालर (लगभग 2,500 अरब रुपए) हो गया है. इस का ब्याज ही केंद्र की करों से होने वाली आय का लगभग 42% हो जाता है.

विदेशी ऋण तो हम ने उत्पादक साधनों में लगाने की बजाय खानेपीने, मौज उड़ाने में लगा दिया. इस समय तो हम विदेशों को जितना सामान बेचते हैं उस से ज्यादा खरीद रहे हैं नए कर्जे ले कर. हम विदेशों को क्या बेच कर यह कर्ज चुकाएंगे?

*

उत्तर पूर्वी राज्य नागालैंड के राज्यपाल को, जिन्होंने आया राम गया राम, दलबदल वालों को सबक सिखाने के लिए नागालैंड विधान सभा को बिना केंद्र की स्वीकृति लिए भंग कर दिया था और जिस के कारण कांग्रेस अपनी सरकार बनाने से रह गई, अब केंद्र की नरसिंह राव सरकार ने बरखास्त कर दिया है.

यह समझना कि नरसिंह राव कांग्रेस कलचर से कुछ दूर हैं या कुछ अधिक दूध से धुले हैं, गलत ही होगा. वह तो बराबर कट्टर कांग्रेसी हैं और इंदिरा गांधी के जमाने से कोई न कोई मंत्रीपद संभाले हुए हैं. इसलिए उन से किसी तरह कांग्रेस के लिए हानिकारक कदम की अपेक्षा करना गलत ही होगा. वह हर कांग्रेसी मंत्री की तरह कांग्रेस की और अपनी सत्ता बनाए रखने से कभी नहीं मुंह मोड़ेंगे.

अभी तक जो उन का समन्वय का रुख है वह भी एक मजबूरी है क्योंकि वह जानते हैं कि लोकसभा में उन का बहुमत नहीं है और वह गद्दी पर जनता दल और भारतीय जनता पार्टी के मतभेद के कारण ही टिके हुए हैं. जिस दिन किसी बात पर ये दोनों विपक्षी दल एकराय हो जाएंगे, नरसिंह राव की गद्दी छिन जाएगी.

*

असम में सेना द्वारा अल्फा (असम यूनाइटिड लिबरेशन फ्रंट) के आतंकवाद को

समाप्त करने के अभियान, जिस का नाम 'राइनो' (गैंडा) रखा गया है, बीच में रोक देने के बाद फिर शुरू कर दिया गया है.

कुछ वर्ष पहले भी जब अल्फा का उपद्रव बहुत बढ़ गया था, तो सेना ने उसे लगभग दबा दिया था. पर असम के कांग्रेसी राजनीतिबाज बीच में अड़ गए और सेना को अल्फा की शक्ति को पूरी तरह नष्ट करने से रोक दिया गया, इस आधार पर कि बातचीत से फैसला हो जाएगा. परंतु थोड़े दिन बाद पता चला कि बातचीत करने का प्रस्ताव अल्फा द्वारा एक युद्धविराम मात्र था जिस के दौरान वह अपनी नष्ट होती शक्ति और साधनों को फिर दोबारा संगठित करने का काम करना चाहता था. यद्यपि सेना के अधिकारियों ने कहा कि आप हमें काम पूरा करने दीजिए, इस सशस्त्र आतंकवाद को समाप्त किया जा सकता है. पर राजनीतिबाजों को इस में अपनी हेठी दिखाई दी और सेना का अभियान, जो उस समय 'बजरंग' के नाम से पुकारा जाता था, रोक दिया गया.

यही कहानी एक बार फिर अब 1992 में दोहराई गई. इस समय केंद्रीय सरकार विशेषतः गृह मंत्री शंकर राव चह्वाण इस अभियान को रोकने के लिए बिलकुल सहमत नहीं थे, पर असम के मुख्य मंत्री हितेश्वर सैकिया अल्फा के कुछ नेताओं को ले कर नई दिल्ली पहुंच गए और कहने लगे, "यह देखिए, मैं इन नेताओं को आप के सामने ले आया हूं. आप इस से अधिक इन लोगों की सद्भावना और समझौते की इच्छा का और क्या सुबूत चाहते हैं?"

मजबूर हो कर सैनिक अभियान रोकना पड़ा. अल्फा के सारे वरिष्ठ नेता जेलों से रिहा कर दिए गए. पर जो होना था वह तो हुआ ही. अल्फा के दस्ते फिर मैदान में संगठित हो कर कूद पड़े और मारकाट, बमबाजी, हत्याएं शुरू हो गईं. और खिसियाने हो कर सैकिया महोदय को फिर सेना का आह्वान करना पड़ा.

यह ठीक है कि अलगाववाद, भारत से संबंध विच्छेद कर के स्वतंत्र राष्ट्र बनाने की प्रवृत्ति का अंतिम हल बातचीत और लेदे कर मेज पर आमनेसामने फैसला करना ही है, पर यह तभी संभव है जब आतंकवादी भी यह समझ ले कि बंदूक की नली से कोई फैसला नहीं हो सकता. यह समझ दोनों तरफ से होनी चाहिए.

जो लोग आराम से अपने घरों में बैठे आतंकवाद की बंदूकों को सेना, पुलिस की गोली से जूझने की बात को धिक्कारते हैं उन्हें भी यह समझना चाहिए कि जब तक बंदूकधारी बंदूक की मार की सीमा नहीं पहचान लेता, जब तक उस की बंदूक बेकार नहीं कर दी जाती, वह कभी बंदूक नहीं छोड़ेगा. यदि छोड़ने की बात करता भी हो तो वह एक चाल होती है, पैंतरा होता है जिस के द्वारा वह अपनी शक्ति, रसद को फिर जमा, संगठित करना चाहता है.

अगर बंदूक का इस्तेमाल आतंकवादी के लिए ठीक है, सेना या पुलिस के लिए गलत, तो फिर तो झगड़े का एक ही हल है: उन की सारी मांगों को सम्मान सहित स्वीकार कर लीजिए, उन के प्रदेश को देश से अलग हो जाने दीजिए और फिर जो हर राज्य, हर जिले और हर शहर के अलग होने का भूकंप आएगा उस के लिए तैयार रहिए, क्योंकि स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में कौन नहीं रहना चाहता?

*

13 अप्रैल, बैसाखी के दिन कई लाख हिंदुओं ने हरिद्वार में अर्ध कुंभ के मौके पर गंगा में डुबकी लगा कर अपने पाप धोए और स्वर्ग में सीट रिजर्व कराने की फीस आंशिक रूप में दी. राज्य सरकार का इस पुण्यलाभ अभियान पर 30 करोड़ के लगभग खर्च हुआ. स्नान करने वालों का कितना खर्च हुआ, उस का अंदाजा तो मुशकिल है. पर अधिकांश तो इन में गरीब ही होंगे जो समुचित रोटी, कपड़ा और मकान की खोज में एक सस्ता, सुलभ और शास्त्र पुरोहित सिफारिशयुक्त रास्ता पकड़ रहे थे.

कहते हैं गंगा पतित पावनी है,

गंगाजल गंदे से गंदे व्यक्ति या चीज को पवित्र कर देता है. इस के पानी में मनुष्य को सीधे स्वर्ग में पहुंचाने की शक्ति है. इन में केवल अंतिम दावा तो माना जा सकता है, अन्यथा भारत सरकार को गंगा की सफाई करने के लिए 200 करोड़ रुपए से अधिक खर्च करने की योजना नहीं बनानी पड़ती.

पाप और पुण्य की परिभाषा में एक बात तो स्वयं प्रकट है. पाप से ग्रस्त मनुष्य की पहचान ही यह है कि वह गरीब है, खाने के लिए समुचित खाना नहीं है, कपड़ा नहीं है, सिर के ऊपर छत्त नहीं है, बीमारी में दवा नहीं है. पर गंगा में डुबकी लगाने से ये सब व्याधियां कैसे और कब दूर हो सकती हैं? उलटे हरिद्वार या प्रयाग या अन्य गंगा तटों तक पहुंचने और वहां से वापस आने का खर्च और इस बीच रोटी कमाने का धंधा जो चौपट हो जाए उस की क्षति भी पूरी नहीं हो सकती.

बेचारे गरीब के पास जो कुछ थोड़ी जमापूंजी भी होगी, वह किराएभाड़े, और पुरोहित को दानदक्षिणा में निकल जाएगी, और बजाय पुण्य मिलने के कोई चिह्न के, उलटे गरीबी बढ़ेगी. काफी लोग तो इस पुण्य अर्जन के लिए गांव के साहूकार या इष्टमित्रों से कर्ज ले कर आए गए होंगे. इस के अतिरिक्त, गंदे पानी और खाने के कारण जो बीमारी लगेगी, उस की लागत अलग. यह सब सदियों से हो रही जनसाधारण की पुरोहितों द्वारा दिमाग की रंगाई का नतीजा है.

कहा जाता है कि ये कुंभ व इसी प्रकार के अन्य जमघट देश की एकता को बढ़ाते हैं, हिंदू धर्म के व्यापक रूप का प्रदर्शन करते हैं. पर इस से एकता किस की कहां बढ़ती है? लोग अवश्य दूरदराज से चल कर, गाड़ी, मोटर, रेल पर चढ़ कर आते हैं. बस. बड़ी धक्कामुक्की में, तब तक हो गए गंदले, गंदे पानी में हजारों लोगों के बदन से भिड़ते हुए एकदो गोते लगाते हैं, पंडितजी को चढ़ावा चढ़ा के और धक्कमधक्के में सीधे घर को खाली हाथ वापस हो जाते हैं. इस के बीच में पड़ते गांव, नगर, राज्य या प्रदेश के बारे में क्या जानकारी मिलती है, क्या लगाव या एकता बढ़ती है?

जहां तक पुण्य लाभ का, पवित्र होने का प्रश्न है, अगर इन मेलों में विदेशी म्लेच्छों द्वारा आविष्कृत हैजे के टीके जबरदस्ती न लगाए जाएं तो इन लाखों में काफी लोग घर ही न पहुंच पाएं. गरीबी भगवान, देवीदेवताओं और उन के दूतों का नाम लेने, हवन, यज्ञ करने, तीर्थ और सामाजिक जमघटों में भाग लेने, पुरोहितों को दान देने से नहीं मिटती. उस के लिए तो मेहनत कर के कुछ उपजाना, पैदा करना, बनाना होगा, दूसरों की कुछ आवश्यकताएं पूरी करनी होंगी, और फिर इस आय को सही खर्च करने व संचित करने में लगानी होगी.

*

दिल्ली के नए पुलिस कमिश्नर मुकुंद बिहारी कौशल ने दिल्ली की सड़कों, पटड़ियों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर रेहड़ीवालों, खोमचेवालों और दुकानदारों द्वारा किए गए कब्जे को हटाने का अभियान चलाया है. यह बहुत प्रशंसनीय है, यदि यह चलता रहा और केवल नएनए मुल्ला की जोरजोर से अल्लाहअल्लाह की पुकार नहीं है तो.

दिल्ली की सारी सड़कें, पटड़ियां और मैदान, बागबगीचे सामान बेचने वालों के कब्जे में हैं और पैदल चलने वालों को और सड़क पर चलने वाले वाहनों को एक बहुत बड़ी मुसीबत झेलनी पड़ती है. दुकानदार, खोमचेवाले, रेहड़ीवाले सब नगर निगम और पुलिस कर्मचारियों को थोड़े से पैसे हर हफ्ते दे कर हजारों का फायदा उठाते हैं सब नागरिकों को घोर विपत्ति और परेशानी में डाल कर. इस नए अभियान से पहले भी इस गैरकानूनी कब्जे की आलोचना होती रहती थी और पुलिस अधिकारी (जिन को इस से मोटी आमदनी होती है)कहते कि यह काम नगर निगम का है हमारा नहीं. और निगम अधिकारीकर्मचारी (जो इस बंदरबांट में भागीदार हैं) कहते बिना पुलिस की

सहायता के हम सड़कें, पटड़ियां साफ नहीं कर सकते.

उधर हमारे न्यायालय भी इस अतिक्रमण में एक प्रकार से साझी हैं, क्योंकि वे भी खोमचेवालों, रेहड़ीवालों के हक में फटाफट रोक आदेश दे डालते हैं, यह कह कर कि पटड़ी पर रहने वालों का भी अधिकार है. उच्चतम न्यायालय ने भी इसी प्रकार के कई नागरिक विरोधी आदेश दिए हैं. इस प्रकार वे नगरों में इस अतिक्रमण को बढ़ावा देते हैं मानो राहगीरों, नागरिकों का पटड़ियों और सड़कों पर कोई अधिकार ही नहीं है– कब्जा सच्चा दावा झूठ.

इस अतिक्रमण में राजनीतिबाजों की भी बड़ी भूमिका है. जब दिल्ली में पुलिस ने पटड़ी, सड़क साफ करो अभियान चलाया तो तत्काल कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी के नेता उबल पड़े (उन्हें अपने वोट बैंकों की तो चिंता है) कि गरीब लोगों की रोजीरोटी छीनी जा रही है. इन्हें दूसरी ऐसी ही जगह दिए बिना नहीं हटाया जा सकता. अब शहर में दूसरी जगह कहां है जो दी जा सके? क्या नई सड़कें, पटड़ियां बनाई जाएं इन गैरकानूनी, गैरसामाजिक कब्जा करने वालों के लिए?

*

ब्रिटेन के आम चुनावों में टोरी (कंजरवेटिव : अनुदार) दल ने संसद में स्पष्ट बहुमत प्राप्त कर लिया है यद्यपि लगभग सारे समाचारपत्र व जनसोचविचार गणना करने वाले सब यही भविष्यवाणी कर रहे थे कि अब की बार संसद में किसी दल का बहुमत नहीं होगा और सब से बड़ा विजयी दल लेबर (मजदूर) दल होगा. पर हुआ इस का उलटा. कहा जा रहा है कि कोई राजनीतिक दल लगातार 4 बार चुनाव जीत जाए, ऐसा ब्रिटेन में इस शताब्दी में पहली बार हुआ है.

टोरी दल की जीत इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इस बार टोरी दल का नेतृत्व जान मेजर कर रहे थे, जिन्हें पिछले दिनों अपने लंबे शासन के बाद, मारग्रेट थैचर ने स्वयं पद को छोड़ कर प्रधान मंत्री बना दिया था. वह थैचर मंत्रिमंडल के एक मामूली सदस्य थे जिन का न कोई रोबदाब था, न कोई उपलब्धि. देखने में जान मेजर एक साधारण कालिज विद्यार्थी जैसे लगते हैं. पर इस में कोई संदेह नहीं कि अब की बार भी टोरी दल की जीत की नींव तो मारग्रेट थैचर की नीतियां और दृढ़ प्रशासन ही थी जिस के आधार पर इस समय ब्रिटिश लोगों ने मंदी और बेरोजगारी का वातावरण होते हुए भी टोरी दल को गद्दी पर पुनः बैठाया है.

इस संबंध में यह जानना जरूरी है कि मारग्रेट थैचर के आने से पहले ब्रिटेन को यूरोप का बीमार देश कहा जाता था क्योंकि लेबर दल की समाजवादी नीतियों ने उद्योगव्यापार को ठप कर दिया था. मजदूर यूनियनें बातबात पर हड़तालें करती थीं और अपना वेतन और सुविधाएं बढ़वाती चली जाती थीं (ब्रिटेन को हड़ताल का देश कहा जाने लगा था). उद्योगव्यापार में कोई धन लगाने को तैयार नहीं था. संसार में ब्रिटेन का माल महंगा और क्वालिटी में घटिया बन रहा था. सारे बड़े उद्योग सरकार के कब्जे में थे और सिसक रहे थे.

मारग्रेट थैचर ने गद्दी पर बैठते ही दो महत्त्वपूर्ण काम किए : एक तो बहुत से बड़े उद्योगों का सरकारीकरण समाप्त कर के उन्हें जनता को बेच दिया और मजदूर संघों से सीधी, जोरदार भिड़ंत की. मजदूर संघों का कोयला, रेल, जहाज, बिजली इत्यादि उद्योगों पर कब्जा था, पर मारग्रेट डरी नहीं और मजदूर संघों के ब्लैकमेल से सीधी टक्कर ली, और अंत में विजयी हुईं. इसी लिए उन का नाम 'लौह महिला' पड़ा और 3 बार ब्रिटिश जनता ने उन्हें बड़े बहुमत से गद्दी पर बैठाया.

पर बड़े से बड़ा, बुद्धिमान से बुद्धिमान और कुशल व्यक्ति भी समय के साथ पूरी तरह नहीं चल सकता और बासी हो जाता है. मारग्रेट थैचर की बुद्धिमानी इस से भी दिखती है कि उन्होंने समय को पहचान कर स्वयं गद्दी छोड़ दी और एक लगभग

अनजाने से युवक को शासन की बागडोर सौंप दी. यह युवक अब अपने बलबूते पर चुनाव लड़ कर विजयी हुआ है. जान मेजर इस शताब्दी के सब से छोटी आयु के ब्रिटिश प्रधान मंत्री हैं.

लेबर दल ने समय को पहचानने से इनकार करते हुए जो उद्योग मारग्रेट थैचर ने निजी क्षेत्र को सौंप दिए थे उन का पुनः सरकारीकरण करने का वायदा किया, बेरोजगारों का भत्ता बढ़ाने की पेशकश की, सरकारी खर्च बढ़ा कर नए रोजगार पैदा करने का वायदा किया. इस सब को चलाने के लिए नए टैक्स लगाने की योजना भी बनाई. यही बात लेबर दल को ले डूबी.

जान मेजर ने अपने पिछले 10 महीने के शासन में मारग्रेट थैचर के आचरण के विपरीत समन्वय की नीति अपनाई थी और आगे भी इसी रीति से सरकार चलाने का वायदा किया है. मारग्रेट थैचर तो बहुत अड़ियल थीं और अपनी बात को जोर-जबरदस्ती से मनवाती थीं. इसी कारण उन्हें अपना पद बीच में ही छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा था.

*

समाचार पत्रों में अकसर खबरें छपती हैं कि अमुक महिला जल कर मर गई और इस का कारण था ससुरालवालों द्वारा दहेज के लिए प्रताड़ना. यह बात हमेशा स्त्री के मायके वालों द्वारा उठाई जाती है, पर स्त्री के जलने के बाद. अगर वास्तव में दहेज प्रताड़ना के कारण महिला ने आत्महत्या की है तो उस समय तक उस के मायकेवाले क्या कर रहे थे? अब जब हर जगह पुलिस के यहां दहेज प्रताड़ना विरोधी दस्ता बना हुआ है, मायकेवाले पहले ही से पुलिस में रिपोर्ट क्यों नहीं दर्ज कराते कि हमारी लड़की को दहेज लाने के लिए परेशान किया जा रहा है? पहले तो यह खबर दी जाती है कि स्त्री को सास, ससुर, पति ने मिल कर जबरदस्ती जला डाला है. पर जब यह स्पष्ट होता है कि इन में से जलने के समय घटनास्थल पर कोई था ही नहीं तो कहा जाता है कि काफी दिनों से बहू को तंग किया जा रहा था और वह परेशान हो कर स्वयं जल मरी, यह दहेज की बात पहले से ही क्यों नहीं उठाई जाती? पुलिस से नहीं तो कम से कम रिश्तेदारों व पड़ोसियों से तो कही ही जा सकती है.

ऐसे मामलों में अधिकतर संभावना यही रहती है कि लड़की वाले विवाह के समय दहेज देने के लंबेचौड़े वायदे करते हैं, और बाद में मुकर जाते हैं. अब विवाह तो हो ही गया, चुप हो जाओ. पर इस से मनमुटाव तो होना ही है. वैसे दहेज के विरुद्ध बहुत बड़े प्रचार व सख्त कानूनों के बन जाने के बाद भी दहेज के लेनदेन में कोई कमी नहीं आई है. आज भी जो कुछ लड़के वाले वास्तव में दहेज नहीं लेते, वे इनेगिने ही होते हैं और सिरफिरे माने जाते हैं. आज तक क्या किसी महिला ने (महिला मुक्ति आंदोलन की प्रमुख नेताओं सहित) अपने बेटे, भाई, भतीजे या अन्य किसी रिश्तेदार लड़के के विवाह में दहेज लिए जाने के विरुद्ध कोई आवाज उठाई है, भूख हड़ताल या सत्याग्रह किया है या जल मरी है?

हिंदू समाज में स्त्रियों द्वारा स्वयं जल कर मरने या अन्यथा आत्महत्या करने की प्रथा बड़ी प्राचीन और धर्मशास्त्र सम्मत है. पति के मरने पर, आक्रांताओं द्वारा विजय प्राप्त करने पर हारे हुए देश की स्त्रियों द्वारा जौहर की 'यशोगाथाएं' हमारे धार्मिक व सामाजिक साहित्य में भरी पड़ी हैं–रामायण की नायिका सीता और महाभारत की नायिका द्रौपदी ने भी तो अंत में आत्महत्या ही की थी.

पहले तो हिंदू समाज में तलाक को मान्यता नहीं थी. पर अब जब यह कानून में सम्मिलित है तो लड़की के मातापिता, यदि वास्तव में दहेज उन की लड़कियों के जलने का कारण हो सकता है तो पहले ही तलाक की याचिका क्यों नहीं दायर करा देते? बाद में जब लड़की जल कर मर जाती है तब मौके से फायदा उठाने के लिए लड़की की ससुराल वालों से जितना कुछ ऐंठ सकें ऐंठने के लिए अपना मुंह क्यों खोलते हैं? •

उस दिन संसदीय मामलों की कमेटी की बैठक थी. तारीख थी 21 मार्च, शनिवार का दिन. यह बैठक लोक सभा में व्हिप का पालन न करने वाले 7 सांसदों के खिलाफ निर्णय लेने के लिए बुलाई गई थी. एस.आर. बोम्मई और जयपाल रेड्डी गहन विचारों में खोए हुए थे. विश्वनाथ प्रताप सिंह और रामविलास पासवान का बेसब्री से इंतजार हो रहा था. किंतु जब इंतजार की इंतहा हो गई और वे नहीं आए तो सातों सांसदों को माफ करने का फैसला सुना दिया गया. पार्टी प्रवक्ता हरिकिशोर सिंह ने अगले मंगलवार को बाकायदा इस फैसले की घोषणा भी कर डाली.

किंतु विश्वनाथ प्रताप सिंह और रामविलास पासवान को जब इस फैसले की जानकारी मिली तो वे सन्न रह गए. वे उन सांसदों को पार्टी से निकाल देना चाहते थे. अगर वे पीएसी की उक्त बैठक में नहीं भी गए तो किसी को क्या हक था कि ऐसे नाजुक मामलों में उन से पूछे बगैर फैसला कर दें? लिहाजा अगले दिन आननफानन में कार्यसमिति की बैठक बुला ली गई. बोम्मई और रेड्डी को भी उपस्थित रहने को कहा

दल का क्या होगा?

लेख ● विनोद श्रीवास्तव

गया. विश्वनाथ प्रताप सिंह के संकेत पर शंकर दयाल सिंह का सवाल था, "किस ने फैसला किया?" वी.पी. और पासवान ने पलट कर उत्तर दिया, "कोई जानकारी नहीं."

अब बारी थी, पार्टी प्रवक्ता हरिकिशोर सिंह की. सवाल दागा गया, "किस के कहने पर आप ने फैसले की घोषणा की?" हरिकिशोर सिंह ने बताया, "जयपाल रेड्डी के." वी.पी. और पासवान हैरत से जयपाल रेड्डी की तरफ देखते रह गए. उन्हें जरा सी भी उम्मीद नहीं थी कि उन से पूछे बगैर जयपाल रेड्डी ऐसा फैसला कर देंगे. अब बचा ही क्या था. पीएसी का निर्णय उलट दिया गया और हरिकिशोर सिंह ने दोबारा घोषणा की, "सांसदों को अभी माफी नहीं दी गई है. रामविलास पासवान और राजमोहन गांधी,शांतिभूषण कमेटी की अनुशासन संबंधी अनुशंसा के आधार पर सांसदों की हरकतों की जांच करेंगे और फिर जैसा मामला बनेगा, वैसा देखा जाएगा."

उक्त दृश्य उस नाटक के एक नए अंक का है, जिस का आजकल पूरे जोरशोर के साथ जनता दल के मंच पर रिहर्सल हो रहा है और इस रिहर्सल के बाद जब परदा उठेगा तो दृश्य शायद कुछ और ही दिखाई पड़ेगा. पता चलेगा कि एस.आर. बोम्मई, एस. जयपाल रेड्डी और शरद यादव भी अपना अलग तंबू गाड़ने के लिए जमीन खोज रहे हैं, ठीक उसी प्रकार, जैसा अजित सिंह कर रहे हैं. उधर बिहार में भी रामलखन सिंह एक और नाटक खेलने की तैयारी कर रहे हैं. सूत्रों के अनुसार आगामी महीनों में किसी भी समय दलबल के साथ रामलखन सिंह कांग्रेसी खेमे में शरीक हो सकते हैं.

अजित सिंह के निष्कासन के बाद जनता दल के बंटवारे की एक हलकी शुरूआत तो हो ही चुकी थी. सांसदों की खरीदफरोख्त के खेल के समापन के बाद अगले दोतीन हफ्तों में जनता दल का विधिवत बंटवारा हो भी जाए तो कोई आश्चर्य की बात नहीं. व्हिप के उल्लंघन के मामले को ले कर जो ताजा विवाद छिड़ा हुआ है, उस से निश्चित रूप से दक्षिण भारतीय जन नेताओं का भी विश्वनाथ प्रताप सिंह से मोह भंग होता जा रहा है. अभी हाल ही में इसी मसले को ले कर तेलगू देशम में पड़ी दरार ने इस एक और सच को साबित कर दिया है कि आने वाले दिनों में राष्ट्रीय महत्त्व के प्रश्न पर जनता दल का भविष्य बहुत अच्छा नहीं रह गया है.

अजित सिंह का निष्कासन, नेताओं की आपसी जूतमपैजार और ऐसे ही दूसरे विवादों के चलते जनता दल का भविष्य दांव पर लग गया है. हालांकि जो विवाद उभर रहे हैं उन की जड़ें बहुत गहरी नहीं हैं. फिर भी वे इतने उग्र होते जा रहे हैं कि दल का एक और विभाजन अब निश्चित लग रहा है. आखिर सामाजिक न्याय का नारा बुलंद करने वाले इस दल का यह हश्र क्यों हो रहा है?

जिन उग्र विवादों के चलते जनता दल का आज यह हश्र हो रहा है, देखा जाए तो उन विवादों की जड़ उतनी गहरी नहीं है, जितनी कथित रूप से कुछ असंतुष्ट नेताओं द्वारा बताई जा रही है. दल के संगठन और शीर्ष नेताओं की मनमरजी को निशाना बना कर अजित सिंह द्वारा जो चिट्ठी विश्वनाथ प्रताप सिंह को लिखी गई थी, उसी के परिणामस्वरूप अनुशासनहीनता का आरोप लगा कर अजित सिंह को दल से निष्कासित किया गया. लेकिन असल में अनुशासनहीनता का सवाल तो एक बहाना था. आपसी विवाद तो लोक सभा के गत चुनावों के बाद ही मुखर होने लगे थे और विभिन्न विचारधाराओं के नेताओं की व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा तथा पदप्रतिष्ठा के आधार पर उन विवादों की जड़ें भी गहराने लगी थीं.

जनता संसदीय दल के प्रवक्ता हरिकिशोर सिंह के अनुसार, "असल विवाद तो कांग्रेस सरकार से सहयोग के प्रश्न को ले कर था. अजित सिंह तथा कुछ अन्य लोग अल्पमत कांग्रेस सरकार का समर्थन करना चाहते थे. आम चुनावों के प्रारंभ में ही जनता दल कार्य समिति ने यह स्पष्ट कर दिया था कि जनता दल किसी भी कीमत पर कांग्रेस का समर्थन नहीं करेगा. पर कुछ लोग अंदर ही अंदर इस मामले को तूल दे रहे थे. यह ठीक नहीं था. ऐसे लोगों की अनदेखी आखिर कब तक की जा सकती थी."

"पर जनता दल के आंतरिक विवादों को हवा में नेताओं की व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा भी तो जिम्मेदार मानी जाएगी?"

इस सवाल के जवाब में हरिकिशोर सिंह का कहना है, "मैं नहीं मानता इस बात को. जनता दल ही क्यों, हर दल के नेता महत्त्वाकांक्षी हैं. हां, जब किसी की महत्त्वाकांक्षा अनुशासन की सीमा को तोड़ने लगे, तब समस्या हो जाती है. ऐसी ही समस्या निष्कासित नेताओं के साथ थी. बहरहाल हम ने अपने आंतरिक विवादों को दूर कर डाला है. सब को समान जिम्मेदारी देने के लिए दल के पुनर्गठन का काम किया जा रहा है. देश के आर्थिक स्वावलंबन के लिए स्वदेशी आंदोलन की भी तैयारी चल रही है. इसी परिप्रेक्ष्य में आगामी 16-17 अप्रैल को चकराता में राष्ट्रीय शिविर भी लगाया जा रहा है."

हरिकिशोर सिंह के अनुसार, अजित सिंह के निष्कासन के बाद भले ही जनता दल के समस्त आपसी विवाद सुलझा लिए गए हों. किंतु इस सवाल का उत्तर आना अभी बाकी है कि गैरकांग्रेसवाद के धरातल पर सामाजिक न्याय के उद्घोष के साथ जिस जनता दल ने जनता के मन में आशाएं जगाई थीं, उस जनता दल के विघटन के बाद दल और उस के नेताओं की विश्वसनीयता क्या शेष रह गई है और इस हालत में आखिर जनता दल का क्या होगा?

हरिकिशोर सिंह बताते हैं, "जो लोग यह समझते हैं कि जनता दल का भविष्य अंधकारमय है, वे गलतफहमी में हैं. हर बाधाओं के बाद जनता दल भविष्य में एक वामपंथी रुझान की मध्य धारा के रूप में उभरेगा और समन्वयवादी संस्कृति के रूप में जनता के प्रवक्ता की भूमिका निभाएगा."

हरिकिशोर सिंह : असल विवाद तो कांग्रेस सरकार से सहयोग के प्रश्न को ले कर था.

राजनाथ सोनकर शास्त्री : पासवान को पांचपांच पद दिए जाना भी विवाद की जड़ है.

भविष्य में जनता दल का क्या स्वरूप होगा, यह एक आकलन का विषय तो हो सकता है, पर इस विषय को भलीभांति समझने के लिए इस के अतीत के कुछ पृष्ठों का अवगाहन भी करना पड़ेगा. इस संदर्भ में यदि इस के सत्ता के कार्यकाल में उपजे विवादों को छोड़ भी दिया तो भी हाल में उपजे विवाद कम संगीन नहीं माने जा सकते. इन्हीं विवादों की शृंखला में जुड़ी एक कड़ी दल के संगठन से उपजे विवादों से संबंधित हैं.

जनता दल (अ) के महामंत्री राजनाथ सोनकर शास्त्री के अनुसार, "विश्वनाथ प्रताप सिंह ने एक व्यक्ति, एक पद के सिद्धांत के अनुपालन की बात कही थी, पर इसी जनता दल में रामविलास पासवान भी एक ऐसे नेता हैं, जिन्हें पांचपांच पद मिले हुए हैं-जनता दल के उपाध्यक्ष, संसदीय दल के उपनेता, अखिल भारतीय दलित एवं पिछड़े वर्ग के अध्यक्ष, राजनीतिक समिति के सदस्य और संसदीय बोर्ड के भी सदस्य. क्या एक व्यक्ति का इतने पदों पर रहना किसी भी रूप में नैतिक कहा जा सकता है? और भी तो लोग हैं, क्या उन्हें पद नहीं दिए जा सकते? विवादों की एक जड़ यह भी है."

राजनाथ सोनकर शास्त्री के इस वक्तव्य अथवा आरोप में कितना दम है, सवाल यह नहीं है. सवाल तो यह है कि जब इस तरह के विवादों को ले कर कोई दल बिखराव के कगार पर पहुंच रहा हो, तब दल को टूटने से बचाने के लिए क्या किसी तरह की प्राथमिकताओं पर अमल नहीं किया जा सकता? असलियत यही है कि ज्यादातर विवाद इन्हीं प्राथमिकताओं को तय करने में टालमटोल करने के कारण पैदा हुए हैं. कमोबेश आज भी यही तत्व एक दुराग्रह के रूप में जनता दल के नेताओं में मौजूद है. इसलिए इस बात की उम्मीद अभी नहीं लगाई जानी चाहिए कि जनता दल को आगे किसी और विभाजन का सदमा नहीं झेलना पड़ेगा.

देखा जाए तो विश्वनाथ प्रताप सिंह और अजित सिंह की राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता भी उसी का परिणाम है. मजेदार बात यह है कि विश्वनाथ प्रताप सिंह अपनेआप को एक ऐसा नेता मानते हैं, जिसे नेतृत्व करने

की कोई आवश्यकता नहीं है. अजित सिंह को भ्रम है कि उन के दिवंगत पिता की राजनीतिक विरासत के रूप में उन्हें पिछड़ों का अपार समर्थन प्राप्त है. यही कारण है कि ये दोनों राजनीतिबाज पार्टी के निर्माण और आधार को मजबूत करने की बजाय राजनीतिक पुनर्वास और व्यक्तिगत विकास के लिए ज्यादा मचल रहे थे.

"पर क्या इस स्थिति पर रोक लगाने के लिए कोई फार्मूला नहीं विकसित किया जा सकता था? कम से कम उस हालत में दल का एक विभाजन तो रोका ही जा सकता था?"

"हां, ऐसा किया जा सकता था." प्रत्युत्तर में राजनाथ सोनकर शास्त्री का कहना है, "विश्वनाथ प्रताप सिंह उस विवाद को हल करना चाहते थे. जनता दल के 57 में 50 सांसद भी उस विवाद को हल करने में रुचि दिखा रहे थे. पर उन में कुछ ऐसे भी लोग थे, जो आग लगा कर मकान को जलते हुए देखना चाहते थे. गत 8 सितंबर को जनता दल की कार्यकारिणी की बैठक में जब बोम्मई ने घोषणा की कि 15 दिन के अंदर दल का समस्त वैमनस्य दूर कर दिया जाएगा तो सब के चेहरे पर प्रसन्नता के फूल खिल गए थे. समाधान की मंजिल करीब आती महसूस हो रही थी. तभी अचानक अजित सिंह को दल से निष्कासित कर के विवाद को एक नया मोड़ दे दिया गया. अजित सिंह ने तो पुरी सम्मेलन में पारित किए गए प्रस्तावों को लागू करने की ही बात कही थी. प्रस्ताव तो लागू नहीं हुए, उलटे जनता दल टूट गया. समझ में नहीं आता क्यों?"

इस प्रतिनिधि द्वारा पूछे गए इस 'क्यों' के जवाब में शास्त्री का कहना था, "क्योंकि विश्वनाथ प्रताप सिंह को ऐसा ही करने के लिए कहा गया. उन का रवैया देख कर ऐसा लगता कि हरिजन रामविलास पासवान, अल्पसंख्यक मुफ्ती मोहम्मद सईद और पिछड़ा वर्ग सिर्फ लालू यादव ही हैं. यदि सामाजिक न्याय के बारे में वी.पी. सिंह की यही परिभाषा रही तो जनता दल का भविष्य अंधकार में ही रहेगा. पासवान विश्वनाथ प्रताप सिंह को गौतम बुद्ध का अवतार कहते रह जाएंगे और वी.पी. भावुकतावश पासवान को डा. अंबेडकर का अवतार. यदि कहीं सईद में मुहम्मद साहब की छवि देखने लगे, तब तो हद ही हो जाएगी और जनता दल का अंतिम अध्याय एक हास्यास्पद एहसास के साथ बंद हो जाएगा."

अजित सिंह विवादों के संदर्भ में कुछ खुल कर बोलना नहीं चाहते. फिर भी उन का कहना है, "जनता दल को किसी की जागीर नहीं बनने दिया जाएगा. कुछ लोगों ने इसे अपनी जागीर बना रखा था. संघर्ष तो उन से ही है." जबकि जार्ज फर्नांडिस की राय में, "विवाद तो सुलझाए जा सकते थे. यदि हम इस मोरचे पर काम नहीं कर पाए तो यह हम लोगों की सब से बड़ी कमजोरी है."

और अब जब जनता दल के भविष्य पर संकट के बादल मंडराने ही लगे हैं, तब यह सवाल अपने आप ही पैदा होने लगता है कि क्या बनना और टूटना ही जनता दल की नियति है? 11 अक्तूबर 1988 को जनता दल का गठन हुआ. सब से पहले नवंबर, 1990 में इस दल के दो टुकड़े हुए और विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व को चुनौती दे कर देवी लाल और चंद्रशेखर ने जनता दल (स) बनाया. इस लिहाज से भविष्य में भी जनता दल के खंडखंड में विभाजित होने की घटनाएं भले ही औपचारिक और साधारण लगती हों, किंतु जनता दल का ऐसा कोई हश्र होना साधारण घटना नहीं होगी.

1967 के बाद डा. राममनोहर लोहिया की मृत्यु और समाजवादी आंदोलन की परिवर्तित धारा के परिणामस्वरूप जिन दलित और पिछड़े वर्गों में राजनीतिक आकांक्षा के अंकुर फूटे थे, उसे विश्वनाथ प्रताप सिंह ने पल्लवित करने की चेष्टा की है. यह दूसरी बात है कि

अजित सिंह : जो जनता दल को अपनी जागीर समझते हैं, संघर्ष उन्हीं से है.

विश्वनाथ प्रताप सिंह की हबड़ातबड़ी और अधकचरी घोषणाओं ने वर्ग संघर्ष का विवाद खड़ा कर दिया था. उसी के परिणामस्वरूप सवर्ण किसी भी रूप में जनता दल की स्थिरता से डाह रखने लगे थे और जनता दल के विभाजन के बाद उन का सपना सच होने लगा है.

वर्तमान में राजनीति की दो धाराएं प्रवाहित हो रही हैं. एक धारा धर्म निरपेक्षता के आधार पर अपनी स्थिति कांग्रेस के रूप में मजबूत करने में लगी है, तो दूसरी हिंदूवादी सोच का सहारा ले कर भारतीय जनता पार्टी के रूप में. असल में इन दोनों धाराओं का लक्ष्य एक है और वे किसी न किसी रूप में धार्मिक आधार पर अपने वोट बैंक की तलाश में हैं. भाजपा को आज भले ही मंदिर के नाम पर स्थिति मजबूत करने में सफलता मिल पाई हो, किंतु इस का असली श्रेय तो कांग्रेस को ही जाता है. अयोध्या में शिलान्यास और ताला खुलवाने के पीछे कांग्रेस की ऐसी ही मंशा थी.

इन दोनों धाराओं के मध्य में जनता दल ही एक ऐसा स्थान प्राप्त करता है, जिस की कोई धार्मिक सोच नहीं रही. सामाजिक न्याय जरूर उस का नारा है, किंतु भाजपा द्वारा अपने आधार को सीमित करते देख उसे आघात लगा है और इसी आघात को सहने के लिए उसे मुसलिम अल्पसंख्यकों को संतुष्ट करने की नीति अपनानी पड़ी है. यदि जनता दल को एक दल बने रहना है और उसे अपनी राजनीतिक भूमिका निभानी है तो उसे इस तथ्य पर जरूर गौर करना पड़ेगा कि किसी जाति विशेष के तुष्टीकरण की नीति से उस का हित नहीं होने वाला है. वैसे भी अल्पसंख्यक वर्ग की 15 फीसदी की राजनीति के बजाय बहुसंख्यक वर्ग की 85 फीसदी की राजनीति से ही दल का आधार विस्तृत हो सकता है. विश्वनाथ प्रताप सिंह की इसी एकांगी राजनीति ने सिर्फ दल को ही ठेस नहीं पहुंचाई है, बल्कि दलितों और पिछड़ों की आशाओं पर भी पानी फेर दिया है.

बदलते संदर्भ में जनता दल को भी अपनी प्राथमिकताएं बदलनी पड़ेंगी और पुरातन विचारों को त्याग कर ऐसे नए आयाम विकसित करने पड़ेंगे, जो उसे आज की प्रचलित धारा में भी अप्रासंगिक न बनाएं. इन संदर्भों में कांग्रेस की आर्थिक नीतियों का विरोध करना भी जनता दल की उधार की सोच का परिणाम नहीं है तो और क्या है. वामपंथी सहयोग के कारण यदि वह आर्थिक मामलों में कटु नीति अपना रहा है, तो उसे यह बात भी नहीं बिसरानी चाहिए कि कम्यूनिज्म का किला अपनी गलत नीतियों के कारण संपूर्ण विश्व में धराशायी हो गया है. केवल विरोध के लिए इन नीतियों की वजह से कांग्रेस का विरोध करना यदि जनता दल की मजबूरी है तो उसे उस मजबूरी को त्याग कर ही नई संभावनाओं का श्रेय मिल सकेगा, और हो सकता है, वह जनता का रहनुमा बन कर अपने नए स्वरूप का प्रदर्शन कर सके. ●

सोने का व्यापार अब आगे क्या होगा?

लेख • जगदीश चावला

भारत में सोने का वार्षिक उत्पादन 2 टन है जबकि इस की मांग 200 टन से भी ज्यादा है. जहां वित्त मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार भारतीय रिजर्व बैंक के पास इस चालू वर्ष के शुरू में लगभग 350 ट सोना था, वहीं गैर सरकारी सत्रों अनुसार करीब 10,000 टन सोना वैध

स्वर्ण तस्करी का अवैध ध सरकार की गलत अ अव्यावहारिक नीति के कारण फलाफूला.

अवैध रूप से लोगों के संदूकों, अलमारियों, तिजोरियों, बैंक लाकरों या निजी तहखानों में रखा हुआ है.

वर्ष 1963 में हमारे यहां सोना 80 रुपए प्रति तोला की दर से उपलब्ध था, जो गत 17 जनवरी को, रुपए के दो बार हुए अवमूल्यन के बाद, 5080 रुपए प्रति 10 ग्राम की रिकार्ड तेजी के साथ बिक चुका है. इस प्रकार 1963 से अब तक सोने की कीमतों में 70 गुना से भी ज्यादा की वृद्धि हो चुकी है. इस अनापशनाप वृद्धि के लिए जहां बहुत हद तक सरकार की गलत और अव्यावहारिक नीतियां जिम्मेदार हैं, वहीं पर सोने के कम उत्पादन और बहुत ज्यादा मांग ने भी इस क्षेत्र को तस्करों की आखेट

स्थली बनाने में कोई कम भूमिका अदा नहीं की.

वर्ष 1951 में सोने के निजी आयात पर लगे प्रतिबंध से तस्करी का अवैध धंधा जितना अधिक फलाफूला है उतनी ही इस में सरकार को अधिक क्षति उठानी पड़ी है. एक अनुमान के अनुसार अमरीका व अन्य यूरोपीय देशों से दुबई हो कर प्रतिवर्ष भारत में पहुंचने वाला तस्करी का सोना 45 अरब रुपए मूल्य का बैठता है.

यद्यपि सरकार दावा करती है कि उस ने 1980 में 1 करोड़ 30 लाख, 1981 में 2 करोड़ 54 लाख, 1982 में 12 करोड़ 88

वित्त मंत्री मनमोहन सिंह : स्वर्ण आयात की छूट और स्वर्ण बांड के जरिए तस्करी के जाल को तोड़ने की कोशिश क्या कामयाब हो पाएगी?

लाख, 1985 में 52 करोड़, 1987 में 58 करोड़, 1990 में 192.95 करोड़ तथा 1991 में 187 करोड़ रुपए मूल्य का सोना जब्त किया है तो भी तस्करी में आए और न पकड़े गए सोने की तुलना में उक्त सभी आंकड़े इतने 'नगण्य' हैं कि इस के लिए सरकार की पीठ ठोंकना भी उस की चापलूसी करने जैसा ही है. स्वर्ण विशेषज्ञों के मुताबिक, तस्करी में आए सोने का केवल 5-7% ही सरकार की पकड़ में आता है जबकि बाकी के सोने से तस्करी में लिप्त लोग चमक पाते हैं और उन की इस चमक को मिटाने के लिए ही संभवतः केंद्रीय सरकार के वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने अपने बजट में स्वर्ण आयात की छूट और स्वर्ण बांड जैसे हथियार ईजाद किए हैं.

अब कोई भी अनिवासी भारतीय या विदेशों में 6 महीने प्रवास के बाद स्वदेश लौटने वाला नागरिक अपने साथ 5 किलोग्राम (160 ट्राय औंस) तक सोना ला सकता है. इस में रत्नजड़ित आभूषण शामिल नहीं हैं.

सोने की तस्करी रोकने तथा इस के बढ़ते दामों पर रोक लगाने के लिए वित्त मंत्री मनमोहन सिंह ने नई स्वर्ण आयात नीति की घोषणा की थी. लेकिन इस नीति में बेचे गए सोने पर आयकर के प्रावधानों के बारे में स्पष्टता न होने के कारण स्थिति भ्रमपूर्ण बनी हुई है और सोने की कीमतें व तस्करी फिर से बढ़ने लगी है. ऐसे में वित्त मंत्री का इस पर अंकुश लगाने का दावा कितना सही कहा जा सकता है?

दूसरे शब्दों में, जो काम अब तक चोरीछिपे होता था वह अब खुलेआम किया जाएगा. इस से विदेश भ्रमण का आकर्षण तो बढ़ेगा ही, साथ ही घर लाए सोने को बेच कर खर्चा भी निकाल लेना सहज हो जाएगा. ऐसे आयातित सोने पर सरकार जो सीमा शुल्क लेगी वह विदेशी मुद्रा में होगा और बाद में इस आयातित सोने को बेचने पर सरकार का कोई प्रतिबंध नहीं होगा.

स्वर्ण बांड जारी करने की योजना के अंतर्गत नागरिक अपने स्वर्ण के बदले बांड प्राप्त कर सकते हैं. इन बांडों की अवधि 5 से 7 वर्ष तक की होगी और इन्हें सोने की वापसी अथवा समकक्ष मूल्य पर भुनाया जा सकेगा. इन पर थोड़ा ब्याज भी मिलेगा जिस पर आयकर नहीं लगेगा. ये बांड संपत्तिकर और दानकर से भी मुक्त होंगे और ऐसे बांडों के धारकों से स्वर्ण प्राप्त करने के स्रोत के बारे में भी कोई पूछताछ नहीं की जाएगी.

वित्त मंत्रालय अनुमान लगा रहा है कि उसे स्वर्ण आयात से 150 करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा हासिल होगी और अनिवासी भारतीयों व भारतीय नागरिकों की मार्फत 330 या 340 टन ऐसा सोना भारत में आएगा, जिस पर तस्करी का टैग नहीं लगा होगा. वित्त मंत्रालय के इन नए प्रावधानों को लागू करने के लिए वाणिज्य मंत्रालय ने अपने आयात (नियंत्रण) आदेश 1955 में समुचित संशोधनों की व्यवस्था की है और भारतीय रिजर्व बैंक भी आगामी पहली मई से स्वर्ण बांड जारी करने की तैयारियों में जुटा है.

सोने के संबंध में वित्त मंत्री की उक्त दोनों घोषणाओं के बाद इस का तात्कालिक असर यह हुआ कि जो सोना बजट से पहले काफी ऊंचे मूल्यों पर बेचा जा रहा था वह भारत सहित एशिया व यूरोपीय बाजारों में घटे मूल्यों पर बिकता देखा गया. मिली खबरों के मुताबिक तब सोने के भाव लंदन में प्रति औंस 2.70 अमरीकी डालर तक गिर गए और पश्चिमी एशिया में भी उस दिन दोपहर तक सोने का भाव गिर कर 330.55 डालर पर आ गया.

विश्लेषकों का मत था कि आगामी दिनों में स्टैंडर्ड सोने का भाव गिर कर 4,000 रुपए प्रति 10 ग्राम हो जाएगा (किंतु 13 अप्रैल को दर्ज भावों के अनुसार सोना 4650 रुपए प्रति 10 ग्राम हो गया और उस में आगे और तेजी आने की संभावना है). उधर विश्व स्वर्ण परिषद (डब्ल्यू.जी.सी.) का आकलन है कि भारत सरकार की इस नई स्वर्ण नीति का विश्व स्वर्ण बाजार पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा.

बंबई बुलियन एसोसिएशन, जो पिछले कई वर्षों से सोने के ऐसे वैध आयात की हामी रही है, के अध्यक्ष शांतिलाल सोनावाला ने आशंका जाहिर की है कि सोने की इस नई आयात नीति में 15% का सीमा शुल्क इतना अधिक है कि विदेश गया कोई भी नागरिक सोना लाने को उत्सुक न होगा. इसी तरह अनिवासी भारतीयों को जो रियायतें दी गई हैं वे भी ऐसी अधिक और आकर्षक नहीं हैं कि जिन से प्रेरित हो कर वे बाजार की वार्षिक मांग की पूर्ति कर सकेंगे. इसी संस्था के निदेशक अमृतलाल सोनावाला का कहना है कि सरकार की आयात नीति से तस्करी का धंधा यदि 50% भी बंद हो गया तो वह

बड़ी उपलब्धि होगी, और ऐसा कहने के पीछे इस संस्था के जो तर्क हैं वे भी गौरतलब हैं.

यह संस्था मानती है कि 6 मार्च 1992 को खुले बाजार में डालर के दाम 29 रुपए थे और हवाला दर 32 रुपए थी. इस प्रकार बंबई में आए सोने का मूल्य, सभी प्रकार के कर और सीमा शुल्क आदि देने के बाद, 3909 रुपया प्रति 10 ग्राम बैठता है जबकि हवाले के भाव से उस की कीमत 4270 रुपए होती है. तो इस में सोना लाने वाले को लाभ कहां मिलता है? यदि हवाला दरों पर कोई अनिवासी भारतीय सोना ला भी पाएगा तो उसे 10 ग्राम में 170 रुपए का घाटा होगा.

इसलिए बंबई के झावेरी बाजार में यह आम चर्चा है कि जब तक सोने का भाव बढ़ता नहीं है और सीमा शुल्क की दरें कम नहीं होतीं, तब तक देश में सोने की अधिक खेप नहीं आ पाएगी और सीमित मुनाफे के साथ कोई भी बाहर से सोना लाना पसंद नहीं करेगा.

पाकिस्तान में सीमा शुल्क पहले 5% था लेकिन अब वहां भी इसे 3% कर दिया गया है. जिस से लगता है कि सोने की

सोने के दाम जितने नीचे आएंगे, लोगों की क्रय शक्ति उतनी ही बढ़ेगी.

तस्करी में लगे लोग आयात शुल्क का यह 12% बोझ बचाने के लिए अपना सोना पाकिस्तान के जरिए भी लाएंगे. लेकिन उस की आमद आशानुकूल होगी, इस में संदेह है. इसलिए भारत के स्वर्ण व्यापारी स्वर्ण बाजार के भावों की स्थिरता पर ही नजर टिकाए हुए हैं.

वित्त मंत्री की नई स्वर्ण आयात नीति में ऐसे बेचे गए सोने पर आयकर के प्रावधानों में कोई स्पष्टता न होने से भी स्थिति भ्रमपूर्ण बनी हुई है. अनिवासी भारतीयों का यह सोचना भी गलत नहीं है कि यदि वे अपने साथ 10 ग्राम सोना लाते हैं तो उस पर उन्हें 15% आयात शुल्क के अलावा उस सोने का बिक्री कर जो 3.49% है, अपनी जेब से ही अदा करना पड़ेगा क्योंकि अभी तक स्वर्ण बाजार का यह अलिखित नियम है कि ऐसा बिक्री कर विक्रेता को ही वहन करना होगा. इस के अतिरिक्त यदि टर्न ओवर टैक्स आदि का झमेला हो तो विदेशों से लाया गया सोना मुनाफे की जगह घाटे का सौदा ही साबित

हो सकता है, जोकि बिक्री कर का यह प्रावधान भी दिल्ली, पश्चिम बंगाल, गुजरात और मध्य प्रदेश में न हो कर महाराष्ट्र में लागू है जिस से अनिवासी भारतीय प्रभावित हो सकते हैं. इसलिए जब तक आयातित सोने पर भारी करों का शिकंजा कसा रहेगा तब तक नई आयात नीति के प्रतिफल भी संदिग्ध ही रहेंगे.

दूसरी बात यह है कि हर 6 महीने बाद सोना लाने वाला व्यक्ति बिक्री से प्राप्त समूची राशि भारतीय मुद्रा में संचित नहीं रख सकेगा क्योंकि उसे हर नई खेप के लिए पुनः विदेशी मुद्रा जुटानी होगी. जाहिर है कि जब ऐसा व्यक्ति सोने की अगली खेप खरीदने के लिए बिक्री से प्राप्त भारतीय मुद्रा 'हवाले' के जरिए विदेश भेजने पर बाध्य होगा तो सोने के दाम स्थिर कैसे रह पाएंगे?

फिर सोचनीय मुद्दा यह भी है कि हवाला तथा तस्कर व्यापार के सरगना क्यों चाहेंगे कि उन का विशाल तंत्र किन्हीं सरकारी नीतियों से छिन्नभिन्न हो, जिन हाथों में अभी भी 180 टन सोने की तस्करी यानी 9,000 करोड़ के वार्षिक कारोबार वाला व्यवसाय हो, वे विदेशों से लौटने वाले भारतीयों को वाहक (कैरियर) के रूप में भी इस्तेमाल कर सकते हैं और आयातित सोने की जमाखोरी से माल का कृत्रिम अभाव पैदा कर सकते हैं, जिस के विषय में सरकार ने अभी तक कोई विकल्प नहीं सोचा है.

इसलिए जो लोग अगले तीन महीनों में स्वर्ण तस्करी के न रुकने या सोने के मूल्य बढ़ जाने की आशा लिए बैठे हैं, उन के तर्क भी निर्मूल नहीं हैं. ऐसे लोगों का विचार है कि उत्पादन की लाभहीनता ही भारत में स्वर्ण उत्पादन के निरंतर ह्रास का सबब रही है और कई स्वर्ण खानें लाभहीन हो जाने के कारण बंद भी कर दी गई हैं.

दूसरी ओर, स्वर्ण तस्कर भी उतने पस्त या निराश नहीं हैं जितना कि सरकार माने बैठी है. तस्कर इसलिए भी खुश हैं कि अब सोने के आयात को किसी जुर्म के दायरे में नहीं रखा गया और यदि सरकार फिर
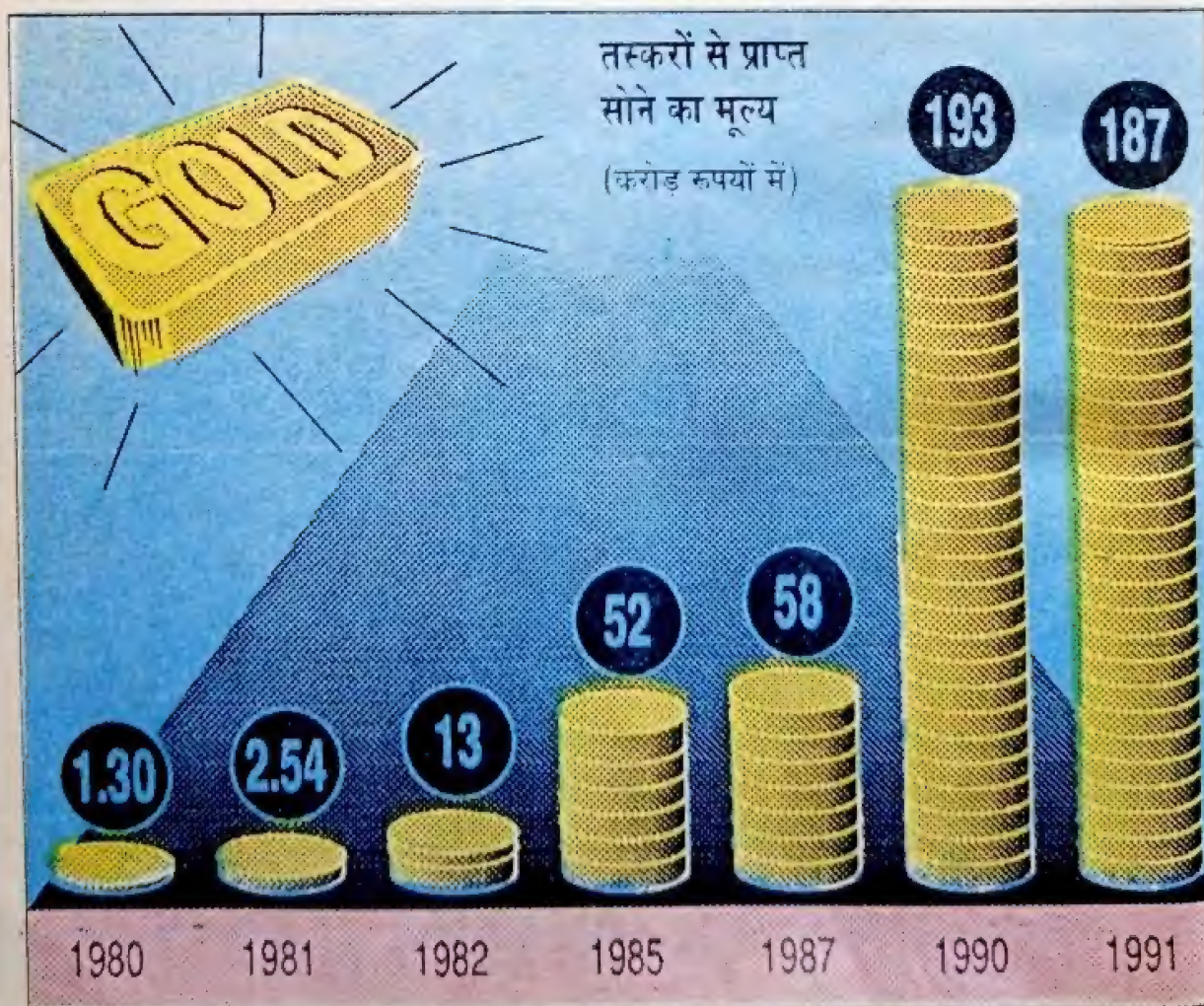
अखिल भारतीय सर्राफा एसोसिएशन के अध्यक्ष शीलचंद जैन : सोने संबंधी नीतियों को उदार होना चाहिए.

दरीबा सर्राफा एसोसिएशन के अध्यक्ष राममरन शर्मा : तस्करी के धंधे में आज तक कोई जौहरी लिप्त नहीं रहा.

भी कोई कड़ा कदम उठाती है तो तस्करी के लिए उन के पास चांदी का क्षेत्र बाकी है जो अभी नेपाल के रास्ते से आती है, और जो बाद में हांगकांग के रास्ते से आ सकती है. इसलिए एक जौहरी का यह कहना, 'नई आयात नीति तस्करों की नीति है और यह तस्करों के लिए ही बनाई गई है,' कोई हैरत पैदा नहीं करता.

यहां यह बता देना जरूरी है कि स्वर्ण व्यापार में लगे सुनारों की श्रेणियां भी अलगअलग हैं. पहली श्रेणी उन डीलरों या वितरकों की है जिन्हें अपने इस कारोबार के लिए स्वर्ण नियंत्रण कार्यालय से लाइसेंस लेना पड़ता है और लाइसेंस लेने के बाद ही वे बंबई टकसाल से तैयार स्टैंडर्ड सोने की छड़ें या बिस्कुट रखने का अधिकार हासिल कर पाते हैं. केवल वितरक ही स्टैंडर्ड सोने के आभूषण तैयार कर बेच सकते हैं.

दूसरी श्रेणी में सुनार या सर्राफ आते हैं जो पुराने आभूषणों को गला कर उसी सोने से नए आभूषण तैयार करने का व्यवसाय करते हैं. इन्हें स्टैंडर्ड सोना रखने का अधिकार नहीं है.

तीसरी श्रेणी में गिरवीगांठे का काम करने वाले लोग आते हैं जो सोनाचांदी गिरवी रख कर पैसा उधार देते हैं. इस के लिए इन्हें भी लाइसेंस लेना जरूरी है.

सरकारी टकसाल में तैयार स्टैंडर्ड सोने की छड़ें या बिस्कुटों की शुद्धता भी 99.5% होती है जबकि तस्करी से आने वाले बिटूर सोने के दाम स्टैंडर्ड सोने से कुछ कम ही रहते हैं. इस प्रकार बाजार में सोने के भाव भी स्टैंडर्ड, बिटूर और जेवरात के अलगअलग बताए जाते हैं.

बंबई स्वर्ण बाजार के स्वर्णकार जहां सरकार से इस बात की मांग करते दिखाई देते हैं कि सोने के साथसाथ चांदी के आयात की भी इजाजत होनी चाहिए, वहीं पर कुछ स्वर्णकारों का यह भी कहना है कि विगत में जो बड़े स्वर्ण व्यापारी तस्करों को वित्तीय सहायता पहुंचाते रहे हैं वे ही अब अपने धंधे के लिए सीमा शुल्क में ज्यादा रियायतें चाहते हैं ताकि सोने के कारोबार पर उन का वर्चस्व कायम रहे.

ऐसी ही तमाम अटकलबाजियों के बीच जब इस प्रतिनिधि ने दिल्ली के स्वर्ण बाजार का जायजा लिया और संबंधित लोगों से बातचीत की तो अखिल भारतीय

सर्राफा एसोसिएशन के अध्यक्ष शीलचंद जैन ने बताया, 'वित्त मंत्री ने स्वर्ण आयात की अनुमति दे कर न केवल सोना तस्करों की रीढ़ पर चोट की बल्कि स्वर्ण आयात की अनुमति और स्वर्ण बांड योजना का प्रस्ताव रख कर उन्होंने सोने के संबंध में तीन दशकों से चली आ रही सरकारी गलती का सुधार भी किया है. सरकार को स्वर्ण नियंत्रण नीति में बदलाव लाने हेतु हम ने जो भी सुझाव दिए थे उन्हें सरकार ने तत्काल तो नहीं माना, लेकिन अब सरकार महसूस करती है कि सोने संबंधी नीतियों को भी उदार होना चाहिए. चलो देर आयद, दुरुस्त आयद.'

दरीबा सर्राफा एसोसिएशन के अध्यक्ष रामसरन शर्मा का कहना है, 'तस्करी के धंधे में आज तक कोई भी जौहरी लिप्त नहीं रहा बल्कि यह तंत्र भी किन्हीं माफिया लोगों, भ्रष्ट मंत्रियों और बेउसूले कस्टम अधिकारियों की ही देन है. बजट में वित्त मंत्री द्वारा स्वर्ण नीति के संबंध में की गई उक्त दोनों घोषणाओं से अब सोने के दामों में ज्यादा तेजी नहीं रहेगी. वैसे भी जहां सोने के भाव उचित और स्थिर होते हैं वहां जौहरियों व स्वर्णकारों को उन की पूरी उजरत मिलती है और ग्राहक भी संतुष्ट रहता है. इसलिए सोने के दाम जितने नीचे आएंगे, लोगों की क्रय शक्ति उतनी ही बढ़ेगी.'

बुलियन मर्चेंट एसोसिएशन के महासचिव श्रीकृष्ण गोयल सोने में आई गिरावट को अस्थायी मानते हैं. इन का कहना है, 'अंतर्राष्ट्रीय बाजार में डालर की हवाला दरें और सोने का भाव ही अब भारत में सोने का भाव तय करेगा जबकि अब तक तस्करों की एकतरफा चाल से सोने के भाव तय होते थे. सोना लाने में तट कर या सीमा शुल्क के अलावा आयात का खर्चा और बिचौलियों का लाभ आगे चल कर सोने के भाव गिरने नहीं देगा.'

लेकिन एक जौहरी ने अपना नामपता न छापने का आग्रह करते हुए बताया कि 'भारतीय यात्रियों और अनिवासी भारतीयों को 5 किलोग्राम तक सोना आयात करने की इजाजत बेशक एक तर्कसंगत और जरूरी फैसला है लेकिन इस में राजनीति की गंध भी मौजूद है. सोने और नशीले पदार्थों की तस्करी, हवाला कारोबार और पाकिस्तान, भारत व खाड़ी देशों के बीच तस्करी का जाल इतना संगठित हो गया था कि कुछ भाजपाई नेता भी इस से चिंतित हो उठे थे. तभी तो भाजपाई नेता अटल बिहारी बाजपेयी ने कुछ माह पहले स्वर्ण बांड योजना शुरू करने की जोरदार वकालत की थी, जिसे अब सरकार ने मान लिया है.

'बंबई की शिवसेना भी अपने पार्टी कोष और चुनावी खर्चे के लिए उन्हीं तस्करी सम्राटों पर आश्रित रही है जिन में अब खासी अनबन चल रही है और जो अपने कारोबार की स्थितियों को देखते हुए विभिन्न राजनीतिक दलों को चंदे से मोटी रकमें देते रहे हैं. सोने संबंधी नई नीति से तस्करों की बादशाहत भले ही खतरे में पड़ती नजर आए, पर इस बात की भी कोई गारंटी नहीं है कि हवाला बाजार के माध्यम से देश का कालाधन बाहर जा कर वैध राशि के रूप में वापस नहीं आएगा.'

अतः उपर्युक्त सभी आशाओं और आशंकाओं के रहते यह कहना मुशकिल है कि मनमोहन सिंह की स्वर्ण आयात और स्वर्ण बांड की कीमियागरी अनिवासी भारतीयों को देश में ज्यादा सोना लाने के लिए प्रेरित करेगी. वैसे भी इस घोषणा के 7 दिन बाद देश में 5 किलो सोने की आमद कोई उत्साहजनक रुख नहीं है.

यह ठीक है कि उक्त दोनों नई योजनाओं के जरिए वित्त मंत्री ने स्वर्ण तस्करों की चमक को फीका कर दिखाने का यत्न किया है. पर देखना यह भी होगा कि सरकार का कस्टम विभाग उन तस्करों से कैसे निबटता है जिन के इरादे अभी भी बुलंद हैं. सोने के भावों में तेजी या गिरावट का सवाल भी ऐसा यक्षप्रश्न है कि जिन का उत्तर किसी के पास नहीं है. ●

आपकी
त्वचा पर
जो आप
देख
न पायें
मैक्सिमम
क्लेन्ज़र
को वो
सब नज़र
आये
त्वचा के पोरों की गहराई में
न और बासी मेकअप जमा
है, वहाँ तक साबुन पहुँच ही
ाता. उल्टे, साबुन आपकी
पर छाई कुदरती तेल की परत
लता है. नतीजा – रूखी,
त्वचा.
आपकी त्वचा को चाहिये मैक्मि
क्सिमम क्लेन्ज़र्स जो हौले-से
के पोरों का सारा मैल साफ़
ो साबुन की पहुँच से बाहर है.
आपकी त्वचा सूखी या
सामान्य हो, तो आपके लिये है
मैक्सिमम डीप पोर क्लेन्ज़ींग मिल्क.
यह त्वचा को स्वच्छ-निर्मल करने के
साथ-साथ उसका पोषण भी करता
है, ताकि आपका रंगरूप उज्ज्वल और
कोमल हो उठे.
तैलीय त्वचा के लिये मैक्सिमम
क्लेन्ज़र फ़ॉर ऑयली स्किन अतिरिक्त
तेल और त्वचा की बेजान सूखी परत
को पोंछ डालता है. त्वचा को
तरो-ताज़ा और स्वच्छ बनाता है
इसका सौम्य,एल्कोहॉल मुक्त फ़ार्मूला.
MAXIMUM
CLEANSERS
MAXIMUM
CLEANSER
FOR OILY SKIN
Lakmé
MAXIMUM
DEEP PORE
CLEANSING
MILK
Lakmé

तरक्की

हम बास के घर जा रहे हैं. ध्यान रहे मेरी तरक्की उसी के हाथ है.
कमबख्त बहुत सख्त है. मैं ने इतना मक्खन लगाया पर सब बेकार. तुम भी प्रशंसा करना न भूलना.

वाह! वाह!! भाभीजी, आपने तो अपना घर स्वर्ग जैसा सजा रखा है. क्यों श्रीमतीजी?

सच! ऐसे लगता है जैसे किसी पेशेवर सज्जाकार ने सजाया है.

अहा, क्या खाना है. आप सचमुच बहुत गुणी हैं. श्रीमतीजी तुम भी तो कुछ बोलो.
हांहां बहुत बढ़िया. होटल जैसा.

मेरी पत्नी श्रीमतीजी की ईमानदारी व सच्ची बातों से बहुत प्रभावित हुई. सचमुच हमारा घर आंतरिक सज्जाकार ने सजाया व खाना होटल से आया था. इसलिए तुम्हारी **तरक्की पक्की**

आप के हमसफर व्यंजन

खट्टामीठा करेला

सामग्री : 500 ग्राम करेले, ½ प्याला सफेद सिरका, 50 ग्राम गुड़, 1 छोटा चम्मच नमक, ½ छोटा चम्मच पिसी लाल मिर्च, 1 छोटा चम्मच भुना पिसा मेथी दाना, ½ छोटा चम्मच गरम मसाला, 1 छोटा चम्मच दरदरी सौंफ, 100 ग्राम छोटा प्याज (ऐच्छिक), ½ छोटा चम्मच हलदी, तलने के लिए पर्याप्त मात्रा में तेल.

विधि : करेलों को छील कर गोलगोल कचरी काट लें तथा धो कर नमक लगा कर रख दें. छोटे प्याज को छील लें तथा चीरा दे कर रख लें. कड़ाही में तेल गरम करें. करेलों को दोबारा धो कर सूखे कपड़े से पोंछ लें तथा करेलों और प्याज को तेल में तल लें. गुड़ को थोड़ा कूट लें. एक कड़ाही में 2 बड़े चम्मच तेल बघार के लिए डालें. उस में हलदी, लाल मिर्च, धनिया पाउडर, पिसा मेथी दाना व सौंफ डालें. फिर उस में सिरका डाल कर पिसा गुड़ डाल दें. गुड़ के घुलने पर करेले व प्याज डाल दें. तेल अलग होने तक पकाएं. इस प्रकार से बने करेले काफी समय तक सुरक्षित रह सकते हैं.

मसालेदार तली भिंडी

सामग्री : 1 किलो भिंडी, 2 बड़े चम्मच मूंगफली का चूरा, 1 प्याला दही, 1 बड़ा चम्मच खसखस, 1 छोटा चम्मच नमक, ¾ छोटा चम्मच हलदी, 1 छोटा चम्मच पिसा धनिया पाउडर, 1 छोटा चम्मच गरम मसाला, ¾ छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, ½ छोटा चम्मच अमचूर, तलने के लिए तेल.

विधि : भिंडी को धो कर पोंछ लें. कड़ाही में तेल गरम करें. भिंडी को बीच से चीरा दे कर रखें तथा गरम तेल में ते आंच पर करारी होने तक तल लें. खसख भिगो कर पीस लें. एक दूसरी कड़ाही में बड़ा चम्मच तेल डालें. खसखस की पेस् डाल कर भूनें. मूंगफली का चूरा डाल क मिला दें व दही डाल दें. नमक, हलदी, मि पाउडर, धनिया पाउडर डाल कर मिला फिर भिंडी डाल कर उलटेपलटें. गर मसाला व अमचूर डाल कर मिला दें. थो ठंडी होने पर सफर में ले जाने के लिए पै कर लें.

चटपटा छोलिया आलू

सामग्री : 1 किलो बड़े आकार के आलू, 250 ग्राम छोलिया (दाना), 1 बड़ प्याज, 2 बड़े टमाटर, 1½ इंच टुकड़ अदरक, 6-7 हरी मिर्च, 2 नीबू, ½ छोट चम्मच नमक, ½ छोटा चम्मच हलदी, ¾ छोटा चम्मच पिसा धनिया, ½ छोट चम्मच भुना पिसा जीरा, 1 छोटा चम्म गरम मसाला, चुटकी भर हींग, 1 छोट चम्मच चाट मसाला, तलने व बघार देने के लिए तेल.

विधि : आलू को छील कर धो लें तथा सख्त उबाल लें. ऊपर से एक छोटा टुकड़ा उतार कर बाकी आलू को खोखला कर लें. एक कड़ाही में तेल गरम कर के स आलुओं को सुनहरा तल लें (तेज आंच पर). थोड़ा ठंडा होने पर उन्हें फाइल में लपेट क पैक कर लें. यदि हरे छोलिए का मौसम न हो तो एक रात पहले 1 कटोरी काले च भिगो दें. सुबह उन्हें नमक और एक चुट खाने वाला सोडा डाल कर उबाल लें. ए कड़ाही में दो बड़े चम्मच तेल गरम करें. हींग डालें, कटा प्याज डाल कर भूनें, क टमाटर डाल कर और भूनें, नमक तथा

अन्य मसाले डालें, छोलिया डाल कर गलने तक पकाएं. इस मिश्रण को किसी लिफाफे में पैक कर लें. साबुत टमाटर, नीबू तथा बारीक कटा अदरक, हरी मिर्च का एक अलग पैकेट बना लें. सफर के दौरान जब भी इच्छा हो आलू को निकालें, उन में छोलिया भरें, अदरक, हरी मिर्च तथा कटा टमाटर डालें, चाट मसाला डालें और नीबू का रस डाल कर मजेदार चटपटे छोलिया आलू चाट का आनंद लें.

चटपटी तली अरवी

सामग्री: 500 ग्राम छोटे आकार की अरवी, 2 बड़े प्याज, 2 टमाटर, ¼ प्याला सिरका, 1 छोटा टुकड़ा अदरक, 1 छोटा चम्मच नमक, पिसा धनिया पाउडर तथा गरम मसाला, ¾ छोटा चम्मच हलदी तथा पिसी लाल मिर्च, कटी हरी धनिया, तलने के लिए तेल.

विधि: अरवी को छील कर कांटे से गोद कर धो लें. एक कड़ाही में तेल गरम करें व अरवी को सूखे कपड़े से पोंछ कर तेल में सुनहरा होने तक तल लें. तली अरवी को 15 मिनट तक सिरके में डुबोएं. प्याज तथा अदरक को कद्दूकस करें. कड़ाही में दो बड़े चम्मच तेल छोड़ कर बाकी निकाल दें. गरम तेल में कद्दूकस किया अदरक तथा प्याज डालें. बारीक
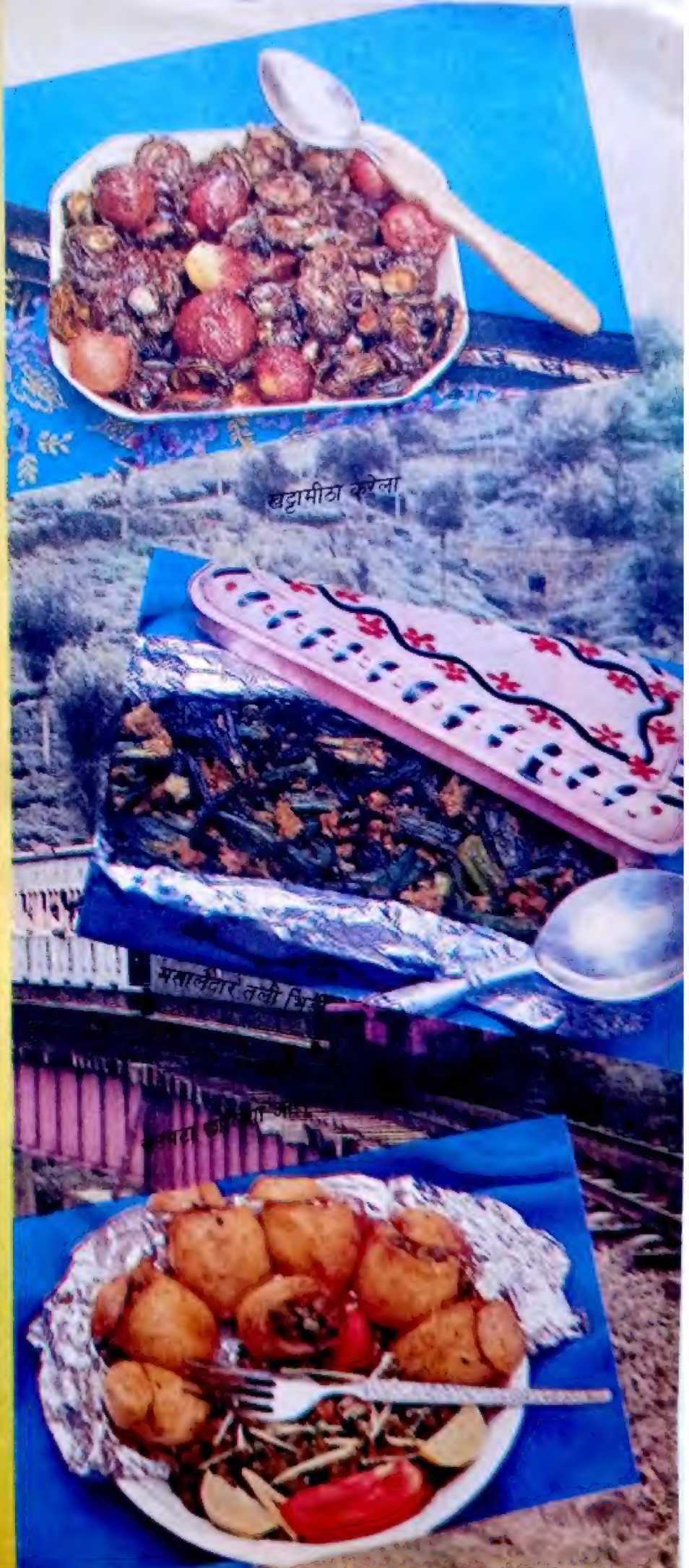
कटा टमाटर डाल कर और भूनें. नमक व अन्य मसाले डाल कर अरवी डालें. कुछ देर आंच पर पकने दें. हरा धनिया डाल कर आंच बंद कर दें व टिफिन में पैक कर लें.

मैकरोनी राजमा सलाद

सामग्री: 100 ग्राम शेल मैकरोनी, 1 कटोरी राजमा, 250 ग्राम पत्तागोभी, 4-5 गाजर, 2 शिमला मिर्च, 2 बड़े चम्मच टमाटर सास, 2 बड़े चम्मच दही, 1 चम्मच नमक, 1 चम्मच हरी मिर्च सास (बाजार में उपलब्ध है), ½ छोटा चम्मच सिरका व सोया सास, 1 बड़ा.

विधि: मैकरोनी को नमक मिले पानी में उबाल लें. उबली मैकरोनी पर ठंडा पानी डालें व एक बड़ा चम्मच तेल मिला लें. राजमा को एक रात पहले भिगो दें व सुबह नमक तथा चुटकीभर मीठा सोडा डाल कर उबाल लें. पत्तागोभी, शिमला मिर्च तथा गाजर को काट लें. सारी सामग्री को एकसाथ मिला लें तथा डब्बे में पैक कर लें.

पूरी

सामग्री: 250 ग्राम गेहूं का आटा, 250 ग्राम मैदा, 500 ग्राम उबले आलू, 1 बड़ा चम्मच सूखी मेथी की पत्तियों का पाउडर, 1 छोटा चम्मच नमक, ½ छोटा चम्मच अजवाइन, ½ छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, तलने के लिए तेल.

विधि: उबले आलुओं को कस लें, आटा व मैदा मिला कर छान लें. उस में नमक व लाल मिर्च तथा अजवाइन मिला लें. कसे आलू मिला कर एकसार करें. आवश्यकतानुसार पानी मिला कर थोड़ा सख्त गूंथ लें व 15 मिनट ढक कर रख दें. कड़ाही में तेल गरम करें व पूरी बना कर तल लें. सफर में सब्जी के साथ या अचार के साथ खाएं व खिलाएं.

कुरकुरी खस्ता रोटी

सामग्री: 2 कटोरी गेहूं का आटा, 1 कटोरी बेसन, 1 कटोरी चावल का आटा, 1 कटोरी खट्टा दही, 2 बड़े चम्मच तेल, 2-3 प्याज बारीक कटे, 3-4 हरी मिर्च बारीक कटी, 1" टुकड़ा अदरक, 1 बड़ा चम्मच सफेद तिल, 1 बड़ा चम्मच कसूरी मेथी, 1½ छोटा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1 छोटा चम्मच सौंफ, तलने के लिए तेल.

विधि: सभी आटों को एक साथ मिला लें व उन में नमक, मेथी, सौंफ, मिर्च पाउडर तथा तिल डाल लें. 2 बड़े चम्मच तेल डाल कर अच्छी तरह मिलाएं. कटा प्याज, हरी मिर्च व अदरक मिलाएं, खट्टा दही डाल कर सख्त आटा गूंथें. तवे को गरम करें. गुंथे आटे की मोटी रोटी बनाएं तथा रोटी के बीच में बड़ा सा छेद कर दें. गरम तवे पर रोटी डाल कर चारों तरफ तथा छेद में तेल डाल दें तथा रोटी को ढक दें. मंदी आंच पर सिकने दें. जब सुनहरी सिक जाए तो पलटा कर दूसरी तरफ तेल डाल कर पुनः ढक दें. दोनों तरफ सुनहरी सिक जाने पर कुरकुरी रोटी तैयार है. यह 5-6 दिन तक खराब नहीं होती.

इमली भात

सामग्री: 500 ग्राम बासमती चावल, 60 ग्राम इमली, 1 कटोरी चना दाल, 1¼ कटोरी तिल्ली अथवा मूंगफली का तेल, 8-10 साबुत लाल मिर्च. 1½ छोटा चम्मच सरसों, थोड़ी सी मीठी नीम पत्तियां, 1 चुटकी हींग, 2 लौंग तथा छोटा टुकड़ा दालचीनी, 1 बड़ा चम्मच तिल, ½ छोटा चम्मच हल्दी.

विधि: चावलों को साफ कर के धो कर भिगो दें. इमली को गरम पानी में भिगो दें. फिर उस का गाढ़ा रस निकाल कर छान लें. दाल को भी धो कर भिगो दें. प्रेशर कुकर में ¼ कटोरी तेल डालें, एक चुटकी हींग डालें. फिर साबुत मिर्च व सरसों तड़काएं. 8-10 मीठी नीम पत्ती तथा तिल डालें और चावल डाल कर थोड़ा भूनें. फिर डेढ़ गुना पानी तथा नमक व हल्दी डाल कर मिलाएं. कुकर का ढक्कन बंद कर के दो

चटपटी तली अरबी

मैकरोनी राजमा सलाद

मसाला रोटी

इमली भात

सीटी आने तक पकाएं. एक दूसरे बरतन में बाकी का तेल गरम करें. गरम तेल में सरसों, साबुत लाल मिर्च तथा मीठी नीम पत्ती डालें. उस में भीगी दाल डाल कर भूनें. फिर थोड़ा सा पानी डाल कर दाल गलने तक पकाएं. पिसी लौंग, दालचीनी व नमक डालें. इमली का रस डाल कर तेल अलग होने तक पकाएं. सफर पर जाते समय चावल व दाल इमली मिश्रण को अलगअलग पैक कर के ले जाएं. खाते समय स्वादानुसार मिश्रण चावल में मिलाएं व जायकेदार इमली भात का आनंद लें.

दलिया भेलपूरी चाट

सामग्री: 2 कटोरी भुना दलिया, ½ छोटा चम्मच सरसों, 2-3 साबुत लाल मिर्च, थोड़ी सी नीम पत्ती, 2 बड़े चम्मच चने की दाल, 2 आलू, 3 बड़े चम्मच तला मूंगफली दाना, 2 प्याज, 2-3 हरी मिर्च, 2 टमाटर, 2 नीबू, 50 ग्राम मुरमुरे, 50 ग्राम बेसन के सेव, 50 ग्राम मैदे से बनी पापड़ी, स्वादानुसार नमक, 1½ छोटा चम्मच भेलपूरी मसाला, तलने व बघारने के लिए तेल, साथ में खाने के लिए इमली की मीठी चटनी.

विधि: आलू को छोटेछोटे चौकोर टुकड़ों में काट कर तल लें. मैदे में मोयन डाल कर थोड़ा नमक डाल कर सख्त गूंथें तथा उस की पापड़ी बना लें. एक पैन में 1 बड़ा चम्मच तेल डालें. गरम तेल में सरसों, लाल मिर्च तथा मीठी नीम पत्तियां डाल कर चटकाएं, चने की दाल डाल कर भूनें. फिर नमक तथा थोड़ा पानी डाल कर दाल पका लें, फिर दलिए में दो गुना पानी डाल कर उबालें, उबाल आने पर भुना दलिया डालें, स्वादानुसार नमक डाल कर ढक कर पकाएं. पक जाने पर इसे डब्बे में पैक कर लें. तले आलू व मूंगफली को भी अलग से पैक कर लें. सफर के दौरान जब भी इच्छा हो, दलिया निकालें उस में कटा प्याज, टमाटर, हरी मिर्च डालें. तले आलू, मूंगफली, मुरमुरे व बेसन के सेव तथा पापड़ी मिलाएं, नमक व भेलपूरी मसाला उस में मिलाएं तथा नीबू निचोड़ कर चाट का आनंद लें. इच्छा हो तो इमली की मीठी चटनी भी डाल सकते हैं.

मटर चाट

सामग्री: 250 ग्राम सूखे हरे मटर दाने, 1 छोटा चम्मच नमक, ½ छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, ½ छोटा चम्मच भुना पिसा जीरा, 1 छोटा चम्मच काला नमक, 1 छोटा चम्मच अमचूर, 2 बारीक कटे प्याज, 4-5 हरी मिर्च, 1 छोटा टुकड़ा अदरक, 2 टमाटर, 2 नीबू, तलने के लिए तेल, ¼ छोटा चम्मच मीठा सोडा, 1 चम्मच चाट मसाला.

विधि: मटर को धो कर रात को पानी में भिगो दें. सुबह उस का पानी बदलें. रात को फिर पानी बदल कर सोडा डाल कर पुनः भिगो दें. सुबह उन्हें साफ पानी से धो कर साफ कपड़े पर छांव में फैला दें. कड़ाही में तेल गरम करें. मटर को तेज आंच पर तल कर रख लें. नमक व चाट मसाले के अलावा अन्य मसाले मिलाएं व डब्बे में बंद कर के रख लें. सफर के दौरान कागज की प्लेट में मटर निकालें, कटा प्याज, अदरक, हरी मिर्च, टमाटर डाल कर मिलाएं. चाट मसाला डाल कर नीबू निचोड़ कर चटपटी चाट का आनंद उठाएं. — मृदुल जैन •

मई (द्वितीय) अंक के पकवान

- अंगूरी अमृत
- पनीरी खीर दही
- ठंडी फ्रूट खीर
- ठंडे मैलटिंग मोमेंट्स
- चोकोनट कुल्फी

मोह भंग

गतांक से आगे

कहानी • निर्मला अर्गल

चंदा के आंसू बह रहे थे. रोतेरोते वह फट सी पड़ी.

"भविष्य की चिंता सिर्फ तुम्हें नहीं, मुझे भी है दीदी. तुम तो मुझे निरी बेवकूफ ही समझती हो, पर मैं भी खूब समझती हूं... इस तरह तुम बच्ची को मुझ से छीनना चाहती हो. कोख का दर्द तुम क्या जानो, पालनेपोसने से ही कोई अपना नहीं हो जाता. तुम लाख कुछ भी करो, पिंकी मेरी है और मेरी ही रहेगी. मेरी जगह तुम कभी नहीं ले पाओगी. पर तुम्हें यह सब समझ नहीं आएगा, बच्चा कभी जना होता तब तो बच्चों की पीड़ा जानतीं?"

चंदा की बातें सुन कर सुबीरा जड़ हो गई थी. जातेजाते पिंकी से गले लग के चंदा बोली, "इस बार तेरा जन्मदिन उसी घर में मनाऊंगी, हमें भी आता है मनाना जन्मदिन. तेरे लिए नया फ्राक लाई हूं. तेरी सारी फ्राकों से अच्छा और कीमती है. परीक्षा के बाद मैं तुझे लेने आऊंगी."

अंधेरे में बैठा प्रमोद चौंक पड़ा. सुबीरा जाने कब उस के पास आ कर खड़ी हो गई थी. वह उस

से खाने का आग्रह कर रही थी, पर उस की भूख तो खत्म हो गई थी. वह सोच रहा था कि मां ने यह किस झंझट में फंसा दिया उसे. इस से तो वे दोनों अकेले ही अच्छे थे.

रात दोनों ने निश्चय किया कि अब पिंकी को उस की मां के पास छोड़ आने में ही भलाई है. एक मां की ममता का गला घोंट कर उन्हें सुख कैसे मिलेगा? फिर पिंकी तो मांमां की रट लगाए रहती है.

दूसरे दिन सुबह ही प्रमोद पिंकी को उस के घर छोड़ आया. आज उस का मन

"पिंकी, बिट्टू को बत्ती जलती हो तो नींद नहीं आती. तुम क्या दिन में नहीं पढ़ सकती." मां ने बिट्टू को बाम लगाते हुए पिंकी से कहा.

बड़ा उदास था. बिना किसी से मिले वह चुपचाप लौट आया. दिनभर दफ्तर में भी उस का मन नहीं लगा. पिंकी को ले कर कई प्रश्न उस के दिलोदिमाग में उभरते रहे. शाम को घर लौटा, तब तक वह काफी संभल चुका था.

सुबीरा भी ऊपर से काफी सहज दिखने का प्रयास कर रही थी, हालांकि उस की आंखों से झांकती पीड़ा प्रमोद ने पढ़ ली थी. दोनों ने पिंकी के विषय में जानबूझ कर कोई बात नहीं की.

रविवार के दिन प्रमोद ने कहीं घूमने की योजना बना ली. अवसाद की काली छाया उन की छुट्टी का मजा किरकिरा न कर दे, इसलिए वह कुछ अधिक ही उत्साहित था. अभी दोनों चाश्नाश्ते से निबटे भी न थे कि अम्मां, सुमोद, चंदा और पिंकी आ पहुंचे.

पिंकी को प्रमोद के आगे खींच कर खड़ा करते हुए सुमोद बोला, "लो संभालो भैया अपनी लाड़ली बिटिया को... हम से तो इस के नखरे उठाए नहीं जाते."

"नहीं, अब पिंकी वहीं रहेगी. किसी की ममता के आंसुओं से अपनी झोली भरने का हमें कोई शौक नहीं है... हम इतने कठोर नहीं हैं."

"पर बेटा, चंदा अब..."

"नहीं अम्मां, बहुत हुआ यह नाटक, अब और नहीं... अपमान सहने की भी एक सीमा होती है.'

"बेटा, चंदा अपने किए पर शर्मिंदा है, अब कभी वह ऐसा नहीं कहेगी. उस की तरफ से मैं माफी मांगती हूं तुम दोनों से.

मेरे ही कारण तुम दोनों को यह अपमान सहना पड़ा. असली दोषी तो मैं हूं. मैं ने ही जोर दिया था. मुझे क्या पता था कि स्वीकृति देने के बाद भी चंदा ऐसा करेगी." मां के आंसू बहने लगे थे.

सहसा चंदा आगे बढ़ी और सुबीरा से बोली, "दीदी, मुझे माफ कर दो, मेरा यह मतलब न था..."

सुमोद भी बोल उठा, "भाभी, पिंकी को अपने पास ही रखो. तुम्हारे संरक्षण में रही तो कुछ बन ही जाएगी."

फिर सब कुछ पहले जैसा चलने लगा था. चंदा ने फिर कभी अपना अधिकार नहीं जताया. पर पिंकी के बाल मन में जो बात बचपन से बैठी थी वह कभी दूर नहीं हो पाई. वह यह कभी नहीं भूली कि उसे मातापिता से अलग कर के ताऊताई के पास रखा गया है.

हालांकि उन के यहां किसी चीज की कमी न थी उस के लिए, पर एक एहसास सदा पिंकी के मन में पलता रहा कि जिस मां की ममता पर उस का सहज अधिकार है, उसी से वंचित रखा गया है उसे. आखिर उस के साथ ही यह अन्याय क्यों? उम्र के साथ यह एहसास भी बढ़ता गया. ऊपर से वह शांत, आज्ञाकारी बच्ची बनी रहती, पर अंदर उस के एक ज्वालामुखी धधकता रहता.

कई बार पिंकी को लगता कि वह विद्रोह कर दे, पर ताऊजी और ताईजी का निश्छल स्नेह उसे रोक देता. कुछ भी हो, ऐसे प्यार भरे दिल भी तो उस से नहीं तोड़े जा सकते थे.

फिर भी कहीं कोई एक कांटा सा हरदम उस के सीने में गड़ता रहता. इस चुभन को बढ़ावा देती उस की सहेली देवा. वह स्वयं सौतेली मां के व्यवहार से पीड़ित थी. मन ही मन वह पिंकी से ईर्ष्या भी करती थी, उस के मन में बराबर वह भरती रहती, "मां की जगह कोई दूसरी स्त्री नहीं ले सकती. मां आखिर मां ही होती है. मां और बच्चे का रिश्ता दुनिया के हर रिश्तों से ऊपर है."

पिंकी बड़े चाव से अपने मातापिता के पास जाती. दादी के पास बैठ कर घंटों बातें करती. मां से मनपसंद व्यंजन बनवा कर खाती. घूमफिर कर लौटती तो उस की उदासी सुबीरा से छिपी न रहती.

चंदा अब भी उस से मिलने आती, पर जैसेजैसे समय बीतता जा रहा था, उस के चक्कर कम होते जा रहे थे. पम्मी के जन्म के बाद तो वह और अधिक व्यस्त हो गई थी.

इधर अम्मां का स्वास्थ्य भी बेहद गिरता जा रहा था. प्रमोद और सुबीरा इलाज के बहाने उन्हें अपने पास ले आते, पर थोड़ी सी तबीयत सुधरते ही वह फिर चली जातीं. उन के प्राण तो अपने पुराने घर में ही बसते थे. एक रात वह बड़ी खामोशी से चल बसीं तो चंदा पर मुसीबत टूट पड़ी.

अम्मां कम से कम बच्चों को तो संभाले रहती थीं. अब तो घरगृहस्थी के कामों के अतिरिक्त उसे बिट्टू और पम्मी को भी संभालना पड़ता था. ऐसे में जब कभी पिंकी पहुंच जाती तो उसे राहत महसूस होती. पिंकी दिन भर छोटे भाईबहन को व्यस्त रखती तो चंदा घर के काम निबटा लेती.

बचपन में ही पिंकी को उस की ताईजी ने गोद ले लिया था. लेकिन पिंकी कभी भी इस घर को अपना नहीं समझती थी, इसी लिए एक दिन अचानक वह अपने मातापिता के पास रहने आ गई. परंतु जल्द ही उस का ऐसा मोहभंग हुआ कि उसे अपने पराए और पराए अपने लगने लगे.

"मुझे माफ कर दो ताईजी, मैं ने बहुत गलती की. परंतु अब समझ गई हूं कि आप ही मेरे असली मांबाप हैं..." कहते हुए पिंकी ताई की गोद में सिर रख कर फफक पड़ी.

समय कैसे दबे पांव गुजरता रहता है, पता ही नहीं चलता. देखते ही देखते पिंकी बच्ची से किशोरी बन गई. सही देखभाल और परवरिश के बीच उस का रूपरंग निखरता जा रहा था. पढ़ाई में भी वह बहुत अच्छी प्रगति कर रही थी. प्रमोद पिंकी को डाक्टर बनाना चाहता था. सुबीरा उस की पढ़ाई का पूरापूरा ध्यान रखती. परीक्षा के दिनों में फलों का रस पिलाती और बादाम खिलाती. पढ़ाई के दिनों में स्कूल आनेजाने में उस का अधिक समय नष्ट न हो, इसलिए प्रमोद ने उस के लिए मोपेड खरीद दी थी.

11वीं कक्षा की परीक्षा में पिंकी को आशातीत सफलता मिली. अब उसे कालिज में प्रवेश लेना था, साथ ही डाक्टरी की प्रवेश परीक्षा में भी बैठना था.

लेकिन अचानक एक दिन पिंकी ने महत्त्वपूर्ण निर्णय ले डाला. उस ने ऐलान किया कि अब वह आगे की पढ़ाई अपने मातापिता के पास रह कर ही करेगी. उस का कालिज भी वहां से पास था और उस की कई सहेलियां भी उधर ही रहती थीं. पिंकी का यह निर्णय प्रमोद और सुबीरा के लिए अप्रत्याशित न था, वे तो बचपन से ही पिंकी की यह इच्छा जानते थे.

दोनों मन ही मन निश्चय कर बैठे थे कि जिस दिन भी पिंकी जाना चाहेगी, वे नहीं रोकेंगे. किसी को बांध कर कोई कब तक रख सकता है. यही क्या कम था कि पिंकी इतने बरस उन के साथ रही.

फिर भी प्रमोद बोला, "वहां तुम्हें पढ़ने में असुविधा होगी, जगह की कमी भी है... एक ऊंचा ध्येय है तुम्हारे सामने. मैं चाहूंगा कि जो सपना तुम ने बचपन से पाला है अपने मन में, उसे अवश्य प्राप्त करो."

"सपना पूरा करने के लिए जगह की

(शेष पृष्ठ 163 पर)

संबंध

धारावाहिक उपन्यास • जसोदा अग्रवाल

पूर्व कथा

ट्रेन के प्रथम कूपे में घुसते ही शिखा ने अपने तलाकशुदा पति शेखर को बैठे हुए देखा. दोनों एकदूसरे को देख कर आश्चर्यचकित रह गए. धीरेधीरे दोनों में बातचीत शुरू हो गई और शेखर बीती यादों के साए में डूब गया, जब उस की शिखा से शादी हुई थी. हंसीखुशी में उन के दिन गुजर रहे थे कि सुषमा की मृत्यु की खबर ने सब को हिला दिया. ऐसे में शिखा के मां बनने की खबर से शोकाकुल घर में आशा का संचार हुआ लेकिन शिखा बच्चे को जन्म नहीं देना चाहती थी. जब शेखर बच्चे को जन्म देने के प्रश्न पर अड़ा रहा तो शिखा और शेखर में छोटीछोटी बातों पर तूतूमैंमैं होने लगी.

गतांक से आगे

शेखर का भरसक प्रयास यही होता कि शिखा खुश रहे, ताकि उस की मानसिक स्थिति का बच्चे पर विपरीत प्रभाव न पड़े. शिखा भी अपनेआप को खुश रखने का प्रयास करती. कभीकभार वह खुश रहती थी, परंतु ज्यादातर या तो वह बीमार रहती या शेखर से किसी बात पर झगड़ रही होती. कभीकभी परेशान हो कर शेखर घर से ही बाहर निकल जाता.

लेकिन शिखा में एक परिवर्तन अवश्य आया था. अब शिशु को जन्म देने के नाम पर उस का क्रोध जैसे हवा हो गया था. कभीकभी अपने पेट पर वह इस तरह हाथ फेरती, मानो बच्चे को दुलार रही हो. बच्चे के प्रति अब उस के मन में ममता का समंदर हिलोरें मारने लगा था.

परंतु अब उस के दिमाग को एक नए भय ने आ घेरा था. इस भय की कल्पना करते ही उस का सारा अस्तित्व मानो सिहर उठता. एक दिन उस ने पति से कहा, "शेखर."

"हूं..." पत्रिका के पन्ने उलटता हुआ शेखर बोला.

"छोड़ो न यह पत्रिका." शिखा ने झुंझला कर कहा.

"लो बाबा, छोड़ दी, अब बोलो."

"औरतें बच्चे को जन्म देते समय मर भी जाया करती हैं न?"

"तुम कहना क्या चाहती हो?"

"पहले मेरे सवाल का जवाब दो." शिखा ठुनकती हुई बोली.

"आजकल ऐसा नहीं होता."

"होता है." शिखा ने जिद भरे स्वर में कहा.

"अरे बाबा, होता होगा... परंतु वे दिन गए, जब 100 में 2-3 औरतें मर जाया करती थीं."

"मान लो, इस बार उन 2-3 औरतों में मैं हुई तब?"

"ऐसा कुछ नहीं होगा." शेखर ने बुरा सा मुंह बनाया.

"मान लो, हो गया तो?"

"अरे, जो नहीं होना है, उसे मैं बेकार में क्यों मान लूं."

"शेखर, मुझे बहुत डर लगता है."

"तुम ख्वाहमख्वाह डर रही हो."

"यदि मैं मर गई तो बच्चे का क्या होगा?"

"पता नहीं." शेखर चिढ़े हुए स्वर में बोला.

"तुम ऐसा करना, तब बच्चे को मेरे बड़े भाई अशोक को दे देना."

"और कुछ?"

"यानी तुम भी मानते हो कि मैं मर सकती हूं." शिखा रोआंसे स्वर में बोली, "तुम बोलते क्यों नहीं?"

"क्या बोलूं? तुम सोच रही हो कि मर जाओगी. मैं कहता हूं, तुम्हें कुछ नहीं होगा, पर तुम सुनती कहां हो."

"सच."

"जी हां." शेखर चिढ़ कर बोला.

"तुम तो नाराज हो गए."

"हां, हो गया. अब मुझे खुश करो."

"कैसे."

"तुम्हीं सोचो."

"धत्." शिखा का चेहरा शर्म से लाल हो गया.

"वाह, क्या अदा है." शेखर मुसकराया, "प्रकृति ने भारतीय नारी को बनाते समय अपना सारा दिमाग लगा दिया था शायद. तभी यह दुनिया में सब से निराली है."

शेखर दफ्तर में बैठा फाइलों में अपना सिर खपा रहा था कि टेलीफोन की घंटी ने उस का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया.

"हैलो."

"भैया, दूसरी तरफ से चंचल बोल रही थी, "जल्दी घर पहुंचो."

"क्यों, क्या हुआ?" किसी आशंका से शेखर का दिल बुरी तरह धड़क उठा.

"भाभी को खड़ेखड़े अचानक चक्कर आया और वह गिर गईं."

"क्या? उसे चोट तो नहीं आई? तुम बोलती क्यों नहीं? कुछ तो बोलो."

"वह जब से गिरी हैं, तब से बेहोश हैं."

"तुम ने डाक्टर को बुलाया या नहीं."

"मैं ने उन्हें फोन करने के बाद ही तुम्हें फोन किया है. तुम जल्दी घर पहुंचो."

गाड़ी तेज गति से चलाने के बावजूद शेखर आधे घंटे में घर पहुंचा.

वह दौड़ता हुआ अपने कमरे की तरफ गया. कमरे में शिखा पलंग पर लेटी हुई थी. वह अभी तक बेहोश थी. उस की बगल में

शांति देवी व चंचल बैठी थीं. डाक्टर भी पहुंच चुका था.

डाक्टर के हाथ में शिखा की कलाई थी. उस के चेहरे पर चिंता के गहन भाव थे.

"क्या बात है, डाक्टर साहब?" शेखर ने घबराए स्वर में पूछा.

"हमें शिखा को तुरंत हस्पताल ले चलना चाहिए."

"कोई गंभीर बात है क्या?" शांति देवी ने पूछा.

"कोई गंभीर बात तो शायद नहीं.... परंतु इसे हस्पताल ले जाना आवश्यक है. यह किसी भी समय बच्चे को जन्म दे सकती है. फिर इस का ज्यादा लंबे समय तक इस अवस्था में बेहोश रहना भी ठीक नहीं है. मैं अभी नर्सिंग होम टेलीफोन किए देता हूं. वहां से एंबुलेंस आ जाएगी... साथ ही शिखा

हो गई. वह जानने को उत्सुक हो उठा कि लड़का हुआ कि लड़की.

"क्या हुआ डाक्टर?" शेखर उस के पास जा कर बोला.

चंचल और शांति देवी भी शेखर की बगल में आ खड़ी हुईं. डाक्टर अंजना ने जवाब देने से पहले बड़ी उदास नजरों से शेखर की तरफ देखा. उन नजरों को शेखर ने भी पढ़ा. "लड़की हुई है क्या? यदि ऐसा है तो कोई बात नहीं."

"नहीं..." डाक्टर जल्दी से बोलीं, "लड़की नहीं, लड़का हुआ है."

शेखर, चंचल और शांति देवी के चेहरे खिल उठे.

"बहुतबहुत धन्यवाद, डाक्टर." शेखर बोला.

"धन्यवाद अपनी पत्नी को दीजिएगा.

बच्चे को जन्म देने के नाम से कतराने वाली शिखा के मन में अब बच्चे के प्रति ममता का समंदर हिलोरें मारने लगा था. पिता बनने की कल्पना से शेखर भी कम खुश नहीं था. लेकिन जब बच्चे ने जन्म ले कर इस दुनिया में आंखें खोलीं तो अचानक ही जैसे सब की खुशी पर वज्रपात हो गया.

की जांच कर रही डाक्टर भी."

आननफानन शिखा को नर्सिंग होम में भरती करा दिया गया. वहां पहुंचने के एक घंटे बाद उसे होश आया. परंतु इस के साथ उस की चीखें आरंभ हो गईं.

डाक्टर अंजना शिखा को प्रसूति गृह में ले गईं. तकरीबन एक घंटे तक शेखर चक्करघिन्नी की तरह बाहर चक्कर लगाता रहा. जब भी कोई नर्स बाहर निकलती, वह उस की तरफ तेजी से लपकता. परंतु उसे कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिलता तो वह दांत पीस कर रह जाता.

एकाएक प्रसूति गृह का दरवाजा फिर से खुला. इस बार स्वयं डाक्टर अंजना बाहर आईं. उसी समय एक बच्चे के रोने की आवाज भी सुनाई दी.

शेखर के हृदय की धड़कनें अनियंत्रित

वही इस की असल हकदार है." पहली बार होंठों पर एक क्षीण सी मुसकराहट नजर आई.

"चंचल," शांति देवी मारे खुशी के बोलीं, "जा बेटी, अपने पिता को खबर कर कि पोता हुआ है."

"डाक्टर, मैं अपने पोते का मुंह कितनी देर में देख सकूंगी?" शांति देवी ने पूछा.

"बस, अभी थोड़ी ही देर में."

शीघ्र ही शिखा को नर्सें अपने कमरे में पहुंचा गईं. जैसे ही उस की नजरें शेखर से टकराईं, उस के चेहरे पर एक फीकी सी मुसकराहट दौड़ गई. शेखर का दिल चाहा कि वह दौड़ कर शिखा का मुंह चूम ले.

शिखा के पीछेपीछे एक नर्स कपड़े में

(शेष पृष्ठ 169 पर)

सदा स्वच्छ रहे पीने का पानी
पर्लपेट ही रखे ये सावधानी

स्वच्छ, कीटॉणु रहित पानी के लिए आप कितना यत्न करती है. फिल्टर से छॉनती है. उबालती भी है. तब जाकर वो होता है पीने लायक. इसके अलावा जूस और स्कवैश के लिए भी तो आप रखती है अतिरिक्त सावधानी. आखिर क्यों नहीं – सवाल आपके परिवार की सेहत का जो है. **आपके इसी प्यार और स्वच्छता की जरूरत को समझती है – पर्लपेट सुप्रीम बोतलें.**

अनब्रेकेबल, गन्धरहित, और अपने मज़बूत मुँह के कारण एकदम लीकप्रूफ. **अर्न्तराष्ट्रीय स्तर के फूड ग्रेड मैटीरियल से बनी –** स्वच्छता का दूसरा नाम – पर्लपेट सुप्रीम. ***इसके चौड़े मुँह के कारण पानी रखना बिल्कुल आसान. इसकी सफाई तो जैसे चुटकियों का काम. और तो और इनमें रखा पानी तुरन्त ठंडा होता है।***

ध्यान रखें, पर्लपेट सुप्रीम बोतलों के ढक्कन पर पर्लपेट का नाम ही इसके असली होने का प्रमाण है.

भरने की सुविधा | निकालने की सुविधा | सफाई की सुविधा

अनब्रेकेबल • लीकप्रूफ • गन्धरहित • ज्यादा स्वच्छ • फूड ग्रेड

JARS • BOTTLES • CONTAINERS

आपके किचन का सोलह श्रृंगार!

Karishma/PP/3/9014 Hin

पर्यटन
पूर्व अर्ध भारत के 35 से अधिक पर्यटन स्थलों पर
पहुंचने, रहने, खानेपीने व घूमने की नवीनतम
जानकारी जो आप के पर्यटन का मजा दोगुना कर देगी

परिशिष्ट
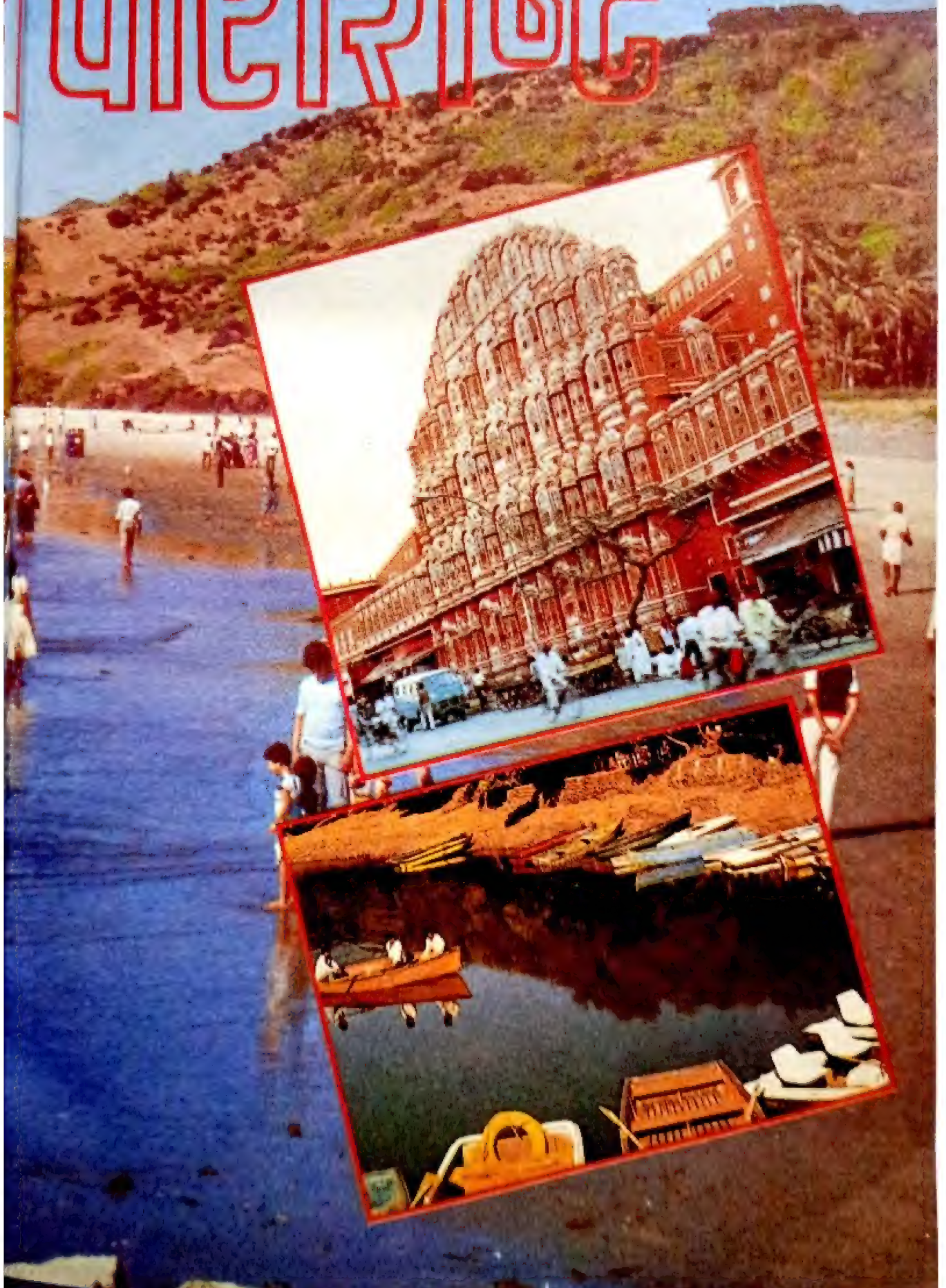
शिमला

हिमालय की घनी वादियों व पर्वत श्रेणियों से घिरा यह शहर देश के प्रमुख पर्यटक स्थलों में से एक है. 'पर्वतीय नगरों की रानी' नाम से प्रसिद्ध इस शहर की खूबसूरत वादियां व प्राकृतिक सौंदर्य आप के मन को छू लेगा.

समुद्रतट से 2,213 मी. की ऊंचाई पर स्थित यह पर्यटन स्थल लगभग 12 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है.

शांत व उल्लासमय वातावरण के लिए प्रसिद्ध शिमला विभिन्न उतारचढ़ावों के बाद अपने वर्तमान स्वरूप में आया. 1819 में अंगरेजों ने अपनेआपको यहां स्थापित किया. धीरेधीरे यह अंगरेज अफसरों का ग्रीष्म ऋतु बिताने का प्रिय स्थान बन गया. सन 1864 में लार्ड लारेंस जब शिमला के वायसराय बने तो उन्होंने इसे राज की ग्रीष्मकालीन राजधानी घोषित किया.

1966 में जब हिमाचल प्रदेश को अलग राज्य के रूप में स्वीकृति मिली तब से यह राज्य की राजधानी है. इस अवधि में इस का चौमुखी विकास हुआ है. राजधानी होने के कारण अब यह बाबुओं की नगरी बनता जा रहा है और पर्यटन की सुरम्यता खो रहा है. फिर भी अगर निकटवर्ती इलाकों में ठहरा जाए तो इस पर्यटन स्थल का सही आनंद उठाया जा सकता है.

कब जाएं?

शिमला जाने के लिए उपयुक्त समय अप्रैल व अक्तूबर के मध्य अथवा दिसंबर व मार्च के बीच है.

शिमला ठंडा शहर है तथा समयसमय पर यहां बर्फ गिरती रहती है. इसलिए मौसम के अनुरूप वस्त्र चयन पर विशेष ध्यान दें. गरमी व शरद ऋतु में हलके ऊनी वस्त्र व सर्दी के मौसम में भारी ऊनी कपड़े साथ ले जाएं.

कैसे जाएं?

शिमला पहुंचने के लिए मुख्य परिवहन व्यवस्था रेल व बस द्वारा उपलब्ध है. किंतु वायुमार्ग से जाने के इच्छुक यात्री वायुदूत की उड़ानों, दिल्ली से पी एफ 143 (2,4,6,7), प्रातः 7.30 चंडीगढ़ से पी एफ 143 (2,4,6,7) प्रातः 8.50, कुल्लू से पी एफ 144 (1,3,5) प्रातः 9.50 आदि से जा सकते हैं. इस के अतिरिक्त जैगसन एयरलांइस ने भी दिल्ली से शिमला के लिए जे ए 101-(1,2,3,5,6,7) प्रातः 10.05 पर उड़ान सेवा शुरू की है.

देश के अन्य भागों से कालका के लिए रेलवे सुविधा उपलब्ध है. कालका से छोटी लाइन द्वारा शिमला को जोड़ा गया है. यद्यपि कालका से शिमला की यात्रा में 6 घंटे लगते हैं. पर विभिन्न सुरंगों तथा खूबसूरत प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर यह मार्ग आप को अभिभूत कर देगा व यात्रा का समय कब बीत गया आप को इस का आभास भी न हो पाएगा.

सड़क मार्ग से शिमला पहुंचने के लिए आप दिल्ली, चंडीगढ़, जम्मू, अमृतसर आदि स्थानों से सीधी बसें प्राप्त कर सकते हैं. हिमाचल प्रदेश परिवहन निगम, पंजाब रोडवेज

शिमला के लिए मुख्य रेल सेवाएं

कालका-शिमला-6.30, 6.45, 7.15, 11.50
शिमला-कालका-10.55, 13.10, 16.50, 17.45
नई दिल्ली-कालका (हिमालयन क्वीन)-6.15
कालका-नई दिल्ली (हिमालयन क्वीन)-16.35
(कालका मेल) दिल्ली-22.50
कालका मेल (दिल्ली)-23.50

व हरियाणा रोडवेज की साधारण व डीलक्स बसें प्रतिदिन शिमला के लिए उपलब्ध हैं. इस के अतिरिक्त हिमाचल टूरिज्म की विशेष बसों की सेवा का लाभ भी आप उठा सकते हैं.

कहां ठहरें?

शिमला में ठहरने के लिए प्रशासन ने उचित व्यवस्था की है. रेलवे स्टेशन व पंचायत भवन में स्थित 'पर्यटन दफ्तर' से आप रहने के स्थान की समुचित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं. अन्य मुख्य होटल हैं ओबेराय क्लार्क, एशिया द डान, शिंगार, गुलमर्ग, कोस-मोस, वुड विले.

हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा संचालित– 'होटल होलिडे होम' में भी आप ठहर सकते हैं.

क्या देखें?

क्राइस्ट चर्च: रिज पर स्थित यह चर्च उत्तरी भारत का दूसरा सब से पुराना चर्च है. चर्च की बनावट व उस की

शिमला से प्रमुख बस सेवाएं

स्थान	समय	बसों का प्रकार
दिल्ली के	प्रात: 6.00 व 7.50 बजे सायं:	साधारण
लिए	प्रात: 11.00 व सायं 7.00, 7.45	सेमी डीलक्स
पठानकोट	प्रात: 5.00 बजे	साधारण
	सायं 4.30 बजे	सेमी डीलक्स
जम्मू	प्रात: 6.00 बजे	सेमी डीलक्स
हरिद्वार	प्रात: 5.10 व सायं 5.15, 7.30	साधारण
देहरादून	प्रात: 5.10 व सायं 5.15	साधारण
धर्मशाला	प्रात: 5.00, 8.20	साधारण
	प्रात: 9.40	सेमी डीलक्स
डलहौजी	6.30 बजे सायं	साधारण
चंबा	प्रात: 4.15	साधारण
	सायं 7.00 बजे	सेमी डीलक्स
पालमपुर	प्रात: 9 बजे	सेमी डीलक्स

नोट : 1. हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम, पर्यटक मौसम के दौरान शुक्रवार व रविवार को वातानुकूलित बसें दिल्ली शिमला के लिए चलाता है.

2 दिल्ली आने वाली सभी बसें चंडीगढ़ हो कर आती हैं.
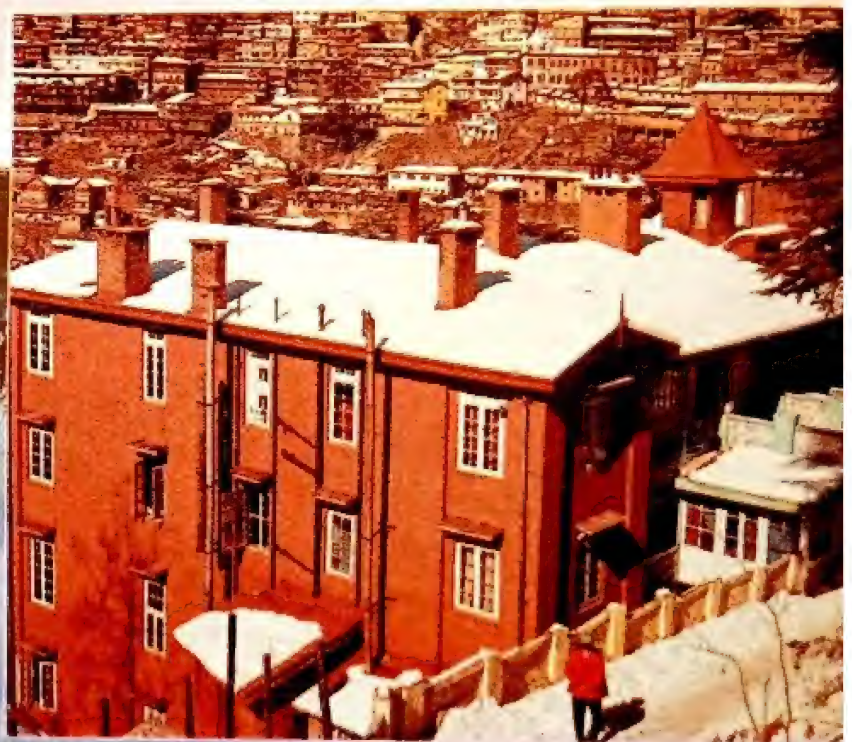
शिमला 'पर्वतीय नगरों की रानी' नाम से प्रसिद्ध है. ▲

शिमला के सनसेट प्वाइंट का प्राकृतिक सौंदर्य मन को छू लेता है. ◀

खिड़कियों में लगे रंगीन शीशे जहां एक ओर आकर्षण का केंद्र हैं, वहीं यह चर्च विश्वास, आशा, उदारता पवित्रता, सहनशीलता आदि मूल्यों का प्रतीक है.

हिमाचल राज्य संग्रहालय: **चौड़ा मैदान स्थित संग्रहालय राज्य की संस्कृति, परिवेश तथा कलाओं से हमें परिचित करवाता है. संग्रहालय में पहाड़ी स्थानों व अन्य विद्यालयों से लाए गए लघु चित्रों का आकर्षक संग्रह है. क्षेत्र की मूर्तिकला, आभूषणों व हस्त-शिल्प की झलक भी आप को संग्रहालय में मिलेगी.**

जाखू हिल: **शिमला से 2 कि.मी. दूर स्थित यह स्थल 2,455 मी. ऊंचाई पर है. प्रदेश की सब से ऊंची चोटी पर स्थित इस पर्यटन स्थल से आप शहर के विशाल दृश्यपटल व चमकदार बर्फीले पहाड़ों के मनोहारी दृश्य का अवलोकन कर सकते हैं. पहाड़ी की चोटी पर हनुमान मंदिर स्थित है. किंवदंती के अनुसार हनुमानजी लक्ष्मण के लिए संजीवनी बूटी ले कर वापस जाते समय विश्राम के लिए कुछ क्षण यहां रुके थे. जाखू हिल जाने के लिए क्राइस्ट चर्च के पास से रस्ता है.**

कुफरी: **शिमला से 16 कि.मी. दूरी पर स्थित कुफरी सर्दियों के खेलों का मुख्य केंद्र है. पर्यटकों के लिए स्कीइंग की यहां विशेष व्यवस्था है. कुफरी से 2 कि.मी. दूरी पर एक शानदार पिकनिक स्थल है. ठहरने के लिए 'इंदिरा होलिडे होम' में किफायती दामों पर स्थान उपलब्ध है.**

प्रासपेक्ट हिल: **यदि आप के दिल में सूर्यास्त व चंद्रोदय का मनोहारी दृश्य देखने की अभिलाषा हो तो शिमला के इस खूबसूरत स्थल को देखना कभी न भूलें. शिमला से 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित प्रासपेक्ट हिल से आप एक ही साथ, सूर्यास्त व चंद्रोदय के आकर्षक दृश्य का आनंद पूर्णिमा के दिन ले सकते हैं. इस के अतिरिक्त आप यहां से**

शिमला के लिए प्रमुख बस सेवाएं

स्थान	*समय*	*बस का प्रकार*
दिल्ली से	*8.20 प्रात:*	*डीलक्स*
हरिद्वार (वाया नाहन)	*10.00 रात्रि*	*साधारण*
पठानकोट	*4.30 सायं*	*साधारण*
जम्मू	*4.00 सायं*	*साधारण*
मनाली	*प्रात: 9.00 व सायं 5.30*	*सेमी डीलक्स*
धर्मशाला (वाया मंडी)	*प्रात: 5.00*	*साधारण*
धर्मशाला (वाया हमीरपुर)	*प्रात: 5.45 व 5.30 बजे सायं*	*साधारण*

नोट : मौसम व परिस्थितियों के अनुसार बसों के समय में परिवर्तन होता रहता है. निश्चित जानकारी के लिए हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम के निकटस्थ सूचना केंद्र से संपर्क करें.

पश्चिम अर्ध भारत
हवाई मार्ग
रेल मार्ग
शिमला
देहरादून
मुरादाबाद
आगरा
लखनऊ
कानपुर
गोरखपुर
पटना
गया
वाराणसी
कटनी
जबलपुर
इटारसी
बिलासपुर
रांची
जमशेदपुर
आसनसोल
खड़गपुर
कलकत्ता
नागपुर
संभलपुर
भुवनेश्वर
पुरी
वारंगल
विशाखापटनम
हैदराबाद
विजयवाड़ा
कुरनूल
गुंटकल
रेनीगुंटा
मद्रास
तिरुचिरापल्ली
रामेश्वरम
कन्याकुमारी
गंगटोक
सिलीगुड़ी
इटानगर
मुरकोंग
गुवाहाटी
शिलांग
कोहिमा
सिल्चर
इंफाल
अगरतला
एजल
पोर्ट ब्लेयर
अंडमान व निकोबार द्वी. स.

शिमला शहर, समर हिल व सोलन की अद्वितीय छटा का अवलोकन कर सकते हैं. पहाड़ी की चोटी पर स्थित कामना देवी का मंदिर भी दर्शनीय है.

नालदेहरा: शिमला से 22 कि.मी. दूर 2,044 मी. ऊंचाई पर स्थित यह स्थल प्राकृतिक सौंदर्य व 'नालदेहरा' मंदिर के लिए प्रसिद्ध है. नागदेव का प्राचीन मंदिर नाले के बीच स्थित है. स्थानीय बोली में मंदिर को 'देहरा' कहा जाता है. इसलिए इस का नाम 'नालदेहरा' पड़ गया. यहां का नौ' छिद्रों वाला गोल्फ मैदान भी दर्शनीय है. देवदार व चीड़ के वृक्षों से घिरे इस स्थान को सतलुज की निर्मल धारा अनुपम सौंदर्य प्रदान करती है.

चैल: शिमला से 45 कि.मी. दूर स्थित यह मनोरम स्थल एक जमाने में महाराजा पटियाला के राज की ग्रीष्म-कालीन राजधानी होने का गौरव प्राप्त कर चुका है. राजमहल को अब आकर्षक होटल में परिवर्तित कर दिया गया है. चैल के समीप जंगल में पक्षी व हिरण वातावरण को जीवंत बनाए रखते हैं. 'स्काटिश लाल हिरण' यहां का मुख्य आकर्षण है. खेल प्रेमियों के लिए यहां गोल्फ, क्रिकेट, टेनिस व स्क्वैश खेलने की व्यवस्था है.

यह स्थान घूमने के बाद यदि आप के पास समय बचा है तो कसौली, वाइल्ड फ्लावर हाल आदि पर्यटन स्थलों पर घूमा जा सकता है.

प्राकृतिक सौंदर्य में चंबा किसी पर्यटन स्थल से पीछे नहीं है. यह समुद्र तल से 926 मी. ऊंचाई पर स्थित है. शिवालिक पर्वत श्रेणियों को छूता व हिमालय की बर्फीली श्रृंखलाओं से घिरा चंबा मानव जाति को प्रकृति का अनुपम उपहार है. चंबा अपनी सांस्कृतिक धरोहर, मंदिरों व उत्कृष्ट लोक कलाओं के लिए भी जाना जाता है.

चंबा के दर्शनीय स्थान

चौगान : हरी मखमली घास से सुसज्जित यह मैदान स्थानीय गतिविधियों का केंद्र-बिंदु है. यहां समयसमय पर मेलों का आयोजन किया जाता है जिन में मुख्य मिजर व सूही का मेला है.

मिंजर का मेला एक सप्ताह चलता है. स्थानीय लोग इस मेले में पारंपरिक वेशभूषा में पहुंचते हैं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है.

लक्ष्मीनारायण मंदिर : यह मंदिर प्राचीन मूर्तिकला व नक्काशी का जीवंत उदाहरण है. मंदिर में स्थित शिव व विष्णु की मूर्तियां विशेष रूप से आकर्षित करती हैं. यह मंदिर पुरातत्त्व विशेषज्ञों के लिए विशेष महत्त्व रखता है.

चंबा : ठहरने के स्थान

अखंड चंडी होटल, फोन : 2371
इरावती होटल (हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा संचालित), फोन : 2671
चंपक होटल, फोन : 2774
प्रिंस होटल, फोन : 2502
यूथ होस्टल, फोन : 94
वाइल्ड फ्लावर, हाल होटल

इन के अतिरिक्त सर्किट हाउस, पी.डब्ल्यू.डी. रेस्ट हाउस, फारेस्ट रेस्ट हाउस, म्यूनिसिपल रेस्ट हाउस, टूरिस्ट लाज में भी समय पर आरक्षण करा लिया जाए तो जगह मिल सकती है.

चंबा मानव जाति के लिए प्रकृति का अनुपम उपहार है. ▲

चंबा का लक्ष्मी नारायण मंदिर प्राचीन मूर्तिकला व नक्काशी का जीवंत उदाहरण है. ◄
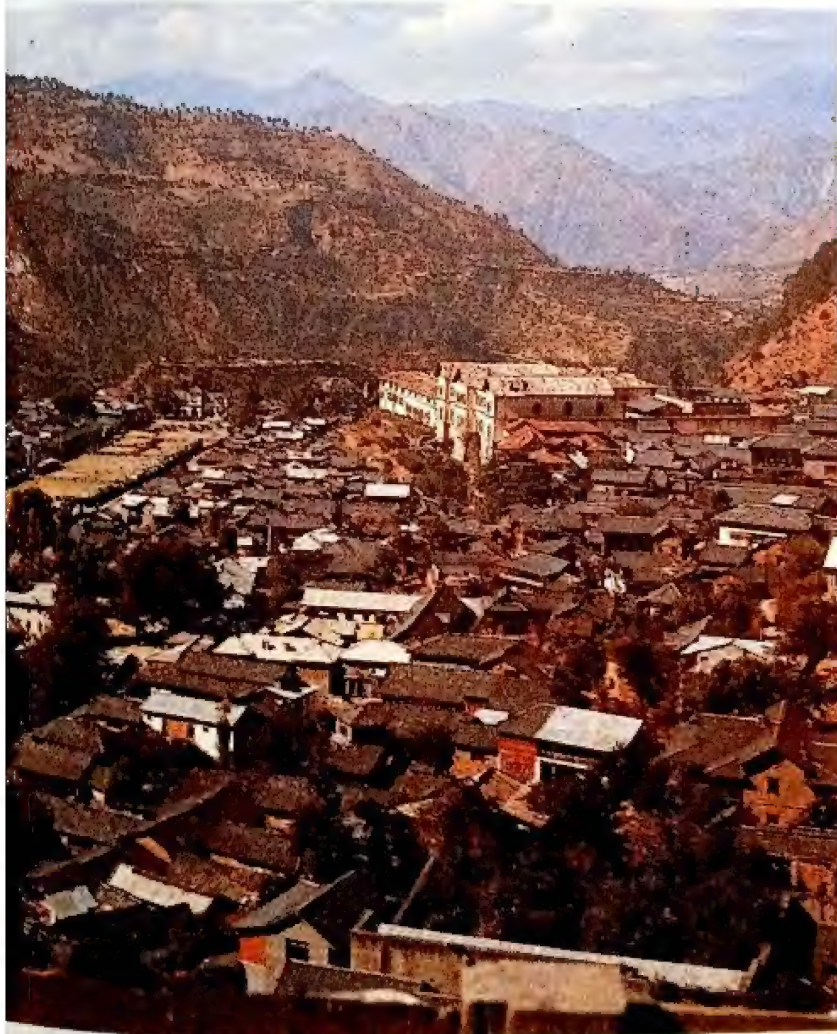
भूरीसिंह संग्रहालय : इस संग्रहालय में चंबा की प्राचीन वास्तुकला व कांगड़ा तथा वैशाली के चित्रों को संरक्षित रखा गया है. क्षेत्र के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से जुड़े शिलालेख भी इस संग्रहालय में देखे जा सकते हैं. रंगमहल पैलेस के बचे अवशेष भी यहीं संग्रहीत हैं.

सरोल : रावी नदी के तट पर स्थित यह मनमोहक पिकनिक स्थल चंबा से 8 कि.मी. की दूरी पर स्थित है. यहां की प्राकृतिक छटा हृदय को अभिभूत कर लेती है. मुरगी पालन, मधुमक्खी पालन संबंधी जानकारी भी आप यहां स्थित फार्म हाउस से ले सकते हैं.

मनीमहेश : 3950 मी. ऊंचाई पर स्थित यह झील भरमौर से 35 कि.मी. दूर है. मनीमहेश चोटी की सतह पर स्थित यह झील 'मनीमहेश कैलाश' के नाम से भी जानी जाती है. प्रतिवर्ष जन्माष्टमी के अवसर पर यहां हजारों लोग स्नान के लिए आते हैं.

क्या खरीदें?

यहां के मुख्य बाजारों गांधी बाजार व बाबू बाजार से हस्तशिल्प की शालें खरीद सकते हैं. चंबा की चमड़े की वस्तुएं व शालें प्रसिद्ध हैं. इन की खरीदारी रंगमहल स्थित राज्य सरकार के इंपोरियम व नगर की अन्य दुकानों से की जा सकती है.

डलहौजी

धौलाधार पर्वत श्रेणियों के बाहरी किनारों पर देवदार व चीड़ के वृक्षों से घिरा डलहौजी अपने प्राकृतिक सौंदर्य, पुष्ट जलवायु व मनमोहक पिकनिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है. यह उन थोड़े से पर्वतीय स्थलों में से है जहां शहरी पागलपन अभी नहीं पहुंचा है. 2036 मी. ऊंचाई पर स्थित डलहौजी 13 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला है. लार्ड डलहौजी द्वारा स्थापित यह पर्वतीय स्थल स्वास्थ्यवर्धक जलवायु व शांत वातावरण के लिए भी जाना जाता है.

डलहौजी से 28 कि.मी. दूर खजियार व 56 कि.मी. दूर चंबा दो अन्य मनोहारी पर्यटन स्थल हैं. अतः डलहौजी पर्यटन के दौरान इन पर्यटन स्थलों की भी सैर की जा सकती है.

कब जाएं? :

डलहौजी, खजियार व चंबा जाने के लिए अप्रैल से नवंबर माह के बीच का समय सब से उपयुक्त है.

कैसे जाएं?

: डलहौजी, चंबा व खजियार के लिए निकटतम हवाई अड्डा जम्मू व अमृतसर है. जम्मू के लिए इंडियन एअर लाइंस की दिल्ली से (उड़ान नं. आई सी 421 प्रातः 6.15) तथा (आई सी 423 दोपहर 12.00 बजे) सीधी उड़ान सेवाएं हैं. अमृतसर के लिए वायुदूत की (उड़ान पी एफ 133) दिल्ली से उपलब्ध है. यहां से आगे की यात्रा बस अथवा टैक्सी द्वारा तय की जा सकती है.

डलहौजी, खजियार व चंबा के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन पठानकोट है. पठानकोट के लिए मुख्य रेलगाड़ियां हैं: जम्मूतवी मेल (21.00), शालीमार एक्सप्रेस (16.10), मद्रास से मद्रास जम्मूतवी एक्सप्रेस (23.50), मंगलौर से नवयुग एक्सप्रेस (15.00), पुणे झेलम एक्सप्रेस, (17.40).

हिमाचल

डलहौजी : ठहरने के स्थान

माउंट व्यू होटल, फोन : 27
न्यू मेट्रो होटल, फोन : 133
अरोमा-एन क्लेरिज, फोन : 99
गीतांजली होटल, फोन : 55
ग्रांड व्यू होटल, फोन : 23, 94
किंग होटल फोन : 111
टूरिस्ट बंगला, फोन : 36
यूथ होस्टल, फोन : 89

धौलाधार पर्वत श्रेणियों से घिरा डलहौजी पर्यटकों के लिए मनमोहक पिकनिक स्थल है.

डलहौजी पर्वतीय स्थल स्वास्थ्यवर्धक जलवायु के लिए प्रसिद्ध है.

प्रदेश सड़क परिवहन निगम, पंजाब रोडवेज व जम्मूकश्मीर परिवहन निगम की बसें नियमित रूप से डलहौजी व चंबा के लिए चलती हैं. हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम की विशेष बसें शिमला व धर्मशाला से डलहौजी के लिए चलती हैं. खजियार के लिए डलहौजी से नियमित बसें हैं.

डलहौजी से आप खजियार और चंबा की एक दिन की त्रिकोणात्मक यात्रा भी कर सकते हैं या एक रात खजियार में रुक कर चंबा जा सकते हैं. खजियार में कई दिन तक तभी ठहरिए जब आप बिलकुल शांत वातावरण में रहना चाहें.

क्या देखें?

पंजपुला : 'पंजपुला' का शाब्दिक अर्थ है पांच पुल वाला स्थान. इस स्थान पर पांच छोटे पुलों के नीचे से झरनों की निर्मल धारा बहती है. इसलिए इस का नाम पंजपुला पड़ा. यह स्थान प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है. क्रांतिकारी भगतसिंह के चाचा अजित सिंह की समाधि व स्मारक यहां स्थित है. पंजपुला प्रधान डाकघर से केवल 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित है.

डेनकुंड : डलहौजी से 10 कि.मी. दूर 2745 मी. ऊंचाई पर यह मनोहारी पर्यटन स्थल स्थित है. इस गगनचुंबी चोटी से आसपास के विशाल परिदृश्य का अवलोकन वर्षों आप के स्मृतिपटल पर छाया रहेगा. यहां से व्यास, रावी व चेनाब की बहती धाराओं को एक साथ देखा जा सकता है.

कालाटोप : प्रधान डाकघर से 8.5 कि.मी. दूरी पर स्थित इस पर्यटन स्थल से आसपास फैले हरे मैदान, खेत व घने जंगलों का मनमोहक दृश्य दिखता है. आकाश को चूमती बर्फीली चोटियों का स्पष्ट अवलोकन भी यहां से किया जा सकता है.

सतधारा : स्वच्छ निर्मल धाराओं का यह झरना डलहौजी से पंजपुला के रास्ते में पड़ता है. इन झरनों के पानी में औषधीय गुण माने जाते हैं.

झंदरी घाट : डाकघर से 2 कि.मी. दूरी पर स्थित यह पर्यटन स्थल पुरातत्त्वीय महत्त्व का है. यहां पर चंबा के भूतपूर्व शासक का राजमहल स्थित है. देवदार व चीड़ के लंबे वृक्षों से घिरा यह एक आकर्षक पिकनिक स्थल है.

जितना इस स्थान से लिया जा सकता है, शायद ही किसी अन्य पर्वतीय स्थल से देखना सुलभ हो.

खजियार

रावी नदी की शांत घाटियों व देवदार व चीड़ के लंबे वृक्षों से घिरे इस स्थान का हर कोना प्राकृतिक सौंदर्य की चरम सीमा को छूता प्रतीत होता है. यह स्थान समुद्रतट से 1890 मी. ऊंचाई पर स्थित है. नगर के मध्य फैला 1.5 कि.मी. लंबा व 1 कि.मी. चौड़ा विशाल हराभरा मैदान इस के प्राकृतिक सौंदर्य को अनुपम छटा प्रदान करता है. यहां के शांत वातावरण व स्वास्थ्यवर्धक जलवायु में छुट्टियां बिताने का अपना ही आनंद है. यहां के मुख्य आकर्षण हैं—खाजिनाग मंदिर, गोल्फ मैदान व खजियार झील.

स्थानीय देवता के मंदिर का ऊपरी हिस्सा सोने से मढ़ा है. खेल प्रेमियों के लिए विशाल गोल्फ मैदान की व्यवस्था है.

खजियार का अन्य आकर्षण यहां स्थित झील है. पर झील का उचित रखरखाव न हो पाने के कारण यह झील प्रदूषित होती जा रही है. झील के चारों ओर फैले घास के मैदानों पर दुकानों का अतिक्रमण आरंभ हो गया है. जिस से झील सिमट कर रह गई है तथा इस का प्राकृतिक आकर्षण भी खत्म होता जा रहा है.

खजियार : ठहरने के स्थान

हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा संचालित ***होटल देवदार****, यूथ होस्टल, फोरेस्ट रेस्ट हाउस व पी.डब्ल्यू.डी. रेस्ट हाउस खजियार में इस के अतिरिक्त ठहरने की कोई उचित व्यवस्था नहीं है. इसलिए यदि यहां जगह उपलब्ध न हो तो आप डलहौजी में ही ठहरने का प्रबंध कर सकते हैं.*
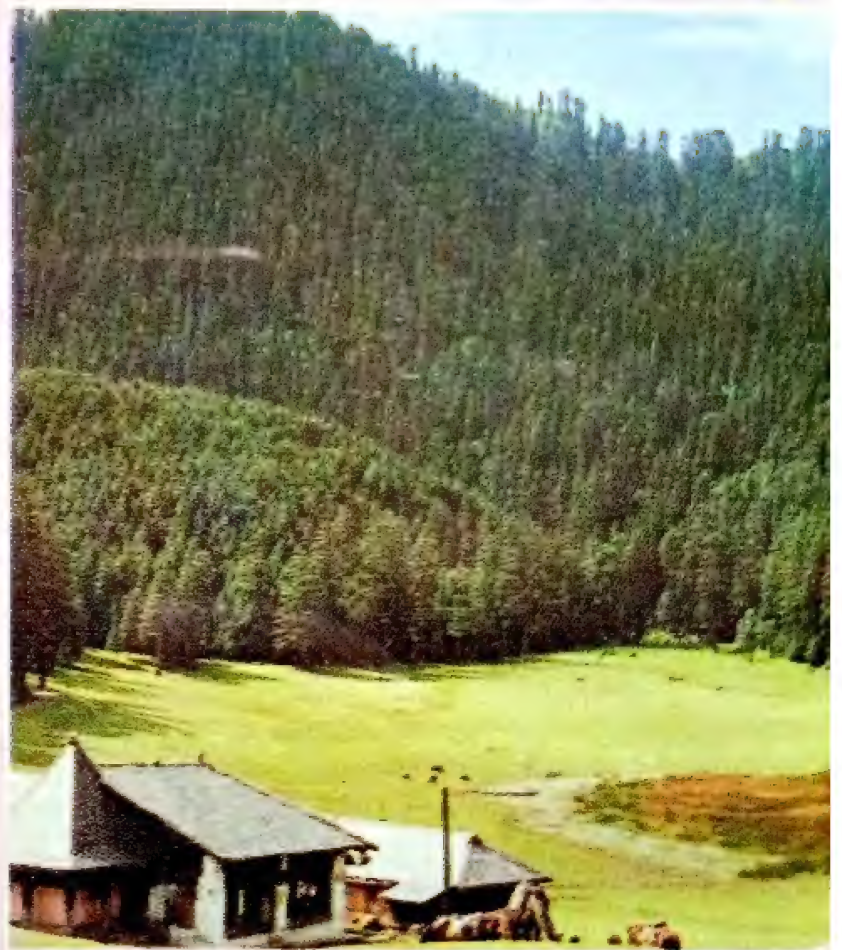
धर्मशाला

अनुपम सौंदर्य व प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण यह अविस्मरणीय पर्यटन स्थल कांगड़ा घाटी में स्थित है.

धौलाधार पर्वत श्रेणियों तथा देवदार व चीड़ के वृक्षों से घिरे धर्मशाला को बर्फीले पहाड़ अद्वितीय सौंदर्य प्रदान करते हैं. बर्फ से ढके पहाड़ों के स्पष्ट अवलोकन का आनंद

नोबेल पुरस्कार विजेता व तिब्बतियों के धार्मिक नेता दलाईलामा से इस स्थान को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई है. यहां बसे तिब्बती व उन के द्वारा बसाई कालोनियां व धार्मिक स्थल आप को उन की सांस्कृतिक धरोहर व हस्तशिल्प कलाओं से परिचित होने का सुअवसर

प्रदान करते हैं.

कब जाएं?

गरमी में मार्च व जून तथा शरद ऋतु में सितंबर व नवंबर के मध्य. गरमी में हलके ऊनी व भारी सूती तथा सर्दी में भारी ऊनी कपड़े साथ रखें.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग से आप को अमृतसर या जम्मू पहुंचना होगा. आप आगे का सफर टैक्सी या बस से तय कर सकते हैं.

. धर्मशाला से 17 कि.मी. दूर कांगड़ा तक छोटी
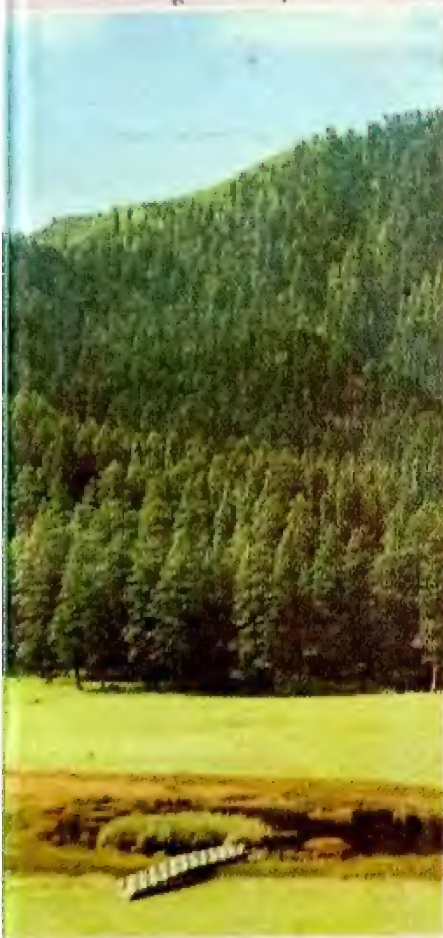
लाइन की गाड़ी उपलब्ध है. पठानकोट बड़ी लाइन द्वारा देश के अन्य शहरों से जुड़ा है. पठानकोट से आप बस या टैक्सी द्वारा भी धर्मशाला पहुंच सकते हैं.

धर्मशाला राष्ट्रीय राजमार्ग द्वारा पठानकोट, जालंधर और मंडी से जुड़ा है. धर्मशाला के लिए हिमाचल प्रदेश परिवहन निगम की बसें नियमित रूप से दिल्ली व चंडीगढ़ से उपलब्ध हैं.

क्या देखें?

मेक्लाडगंज : धर्मशाला से 10 कि.मी. दूर स्थित मेक्लाडगंज कई भवनों, रेस्तरां व प्राचीन वस्तुशिल्प की दुकानों से घिरा है. तिब्बतियों के मठ व प्रसिद्ध दलाईलामा टेंपल भी यहीं स्थित है. यहां से 1 कि.मी. की दूरी पर तिब्बती कला प्रदर्शन संस्थान स्थित है जहां तिब्बत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखा गया है. तिब्बती हस्तशिल्प कला केंद्र भी यहीं स्थित है. यहां से आप हस्तशिल्प की वस्तुएं खरीद सकते हैं.

सेंट जान चर्च : धर्मशाला से 8 कि.मी. की दूरी पर स्थित यह चर्च फारसिट गंज व मेक्लाडगंज के मध्य वन में पड़ता है. यह चर्च भारत के वायसराय लार्ड एल्जिन के स्मारक के रूप में बना है. चर्च की खिड़कियों के रंगीन शीशे आकर्षित करते हैं.

वार मेमोरियल : सुंदर प्राकृतिक छटा से घिरा यह स्मारक मातृभूमि की रक्षा में शहीद हुए सैनिकों की याद ताजा कर देता है. यह धर्मशाला से 2 कि.मी. दूर नगर के प्रवेश द्वार पर स्थित है.

भगसुनाथ मंदिर : धर्मशाला से 11 कि.मी. दूरी पर स्थित है. मंदिर के पास गिरता झरना आसपास के वातावरण में मनोहारी छटा बिखेरता है. जलपान के लिए हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम के रेस्तरां 'कैफे जलधारा' में व्यवस्था है.

धर्मकोट : धर्मशाला से 11 कि.मी. की दूरी पर स्थित है. पर्वत की चोटी पर स्थित यह पर्यटन स्थल कांगड़ा घाटी व धौलाधार पर्वत श्रेणियों का शानदार परिदृश्य प्रस्तुत करता है.

धर्मशाला : ठहरने के स्थान

हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा संचालित—

होटल धौलाधार, *कोतवाली बाजार, फोन-2256*

होटल भागसू, *मेक्लाडगंज, फोन-2290*

होटल तिब्बत, *मेक्लाडगंज, फोन : 2587, 2578*

रोज होटल, *कोतवाली बाजार, फोन-2417*

शिमला होटल, *कोतवाली बाजार, फोन-2650*

इन के अतिरिक्त कई गेस्ट हाउस व लाज की व्यवस्था भी यहां है.

पालमपुर

चाय बागानों और चीड़ के वनों से घिरा पालमपुर कांगड़ा घाटी का एक रमणीक पर्यटन स्थल है. यहां का प्राकृतिक सौंदर्य तो आकर्षक है ही, जलवायु भी

स्वास्थ्यप्रद है. यह धर्मशाला से लगभग 35 किलोमीटर दूर है. धर्मशाला से पालमपुर बस मार्ग से पहुंचा जा सकता है. मुख्य सड़क यहां के मुख्य बाजार से गुजरती है.

पालमपुर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 20 मनाली पठानकोट पर स्थित होने के कारण अन्य नगरों से भी जुड़ा है. रेलमार्ग से जाने वाले पर्यटक यदि सीधे पालमपुर जाना चाहें तो उन्हें पठानकोट में उतर कर रेलमार्ग बदलना पड़ेगा. पालमपुर का रेलवे स्टेशन कसबे से लगभग 5 किलोमीटर दूर है.

यहां दर्शनीय स्थलों की सैर कराने के लिए टैक्सियों या बसों की सुविधा है. ठहरने के लिए सिलवर ओक्स रिसोर्ट, मंसद मोटेल, पाइंस, पैलेस मोटेल, बैजनाथ सदृश होटल हैं.

यहां के दर्शनीय स्थलों में न्यूगल खंड, बंडला स्ट्रीम, अंड्रेटा, बैजनाथ, बीट आदि उल्लेखनीय हैं. न्यूगल खंड की रमणीयता बरसात के दिनों में बढ़ जाती है. पालमपुर पर्यटन के दौरान बंडला स्ट्रीम का अपना अलग ही आकर्षण है.

अंड्रेटा भी धौलाधार शृंखला का एक मनोरम स्थल है. यह प्रसिद्ध चित्रकार सरदार शोभा सिंह की निवास स्थली भी है.

कुल्लू कलात्मक मंदिरों व सांस्कृतिक मेलों के लिए जाना जाता है.

कुल्लू

व्यास नदी के दोनों ओर फैली कुल्लू घाटी, हिमालय की खूबसूरत घाटियों में से एक है. यहां का प्राकृतिक सौंदर्य, गगनचुंबी पर्वत शृंखलाएं, टेढ़ीमेढ़ी पहाड़ी सड़कें, कलकल बहते झरनों का मधुर संगीत पर्यटकों का मन मोह लेता है. कलात्मक मंदिरों व सांस्कृतिक मेलों के लिए भी कुल्लू जाना जाता है. मनाली जो कुल्लू घाटी का ही हिस्सा है यहां से 40 किलोमीटर दूर स्थित है. प्राकृतिक छटा से लबालब मनाली सैलानियों का मन मोह लेता है. देवदार व चीड़ के वृक्षों की लंबी कतारें, छोटेछोटे खेत व फलों से लदे वृक्ष इस घाटी को नैसर्गिक सौंदर्य प्रदान करते हैं. सैलानियों के ठहरने की दृष्टि से मनाली कुल्लू की अपेक्षा बेहतर है.

कब जाएं?

कुल्लूमनाली जाने के लिए उपयुक्त समय अप्रैल व जून के मध्य अथवा सितंबर व नवंबर के मध्य है.

कैसे जाएं?

कुल्लूमनाली के लिए निकटतम हवाईअड्डा भुंतार में स्थित है. यह कुल्लू से 10 कि.मी. दूर है. वायुदूत द्वारा दिल्ली से (उड़ान नं. पी एफ 143, प्रातः 7.30) तथा शिमला से (उड़ान पी एफ 143, प्रातः 9.00) कुल्लू के लिए सीधी उड़ान सेवाएं हैं. जैगसन एअरलाइंस ने हाल ही में दिल्ली से उड़ान (जे ए 201) (1, 2, 3,5, 6, 7) दोपहर 1.15 पर कुल्लू के लिए शुरू की है. यहां से बस अथवा टैक्सी द्वारा मनाली पहुंचा जा सकता है.

कुल्लूमनाली के लिए रेलमार्ग से कालका, शिमला व चंडीगढ़ तक पहुंच सकते हैं. पठानकोट तक एक्सप्रेस गाड़ी द्वारा पहुंच कर छोटी लाइन की गाड़ी द्वारा जोगिंदर

नगर तक पहुंचा जा सकता है. आगे का सफर टैक्सी या बस द्वारा तय किया जा सकता है.

कुल्लूमनाली के लिए शिमला, चंडीगढ़, धर्मशाला से सीधी बस सेवाएं हैं. हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा दिल्ली से कुल्लू के लिए विशेष बसें चलाई जाती हैं. कुल्लू से मनाली के लिए नियमित बस सेवा है.

क्या देखें?

बिजली महादेव का मंदिर : कुल्लू से 14 कि.मी. दूर 2,435 मी. ऊंचाई पर स्थित यह मंदिर कुल्लू के मुख्य आकर्षणों में है. यहां पहुंचने के लिए 11 कि.मी. की कठिन चढ़ाई चढ़नी पड़ती है. मंदिर पर पहुंच कर कुल्लू नगर की आकर्षक छटा व पार्वती घाटी का मनोहारी दृश्य आप की थकान पल भर में मिटा देगा. बिजली महादेव मंदिर में स्थापित 60 फुट ऊंचा 'मूठ' सूरज की किरणों में चांदी की छड़ की तरह चमकता है. जो पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करता है.

कैटरेन : यह कुल्लू घाटी के सब से खुले व मध्य भाग में स्थित है. यह कुल्लू से मनाली के रास्ते में 20 कि.मी. दूरी पर पड़ता है तथा प्राकृतिक सौंदर्य व अच्छी किस्म के सेबों व शहदमक्खी पालन के लिए जाना जाता है. यहां मछलियों का फार्म भी स्थित है. ट्राउट जाति की मछलियां भी यहां मिलती हैं.

ढालपुर का मैदान : यह मैदान कुल्लू के दशहरे का आयोजन केंद्र है. प्रतिवर्ष अक्तूबर, नवंबर में यहां विशेष रौनक रहती है. यहां की संस्कृति व वेशभूषा का परिचय प्राप्त करने के लिए यहां अवश्य जाएं.

नग्गर : व्यास नदी के बाएं किनारे पर स्थित यह पर्यटन स्थल ऐतिहासिक महत्त्व रखता है. यहां का काठ का मंदिर

शहर की भागदौड़ से दूर मनाली में छुट्टियां बीताने का अपना ही आनंद है. ▼

बारीक नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है. यहां से कुल्लू नगर का खूबसूरत दृश्य दिखाई देता है.

बजौरा : कुल्लू से 15 कि.मी. दूरी पर स्थित इस पर्यटन स्थल का मुख्य आकर्षण बरेश्वर महादेव मंदिर है. पिरामिड की आकृति में बने इस मंदिर के पत्थरों को तराश कर बनाई गई उत्कृष्ट मूर्तियों का सौंदर्य मन मोह लेता है. इस मंदिर का निर्माण 8वीं शताब्दी के मध्य हुआ माना जाता है.

कसौल : कुल्लू से 42 कि.मी. दूरी पर पार्वती नदी के किनारे स्थित यह स्थान आकर्षक पिकनिक स्थल है. नदी के आसपास फैला सफेद रेत इस खुले स्थान को अनुपम सौंदर्य प्रदान करता है. पर्यटकों की सुविधा के लिए 'फिशिंग' की व्यवस्था भी है.

मणिकर्ण : पुलगा और पार्वती दर्रे के मार्ग पर कुल्लू से 45 कि.मी. दूर स्थित है. यह पर्यटन स्थल गरम पानी के झरनों के लिए प्रसिद्ध है. प्रतिवर्ष हजारों लोग गरम पानी में स्नान करने के लिए यहां पहुंचते हैं. यहां साथसाथ स्थित मंदिर व गुरुद्वारा सांप्रदायिक एकता के प्रतीक हैं.

मनाली

पिछले कुछ वर्षों में मनाली स्वतंत्र पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हुआ है. समुद्र तट से 2,000 मी. ऊंचाई पर स्थित यह एक अत्यंत रमणीय व शांत वातावरणमय पर्यटन स्थल है. पर्यटकों की सुविधा की दृष्टि से भी मनाली

मनाली से रोहतांग दर्रे के रास्ते में बर्फ से आच्छादित पहाड़ियां दर्शनीय हैं. ▲

अधिक व्यवस्थित है. शहर की भागदौड़ से दूर इस हरेभरे प्राकृतिक स्थल पर छुट्टियां बिताने का अलग ही आनंद है.

क्या देखें?

हिडिंबा देवी का मंदिर : मनाली से डेढ़ किलोमीटर दूरी पर स्थित यह प्राचीन मंदिर पुरातात्त्विक व ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है. यह मंदिर 'महाभारत' महाकाव्य में वर्णित पांडु पुत्र भीम की पत्नी हिडिंबा को अर्पित है. इस मंदिर का निर्माण 16वीं सदी में हुआ. प्रति वर्ष मई माह में यहां मेले का आयोजन किया जाता है. इस मंदिर के पास एक नुकीली चट्टान है जिसे पूजा जाता है. इस के आसपास के बड़े देवदार के वृक्ष ज्यादा मनोहारी हैं.

वशिष्ठ मंदिर : व्यास नदी के बाएं किनारे संकरी गली में स्थित यह मंदिर मुनि वशिष्ठ को अर्पित है. इस मंदिर का निर्माण पिरामिड के आकार में हुआ है. मंदिर के पास ही गरम पानी के सोते हैं जहां तुर्की शैली के स्नानघरों का निर्माण किया गया है, जिन में ठंडे व गरम पानी से स्नान की व्यवस्था है.

नेहरू कुंड : मनाली से 5 कि.मी. दूर अर्जुन गुफा के समीप स्थित यह पर्यटन स्थल पिकनिक मनाने के लिए उपयुक्त है. यहां का शांत वातावरण व शीतल जल की निर्मल धारा पर्यटकों का मन मोह लेती है.

जगत सुख : यह नग्गर से मनाली के रास्ते पर व्यास नदी के बाएं किनारे पर स्थित है. यह स्थान 10 पीढ़ियों तक कुल्लू की राजधानी रह चुका है. यहां के प्राचीन मंदिर अपनी कलात्मक उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध हैं. शिकारा शैली में बना शिव मंदिर आकर्षण का मुख्य केंद्र है.

रोहतांग दर्रा : मनाली से 51 कि.मी. दूरी पर लगभग 4,100 मी. ऊंचाई पर स्थित है. यहां से बर्फ से ढकी विशालकाय पर्वत चोटियों का स्पष्ट अवलोकन किया जा सकता है. दर्रे के पास स्थित सोनापानी ग्लेशियर भी दर्शनीय है. रोहतांग दर्रा प्रतिवर्ष जून से सितंबर तक खुला रहता है.

कुल्लू मनाली : ठहरने के स्थान

कुल्लू

रोहतांग होटल, दशहरा मैदान, फोन: 2303
दौलत होटल, धालपुर, फोन: 358
एंपायर होटल, फोन: 97
नवीन गेस्ट हाउस, अखाड़ा बाजार, फोन: 228
सखरी होटल, फोन: 33
स्पान रिर्जोटस, फोन: 38
आई टी डी सी ट्रेवलर्स लाज, फोन: 79

मनाली

अंबेसडर रिजोर्ट, फोन: 173
अनुपम होटल, फोन: 65
अशोक ट्रेवलर्स लाज, फोन: 31
ग्रासलैंड होटल, फोन 122
ग्रीन फील्ड होटल
होलिडे होम इंटरनेशनल, फोन: 101
देवी दयार होटल, फोन: 117
न्यूहोप गेस्ट हाउस, फोन: 78
माउंट व्यू होटल, फोन: 44

रोहतांग के रास्ते में पड़ने वाले मरही स्थान से बर्फ से ढकी हिमालय की पर्वत श्रेणियां बहुत ही मनमोहक लगती हैं.

सोलंग घाटी : **मनाली से 13 कि.मी. दूर स्थित यह मनमोहक घाटी, मनाली व कोठी के मध्य स्थित है. बर्फीले पहाड़ों व पहाड़ी दर्रों का मनोहारी दृश्य यहां से देखा जा सकता है. सर्दियों के खेलों के आयोजन का यह मुख्य केंद्र है. यहां स्थित 'पर्वतारोहण संस्थान' शीतकालीन खेलों का आयोजन करता है.**

क्या खरीदें?

कुल्लू के सेब दुनिया भर में मशहूर हैं. यहां से उचित मूल्यों पर सेबों की पेटियां खरीदी जा सकती हैं. यहां का शुद्ध शहद भी खरीदने योग्य है. मनाली स्थित तिब्बती मठ से पर्यटक हाथ के बुने कालीन व तिब्बती हस्तशिल्प की वस्तुएं खरीद सकते हैं.

जम्मू

बढ़ते उग्रवाद के कारण आप श्रीनगर घाटी का पर्यटन तो नहीं कर सकते, अतः जम्मू-कशमीर की यात्रा जम्मू को छू कर ही की जा सकती है. जम्मू कशमीर राज्य की शीतकालीन राजधानी जम्मू प्राचीन गुफाओं तथा राजमहलों के लिए प्रसिद्ध है. क्षेत्र का कुछ भाग जहां हरेभरे मैदानों से ढका है वहीं बाकी हिस्सा खूबसूरत पर्वतीय स्थलों से भरा है. इस क्षेत्र के पर्वतों की दुर्गम चढ़ाई पर्वतारोहियों को विशेष रूप से आकर्षित करती है. कदमों से बहती तवी नदी इसे अनुपम सौंदर्य प्रदान करती है. मंदिरों की यहां बहुतायत है. यह शहर अपनेआप में रुकने के लिए तो उपयुक्त नहीं है लेकिन वैष्णोदेवी और श्रीनगर के रास्ते में पड़ने वाला आकर्षक पहाड़ी नगर है.

कैसे जाएं?

शहर से 8 किलोमीटर दूर जम्मू हवाई अड्डा स्थित है. दिल्ली (उड़ान 421 प्रातः 6.15), चंडीगढ़ (उड़ान 421 प्रातः 7.25) व श्रीनगर (उड़ान 422 प्रातः 10.10) से जम्मू के लिए इंडियन एअर लाइंस की सीधी उड़ानें उपलब्ध हैं.

जम्मू के लिए देश के मुख्य शहरों से रेलों की समुचित व्यवस्था है. कलकत्ता, बंबई, दिल्ली, पठानकोट व कन्याकुमारी आदि शहरों को सीधी रेल सेवा द्वारा जम्मू से जोड़ा गया है.

राष्ट्रीय राजमार्ग 1, द्वारा जम्मू को देश के अन्य भागों से जोड़ा गया है. चंडीगढ़, पठानकोट, अमृतसर, कटरा, मनाली आदि स्थानों से जम्मू के लिए सीधी बस सेवाएं हैं. जम्मू व कशमीर परिवहन निगम व हिमाचल प्रदेश परिवहन निगम की डीलक्स व साधारण बसें नियमित रूप से जम्मू के लिए जाती हैं.

जम्मू व उसके आसपास के पर्यटन स्थल घूमने के लिए टैक्सी, ओटोरिकशा व मिनी बसों की समुचित व्यवस्था है. किराया दूरी के अनुसार पहले तय कर लें.

क्या देखें?

डोगरा आर्ट गैलरी: **नए सचिवालय के समीप स्थित इस गैलरी में प्राचीन डोगरी चित्रकला के विभिन्न आकर्षक चित्र संग्रहीत हैं. अनेक विदेशी व पहाड़ी अति विशिष्ट सूक्ष्म कलाकृतियां भी यहां देखी जा सकती हैं. पुरातात्त्विक महत्त्व की कुछ वस्तुएं भी यहां संग्रहीत हैं.**

अमर महल पैलेस: **छोटी पहाड़ी पर स्थित यह राजमहल वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है.**

इस महल से जम्मू व आसपास का दृश्य बड़ा खूबसूरत दिखाई देता है. महल में एक पुस्तकालय की स्थापना भी की गई है. पहाड़ी चित्रकला के दुर्लभ नमूने भी यहां संग्रहीत हैं.

बाहुकिला: राजा बाहुलोचन द्वारा बनवाया गया यह किला 3,000 वर्ष पुराना है. समय के साथसाथ यह किला जीर्णशीर्ण होता गया. बाद में डोगरा शासकों ने इसका पुनर्निर्माण करवाया. चट्टान पर स्थित यह किला नगर से 4 किलोमीटर दूर है.

रघुनाथ मंदिर: शहर के मध्य स्थित यह मंदिर समूह दूर से ही दिखाई देता है. इन मंदिरों में स्थापित देवीदेवताओं की कलात्मक मूर्तियां देखने लायक हैं.

वैष्णो देवी: यह प्रसिद्ध धार्मिक स्थल जम्मू से 62 किलोमीटर दूर त्रिकूट पर्वत पर स्थित है. मुख्य मंदिर तक पहुंचने के लिए पहाड़ी की चढ़ाई व पक्की सीढ़ियों की व्यवस्था है. आप सीढ़ी के रास्ते को ही प्राथमिकता दें. यहां जाते समय 'कटरा' से 'यात्रा पास' बनवाना न भूलें.

जम्मू के मंदिरों की कलात्मकता बेजोड़ है. ▼
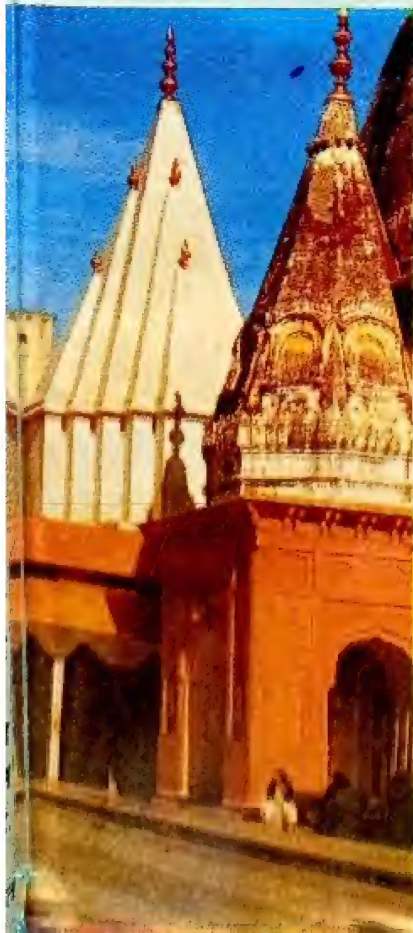
जम्मू : प्रमुख रेल सेवाएं

बंबईजम्मू एक्सप्रेस–बंबई सेंट्रल जम्मूतवी–8.25 (1,4,5,7)
सूर्योदय एक्सप्रेस–अहमदाबादजम्मूतवी–12.00 (3,6)
हापा जम्मू एक्सप्रेस–हापाजम्मूतवी–5.45 (2)
झेलम एक्सप्रेस–पुणेजम्मूतवी–17.40 प्रतिदिन
मद्रासजम्मूतवी एक्सप्रेस–मद्रासजममूतवी–23.50 (3,4,7)
नवयुग एक्सप्रेस–मंगलौरजम्मूतवी–15.00(2)
जम्मू मेल–दिल्लीजम्मूतवी–21.00 प्रतिदिन
शालीमार एक्सप्रेस–नई दिल्ली जम्मूतवी–16.10 प्रतिदिन
लोहित एक्सप्रेस–गुवाहाटीजम्मूतवी–11.15(1)
हिमगिरि एक्सप्रेस–हावड़ाजम्मूतवी–23.00(2,5,6)
सियालदह एक्सप्रेस–सियालदहजम्मूतवी–11.20 प्रतिदिन

जम्मू : ठहरने के स्थान

साधारण होटल

तवी व्यू होटल, *महेशी गेट, फोन: 47301*
कशमीर होटल, *वीर मार्ग, फोन: 46417*
अप्सरा होटल, *वीर मार्ग चौक, फोन: 44907*
अंबेसडर होटल, *रघुनाथ बाजार, फोन: 47455*

उच्च व मध्य स्तरीय होटल

जम्मू अशोक, *अमर महल के सामने, फोन: 43127, 43864*
होटल कास्मोपोलिटन, *वीर मार्ग, फोन: 47169*
मानसर होटल, *डेनिश गेट, फोन: 46161*
कास्मो होटल, *फोन: 5520*
एशिया जम्मूतवी होटल, *नेहरू मार्केट, फोन: 49430, 43932*
प्रीमियर होटल, *रेजीडेंसी रोड, फोन: 43234*

क्या खरीदें?

जम्मू के सिल्क के वस्त्र व विभिन्न किस्म के कालीन विश्व भर में प्रसिद्ध हैं. खरीदारी वीर मार्ग, रघुनाथ बाजार व हरी मार्केट आदि स्थानों पर स्थित दुकानों से की जा सकती है. इस के अतिरिक्त राज्य सरकार के आर्ट्स इंपोरियम व खादी ग्रामोद्योग भवन से हस्तशिल्प की वस्तुएं खरीदी जा सकती हैं.

पिंजोर गार्डन मुगल कालीन बागों की उत्कृष्ट धरोहर है.

पिंजोर

चंडीगढ़ से मात्र 22 किलोमीटर दूर है पिंजोर. यहां मुगलकालीन बागों की बहार देखते ही बनती है. ये बाग मुगलिया एवं राजस्थानी शैली में बने हैं. इन बागों की रूपरेखा नवाब फिदाई खां ने बनाई थी और इन्हें सम्राट औरंगजेब ने सत्रहवीं शती में बनवाया था. आजकल इन बागों को 'यादवेंद्र गार्डन' के नाम से जाना जाता है.

लगभग 50 एकड़ में फैले ये बाग पर्यटकों के लिए प्रतिदिन प्रातः से सायं तक खुले रहते हैं.

बागों में नाना प्रकार के पेड़पौधे तथा फलदार वृक्ष हैं. ये बाग चारदीवारी से घिरे हैं. यहां एक चिड़ियाघर भी है, जिस में पशु कम पक्षी अधिक हैं. यहां बच्चे बाग का आनंद भी ले सकते हैं. यहां ओपन एयर थिएटर, एंपोरियम और ठहरने की भी अच्छी व्यवस्था है.

चंडीगढ़ से पिंजौर तक बस या टैक्सी द्वारा पहुंचा जा सकता है.

दिल्ली

देश की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों की केंद्रबिंदु यह महानगरी अपने अतीत में 3,000 वर्षों का इतिहास समेटे है. उतारचढ़ावों के बावजूद इस का समसामयिक महत्त्व हमेशा बना रहा. हर पर्यटक के लिए इस से अच्छा पर्यटन बिंदु शायद ही दूसरा हो.

सात बार उजड़ी और बसाई गई इस नगरी ने कई शासकों का उदय व पतन देखा. पांडवों के शासन काल में 'इंद्रप्रस्थ' नाम से यह राजधानी रही. 12वीं से 19वीं शताब्दी तक इस पर मुगलों ने शासन किया. इस अवधि में इस का चौमुखी विकास हुआ. मुगल बादशाहों के शासन काल में स्थापित की गई वास्तुकला के उदाहरण आज भी ज्यों के त्यों हैं.

दिल्ली मुख्यतः दो भागों में विभाजित है. पुरानी दिल्ली
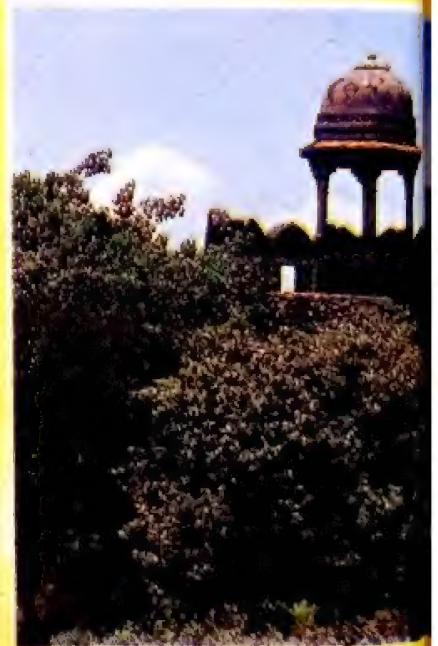
व नई दिल्ली. पुरानी दिल्ली संकरी गलियों व भीड़भाड़ वाला इलाका है. यहीं शाहजहां द्वारा बनवाया गया लाल किला व जामा मसजिद भी हैं. यहां का मुख्य बाजार चांदनी चौक व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र बिंदु है. नई दिल्ली क्षेत्र का विकास अंगरेजों के शासनकाल में हुआ. इस क्षेत्र में बड़ीबड़ी सरकारी इमारतें, कार्यालय,

राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, इंडिया गेट व दिल्ली का मुख्य बाजार कनाट प्लेस स्थित है.

कब जाएं ?

वैसे तो दिल्ली वर्ष भर पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना रहता है. क्योंकि यहां गरमी कुछ अधिक पड़ती है, इसलिए यहां अक्तूबर व अप्रैल के मध्य जाना बेहतर होगा.

कैसे जाएं ?

देश की राजधानी होने के कारण दिल्ली के लिए परिवहन की समुचित व्यवस्था है. देश के हर हिस्से से यह सड़क, रेल व वायु मार्ग द्वारा जुड़ी है. इंडियन एअरलाइंस की उड़ानें सभी बड़े शहरों से यहां नियमित रूप से आती हैं.

दिल्ली : प्रमुख उड़ानें

दिल्ली के लिए देश के अन्य शहरों से इंडियन एअर लाइंस व वायुदूत की उड़ान सेवाएं हैं. इंडियन एअर लाइंस की ***हैदराबाद से*** *(उड़ान आई सी 840 सायं 4.45, उड़ान आई सी 440 प्रातः 7.50),* ***चंडीगढ़ से*** *(आई सी 422 दोपहर 12.45),* ***बंगलौर से*** *(आई सी 404 दोपहर 2.30),* ***बंबई से*** *(आई सी 181 प्रातः 6.15, आई सी 406 प्रातः 9.10 व आई सी 183, रात्रि 9.00),* ***जयपुर से*** *(आई सी 492 प्रातः 11.30);* ***मद्रास*** *(आई सी 440 प्रातः 6.00, आई सी 539, सायं 4.30),* ***कलकत्ता से*** *(आई सी 402 सायं 5.30, आई सी 263 प्रातः 7.00),* ***त्रिवेंद्रम से*** *(आई सी 168, दोपहर 3.00),* ***लखनऊ से*** *(आई सी 816 दोपहर 2.00 बजे, आई सी 410 दोपहर 4.00),* ***जम्मू से*** *(आई सी 422 दोपहर 1.30),* ***उदयपुर से*** *(आई सी 492 प्रातः 9.10)*

दिल्ली के लिए वायुदूत की उड़ान सेवाएं

चंडीगढ़ से *(पी एफ 144 प्रातः 10.40, पी एफ 106 दोपहर 12.35),* ***देहरादून से*** *(पी एफ 104 प्रातः 8.10),* ***जैसलमेर से*** *(पी एफ 118 प्रातः 9.05),* ***कुल्लू से*** *(पी एफ 106 प्रातः 11.40),* ***शिमला से*** *(पी एफ 144 प्रातः 9.30, पी एफ 144 प्रातः 10.40)*

दिल्ली का पुराना किला अपनी प्राचीनता के लिए दर्शनीय है ▲

धतरपुर मंदिर दिल्ली के मंदिरों में अपना विशेष आकर्षण रखता है. ▶

दिल्ली परिवहन निगम द्वारा दिल्ली दर्शन के लिए प्रतिदिन सुबह 7 बजे व दिन में 1 बजे विशेष बसें चलाई जाती हैं. ये बसें सिंधिया हाउस स्थित दिल्ली परिवहन निगम के कार्यालय से चलती हैं.

इस के अतिरिक्त प्राइवेट ट्रेवल एजेंसियों द्वारा भी विशेष बसें दिल्ली व आसपास के पर्यटन स्थलों के लिए चलाई जाती हैं.

सैरसपाटे के लिए आटो रिक्शा व टैक्सी की भी समुचित व्यवस्था है. आप को शायद ही कोई आटोरिक्शा या टैक्सी चालक मिले जो मीटर से

दिल्ली:ठहरने के स्थान

साधारण बजट :
वाई एम सी ए होटल, *जय सिंह रोड*
वाई डब्ल्यू सी ए इंटरनेशनल गेस्ट हाउस, *संसद मार्ग*
होटल एशियन इंटरनेशनल, *जनपथ लेन*
एशियन गेस्ट हाउस, *सिंधिया हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग*
गांधी गेस्ट हाउस, *टालस्टाय लेन*
होटल फिफ्टी फाइव, *कनाट सर्कस*
निरूला, *कनाट सर्कस*
अलका होटल, *कनाट सर्कस*
टूरिस्ट होटल, *रामनगर, पहाड़गंज के पास*
नटराज होटल, *पहाड़गंज*
होटल प्रेसीडेंट, *आसफ अली रोड*

कम बजट :
विश्व युवक केंद्र, *सरकुलर रोड, चाणक्यपुरी*
यूथ होस्टल, *न्याय मार्ग, चाणक्यपुरी*
नई दिल्ली टूरिस्ट कैंप, *जवाहरलाल नेहरू मार्ग*

उच्च बजट :
अशोक होटल, *चाणक्यपुरी, नई दिल्ली*
सम्राट होटल, *चाणक्यपुरी, नई दिल्ली*
मौर्य शेराटन, *सरदार पटेल मार्ग, नई दिल्ली*
ओबेराय होटल, *डा. जाकिर हुसैन मार्ग*
ताजमहल होटल, *मान सिंह रोड*
ताज पैलेस होटल, *सरदार पटेल मार्ग*
हयात रिजेंसी होटल, *भीकाजी कामा प्लेस*
सिद्धार्थ होटल, *राजेंद्र प्लेस*
हंस प्लाजा, *बाराखंबा रोड*
जनपथ होटल

किराया लेने को तैयार हो फिर भी कोशिश करें कि किराया मीटर के अनुसार ही दें.

कहां ठहरें ?

दिल्ली में आप के बजट के अनुसार हर तरह के होटल व गेस्ट हाउस उपलब्ध हैं. साधारण बजट के होटल मुख्यतः पहाड़गंज व नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के आसपास स्थित हैं.

क्या देखें ?

लाल किला : लाल पत्थरों से बना यह विशाल किला 2 किलोमीटर लंबे क्षेत्र में फैला है. वास्तुकला के इस अद्भुत नमूने का निर्माण मुगल बादशाह शाहजहां ने 1638 में प्रारंभ करवाया तथा 10 वर्ष के अथक परिश्रम के बाद 1648 में बन कर तैयार हुआ. किले का मुख्य दरवाजा लाहौरी गेट है. यहां प्रवेश करते ही हस्तशिल्प व हाथीदांत की वस्तुओं की दुकानें रास्ते के दोनों ओर स्थित हैं. किले के मुख्य आकर्षण हैं दीवान-ए-खास, मोती मसजिद, खास महल, दीवान-ए-आम, शाही स्नानगृह, रंगमहल. प्रतिदिन शाम को यहां प्रकाश व ध्वनि के माध्यम से ऐतिहासिक महत्त्व के कार्यक्रम दिखाए जाते हैं. किले के अंदर एक संग्रहालय भी स्थित है जिस में मुगल काल के अस्त्र- शस्त्र, पुरानी पांडुलिपियां व बारीक नक्काशी किए गए वस्त्र व चित्र संग्रहीत हैं.

जामा मसजिद: भारत की सब से बड़ी यह मसजिद लाल किले से थोड़ी ही दूर स्थित है. इस का निर्माण 1644 में शाहजहां ने शुरू करवाया तथा लगभग 14 वर्ष बाद यह बन कर तैयार हुई. लाल पत्थरों व संगमरमर से बनी यह मसजिद मुगल स्थापत्य कला का जीवंत उदाहरण है. मसजिद में तीन विशाल प्रवेश द्वार हैं. इस की 40 मीटर ऊंची दो मीनारों से

पालिका बाजार दिल्ली का आलीशान भूमिगत बाजार है.

नई दिल्ली स्थित जंतरमंतर पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है.

आसपास का दृश्य खूबसूरत दिखाई पड़ता है. मसजिद के पूर्वी हिस्से से लाल किला स्पष्ट दिखाई पड़ता है. मसजिद के सहन में एक साथ 25,000 लोग नमाज अदा कर सकते हैं.

राजघाट, शांतिवन, विजयघाट: लाल किले के पीछे, रिंग रोड के साथ यमुना नदी के किनारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि स्थित है. समाधि पर स्थित ज्योति हर पल दिव्यमान रहती है. बापू की समाधियां के साथ ही दिवंगत प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू व लाल बहादुर शास्त्री की समाधि क्रमशः शांतिवन व विजयघाट पर स्थित हैं. पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी व उन की माता इंदिरा गांधी की समाधि भी यहीं स्थित है.

राष्ट्रपति भवन: यह भारत के राष्ट्रपति का सरकारी निवास है. रायसीना पहाड़ी को काट कर बनाया गया यह भव्य परिसर 1929 में पूर्ण हुआ था. भवन में 340 कमरे हैं. स्वतंत्रता से पूर्व यह भारत के वायसराय का निवास था. भवन के बाहरी भाग में 'मुगल गार्डन' स्थित है जो विभिन्न किस्म के खुशबूदार फूलों से लदा रहता है. प्रतिवर्ष फरवरी के महीने में आम जनता के लिए खोला जाता है. राष्ट्रपति भवन देखने के लिए संबंधित अधिकारियों से अनुमति लेना आवश्यक है.

संसद भवन: यह राजपथ के समीप संसद मार्ग पर स्थित है. यह देश की राजनीतिक सरगरमी का केंद्र बिंदु वास्तुकला की दृष्टि से भी विशिष्ट है. गोलाकार आकृति में बने इस भवन का व्यास 171 मीटर है.

इंडिया गेट: 42 मीटर ऊंचा यह द्वार प्रथम विश्वयुद्ध में शहीद हुए भारतीय सैनिकों की स्मृति में बनवाया गया था. द्वार पर सैनिकों के नाम खुदे हैं. स्वतंत्रता के पश्चात हुए भारतपाक युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की स्मृति में द्वार के बीचोबीच एक उलटी बंदूक व टोप को स्थापित किया गया है. इस के साथ ही 'अमर ज्योति' स्थित है.

त्रिमूर्ति भवन: ब्रिटिश 'कमांडर इन चीफ' के आवास के रूप में इस भवन का निर्माण किया गया था. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का निवास स्थान रहा. उन की मृत्यु पश्चात इसे संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया गया. नेहरू के व्यक्तित्व व उन के जीवन काल में घटी घटनाओं का

दिल्ली के लिए प्रमुख रेल सेवाएं

झेलम एक्सप्रेस, *जम्मूतवीनई दिल्ली–19.35 बजे*
पंजाब मेल, *फिरोजपुरनई दिल्ली–21.00 बजे*
फ्रंटियर मेल, *अमृतसरदिल्ली–20.45 बजे*
शान-ए-पंजाब, *अमृतसर नई दिल्ली–14.10 बजे*
फ्लाइंग मेल, *अमृतसरदिल्ली–12.00 बजे*
शालीमार एक्सप्रेस, *जम्मूतवीनई दिल्ली–18.45 बजे*
हिमाचल एक्सप्रेस, *नंगल डेमदिल्ली–20.20 बजे*
कालका मेल, *कालकादिल्ली–23.30 बजे*
कर्नाटक एक्सप्रेस, *बंगलौरनई दिल्ली–18.15 बजे*
केरल एक्सप्रेस, *त्रिवेंद्रमनई दिल्ली–9.40 बजे*
आंध्रप्रदेश एक्सप्रेस, *सिकंदराबादनई दिल्ली–6.35 बजे*
तमिलनाडु एक्सप्रेस, *मद्रासनई दिल्ली–21.00 बजे*
हिमसागर एक्सप्रेस, *कन्याकुमारीनई दिल्ली–23.30 बजे*
लखनऊ मेल, *लखनऊनईदिल्ली–22.00 बजे*
राजधानी एक्सप्रेस, *बंबईसेंट्रल नईदिल्ली–17.00 बजे (रोजाना, शनिवार छोड़ कर)*
छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस, *बिलासपुरनई दिल्ली–12.05 बजे*
राजधानी एक्सप्रेस, *हावड़ानईदिल्ली–16.30 बजे (सोम, मंगल, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, रविवार)*
उद्यान आभा, *हावड़ानई दिल्ली–9.45 बजे*
तिनसुकिया मेल, *गुवाहाटीदिल्ली–13.15 बजे*
अवधअसम एक्सप्रेस, *गुवाहाटीदिल्ली–20.15 बजे*
नीलांचल एक्सप्रेस, *पुरीनई दिल्ली–9.15 (2, 5, 7) बजे*
शताब्दी एक्सप्रेस, *भोपालनई दिल्ली–14.40 बजे*

दिल्ली से प्रमुख रेल सेवाएं

राजधानी एक्सप्रेस, *नई दिल्लीबंबई सेंट्रल–16.05*
शताब्दी एक्सप्रेस, *नई दिल्लीभोपाल–6.15*
देहरादून एक्सप्रेस, *नई दिल्लीबंबई सेंट्रल–22.10*
ताज एक्सप्रेस, *नई दिल्लीग्वालियर–7.05*
कालका मेल, *दिल्लीहावड़ा–8.00*
राजधानी एक्सप्रेस, *नई दिल्लीहावड़ा–17.15(1,2,3,5,6)*
उद्यान आभा एक्सप्रेस, *नई दिल्लीहावड़ा–8.00*
तिनसुकिया मेल, *दिल्लीगुवाहाटी–18.45*
अवधअसम एक्सप्रेस, *दिल्लीगुवाहाटी–8.50*
पुरी एक्सप्रेस, *नई दिल्लीपुरी–5.40 (1, 3, 5, 6)*
मद्रासजम्मूतवी एक्सप्रेस, *नई दिल्लीमद्रास–15.00*
हिमसागर एक्सप्रेस, *नई दिल्लीकन्याकुमारी–15.00*
आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस, *नई दिल्लीसिकंदराबाद–14.35*
केरल एक्सप्रेस, *नई दिल्लीत्रिवेंद्रम–12.00*
कर्नाटक एक्सप्रेस, *नई दिल्लीबंगलौर–23.20*
लखनऊ मेल, *नई दिल्लीलखनऊ–7.45*

विस्तृत चित्रण इस संग्रहालय में किया गया है.

कुतुबमीनार : 73 मीटर ऊंचे इस विजय स्तंभ का निर्माण 1193 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रारंभ करवाया था. पहली मंजिल का निर्माण होतेहोते वह चल बसा तथा उस के उत्तराधिकारियों ने इस को संपन्न करवाया. ऊपर पहुंचने के लिए इस में घुमावदार सीढ़ियों की व्यवस्था है. पहले कुतुबमीनार की सात मंजिलें थीं. लेकिन अब पांच ही मंजिलें शेष हैं. मीनार से कुछ दूरी पर एक 'धातु स्तंभ' है जो इस से भी पुराना बताया जाता है.

राष्ट्रीय संग्रहालय : यह राजपथ के दक्षिण में जनपथ पर स्थित है. इस संग्रहालय में तांबे, लकड़ी व पत्थर की मूर्तियों का विशेष संग्रह है. प्राचीन सूक्ष्म चित्र, भित्ति चित्र, विभिन्न जनजातियों की वेशभूषा आदि भी यहां संग्रहीत हैं. संग्रहालय सोमवार के अतिरिक्त प्रतिदिन सुबह 10 से शाम 5 बजे तक खुला रहता है.

अन्य दर्शनीय स्थल

देश की राजधानी होने के कारण यहां की हर बात में, विशिष्टता की झलक है. चाणक्यपुरी क्षेत्र में स्थित विदेशी दूतावास भी दर्शनीय हैं. यहां से थोड़ी दूर पर रेल संग्रहालय स्थित है. यह सोमवार को बंद रहता है.

दिल्ली में बच्चों के लिए 'अप्पू घर' विशेष आकर्षण का केंद्र है. इस के अतिरिक्त बिड़ला मंदिर, बहाई मंदिर, छतरपुर मंदिर, शीशगंज व बंगला साहिब गुरुद्वारा, हुमायूं का मकबरा, हजरत निजामुद्दीन की दरगाह, सफदरजंग का मकबरा, हौज खास, तुगलकाबाद, पुराना

किला, चिड़ियाघर आदि स्थान भी दर्शनीय हैं.

क्या खरीदें?

दिल्ली व्यापारिक गतिविधियों का भी मुख्य केंद्र है. यहां घरेलू उपयोग की वस्तुओं से ले कर कलात्मक सजावट की सामग्री आदि सभी चीजें उपलब्ध हैं. यहां के मुख्य बाजार हैं—सदर बाजार, चांदनी चौक, कनाट प्लेस, दरीबा कलां खान मार्किट, पालिका बाजार तथा सुपर बाजार. पटरी से खरीदारी करते समय दाम व वस्तु की गुणवत्ता अच्छी तरह परख लें.

अलवर

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अलवर नगर अलवर राज्य की राजधानी था. यहां राजपूती एवं मुसलिम स्थापत्य कला का मिलाजुला रूप देखने को मिलता है. राजपूत वीर प्रताप सिंह द्वारा स्थापित अलवर अरावली पहाड़ियों के ही एक भाग में बसा है. कुछ लोगों का विचार है कि इसी कारण आंशिक शब्द परिवर्तन से यह अलवर कहलाता है. किंतु कुछ आधुनिक विद्वानों के अनुसार पहले यहां सालवास जाति के कुछ लोगों का निवास था. उन्हीं के आधार पर इसे 'सालवायरा' कहा गया, जो बाद में सालवर, हलवर और फिर अलवर हो गया.

सामरिक दृष्टि से अलवर अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है. इस के चारों ओर प्रकृति प्रदत्त सुरक्षा कवच के रूप में पहाड़ियां, सुदृढ़ दीवार, प्रशस्त खाई तथा गहरा नाला है. अलवर की गणना राजस्थान के ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों में की जाती है.

कैसे जाएं?

जयपुर और दिल्ली से अलवर पहुंचना अत्यंत सुविधाजनक है. दिल्ली से चलने वाली मंदौर, पिंकसिटी और आश्रम एक्सप्रेस अलवर जाने के लिए अच्छी गाड़ियां हैं. इन में अपेक्षाकृत कम समय लगता है. इन के अलावा अलवर के लिए दिल्ली, जयपुर, सरिस्का आदि स्थानों से बसों की भी अच्छी सुविधा है.

कहां ठहरें?

अलवर में पर्यटकों के

अलवर में राजपूती व मुसलिम स्थापत्य कला का मिलाजुला रूप दर्शनीय है. ▼

ठहरने के लिए अलका और अशोक होटलों, अग्रवाल, खंडेलवाल और सुगना बाई की धर्मशालाओं के अलावा निरीक्षण भवन, लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह में भी पर्याप्त व्यवस्था है.

क्या देखें?

अलवर के विशेष दर्शनीय स्थलों में राजा बन्नीसिंह का महल, तारंग सुलतान की दरगाह, फतेजंग की दरगाह, महाराज बख्तावर सिंह का स्मृति स्तंभ प्रसिद्ध हैं.

यहां का सिटी पैलेस राजपूती और मुगल शैली के समन्वय का अनूठा उदाहरण है. पैलेस के संग्रहालय में 18-19वीं शती की अनेक पेंटिंग और पारसी, अरबी, उर्दू व संस्कृत की दुर्लभ पांडुलिपियों का संग्रह है.

पुरजन विहार की यह विशेषता है कि यहां पेड़पौधों और लताकुंजों की सुखद छाया में रेगिस्तानी गरमी का आभास भी नहीं होता.

नगर के उत्तरपश्चिम में लगभग 1,000 फुट ऊंची पहाड़ियों में निकुंभ राजपूतों का बना किला अपनी अलग ही पहचान बनाए है. किले की दीवारें पहाड़ी उपत्यकाओं में लगभग 3 किलोमीटर तक फैली हैं.

अलवर के आसपास भी कई दर्शनीय स्थल हैं. यहां से 10 किलोमीटर दूर विजय मंदिर पैलेस एक सुंदर झील के पास बना है, जिसे राजा जयसिंह ने बनवाया था.महल देखने के लिए संभवतः वहां के सचिव से अनुमति ले लेना अपेक्षित है. पूर्व मुगलकालीन मसजिदें तथा स्तूप देखने के लिए राजेरा की सैर की जा सकती है.

सरिस्का

अलवर से मात्र 37 किलोमीटर की दूरी पर अरावली पहाड़ियों की सुरम्य घाटी में स्थित है, सरिस्का वन्य जीव अभयारण्य. नुकीली चट्टानों के बीचबीच छोटेछोटे पर्णपाती वनों से युक्त सरिस्का राजस्थान की एक रमणीक सैरगाह है. मानसून के दो महीने (जुलाईअगस्त) को छोड़ कर यहां सारे साल में कभी भी पर्यटन किया जा सकता है.

दिल्ली जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 पर स्थित होने के कारण इन नगरों के बीच चलने वाली सभी बसें सरिस्का हो कर ही आतीजाती हैं. ठहरने के लिए भी यहां समुचित सुविधाएं हैं. राजस्थान स्टेट होटल, टाइगर डिन बंगला, सरिस्का पैलेस होटल आदि में ठहरा जा सकता है.

मूलतः सरिस्का बाघों का आवास है. यही इन की क्रीड़ा स्थली एवं शिकारगाह है. यहां के वन सांभर, चीतल, नीलगाय आदि पशुओं को भी अपनी ओर आकर्षित करते हैं. वनैली झाड़ियों और झुरमुटों में शेरों, चीतों और रीछों को विश्राम करते देखा जा सकता है. प्राकृतिक जल स्रोतों पर इन पशुओं को पानी पीते हुए भी देखा जा सकता है.

इस अभयारण्य में सूर्योदय के बाद और सूर्यास्त के पहले ही सैर करना समीचीन है. सैर करने के लिए यहां जीपें मिल जाती हैं. अभयारण्य के बीच में घाटियों में एक पुराना किला और खंडहर होता प्राचीन मंदिर भी दर्शनीय है.

अरावली पहाड़ियों के बीच स्थित सरिस्का राजस्थान की एक रमणीक सैरगाह है.

जयपुर के गुलाबी पत्थरों से बने किले व महल पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर खींच लेते हैं.
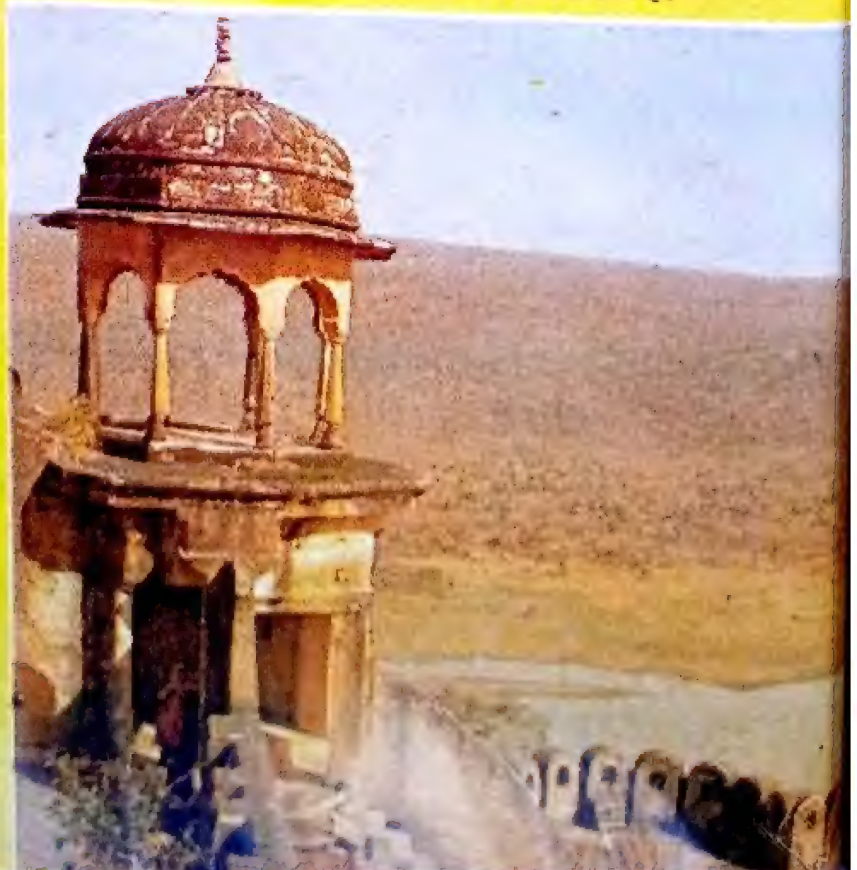
जयपुर

सागर तल से 431 मीटर की ऊंचाई पर 23.3 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला जयपुर सन 1727 में सवाई राजा जयसिंह द्वारा बसाया गया था. यहां के गुलाबी पत्थरों से बने किले और महल बरबस ही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं.

कब जाएं?

गरमियों में जयपुर का न्यूनतम तापमान 25.8° सें. तथा अधिकतम 40.6° सें. और सर्दियों में कम से कम 8.3° सें. तथा अधिक से अधिक 22° सें. रहता है. अतः पर्यटन के लिए यहां सर्वोत्तम समय अक्तूबर से मार्च तक माना गया है.

कैसे जाएं?

जयपुर रेल, सड़क तथा वायु मार्गों द्वारा राजस्थान तथा देश के अन्य भागों से जुड़ा है.

जयपुर के लिए इंडियन एअरलाइंस की दिल्ली से (उड़ान आई सी 491 प्रातः 5.40)बंबई से (आई सी 492 प्रातः 6.20 आई सी 494 सायं 5.30, आई सी 446 सायं 6.45) सीधी उड़ानें हैं.

रेलमार्ग द्वारा जयपुर जाने के लिए दिल्ली से पिंक सिटी एक्सप्रेस, आश्रम एक्सप्रेस, मंडोर एक्सप्रेस, चेतक एक्सप्रेस, दिल्ली एक्सप्रेस, दिल्ली अहमदाबाद एक्सप्रेस, आगरा से हवा महल एक्सप्रेस, श्रीगंगानगर से श्रीगंगानगर एक्सप्रेस, लखनऊ से मरुधार एक्सप्रेस, बीकानेर से बीकानेर-जयपुर एक्सप्रेस तथा सवाई माधोपुर एक्सप्रेस आदि प्रमुख रेलगाड़ियों की अच्छी सुविधा है.

दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के परिवहन निगमों की बसें नियमित रूप से जयपुर आतीजाती हैं. उन के अलावा राजस्थान राज्य परिवहन निगम की बसें भी जयपुर को राजस्थान के विभिन्न नगरों यथा अलवर, अजमेर, बीकानेर, भरतपुर, बूंदी, जैसलमेर आदि से जोड़ती हैं. दिल्ली, आगरा आदि नगरों से जयपुर के लिए डीलक्स तथा सुपर डीलक्स बसों की समुचित व्यवस्था है.

कहां ठहरें?

जयपुर में रामबाग पैलेस, राजमहल पैलेस, जयपुर अशोक, क्लार्क आमेर आदि होटलों में उच्च श्रेणी की भारतीय व पाश्चात्य सुविधाएं उपलब्ध हैं. यहां के मध्यम श्रेणी के होटलों में प्रमुख हैं—तीज टूरिस्ट बंगला, आर्य निवास, खासा कोठी, इंपीरियल, शालीमार, जयपुर इन, एवरग्रीन गेस्ट हाउस, चंद्रलोक, राजधानी आदि.

क्या देखें?

नवाब साहब की हवेली : 18वीं सदी की यह हवेली जयपुर के त्रिपोलिया बाजार में स्थित है. यहां से समग्र नगर का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है. जयपुर के नगर निर्माता विद्याधर भट्टाचार्य का यह निवास स्थान था. इस हवेली ने कई उतारचढ़ाव देखे हैं. कुछ समय तक यह जयपुर राज्य के प्रधान मंत्री के अधिकार में रही.

जयपुर से प्रमुख रेल सेवाएं

दिल्ली के लिए :	प्रस्थान का समय
पिंक सिटी सुपरफास्ट	17.00
मंडोर सुपरफास्ट	4.35
आश्रम एक्सप्रेस	4.35
चेतक एक्सप्रेस	6.45
अहमदाबाददिल्ली मेल	00.30
जयपुरदिल्ली एक्सप्रेस	17.45
आगरा के लिए :	
जयपुरआगरा सुपरफास्ट	6.10
अहमदाबादआगरा एक्सप्रेस	1.00
बाड़मेरआगरा	7.30

आजकल यह जयपुर के एक प्रसिद्ध उद्योगपति की अमूल्य धरोहर है.

हवा महल : नगर से मात्र 3 किलोमीटर दूर स्थित हवा महल महाराजा प्रतापसिंह ने सन 1799 में बनवाया था. यह पांच मंजिला महल शिल्प कला का अनूठा नमूना है. इस में असंख्य झरोखे हैं, जिन से हो कर आने वाली हवा के झोंके गरमियों में भी हलकी ठंडक का एहसास कराते हैं. संभवतः इसी कारण इसे 'हवा महल' कहा जाता है. यदि महल के झरोखे अष्टकोणीय हैं तो छतें खांचेदार. इस के गुंबद एवं कलश भी शानदार हैं. पर्यटकों के लिए यह महल सुबह 10 बजे से सायं 4.30 बजे तक खुला रहता है. शुक्रवार को यहां साप्ताहिक अवकाश रहता है.

जंतरमंतर : महाराजा जयसिंह द्वारा निर्मित जंतरमंतर तत्कालीन उन्नत तकनीक की वेधशाला है. जयसिंह द्वारा मथुरा, वाराणसी, दिल्ली और उज्जैन में बनवाई गई अन्य वेधशालाओं से यह वेधशाला बड़ी है. इस के विशाल यंत्रों की सहायता से ग्रहनक्षत्रों की स्थिति का पता लगाया जा सकता है. इसे किसी भी दिन प्रातः 9 बजे से सायं 4.30 बजे तक देखा जा सकता है.

सिटी पैलेस : यह राजमहल राजस्थानी तथा मुगलिया शिल्प का बेजोड़ मिश्रण है. इस के चारों ओर ऊंचीऊंची दीवारें हैं, जिन की भव्यता के प्रतीक हैं हाथी दांत व पीतल के भारी दैत्याकार दरवाजे. महल की दीवारों पर जयपुरी शैली की चित्रकारी तथा कांच की कारीगरी देखने लायक है. महल में दीवाने आम, दीवाने खास, चंद्र महल, गोविंददेव का मंदिर खूबसूरत उद्यान आदि भी दर्शनीय हैं. महल के अंदर एक संग्रहालय भी है, जिस में राजपरिवार के सदस्यों की निजी वस्तुओं, पारंपरिक चित्रों, गलीचों, मूर्तियों, आभूषण, पांडुलिपियों, पुराने अस्त्रशस्त्रों आदि का अच्छा संग्रह है.

जल महल : स्वच्छ जल के मध्य स्थित यह भव्य महल शाही घराने का ग्रीष्मकालीन निवास था. जल तरंगों के मध्य महल का प्रतिबिंब बड़ा ही लुभावना लगता है. सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय इस का सौंदर्य द्विगुणित हो जाता है.

आमेर का किला राजपूती निर्माण कला का उत्कृष्ट नमूना है. ▶

नाहर गढ़ : जयपुर से लगभग 13 किलोमीटर दूर एक पहाड़ी पर स्थित है नाहरगढ़ यानी टाइगर फोर्ट, जिस के आसपास अनेक खूबसूरत दृश्य हैं. सवाई जयसिंह ने 1734 में इस किले का निर्माण कराया था. सामरिक दृष्टि से यह किला महत्त्वपूर्ण भूमिका रखता था. आजकल यह मनोहारी पिकनिक स्थल है.

जयगढ़ : अपने अतीत में अनेक गौरव गाथाओं को संजोए है जयगढ़ का किला. इस किले में 'जयबाण' नामक एक दीर्घकाय तोप रखी है. इस तोप के पहिए 9 फुट ऊंचे, बैरल (नाल) 20 फुट ऊंची तथा वजन 50 टन है. इसे चलाने के लिए एक बार में 100 किलोग्राम बारूद की आवश्यकता होती है. किले में जल संग्रह के लिए तीन टंकियां हैं, जिन की जल संग्रह क्षमता को देख कर आश्चर्य होता है. धरातल से 500 फुट से भी अधिक ऊंचाई पर बनी ये टंकियां पानी से कैसे भरी रहती हैं, यह आश्चर्यजनक है. किले के एक भाग में जयगढ़ चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा राजा-महाराजाओं की वस्तुएं जैसे हुक्के, नगाड़े, हौदे, सोनेचांदी के सिक्के, भाले, तलवारें आदि संग्रहीत हैं. इस दुर्ग को किसी भी दिन प्रातः 10 से सायं 4.30 बजे तक देखा जा सकता है. यह किला जयपुर शहर से 14 किलोमीटर दूर है.

आमेर पैलेस : जयपुर से दिल्ली की ओर लगभग 11 किलोमीटर दूर स्थित आमेर पैलेस राजपूती निर्माण कला का उत्कृष्ट नमूना है. इस महल का निर्माण राजा मानसिंह ने करवाया था, बाद में सवाई राजा जयसिंह ने इसे अंतिम रूप दिया. इस पैलेस में शीश महल, सुखनिवास जैसे अनेक दर्शनीय कक्ष हैं, जो 17वीं सदी की निर्माण कला के द्योतक हैं.

जयपुर से प्रमुख बस सेवाएं

जयपुर से :	*समय*
उदयपुर	*7.00, 7.45, 21.30*
माउंट आबू	*5.30, 6.45, 7.30*
लखनऊ	*7.30*
हरिद्वार (दिल्ली मेरठ)	*5.00, 6.40, 16.40*
ग्वालियर	*5.00, 6.00, 10.00, 12.00*
अजमेर	*प्रत्येक घंटे*
आगरा	*प्रत्येक घंटे*
दिल्ली	*प्रत्येक घंटे*
कोटा	*5.00, 7.00, 10.00, 12.00, 14.00, 16.00,18.00, 20.00*

'पैलेस आन व्हील्स' यानी चलताफिरता महल

राजस्थान पर्यटन के लिए विदेशी पर्यटकों का विशिष्ट आकर्षण है 'पैलेस आन व्हील्स,' जो वस्तुतः शाही सुखसुविधाओं से परिपूर्ण वातानुकूलित एक रेलगाड़ी है. इस में 13 सैलून, 2 डाइनिंग कारें और एक लाउज कार है. प्रत्येक सैलून में 2 बिस्तरों वाले 4-4 केबिन हैं, जिन में 8-8 यात्री सो सकते हैं, यानी 108 पर्यटक.

इस शाही रेलगाड़ी के प्रत्येक केबिन में एक अपर बर्थ भी है तथा बैठने के लिए एक अवातानुकूलित लाउज भी, जिस में बैठ कर बाहर के दृश्यों का सहज आनंद लिया जा सकता है. इन लाउजों में टीवी, वीसीपी तथा मनोरंजन के अन्य साधनों की भी समुचित व्यवस्था है.

राजस्थान पर्यटन विकास निगम को इस चलतेफिरते महल की प्रेरणा स्वातंत्र्यपूर्व के राजाओं के शाही सैलूनों से मिली है, जिन का उपयोग वे अपने तथा अपने परिवार के आनेजाने के लिए करते थे. इस रेलगाड़ी को शाही सुविधासंपन्न बनाने में राजस्थानी परंपरा एवं वैभव का विशेष ध्यान रखा गया है. इस में यात्रा करने पर सचल महल की सुखानुभूति होती है.

यह शाही रेलगाड़ी दिल्ली से चल कर जयपुर, उदयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, चित्तौड़गढ, भरतपुर, फतेहपुर सीकरी और आगरा होती हुई एक सप्ताह के बाद वापस दिल्ली पहुंचती है. इस रेलगाड़ी में राजस्थान की सैर करने वाले पर्यटकों को राजस्थान के विभिन्न भागों की कला, संस्कृति एवं लोक नृत्यों की सांस्कृतिक झांकियां देखने के लिए मिलती हैं. जयपुर और जैसलमेर में इन के लिए विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं.

केंद्रीय अजायबघर : रामनिवास बाग में स्थित इस अजायबघर को 'अलबर्ट हाल' के नाम से भी जाना जाता है. 1887 में इसे प्रिंस अलबर्ट के स्वागत में बनवाया गया था. यह प्राचीन विक्टोरियन वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है. यहां दुर्लभ वस्त्रकला, काष्ठकला, मूर्तिकला, शिल्पकला, आभूषणकला आदि का अच्छा संग्रह है. यह शुक्रवार को बंद रहता है.

बाग तथा पार्क : जयपुर में हरेभरे बागों तथा पार्कों की भरमार है. यहां का रामनिवास बाग, सिसोदिया रानी का बाग, विद्याधरजी का बाग आदि विशेष रूप से दर्शनीय हैं. किसी बाग में खूबसूरत फव्वारे हैं तो किसी में गुलाबों की विभिन्न किस्में. किसी में हरे मखमली घास की कालीन बिछी है तो किसी में सहस्रों तरह के फूलों की सुगंध बसी है.

क्या खरीदें?

जयपुर पर्यटन के दौरान कीमती पत्थर (हीरेपन्ने), कामदार जूतियां, पत्थर व लाख से बनी खूबसूरत मूर्तियां, ठप्पेदार छपाई के वस्त्र, जयपुरी रजाइयां आदि खरीदी जा सकती हैं. सरकारी इंपोरियम के अलावा मिर्जा इस्माइल रोड, नेहाम बाजार, त्रिपोलिया बाजार, बापू बाजार आदि में उक्त चीजों के प्रमुख विक्रय केंद्र हैं.

अजमेर

दो संस्कृतियों के संगम स्थल के रूप में विख्यात अजमेर राजस्थान का ऐतिहासिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थल है. इस की स्थापना राजा अजय पाल चौहान ने की थी. बाद में यह राजपूतों, मुगलों एवं मराठों की युद्ध भूमि का गवाह बना.

जयपुर पर्यटन के दौरान अजमेर पर्यटन का कार्यक्रम बना लेना सुविधाजनक है.

कैसे जाएं?

जयपुर से अजमेर मात्र 138 किलोमीटर दूर है, जिसे रेल या बस मार्ग द्वारा लगभग तीन घंटों में तय किया जा सकता है. दिन भर अजमेर की सैर कर के आप रात तक जयपुर लौट भी सकते हैं.

वैसे अजमेर दिल्ली, आगरा, अहमदाबाद, उदयपुर, आबू, जोधपुर आदि नगरों से रेल या बस मार्ग द्वारा जुड़ा है.

कहां ठहरें?

यहां अजय मेरु, आनंद, भोला, चंपा महल, हिंदू आदि

जयपुर के लिए प्रमुख रेल सेवाएं

दिल्ली से :	*जयपुर पहुंचने का समय*
पिंक सिटी सुपरफास्ट	11.05
मंडोर सुपरफास्ट	23.35
आश्रम एक्सप्रेस	23.35
चेतक एक्सप्रेस	20.30
दिल्लीअहमदाबाद मेल	4.30
दिल्लीजयपुरशेखावटी एक्सप्रेस	11.00
आगरा से :	
आगराजयपुर सुपरफास्ट	22.00
आगराअहमदाबाद एक्सप्रेस	2.46
आगराबाड़मेर	19.30
बीकानेर से :	
बीकानेरजयपुर पैसेंजर	9.15
बीकानेरसवाई माधोपुर	5.55
गंगानगर से :	
गंगानगरजयपुर एक्सप्रेस	9.00

होटलों में ठहरने की अच्छी व्यवस्था है. यहां कई धर्मशालाएं, गेस्टहाउस और सरकारी आवास भी हैं.

ढाई दिन का झोंपड़ा अजमेर पर्यटन के प्रमुख आकर्षणों में से एक है. यह मुहम्मद गोरी द्वारा 1193 में ठीक ढाई दिन में बनवाया गया था. इसी कारण इसे ढाई दिन का झोंपड़ा कहा जाता है.

अजमेर की दरगाह मुसलमानों की श्रद्धा का केंद्र हैं. यहां देश के कोनेकोने से लोग आते हैं. इसे दरगाह शरीफ और दरगाह ख्वाजा साहिब के नाम से भी जाना जाता है. वस्तुतः यह प्रसिद्ध मुसलिम फकीर मुइनुद्दीन चिश्ती का मकबरा है.

नसियान एक खूबसूरत जैन मंदिर है, जिसे19वीं शती में बनाया गया था.

आना सागर कृत्रिम झील 12वीं सदी में आनाजी चौहान ने बनवाई थी. बाद में मुगल सम्राट जहांगीर और शाहजहां ने इसे और भी खूबसूरती प्रदान की.

तारागढ़ का किला एक ऐतिहासिक इमारत है. इसे 7 सदी में राजा अजय पाल चौहान ने बनवाया था.

क्या खरीदें?

अजमेर पर्यटन के दौरान आप राजस्थानी हस्त शिल्प की चीजें खरीद सकते हैं.

अजमेर की कृत्रिम आना सागर झील अपनी खूबसूरती में बेजोड़ है.

पुष्कर

पुष्कर घूमे बिना अजमेर पर्यटन अधूरा ही रहेगा. अतः आप अजमेर पर्यटन के दौरान पुष्कर का भी कार्यक्रम बना लें. अजमेर और पुष्कर के मध्य मात्र 11 किलोमीटर की दूरी बस या टैक्सी द्वारा 15-20 मिनटों में तय की जा सकती है.

यों तो पुष्कर हिंदुओं का पवित्र तीर्थ माना जाता है, किंतु यहां पर्यटन की दृष्टि से मंदिरों की कलात्मकता, प्रकृति की रमणीयता आदि भी देखते ही बनती है. पौराणिक पृष्ठभूमि पर बताया जाता है कि तथाकथित ब्रह्मा ने यहां आ कर यज्ञ किया था.

हिंदुओं के प्रमुख तीर्थ स्थानों में संभवतः पुष्कर ही ऐसा स्थान है, जहां ब्रह्मा का मंदिर बना है. यह मंदिर पुष्कर झील के निकट स्थापित है. अक्तूबर, नवंबर में यहां विशाल मेला लगता है, जो धार्मिक एवं व्यापारिक दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है.

पुष्कर झील पर अनेक घाट बने हैं, जहां हिंदू धर्मावलंबी स्नान करते हैं. प्रातःकालीन यह दृश्य विदेशी पर्यटकों को आश्चर्यचकित कर देता है.
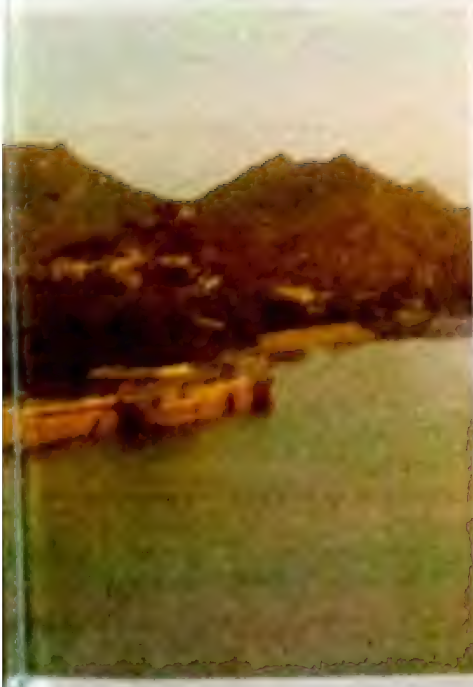
झील के तट पर सावित्री, बदरीनारायण, वाराह, शिव आदि के मंदिर बने हैं.

मंदिर और तीर्थ स्थल होने के कारण यहां पंडेपुजारियों तथा भिखारियों से बच कर रहना ही श्रेयष्कर है.

पुष्कर के मंदिरों की कलात्मकता व प्रकृति की रमणीयता देखते ही बनती है. ▲

जैसलमेर

'हवेलियों का नगर' के रूप में विख्यात जैसलमेर थार मरुस्थल के पीत पठारी भाग पर बसा, राजस्थान का एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है. यह उन्नत वास्तुकला एवं राजपूती शान के लिए अप्रतिम है.

बीकानेर से जैसलमेर तक सड़क या वायु मार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता है. वैसे यह जोधपुर से पश्चिम रेलवे द्वारा भी जुड़ा है. अजमेर, बीकानेर, दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर से राज्य परिवहन की नियमित बसें जैसलमेर जातीआती हैं. बीकानेर जोधपुर और उदयपुर से जैसलमेर के लिए प्राइवेट कंपनियों की कुछ डीलक्स बसें भी चलती हैं, जिन में यात्रा करना अपेक्षाकृत अधिक आरामदायक रहता है.

जैसलमेर में पर्यटकों के ठहरने के लिए भी पर्याप्त व्यवस्था है. यहां हिम्मतगढ़ पैलेस, जवाहर निवास पैलेस, नारायण निवास पैलेस, नीरज आदि होटलों में ठहरा जा सकता है.

जैसलमेर के दर्शनीय स्थलों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है यहां का ऐतिहासिक किला, जिस का निर्माण रावल जैसल ने 1156 में कराया था. यह किला त्रिकूट नामक पहाड़ी पर स्थित है. 99 बुर्ज वाले इस अपराजेय दुर्ग का एकएक पत्थर वीर भाटी राजपूतों की कहानी कहता है. यह किला राजस्थानी वास्तुकला की अनुपम धरोहर है. इस दुर्ग के चार दरवाजे हैं. अंदर रंग महल, मोती महल, राजविलास में पत्थरों पर बारीक खुदाई देखने योग्य है.

स्थानीय धनिकों द्वारा बनवाई गई हवेलियां जैसलमेर का अन्य आकर्षण हैं, जो केवल जैसलमेर की ही नहीं, राजस्थान भर की बहुमूल्य थाती हैं. इन का अद्‌भुत रचना विधान पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है. इन में से पटवों की हवेली को एक राष्ट्रीय स्मारक के रूप में घोषित कर दिया गया है. नथमल मेहता की हवेली 7 पत्थरों से निर्मित 7 गवाक्षों के कारण अपनी समता नहीं रखती. हवेलियों में कोरनी वाले पत्थर लगे हैं. उन के कमलनुमा गवाक्ष और उन पर नृत्य करते मोरों की मूर्तियां अत्यंत चित्ताकर्षक लगती हैं. इन हवेलियों की बनावट कपड़े पर की गई कसीदाकारी के समान प्रतीत होती है. पीले और चिकने पत्थरों से बनी ये हवेलियां सूर्य की रोशनी में और भी चमक उठती हैं.

जैसलमेर का किला राजपूती शान की अप्रतिम निशानी है. ▼
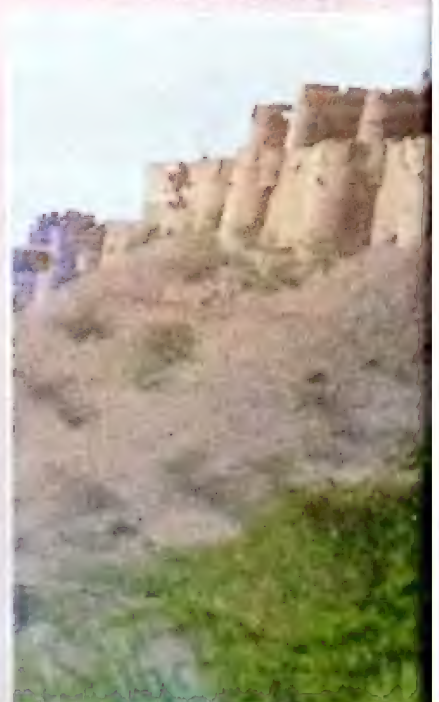
जैसलमेर से लगभग 42 किलोमीटर दूर रेत के टीले फोटोग्राफरों तथा फिल्म निर्माताओं के आकर्षण का विशेष केंद्र है. यहां कई फीचर फिल्मों के विविध रमणीक दृश्यों का छायांकन भी हुआ है. सूर्य के तेज प्रकाश में रेत के इन टीलों की चमक बढ़ जाती है. ये टीले जैसलमेर के विस्तृत भूभाग में फैले हैं.

जैसलमेर का ठेठ रेगिस्तानी वातावरण एवं पर्यावरण चिकारा, रेगिस्तानी बिल्ली, लोमड़ी, खरगोश, छिपकली आदि जीवजंतुओं के स्वच्छंद विचरण के अवलोकनार्थ भी पर्यटकों को आमंत्रित करता है. यहां विस्तृत निर्जल भू भाग पर शीत काल में नाना प्रकार के पक्षी, शाही रेगिस्तानी मुरगा, सारस मांस भक्षी गरुड़, बाज, शिकारी कुत्ते आदि भी 'डेजर्ट सेंचुरी' में भ्रमण करते देखे जा सकते हैं.

इन के अलावा जैसलमेर में ज्ञान भंडार हवेली म्यूजियम, गढ़ हिसार, मूल सागर, बड़ा बाग, अमर सागर आदि भी दर्शनीय हैं. ●

उदयपुर

ऐतिहासिक गरिमा, विशाल महलों, खूबसूरत झीलों व अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य का अद्वितीय सामंजस्य प्रस्तुत करता उदयपुर राजस्थान का रमणीक पर्यटन स्थल है. यह शहर 1599 में मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप के पुत्र उदयसिंह द्वारा बसाया गया. इसी भूमि पर महाराणा प्रताप ने मुगल बादशाह अकबर से टक्कर ली थी. प्रसिद्ध कवयित्री मीरा का जन्म भी इसी शहर में हुआ था.

रंगबिरंगे पुष्पों व घने वृक्षों से लदी अरावली पर्वत श्रेणियां इस नगर को खूबसूरत पृष्ठभूमि प्रदान करती हैं. समुद्रतट से 577 मी. ऊंचाई पर स्थित यह शहर 40 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला है.
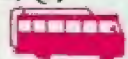
कब जाएं?

यहां का मौसम साल भर खुशगवार रहता है. इसलिए वर्ष में कभी भी यहां जाया जा सकता है.

कैसे जाएं?

निकटतम हवाई अड्डा शहर से 24 कि.मी. दूर दबोक में स्थित है. इंडियन एअर लाइंस की उड़ानें उदयपुर को दिल्ली, बंबई, जयपुर, जोधपुर व औरंगाबाद से जोड़ती हैं.

पश्चिमी रेलवे की रेलगाड़ियां उदयपुर के लिए नियमित रूप से जाती हैं. दिल्ली, अजमेर, अहमदाबाद, जोधपुर, जयपुर, खंडवा आदि से यहां के लिए सीधी रेल सेवाएं उपलब्ध हैं.

राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 8 द्वारा उदयपुर देश के अन्य हिस्सों से जुड़ा है. राजस्थान परिवहन निगम की बसें राज्य के हर हिस्से से यहां के लिए उपलब्ध हैं.

राजस्थान पर्यटन विकास निगम द्वारा उदयपुर व आसपास के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के

उदयपुर: ठहरने के स्थान

शिव निवास पैलेस, सिटी पैलेस
लेक पैलेस, पिछोला लेक.
कजरी टूरिस्ट बंगला, शास्त्री सर्किल.
हिलटौप, फतेह सागर,
लेक पिछोला, चांदपोल के पास.
इन के अतिरिक्त सर्किट हाउस डाक बंगला, म्युनीसिपल गेस्ट हाउस में ठहरने की व्यवस्था है.

धर्मशालाएं:
पुराना रेलवे स्टेशन सराय
शंभुनाथजी की सराय
बोहरा मुसाफिरखाना
चंपाला धर्मशाला
दिगंबर जैन बोर्डिंग
जैन धर्मशाला
सिंधी धर्मशाला
मुसलिम मुसाफिरखाना

लिए विशेष कोचों व टैक्सियों की व्यवस्था है. ट्रैवल एजेंसियों द्वारा भी बस या टैक्सी की सेवाएं ली जा सकती हैं. नगर में इधरउधर जाने के लिए रिकशे व तांगे उपलब्ध हैं.

रेलवे लाइन के समीप स्थित राजस्थान राज्य परिवहन निगम के बस स्टैंड से आसपास के पर्यटन स्थलों के लिए नियमित बस सेवाएं हैं.

क्या देखें?

सिटी पैलेस: ग्रेनाइट व संगमरमर से बना यह विशाल महल लेक पिछोला के पार स्थित पहाड़ी की चोटी पर बना है. अष्टकोणीय आकृति में बने इस महल की ऊंची बुर्जियां इस की वास्तुकला की विशेषता को दर्शाती हैं. महल की दीवारें सुंदर चित्रों व शीशे की बारीक कारीगरी से भरी पड़ी हैं. महल का सब से पुराना हिस्सा 'राज आंगन' 16 वीं शताब्दी में महाराज उदय सिंह ने बनवाया था. महल में 'प्रताप संग्रहालय' नाम से एक संग्रहालय भी है. इस में पुराने लोकसंगीत के वाद्य यंत्र संग्रहीत हैं. यह महल सुबह 9 बजे से शाम 4.30 तक खुला रहता है.

लेक पैलेस: लेक पिछोला के मध्य स्थित यह भव्य महल 4 एकड़ क्षेत्र में फैला है. महाराणा जगत सिंह द्वितीय ने 1746 में इस का निर्माण करवाया था. इस महल तक पहुंचने के लिए तट से नौका में जाना पड़ता है. महल के चारों ओर फैली झील में महल का प्रतिबिंब मन को छू जाता है. महल की दीवारें प्राचीन चित्रों से सुशोभित हैं. महल को अब होटल में परिवर्तित कर दिया गया है.

सहेलियों की बाड़ी: महाराणा संग्राम सिंह द्वारा 18 वीं शताब्दी में बनवाया गया यह बाग, फतेह सागर झील के पूर्वी किनारे पर स्थित है. बाग में चार खूबसूरत जलाशय हैं, जिन्हें संगमरमर की तराशी हुई छतरियों व हाथी की आकृतियों द्वारा अलंकृत किया गया है. सुंदर फव्वारों से घिरे बाग में एक कमल की आकृति का जलाशय व एक आकर्षक कमरा भी है. बाग सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक खुला रहता है.

पिछोला झील: पर्वत, जलाशयों, धार्मिक स्थानों व विशाल महलों से घिरी यह झील रमणीय पर्यटन स्थल है. झील का मुख्य आकर्षण मध्य स्थित लेक पैलेस व इस पर बनाया गया बांध है. इस बांध का

फतेह सागर झील के किनारे बनी सहेलियों की बाड़ी सुंदर फव्वारों से अलंकृत है.

निर्माण बंजारों द्वारा महाराणा लक्षा के शासनकाल में किया गया. झील की सैर के लिए नौका व मोटरबोट की व्यवस्था है.

महाराणा प्रताप स्मारक: फतेहसागर झील के किनारे स्थित 'मोती मगरी हिल' को वीर पुत्र महाराणा प्रताप के स्मारक के रूप में विकसित किया गया है. ऊंचे चबूतरे पर चेतक घोड़े पर बैठे महाराणा प्रताप का धातु से बना आकर्षक बुत है.

भारतीय लोक कला संग्रहालय: इस संग्रहालय में लोक कला व जनजाति संबंधी सामग्री को संरक्षित रखा गया है. संग्रहालय के खुले मैदान में कठपुतलियों का लोक नृत्य दिखाया जाता है. संग्रहालय में संग्रहीत आभूषण, मुखौटे, चित्र व लोक संगीत वाद्य देखने योग्य हैं. संग्रहालय सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक खुला रहता है.

इस के अतिरिक्त जगदीश मंदिर, अरावली वाटिका, फतेह सागर झील आदि स्थलों की सैर भी की जा सकती है.

क्या खरीदें?

यहां की दस्तकारी की वस्तुएं, स्थानीय खिलौने, वस्त्र, लकड़ी व धातु की बारीक कारीगरी देशविदेश में प्रसिद्ध है.

खरीदने के लिए मुख्य स्थान चेतक सर्किल, बापू बाजार, सिटी मार्केट, पैलेस रोड, क्लाक टावर, नेहरू बाजार, दिल्ली गेट, सिंधी बाजार, बड़ा बाजार व टाउन हाल मुख्य स्थान हैं.

इस के अतिरिक्त राजस्थान सरकार का एंपोरियम, 'राज- स्थली' चेतक रोड पर स्थित है, यहां से भी हस्तशिल्प की उत्तम वस्तुएं खरीदी जा सकती हैं.

ग्रेनाइट व संगमरमर से बना सिटी पैलेस बारीक कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना है.

माउंट आबू

समुद्रतट से 1,200 मी. की ऊंचाई पर स्थित माउंट आबू प्राकृतिक सौंदर्य व स्थापत्य कला का सुंदर नमूना है. अरावली पर्वत श्रेणियों पर स्थित माउंट आबू ऐतिहासिक स्मारकों, प्राचीन मंदिरों व अपने सुहावने मौसम के लिए देशविदेश में प्रसिद्ध है. घने जंगल व विशाल चट्टानों से घिरी इस की पगडंडियों में रंगबिरंगे फूलों की भीनीभीनी खुशबू आप को क्षण भर के लिए सम्मोहित कर लेगी.

कब जाएं?

माउंट आबू जाने के लिए उत्तम समय मार्च व जून के बीच या सितंबर व दिसंबर के मध्य है. बरसात के मौसम में यहां काफी बारिश होती है. इसलिए इन दिनों यहां की सैर का लुत्फ नहीं उठा पाएंगे.

कैसे जाएं?

माउंट आबू के लिए निकटतम हवाई अड्डा 185 कि.मी. दूरी पर उदयपुर में स्थित है. यहां से आगे की यात्रा टैक्सी, बस अथवा रेल द्वारा की जा सकती है.

निकटतम रेलवे स्टेशन 27 कि.मी. दूर आबू रोड पर स्थित है. दिल्ली, अहमदाबाद व राजस्थान के अन्य प्रमुख नगरों से यहां के लिए सीधी रेल सेवा उपलब्ध है. आप जोधपुर व जयपुर पहुंच कर भी यहां के लिए गाड़ी बदल सकते हैं.

माउंट आबू विभिन्न मार्गों द्वारा देश के अन्य भागों से जुड़ा है. राजस्थान परिवहन निगम की सीधी बस सेवाएं यहां के लिए उपलब्ध हैं. जयपुर, जोधपुर, अहमदाबाद व दिल्ली से यहां के लिए साधारण व डीलक्स बसें जाती हैं.

राजस्थान पर्यटन विकास निगम द्वारा माउंट आबू व आसपास के पर्यटन स्थलों की सैर के लिए विशेष कोच, कारों व मेटाडोर की व्यवस्था है. अधिक जानकारी के लिए बस स्टैंड के पीछे स्थित पर्यटन सूचना कार्यालय से सुबह 8 बजे से शाम 7 बजे तक पूछताछ कर सकते हैं.

इस के अतिरिक्त शहर में

प्राइवेट टैक्सी, रिकशा व तांगे आदि की व्यवस्था भी है.

क्या देखें?

दिलवाड़ा के जैन मंदिर: संगमरमर की बारीक खुदाई द्वारा उभारी गई मूर्तियां इस मंदिर को अद्वितीय सौंदर्य प्रदान करती हैं. स्थापत्य कला की सूक्ष्मता के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध ये मंदिर 11 वीं और 13 वीं शताब्दी के मध्य बनवाए गए. मंदिर का कोनाकोना इस सूक्ष्मता से कुरेदा गया है मानो कलाकारों ने पत्थरों में अपनी आत्मा पिरो दी हो. इन मंदिरों के निर्माण के लिए संगमरमर मकराना की खानों से लाया गया. कलात्मक सौंदर्य से मंत्रमुग्ध कर लेने वाले ये मंदिर जैन गुरु आदिनाथ को अर्पित हैं. यह श्रुति प्रचलित है कि इन मंदिरों के निर्माण में लगे श्रमिकों को निर्माण में लगे संगमरमर के बराबर वजन में सोना व चांदी दे कर सम्मानित किया गया था.

नक्की झील नौका विहार व पिकनिक के लिए उत्तम स्थान है. ▲

माउंट आबू: ठहरने के स्थान

हालिडे होम, फोन: 77
गुजराती लाजिंग बोर्डिंग-फोन: 3
हिलटोन होटल, फोन: 137
माउंट होटल, फोन: 55
पैलेस होटल, फोन: 21
सम्राट होटल, फोन: 73
विश्राम होटल, फोन 223
इन के अतिरिक्त विभिन्न विभागों के रेस्ट हाउस, टूरिस्ट बंगलों व धर्मशालाओं में भी ठहरने का समुचित प्रबंध है.

अधर देवी मंदिर: बड़ी चट्टान को काट कर बनाया गया यह मंदिर छोटी पहाड़ी पर स्थित है. मंदिर तक पहुंचने के लिए 200 सीढ़ियों की चढ़ाई चढ़नी पड़ती है. यहां से नगर व उस के आसपास का दृश्य बड़ा ही मनोहारी दिखाई देता है.

नक्की झील: ऊंची पर्वत श्रेणियों व घने वृक्षों से घिरी यह मनमोहक झील मुख्य बाजार के पास है. झील के किनारे मंदिरों की लंबी कतार है. नौका विहार व पिकनिक के लिए यह एक उपयुक्त स्थल है.

श्री रघुनाथ मंदिर: यह मंदिर नक्की झील के समीप स्थित है. मंदिर में 14वीं सदी के प्रसिद्ध धर्मोपदेशक रामानंद ने रघुनाथजी की मूर्ति की स्थापना की.

सनसेट प्वाइंट: नगर के पश्चिमी किनारे पर स्थित इस स्थल से डूबते सूरज का दृश्य मन को मोह लेता है. रेतीली पहाड़ी की चोटी के पीछे सूरज धीरेधीरे इस तरह छिप जाता है जैसे पिघल कर छोटा होता जा रहा हो.

आर्ट गैलरी व राज्य संग्रहालय: राजभवन में स्थित इस संग्रहालय में आप राजस्थानी संस्कृति, कला, वेशभूषा से परिचित हो सकते हैं. संग्रहालय शुक्रवार को बंद रहता है व अन्य दिनों में प्रातः 10 बजे से शाम 5 बजे तक खुलता है.

क्या खरीदें?

माउंट आबू में ग्रामीण खिलौने, हस्तशिल्प की वस्तुएं, लकड़ी, तांबे व धातु की दुर्लभ कलाकृतियां आदि खरीदने लायक वस्तुएं हैं. इस के अतिरिक्त राजस्थान सरकार के इंपोरियम से भी अपनी मनपसंद वस्तुएं खरीद सकते हैं. ●

अहमदाबाद

गुजरात का यह नगर वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध है. इस नगर को 1411 में सुलतान अहमद शाह ने बसाया. साबरमती के तट पर स्थित यह नगर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का मुख्य केंद्र रहा. 1915 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने यहां गांधी आश्रम की स्थापना की. गमंधी जी ने नमक कानून को तोड़ने के लिए दांडी मार्च की शुरुआत भी यहीं से की.

अहमदाबाद विभिन्न पुरातात्त्विक महत्त्व की इमारतों, स्मारकों, मंदिरों, मसजिदों से सुशोभित हैं.

कब जाएं ?

अक्तूबर से अप्रैल के मध्य.

कैसे जाएं ?

अहमदाबाद के लिए वायुदूत की बंबई से (उड़ान पी एफ 317 दोपहर 12.00)तथा इंदौर से (उड़ान पी एफ 317 सायं 4.55) उड़ान सेवाएं हैं. दिल्ली से इंडियन एअर लाइंस की उड़ान सेवा भी उपलब्ध है.

अहमदाबाद के मंदिर अपनी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध हैं.

देश के अन्य भागों से अहमदाबाद के लिए पर्याप्त रेल सेवाएं हैं. दिल्ली से दिल्ली मेल–22.00, दिल्ली एक्सप्रेस–9.30, आश्रम एक्सप्रेस–18.10, जोधपुर से सूर्य नगरी एक्सप्रेस-22.15, जोधपुर अहमदाबाद एक्सप्रेस–15.30, गोरखपुर से गोरखपुर अहमदाबाद एक्सप्रेस–5.00, वाराणसी से साबरमती एक्सप्रेस (1, 5) 10.35 आदि अहमदाबाद के लिए मुख्य रेल गाड़ियां हैं.

अहमदाबाद के लिए गुजरात के विभिन्न जिलों व पड़ौसी राज्य राजस्थान से बस सेवा की पर्याप्त व्यवस्था है.

मुख्य नगरों से दूरी
दिल्ली–939 कि.मी.,
बड़ोदरा–120 कि.मी.
बंबई–555 कि.मी.,
उदयपुर–268 कि.मी.
आबू–228 कि.मी., दिल्ली (वाया उदयपुर व जयपुर) 1076 कि.मी.

अहमदाबाद व आसपास के पर्यटन स्थलों के लिए राज्य परिवहन की बसों व प्राइवेट टैक्सियों की व्यवस्था है. यहां का बस स्टैंड 'लाल दरवाजा' के नाम से जाना जाता है. शहर घूमने के लिए आटो रिक्शा भी उपलब्ध है, पर ये लोग मनमाना किराया वसूलते हैं. इसलिए किराया पहले ही तय कर लें.

क्या देखें ?

जुम्मा मसजिद : अहमदाबाद स्थित यह मसजिद विश्व की खूबसूरत मसजिदों में गिनी जाती है. इस मसजिद का निर्माण, अहमदाबाद नगर के स्थापक सुलतान अहमद शाह ने 1423 में करवाया. बालू के पत्थर से निर्मित यह मसजिद हिंदू मुसलिम स्थापत्य कला का मिश्रित नमूना है. मसजिद में 260 खंबे हैं, जो 15 गुंबदों को आधार प्रदान करते हैं. यह मसजिद अपने विशाल स्वरूप, बेहतरीन आनुपातिक संतुलन व सूक्ष्म शिल्पकारी के लिए प्रसिद्ध है.

सीदी सैयद मसजिद : यह मसजिद विश्व भर में अपनी पत्थर की खिड़कियों की सूक्ष्म जालीदार नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है. वृक्ष के आकृति में बनी यह जालीदार खिड़कियां क्षण भर के लिए आप को अपने सौंदर्य से सम्मोहित कर लेंगी.

सीदी बशीर मसजिद : रेलवे स्टेशन के दक्षिण में स्थित यह मसजिद झूलती हुई मीनारों के लिए प्रसिद्ध है. एक मीनार के हिलते ही दूसरी स्वतः ही हिलने लगती है. इस मसजिद का निर्माण मध्य काल में हुआ. अहमदाबाद स्थित राज बीबी मसजिद में भी दो झूलती मीनारें हैं. पर्यटकों के लिए यह आकर्षण का केंद्र रहती है.

कांकरिया झील : गोलाकार आकृति में बनी यह झील 1 मील के घेरे में फैली है. इस का निर्माण 1451 में सुलतान

कुतुबुद्दीन ने करवाया था. झील के मध्य में एक खूबसूरत बाग बनाया गया है, जो 'नगीना बाड़ी' के नाम से जाना जाता है. झील के आसपास बाल वाटिका, चिड़ियाघर व छोटेछोटे पार्क इसे विशेष आकर्षण प्रदान करते हैं.

शाहीबाग पैलेस : इस महल का निर्माण शाहजहां के शासन काल में हुआ. शाहजहां ने अपने विवाहित जीवन के प्रारंभिक दिन इसी महल में बिताए थे. गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर अपनी अहमदाबाद यात्रा के दौरान इसी महल में ठहरे थे तथा यहीं उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना 'हंगरी स्टोन' रची थी. जिसे गुरुदेव की स्मृति में संरक्षित कर यहां रखा गया है.

अहमदाबाद : ठहरने के स्थान

गांधी आश्रम विश्राम गृह
सर्किट हाउस, शाही बाग
होटल रूपाली, लाल दरवाजा
होटल केपिटल, चंदनबाड़ी
मेघदूत होटल, गुप्ता चैंबर्स
अंबेसडर होटल, खानपुर रोड
रिट्ज होटल, लाल दरवाजा
कर्णवती होटल, आश्रम रोड
नटराज होटल
होटल अहमदाबाद इंटरनेशनल
गोकुल होटल
होटल किंग्सवे, रिलीफ सिनेमा के पास
धर्मशालाएं :
हिंदू धर्मशाला, भाटिया धर्मशाला, मगन बाई करमचंद्र धर्मशाला, रेवाबाई धर्मशाला, जैन धर्मशाला

साबरमती आश्रम : अहमदाबाद से 7 कि.मी. दूर यह आश्रम साबरमती के तट पर स्थित है. साबरमती की निर्मल व शांत धारा से सामंजस्य स्थापित कर यह आश्रम महात्मा गांधी द्वारा 1915 में बसाया गया. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का यह अभिन्न अंग रहा. यहीं से गांधी जी ने नमक कानून के विरोध में 'दांडी मार्च' प्रारंभ की थी. बापू की कुटिया 'हृदय कुंज' को ज्यों का त्यों संरक्षित रखा गया है. आश्रम में एक गांधी स्मारक केंद्र व पुस्तकालय की व्यवस्था भी की गई है. जहां गांधी जी के जीवन से संबंधित सामग्री संग्रहीत की गई है.

श्रेयस संग्रहालय : इस संग्रहालय में गुजरात, सौराष्ट्र व कच्छ क्षेत्रों की बहुमूल्य लोक संस्कृति संबंधित सामग्री संग्रहीत है. इस के अतिरिक्त स्थानीय हस्तशिल्प की वस्तुएं व पारंपरिक वेशभूषा भी यहां संग्रहीत हैं.

क्या खरीदें ?

अहमदाबाद सूती वस्त्र उद्योग के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है. आप यहां से सूती वस्त्रों की खरीद कर सकते हैं. स्थानीय हस्तशिल्प की वस्तुएं भी गृह सज्जा के लिए उपयुक्त हैं.

सीदी बशीर मसजिद अपनी झूलती मीनारों के लिए प्रसिद्ध है. ▼

गांधीनगर

अहमदाबाद पर्यटन के दौरान गांधीनगर की सैर का कार्यक्रम भी बनाया जा सकता है. यह गुजरात की राजधानी है. यह साबरमती नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है. इसे बड़े ही व्यवस्थित ढंग से पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है.

अहमदाबाद से गांधीनगर जाने के लिए राज्य परिवहन

निगम की बसें तथा टैक्सियां उपलब्ध रहती हैं. यदि आप गांधीनगर में ठहरना चाहें तो पथिकाश्रम (सेक्टर–11), यूथ होस्टल (सेक्टर–16), सर्किट हाउस ('जे' रोड), रेस्ट हाउस (सेक्टर–21) में भी ठहर सकते हैं.

गांधीनगर की सैर कर के पर्यटकों के तन और मन को एक विश्रांति मिलती है. यहां के पार्कों और उद्यानों की हरीतिमा, सड़क के किनारे छायादार हरेभरे पेड़पौधे मन मोह लेते हैं. बालोद्यान, सरितोद्यान, डीयर पार्क आदि की सैर करते हुए आप ऊंघेंगे नहीं.

दूसरी ओर नगर की भव्य इमारतें भव्यतम वास्तुकला का परिचय देती हैं. उन का अनूठा रचना विधान बड़ा ही आकर्षक लगता है.

यदि आप शारदीय नवरात्रों में गांधीनगर पर्यटन का कार्यक्रम बनाएं तो यहां का 'पल्ली उत्सव' देखना न भूलें. पल्ली लकड़ी का बना रथाकार एक सिंहासन होता है. इस में पहिए नहीं होते. यह देवीदेवताओं का विमान माना जाता है. इसी कारण लोग इसे श्रद्धापूर्वक अपने कंधों पर उठाते हैं. गांधीनगर के उत्तर में करीब 15 किलोमीटर दूर रूपल गांव में सिद्धराज जयसिंह ने एक भव्य मंदिर बनवाया था, जहां देवी की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराने के लिए मूर्ति को विधिपूर्वक पल्ली में जयसिंह के योद्धा लाए थे. तब से प्रतिवर्ष उसी दिन यानी शारदीय नवरात्रों के रविवार को यह उत्सव मनाया जाता है. सूर्योदय से ले कर मध्य रात्रि तक यह उत्सव चलता रहता है. इस अवसर पर मेला तथा अनेक लोक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन होता है. सारे दिन पल्ली में देवी प्रतिमा को गांव भर में घुमाया जाता है. यह उत्सव गुजरात का प्रसिद्ध उत्सव माना जाता है.

बड़ौदा

खूबसूरत उद्यानों, भव्य प्रासादों एवं छायादार रमणीक सड़कों वाला सुंदर नगर कभी बड़ौदा राज्य की राजधानी रहा है. यह रेल, सड़क तथा वायु मार्गों से देश के अन्य प्रमुख नगरों से जुड़ा है. अहदाबाद पर्यटन के दौरान आप बड़ौदा का भी कार्यक्रम बना सकते हैं. बड़ौदा के लिए अहमदाबाद से टैक्सियां भी मिल जाएंगी.

लक्ष्मी विलास पैलेस, नजरबाग पैलेस, प्रताप विलास पैलेस आदि भवन और महल कलात्मक दृष्टि से दर्शनीय हैं. कीर्ति मंदिर में तरहतरह के पत्थरों का आकर्षक प्रयोग किया गया है. इस की भीतरी दीवारों पर प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बोस की चित्रकारी देखते ही बनती है.

स्थानीय 'पब्लिक पार्क' में एक संग्रहालय कलादीर्घा और चिड़ियाघर देखने के लिए पर्यटकों की प्रतिदिन भीड़ लगी रहती है. यह पार्क 150 एकड़ में फैला है. यहां का संग्रहालय पर्यटकों के लिए विशेष रूप से दर्शनीय है. इस में लघु चित्रकथाओं, प्राकृतिक इतिहास, नृविज्ञान आदि से संबंधित वस्तुओं का अच्छा एवं महत्त्वपूर्ण संग्रह है. यहां के अन्य संग्रहालयों में महाराजा फतेहसिंह संग्रहालय, ओरिएंटल इंस्टीट्यूट आदि भी उल्लेखनीय हैं. इस में प्राचीन पांडुलिपियों का अच्छा संग्रह है.

द्वारका

अरब सागर के तट पर स्थित द्वारका नगरी हिंदुओं के प्रमुख पवित्र स्थलों में से एक है. इस नगर का उल्लेख पौराणिक महाकाव्य महाभारत, स्कंद तथा विष्णु पुराणों में मिलता है. प्राचीन काल में यह नगर 'द्वारवती' नाम से जाना जाता था. ऐसा कहा जाता है कि कृष्ण द्वारा कंस वध के पश्चात, जरासंध ने कृष्ण से प्रतिशोध लेने के लिए 17 बार युद्ध किया, पर वह अपने प्रयासों में निष्फल रहा. लेकिन जब जरासंध ने 18वीं बार मथुरा पर आक्रमण किया तो कृष्ण अपने सहयोगी यादवों के साथ द्वारका चले आए. इस के अतिरिक्त आदि शंकराचार्य भी 8वीं शताब्दी में सनातन धर्म के प्रचार के लिए यहां आए थे. उन्होंने यहां 'द्वारकापीठ' की स्थापना की. तब से द्वारका भारत के 4 धामों में से एक है.

द्वारका का सौंदर्य जन्माष्टमी समारोह के दौरान चरमोत्कर्ष पर होता है. यहां से खुले व विशाल सागर का अवलोकन किया जा सकता है.

मंदिरों की नगरी द्वारका हिंदुओं के पवित्र स्थलों में से एक है. ▲

कब जाएं?

द्वारका जाने के लिए उपयुक्त समय नवंबर व मार्च के मध्य है.

कैसे जाएं?

द्वारका से निकटतम हवाई अड्डा जामनगर में पड़ता है. यह यहां से 148 कि.मी. दूर है. यहां के लिए बंबई से उड़ान सेवा उपलब्ध है. आगे की यात्रा बस अथवा टैक्सी द्वारा तय की जा सकती है.

राजकोट, अहमदाबाद, पोरबंदर व जामनगर से यहां के लिए सीधी रेल सेवाएं हैं. देश के अन्य हिस्सों से आप अहमदाबाद पहुंच कर भी यहां पहुंच सकते हैं.

अहमदाबाद, जामनगर, ओखा, दाकर व पोरबंदर से द्वारका के लिए राज्य परिवहन की नियमित बसें चलती हैं.

क्या देखें?

द्वारकाधीश मंदिर: द्वारका से 2 कि.मी. दूर यह प्रसिद्ध मंदिर स्थित है. 1,400 वर्ष प्राचीन यह मंदिर 'जग मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है. 5 मंजिले इस भव्य मंदिर पर सूक्ष्म नक्काशी की गई है. मंदिर में स्थित हरिगृह शिल्पगत दृष्टि से बेजोड़ है. ऐसी मान्यता है कि हरि गृह का निर्माण श्रीकृष्ण के

द्वारका : ठहरने के स्थान

गुरु प्रेरणा होटल, भद्रकाली मंदिर के समीप
द्वारकापुरी गेस्ट हाउस, देवी भुवन रोड
उत्तम गेस्ट हाउस, जवाहर रोड
महालक्ष्मी लाज
पी. डब्ल्यू. डी. रेस्ट हाउस
मुरलीधर लाज
सर्किट हाउस
वंसीधर लाज
कांता लाज
विश्रांति गृह
धर्मशालाएं
बीकानेर धर्मशाला, गोमती घाट
बिड़ला धर्मशाला, रेस्ट हाउस के पास
देवी भवन, बस स्टैंड रोड के पास
हरगोविंद भवन, भद्रकाली मंदिर के समीप
कबीर आश्रम, तीन बत्ती चौक
जल भवन, बस स्टेशन रोड
पटेल भवन, गोमती घाट
विश्वकर्मा, गोमती घाट

पौत्र ब्रजनाथ ने करवाया था. यह विशाल मंदिर 3 भागों में विभाजित है—सभागृह, शिखर मंदिर, निज मंदिर. इन में शिखर मंदिर सब से आकर्षक है. यह मंदिर सुबह 6 बजे से दोपहर 12.30 तथा सायं 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक खुला रहता है.

भदकेश्वर मंदिर: द्वारका से 3.5 किलोमीटर दूर यह मंदिर समुद्र तट पर स्थित है. 800 वर्ष पुराना मंदिर भगवान शिव को अर्पित है. वर्ष भर यहां श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है. यहां से अरब सागर में हिलोरे लेती लहरों का मनमोहक दृश्य भी देखा जा सकता है.

शंकराचार्य मठ: आदि शंकराचार्य द्वारा इस मठ की स्थापना 8वीं सदी में की गई. यह मठ हिंदुओं के 4 धामों में से एक है. इस मठ के साथ स्थित सावित्री देवी मंदिर, सिद्धनाथ मंदिर व भद्रकाली मंदिर अन्य मुख्य आकर्षण हैं.

रुकमणी मंदिर: यह मंदिर कृष्ण की पटरानी रुकमणी को समर्पित है. यह मंदिर 1,600 वर्ष पुराना है. द्वारका से 4 कि.मी. दूर स्थित यह मंदिर स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण है.

वेद भवन: द्वारका से लगभग आधा किलोमीटर दूर यह वैदिक संस्थान स्थित है. संस्थान के समीप स्थित समुद्र तट की चमचमाती रेत पर्यटकों को आकर्षित करती है.

सोमनाथ

अरब सागर के तट पर स्थित सोमनाथ गुजरात का ही नहीं, भारत भर का प्रसिद्ध प्राचीन पर्यटन स्थल है. यह अपने प्राचीन सोमनाथ मंदिर के कारण धार्मिक एवं शैल्पिक क्षेत्रों में विशेष महत्त्व रखता है. इसी मंदिर से 1990 में भारतीय जनता पार्टी के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने अयोध्या स्थित राम जन्मभूमि मंदिर के मुद्दे को ले कर अयोध्या के लिए अपनी अश्वमेधीय रथयात्रा आरंभ की थी.

निर्माण और पुनर्निर्माणों के जितने दौरों से सोमनाथ का मंदिर गुजरा है, संभवतः भारत के अन्य किसी भी मंदिर का इतनी बार विध्वंस एवं पुनर्निर्माण नहीं हुआ होगा. फिर भी यह मंदिर इतिहास के प्रतिनिधि की भूमिका निभाता है.

सोमनाथ जाने के लिए दिल्ली, बंबई आदि नगरों से वायु मार्ग द्वारा अहमदाबाद पहुंचा जा सकता है, जहां से रेल मार्ग द्वारा वेरावल तक यात्रा की जा सकती है. वैसे देश के अनेक सड़क मार्गों से भी वेरावल तक सीधा संबंध है. वेरावल से 5 किलोमीटर दूर सोमनाथ जाने के लिए बसें और

सोमनाथ का मंदिर अपने पुनर्निर्माणों व कलात्मक शिल्प के लिए प्रसिद्ध है. ◀

टैक्सियां सुलभ रहती हैं. वैसे गिर, द्वारका, पोरबंदर, अहमदाबाद, राजकोट आदि से भी सोमनाथ के लिए सीधी बसें चलती हैं.

ठहरने के लिए सोमनाथ में विश्राम गृह, डाक बंगलों, टूरिस्ट बंगलों और धर्मशालाओं की पर्याप्त व्यवस्था है. होटलों में ठहरना अपेक्षाकृत महंगा पड़ सकता है.

सोमनाथ मंदिर शिल्प कला का एक अनूठा नमूना है. मंदिर के गुंबद और मेहराब पत्थरों को काटकाट कर बनाए गए हैं. उन पर सुंदर पच्चीकारी देख कर मन मुग्ध हो उठता है. मंदिर के प्रांगण में खड़े हो कर दूर सागर की चंचल लहरों का उतारचढ़ाव बड़ा ही लुभावना लगता है. सामने स्थित वेरावल बंदरगाह और दूर सागर में खड़े विशाल जहाज व नावें कवियों की कल्पना का साकार रूप जान पड़ती हैं.

मंदिर की गहरी गुफा में प्राचीन शिवलिंग प्रतिष्ठित है. मंदिर का शिखर भाग गगनचुंबी है. मंदिर के चारों ओर परकोटा बना है. यह विश्व में शिव के 12 श्रेष्ठ मंदिरों में से एक है.

प्राकृतिक रमणीयता की दृष्टि से सोमनाथ के निकट नारायण एवं सरस्वती नदियों का संगम देखते ही बनता है. यहां प्रति वर्ष एक मेला भी लगता है.

इस संगम के निकट ही गीता भवन में लगी मूर्तियां और दूर तक लगे आईनों में झलकते उन के प्रतिबिंब अत्यधिक मोहक लगते हैं.

यहां के कृष्ण मंदिर में कृष्ण की एक प्रतिमा प्रतिष्ठित है. कहा जाता है कि इसी स्थान पर तथाकथित भगवान कृष्ण के पैर में किसी शिकारी का एक तीर आ कर लगा था. कृष्ण की प्रतिमा में उन्हीं पीड़ादायक क्षणों की भावभंगिमा को उकेरा गया है. प्रतिमा के ऊपर पीपल के वृक्ष की सुखद छाया है.

सांची

भोपाल के निकट बौद्ध स्तूपों के लिए विश्व प्रसिद्ध सांची एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है. सांची समतल चोटी वाली पहाड़ी पर बसा एक सुंदर कसबा है, जहां गरमियों में वन लाल फूलों से लद जाते हैं. ऐसा लगता है, मानो जंगल में आग लग गई हो. बौद्धकालीन भग्नावशेषों को देखने के लिए विश्व भर से हजारों पर्यटक यहां आते हैं.

कहां ठहरें?

रांची स्थित मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग के ट्रैवलर्स लाज, लोकनिर्माण के 'रेस्ट हाउस' तथा बुद्धिस्ट गेस्ट हाउस में पर्यटकों के ठहरने की व्यवस्था है. लेकिन इस के लिए संबंधित

सांची अपने बौद्ध स्तूपों के कारण विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक पर्यटन स्थल बना हुआ है. ▼

अधिकारियों से आरक्षण करा लेना अधिक अच्छा रहता है.

क्या देखें?

बृहत स्तूप: यह एक पहाड़ी की समतल चोटी के मध्य में लाल बलुआ पत्थर से निर्मित ठोस गोलीय पिंड है, जिस के ऊपरी भाग पर एक चबूतरा बना है. स्तूप के चारों ओर एक प्रदक्षिणा पथ है. प्राचीन काल में इसे 'मेधी' कहते थे. कहते हैं कि यह स्तूप सम्राट अशोक ने बनवाया था. यह स्तूप नंबर एक के नाम से भी जाना जाता है.

स्तूप के चारों ओर पत्थर का परकोटा भी बना है, जिस में चार प्रवेश द्वार हैं. चारों प्रवेश द्वारों पर चित्रमय सजावटी खुदाई बड़ी ही सुंदरता से की गई है. यह केवल कलात्मक ही नहीं, बौद्ध संस्कृति की परिचायक भी है. ये द्वार सफेद बलुआ पत्थर के बने हैं. उत्तरी प्रवेश द्वार पर जातक कथाओं के परिचायक दृश्य अंकित हैं.

प्रवेश द्वार के सब से ऊपरी भाग पर धर्मचक्र बना है, जिसे सिंहों व हाथियों द्वारा संभाला गया है और उस के दोनों ओर यक्ष चित्रित हैं. धर्मचक्र बौद्ध धर्म का प्रतीक है.

अन्य स्तूप: बृहत स्तूप से कुछ दूरी पर स्तूप नंबर दो और तीन के अवशेष विद्यमान हैं. इन का निर्माण ईसा पूर्व दूसरी सदी में अनुमानित है. स्तूप नंबर तीन में एक प्रवेश द्वार है. इस स्तूप में गौतम बुद्ध के दो शिष्यों सरिपुत्र और महामोग्गलायन के अस्थि अवशेष सुरक्षित बताए जाते हैं. जनरल कनिंघम ने इन अस्थियों का शोध किया था. उस समय ये अस्थियां लंदन के संग्रहालय में भेज दी गईं थीं. बाद में उन्हें वापस ला कर यहां नवनिर्मित विहार में संरक्षित कर दिया गया. ये स्तूप गुप्त शैली में निर्मित हैं.

अशोक स्तंभ: बृहत स्तूप के दक्षिणी द्वार के निकट अशोक स्तंभ है. चमकदार रंग तथा आकर्षक शैली के कारण यह स्तंभ अशोक के अन्य आकर्षक एवं प्राचीनतम स्तंभों में से एक है. यह स्तंभ जीर्णशीर्ण है.

चैत्यगिरि विहार: चैत्यगिरि विहार के भग्नावशेष बृहत स्तूप के दक्षिणी द्वार के ठीक सामने हैं. इस की दीवारों और स्तंभों को देख कर लगता है कि यह सातवीं सदी के बाद की रचना है. इस के नीचे तीन प्राचीन विहारों के अवशेष हैं, जो इसी स्थान पर एक के बाद एक बनाए गए थे.

पचमढ़ी हरीभरी पर्वत श्रेणियों व मनमोहक झरनों से आच्छादित मध्य प्रदेश का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल है.

पचमढ़ी

सतपुड़ा की हरीभरी पर्वत श्रेणियों पर स्थित पचमढ़ी मध्य प्रदेश का एक मात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल है. यह रमणीय पर्यटन स्थल ऊंचेनीचे पर्वतों, संकरी घाटियों व घने जंगलों से घिरा है. पचमढ़ी में प्राकृतिक झरनों का बाहुल्य इस के सौंदर्य को चार चांद लगाता है. गोधूलि के समय यहां का दृश्य मन को मोह लेता है.

इस स्थान का नाम पचमढ़ी 'पंच मठी' से पड़ा जिस का अर्थ

पचमढ़ी : ठहरने के स्थान

रूस्की मोटेल
ब्लाक होटल
हालिडे होम
सतपुड़ा टूरिस्ट लाज

है पांच कुटियां या गुफाएं. ऐसा माना जाता है कि इन पांच कुटियों में 'महाभारत' महाकाव्य में वर्णित पांच पांडव भाइयों ने अपने 12 वर्ष के वनवास का कुछ भाग बिताया था. यह स्थान समुद्रतट से 1067 मी. ऊंचाई पर स्थित है.

कब जाएं?

सितंबर, अक्तूबर व अप्रैल तथा जून के मध्य.

कैसे जाएं?

निकटतम हवाई अड्डा 210 कि.मी. दूर भोपाल में स्थित है. यहां के लिए इंडियन एयर लाइंस की दिल्ली, बंबई, इंदौर से नियमित उड़ानें हैं. नागपुर हवाई अड्डा भी 258 कि.मी. दूरी पर स्थित है. आगे का सफर टैक्सी, बस अथवा रेल से किया जा सकता है.

निकटतम रेलवे स्टेशन 52 कि.मी. दूर पिपरिया में स्थित है. इलाहाबादइटारसी मुख्य रेलवे लाइन द्वारा इसे देश के अन्य भागों से जोड़ा गया है. इलाहाबाद, बंबई, भोपाल, जबलपुर व नागपुर से यहां के लिए रेल सेवाएं उपलब्ध है.

पचमढ़ी सड़क मार्ग द्वारा देश के अन्य भागों से जुड़ा है. मध्य प्रदेश परिवहन की बसें भोपाल, इंदौर व उज्जैन से यहां के लिए उपलब्ध हैं.

अप्सरा विहार : 5 कि.मी. दूरी पर स्थित यह प्राकृतिक झरना रमणीय पर्यटन स्थल है. इस में एक जलाशय है. यहां तैरने व नहाने का समुचित प्रबंध है. शहर की भीड़भाड़ से दूर शांत व मनोहारी वातावरण में पिकनिक मनाने के लिए यह उत्तम स्थान है.

चौड़ागढ़ : 1312 मी. ऊंचाई पर स्थित यह खूबसूरत स्थल पचमढ़ी से 15 कि.मी. दूर स्थित है. यह एक महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थल है. इस के पथ के आसपास गढ़े अनगिनत त्रिशूल मुख्य आकर्षण का केंद्र हैं. इस की पृष्ठभूमि में फैली सतपुड़ा पर्वत श्रेणियां इसे नैसर्गिक सौंदर्य प्रदान करती हैं.

धूपगढ़ : यह मध्य प्रदेश की सब से ऊंची पर्वत चोटी है. 1345 मी. ऊंचाई पर स्थित यह स्थल पचमढ़ी से 10 कि.मी. दूर है. पर्वतारोहियों को विशेष रूप से आकर्षित करता है. इस के शिखर से आसपास की पर्वत श्रेणियों व शहर का दृश्य बहुत खूबसूरत दिखाई देता है.

जटाशंकर : यह पचमढ़ी से डेढ़ किलोमीटर दूर स्थित है. यहां से जंबू नदी निकलती है. यहां स्थित गुफा में शिवजी की प्राचीन मूर्ति है. यहां का शांत व रमणीय वातावरण मन मोह लेता है.

महादेव : निर्मल जल के जलाशय के चारों ओर स्थित ये गुफाएं पचमढ़ी से 12 कि.मी. दूर हैं. गुफाओं में शिवजी की मूर्ति स्थापित है. हर वर्ष शिवरात्रि के अवसर पर यहां विशाल मेला लगता है. इस के समीप ही गुप्त महादेव की गुफा भी स्थित है.

विंध्याचल की पर्वत श्रेणियों पर 2,000 फुट ऊंचाई पर स्थित मांडू प्राकृतिक सौंदर्य व मध्ययुगीन भव्य स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है. शहर के चारों ओर फैली खूबसूरत घाटी इसे मालवा के पठार से अलग करती है. मानसून के मौसम में मांडू का सौंदर्य चरमसीमा पर होता है. बारिश की रिमझिम बूंदों में हरेहरे वृक्ष, रंगबिरंगे फूलों की आभा हृदय को स्पंदित करती है. यहां स्थित भव्य स्मारक क्षीण अवस्था में हैं लेकिन आज भी बीते इतिहास की झलक इन स्मारकों में जीवित है. इन महलों में आज भी राजा बाज बहादुर

मांडू के स्मारक क्षीण अवस्था में होने पर भी इतिहास के जीवित साक्ष्य हैं. ▲

मांडू: ठहरने के स्थान

टूरिस्ट बंगला, (मध्य प्रदेश पर्यटन) रूपवती रोड
टूरिस्ट काटेज, (मध्य प्रदेश पर्यटन)
ट्रेवलर्स लाज (मध्य प्रदेश पर्यटन)
हवेली महल रेस्ट हाउस
पी.डब्ल्यू.डी. रेस्ट हाउस
पंचायत भवन
जैन धर्मशाला

व पटरानी रूपमती की अमर प्रेम कहानी गूंजती है.

सर्वप्रथम मांडू 11 वीं सदी में परमार वंश के अधीन प्रभाव में आया. 14 से 16 सदी के मध्य इस पर खिलजी, लोधी व गोरी शासकों ने राज किया. अंतिम स्थानीय शासक बाज बहादुर को हरा कर अकबर ने इसे अपनी मुगल सल्तनत का हिस्सा बनाया.

कब जाएं?

गरमियों के महीनों को छोड़ कर वर्ष भर में कभी भी जाया जा सकता है.

कैसे जाएं?

मांडू पहुंचने के लिए निकटतम हवाई अड्डा 99 कि.मी. दूर इंदौर में स्थित है. इंदौर के लिए दिल्ली, भोपाल, बंबई व नागपुर से इंडियन एअर लाइंस की उड़ान सेवा है.

रेल से मांडू पहुंचने के लिए अब तक उचित व्यवस्था नहीं हो पाई है. निकटतम रेलवे स्टेशन इंदौर 100 कि.मी. व रतलाम 124 कि.मी. दूर पड़ते हैं.

राज्य के विभिन्न भागों व पड़ोसी राज्यों से यहां के लिए पर्याप्त बस सेवा उपलब्ध है. इंदौर, ग्वालियर, खजुराहो, भोपाल, उज्जैन आदि स्थानों से यहां नियमित बसें आती हैं.

मांडू एक छोटा नगर है तथा यहां के अधिकतर दर्शनीय स्थल इस के आसपास ही स्थित हैं. आप इन के दर्शन के लिए पैदल जा सकते हैं. स्थानीय भ्रमण के लिए टैंपो व साइकिल रिक्शों की भी व्यवस्था है.

क्या देखें?

जहाज महल: 120 मी. लंबा यह 2 मंजिला भव्य महल 2 तालाबों, मुंज तालाब व कपूर तालाब के मध्य स्थित है. इस महल का निर्माण सुलतान ग्यासुद्दीन खिलजी ने करवाया था. छोटेछोटे इन तालाबों के बीच स्थित यह महल पानी पर तैरता प्रतीत होता है. इसलिए इसे 'जहाज महल' कहा जाता है. चांदनी रात में जलाशयों के शांत जल में इस का प्रतिबिंब देखते ही बनता है. महल के ऊपर से आसपास के विशाल परिदृश्य को देखा जा सकता है.

हिंडोला महल: अंगरेजी वर्णमाला के अक्षर 'टी' की आकृति में निर्मित हिंडोला महल, जहाज महल के उत्तर में स्थित है. यह महल अपनी बनावट के कारण झूलता प्रतीत होता है. इसलिए इसे 'हिंडोला महल' कहा जाता है. महल में एक विशाल सभागार है. महल के अग्र भाग की सजावट व संगमरमर के पत्थरों पर की सूक्ष्म जालीदार नक्काशी स्थापत्य कला के अनुपम

उदाहरण हैं.

हिंडोला महल से सटी चंपा बोली तथा दिलावर खान मसजिद यहां के अन्य मुख्य आकर्षण हैं.

बाज बहादुर पैलेस: मालवा के अंतिम शासक द्वारा इस महल का निर्माण 16 वीं सदी में करवाया गया. महल के मुख्य हिस्से में एक विशाल प्रांगण है जिस के चारों ओर अनेक कमरे व बड़े हाल बनाए गए हैं. महल के मध्य में एक आकर्षक कुंड है. महल की विशाल छत से आसपास का मनोहारी दृश्य देखा जा सकता है.

रूपमती दीर्घा: यह दीर्घा राजा बाज बहादुर की पटरानी रूपमती को समर्पित है. ऐसा कहा जाता है कि पहाड़ की चोटी पर स्थित इस स्थल पर रूपमती प्रतिदिन पवित्र नर्मदा नदी की शीतल धारा के दर्शन करने आया करती थी. दीर्घा में स्थित अर्धगोलाकार गुंबदों से बाहर का आकर्षक परिदृश्य देखा जा सकता है.

रेवा कुंड: इस जलाशय का निर्माण राजा बाज बहादुर ने रानी रूपमती के महल की जल पूर्ति के लिए करवाया था. बाद में रूपमती ने इस का पुनर्निर्माण करवाया. आज यह हिंदुओं के पवित्र स्थल के रूप में प्रसिद्ध है.

होशांगशाह का मकबरा: यह अफगान स्थापत्य कला का बेहतरीन नमूना है. यह मकबरा संगमरमर द्वारा निर्मित भारत की पहली इमारत है. मकबरे के प्रांगण में संगमरमर से बने मंडप द्वारों पर हुई सूक्ष्म जालीदार नक्काशी देखने योग्य है. इमारत के चारों कोनों पर विशाल स्तंभ स्थित हैं.

बंबई

देश की व्यावसायिक गतिविधियों की केंद्र बिंदु यह महानगरी विश्व के प्रमुख नगरों में गिनी जाती है. यह नगरी आधुनिक व पारंपरिक सभ्यता व संस्कृति के मिश्रित स्वरूप को धारण कर विकसित हुई है.

इस नगरी का उद्भव 250 बी.सी. के आसपास माना जाता है. उस काल में यह नगरी सात द्वीपों का समूह थी और 'हिपटेनेसिया' नाम से जानी जाती थी. 1521 के आसपास यह नगरी पुर्तगालियों के अधीन थी. आप को यह जान कर आश्चर्य होगा कि यह विशाल नगरी 1549 में पुर्तगालियों ने एक प्राइवेट कंपनी को 537 रुपए में बेची थी. अंगरेजों के शासन काल में इस नगर को मुख्य व्यावसायिक केंद्र के रूप में विकसित किया गया. देश की प्रथम रेल सेवा 1853 में यहीं से शुरू हुई. यहां स्थित बंदरगाह विश्व के प्रमुख व्यापारिक बंदरगाहों में से एक है.

कब जाएं?

वैसे तो बंबई का मौसम वर्ष भर सुहावना रहता है पर जून से सितंबर माह के मध्य यहां बारिश होती है. यहां बारिश कईकई दिन लगातार होती रहती है. इसलिए इस दौरान यहां न ही जाएं तो बेहतर होगा. वर्ष के बाकी समय में कभी भी यहां जाया जा सकता है.

कैसे जाएं?

बंबई के लिए देश व विदेश के कई प्रमुख नगरों से सीधी उड़ान सेवाएं उपलब्ध हैं. इंडियन एअर लाइंस व वायुदूत की नियमित उड़ानें इसे देश के अन्य भागों से जोड़ती हैं. आगरा, अहमदाबाद, औरंगाबाद, बंगलौर, भोपाल, भुवनेश्वर, कलकत्ता, दिल्ली, हैदराबाद, जयपुर, मद्रास, पोरबंदर, त्रिवेंद्रम आदि स्थानों से इंडियन एअर लाइंस की बंबई के लिए नियमित उड़ानें हैं.

बंबई मध्य व पश्चिम रेलवे का मुख्य कार्यालय है. देश के कई भागों से यहां के लिए सीधी रेल सेवाएं उपलब्ध हैं. अहमदाबाद, भोपाल, बंगलौर, कलकत्ता, औरंगाबाद, दिल्ली, हैदराबाद, गोआ,

बंबई का फ्लोरा फाउंटेन चौक रात में विद्युत प्रकाश में बहुत रमणीक दिखाई देता है.

जयपुर, मद्रास, नागपुर व त्रिवेंद्रम से यहां नियमित रेलगाड़ियां आती हैं.

राज्य के अन्य जिलों व देश के अन्य भागों से बंबई के लिए बसों की समुचित व्यवस्था है.

बंबई प्रमुख उड़ान सेवाएं

बंबई के लिए इंडियन एअर लाइंस व वायुदूत की पर्याप्त उड़ानें हैं.

इंडियन एअर लाइंस की ***दिल्ली से*** *(उड़ान आई सी 186 प्रातः 6.15, आई सी 188, प्रातः 7.00, आई सी 405, सायं 6.10, आई सी 184, रात्रि 9.10, आई सी 807, सायं 7.30,)* ***हैदराबाद से*** *(आई सी 919, प्रातः 6.30, आई सी 6.18, प्रातः 11.20,),* ***जयपुर से*** *(आई सी 493, सायं 6.30, आई सी 491, सायं 6.30, आई सी 491, प्रातः 6.50),* ***भोपाल से*** *(आई सी 433, प्रातः 9.10, आई सी 123, प्रातः 8.30),* ***मद्रास से*** *(आई सी 172, प्रातः 10.50, आई सी 174, रात्रि 8.15),* ***कलकत्ता से*** *(आई सी 176, प्रातः 9.00, आई सी 273, सायं 7.30),* ***लखनऊ से*** *(आई सी 695, दोपहर 2.15) आदि* ***बंबई के लिए*** *सीधी उड़ानें हैं.*

भारतीय पर्यटन विकास निगम व महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम द्वारा बंबई व आसपास के दर्शनीय स्थलों के लिए लक्जरी कोच, वातानुकूलित बसें व साधारण बसें चलाई जाती हैं. टूरिस्ट टैक्सियों की भी यहां समुचित व्यवस्था है. इस के अतिरिक्त आटो रिक्शा व स्थानीय परिवहन निगम की 'बेस्ट' बसों की सेवा भी ली जा सकती है.

क्या देखें?

अफगान चर्चः **बंबई से साढ़े चार किलोमीटर दूरी पर स्थित इस चर्च का निर्माण 1847 में हुआ था. यह चर्च उन ब्रिटिश सैनिकों को अर्पित है जो 1838 के सिंध व 1843 के अफगान युद्ध में शहीद हुए थे. यह चर्च 'सैंट जान चर्च' के नाम से भी जाना जाता है.**

हाजी अली की दरगाहः **प्रसिद्ध मुसलिम फकीर हाजी अली की दरगाह के चारों ओर समुद्र फैला है. दरगाह तक जाने के लिए पक्का रास्ता बनाया गया है. ज्वारभाटा आने पर यह मार्ग बंद हो जाता है. इसलिए यहां तभी जाया जा सकता है, जब समुद्र में जल का चढ़ाव कम हो. बीच समुद्र में स्थित इस दरगाह से आसपास का मनोहारी दृश्य देखने लायक है.**

प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियमः **इस संग्रहालय का निर्माण 1911 में हुआ. देश के विशालतम**

बंबई में शाम के समय समुद्र के किनारे घूमना एक अविस्मरणीय अनुभव है.
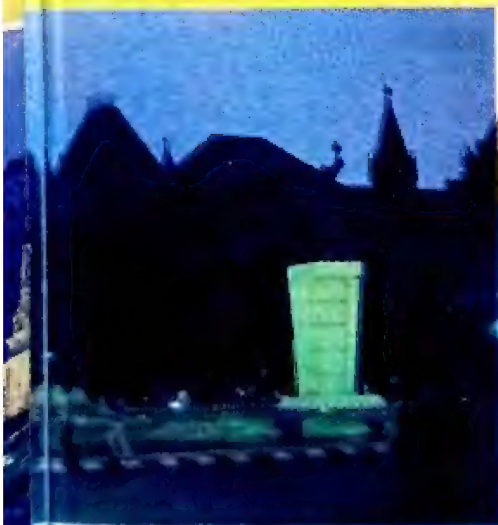
संग्रहालयों में से एक, यह संग्रहालय 1923 में साधारण जन के लिए खोला गया. इस भवन का निर्माण स्थापत्य कला की हिंदमुसलिम शैली के मिश्रित रूप में किया गया है. भवन की विशाल गुंबद, बीजापुर की प्रसिद्ध गोल गुंबद की अनुकृति है. संग्रहालय में प्राचीन चित्रकला के उत्कृष्ट नमूने संग्रहीत हैं. यह संग्रहालय तीन भागों में विभाजित हैं– कला, पुरातत्त्व व प्रकृति इतिहास. ये संग्रहालय सोमवार के अतिरिक्त प्रतिदिन सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक खुलता है.

विक्टोरिया एंड अल्बर्ट म्यूजियम: इस संग्रहालय में बंबई में मिले पुरातात्त्विक अवशेष व यहां के इतिहास को चित्रों व नक्शों द्वारा दर्शाया गया है. यह संग्रहालय बुधवार के अलावा बाकी दिन खुला रहता है. संग्रहालय सुबह 10.30 से शाम 5 बजे तक खुला रहता है.

नेहरू विज्ञान संग्रहालय: वर्ली स्थित आकर्षक संग्रहालय है. संग्रहालय में एक दीर्घा व बच्चों के लिए विज्ञान उद्यान की स्थापना की गई है. संग्रहालय में संग्रहीत पुराना रेलवे इंजन ट्रामकार व स्टीम लारी विशेष रूप से आकर्षित करते हैं. संग्रहालय दोपहर 12 बजे से शाम 7 बजे तक खुला रहता है. सोमवार व अन्य सार्वजनिक छुट्टियों को संग्रहालय बंद रहता है.

विक्टोरिया टर्मिनस: स्थापत्य कला की दृष्टि से नगर की सब से महत्त्वपूर्ण इमारत है. इस की बाहरी दीवारों पर सूक्ष्म नक्काशी की गई है. प्रवेश द्वार पर शेर व बाघ का विशाल बुत स्थापित है. भवन के अग्रभाग में रानी विक्टोरिया का आकर्षक बुत स्थित है. देश की रेल सेवा की शुरुआत इसी स्टेशन से हुई थी. यह स्थान 'वी.टी.' के नाम से भी प्रचलित है.

हुतात्मा चौक: बंबई से 1 कि.मी. दूर स्थित यह स्थल पहले 'फ्लोरा फाउंटेन' के नाम से जाना जाता था. यह बंबई का

रात में मैरिन ड्राइव का परिदृश्य मन को मोह लेता है.

बंबई से प्रमुख रेल सेवाएं

राजधानी एक्सप्रेस *बंबई सेंट्रल-नई दिल्ली–17.00 (1,2,3,4,5,7)*
फ्रंटियर मेल *बंबई सेंट्रल-अमृतसर–21.15*
पश्चिम एक्सप्रेस *बंबई सेंट्रल-अमृतसर–11.30*
दादरअमृतसर एक्सप्रेस *दादर बंबई-अमृतसर–22.50*
पंजाब मेल *बंबई वी.टी.-फिरोजपुर–16.15*
श्रमशक्ति एक्सप्रेस *दादर-मुजफ्फरपुर-4.10*
जनता एक्सप्रेस *बंबई वी.टी.-छपरा, भागलपुर–19.35*
दादरगुवाहाटी एक्सप्रेस *दादर-गुवाहाटी–4.10*
हावड़ाबंबई एक्सप्रेस *बंबई सेंट्रल-फिरोजपुर–7.25*
महानगरी एक्सप्रेस *बंबई वी.टी.-वाराणसी–23.55*
रत्नागिरि एक्सप्रेस *बंबई वी.टी.-वाराणसी–5.00*
बंबई जम्मू एक्सप्रेस सुपरफास्ट *बंबई सेंट्रल-जम्मू तवी–8.25 (1,4,5,7)*

बंबई के लिए प्रमुख रेल सेवाएं

साकेत एक्सप्रेस *फैजाबाद-बंबई वी.टी–15.45*
पुष्पक एक्सप्रेस *लखनऊ-बंबई वी.टी.–20.10*
पुष्पक एक्सप्रेस *लखनऊ-बंबई वी.टी.–20.10*
रत्नागिरि एक्सप्रेस *वाराणसी-बंबई वी.टी–17.45 (2,4,5)*
पंजाब मेल *फिरोजपुर-बंबई वी.टी–21.00*
दादरअमृतसर एक्सप्रेस *अमृतसर-दादर–8.25*
हावड़ाबंबई मेल *हावड़ा-बंबई वी.टी.–20.00*
राजधानी एक्सप्रेस *नई दिल्ली-बंबई सेंट्रल–16.05 (1,2,3,4,5,6)*
फ्रंटियर मेल *अमृतसर-बंबई सेंट्रल–20.45*
दादरगुवाहाटी एक्सप्रेस *गुवाहाटी-दादर–16.00*
श्रमशक्ति एक्सप्रेस *मुजफ्फरपुर-दादर–9.15.*

स्थित यह पार्क बच्चों का विशेष आकर्षण है. पार्क से 'मैरिन ड्राइव' व 'चौपाटी बीच' का हृदयस्पर्शी परिदृश्य दिखाई देता है. समयसमय पर यहां अनेक समारोहों का आयोजन किया जाता है. स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस को यहां रोशनी की जाती है.

गेटवे आफ इंडिया: इस इमारत का निर्माण किंग जार्ज पंचम व महारानी मेरी की भारत यात्रा के स्मारक चिह्न के रूप में 1911 में किया गया था. 26 मीटर ऊंची इस इमारत का डिजाइन गुजराती शैली पर

प्रमुख व्यावसायिक केंद्र है. आसपास सरकारी कार्यालय, कालिज व व्यापारिक प्रतिष्ठान स्थित हैं.

तारापोर एक्वेरियम: इस एक्वेरियम के निर्माण में 8 लाख की लागत लगी है. इस की स्थापना 1951 में की गई. यहां देशविदेश की समुद्री मछलियों की दुर्लभ किस्मों को एकत्रित किया गया है. मछलियों के लिए समुद्री पानी की व्यवस्था के लिए पाइप द्वारा समुद्र से पानी एक्वेरियम में पहुंचाया गया है. एक्वेरियम में समुद्री सीपी व मत्स्य उद्योग से जुड़ी वस्तुएं भी प्रदर्शित की गई हैं. एक्वेरियम सोमवार को बंद रहता है. बाकी दिन सुबह 11 बजे से शाम 8 बजे तक खुला रहता है.

हैंगिंग गार्डन: इस पार्क की स्थापना 1881 में की गई थी. इसे 'फिरोजशाह मेहता गार्डन' के नाम से भी जाना जाता है. यह पार्क जलाशय के ऊपरी भाग पर स्थित है. यहां का मुख्य आकर्षण जानवरों की आकृति में काटी गई हैज है.

कमला नेहरू पार्क: मालाबार हिल की ढलान पर

बंबई: ठहरने के लिए मुख्य स्थान

उच्च बजट के होटल

ओबेराय टावर्स, नरीमन पाइंट
होटल प्रेसीडेंट, कोलाबा
द ओबेराय, नरीमन पाइंट
सेंटार होटल, बंबई एअरपोर्ट
होलिडे इन, जुहू बीच
ताजमहल इंटर कोंटिनेनटल, अपोलो बंदर
लीला पेंटा होटल, सहारा एअरपोर्ट के सामने
द अंबेसडर, चर्चगेट एक्सटेंशन

मध्य बजट के होटल

होटल डिप्लोमेट
गार्डन होटल, कोलाबा
होटल किंग्स, जुहू
होटल पार्क वे, दादर
सी ग्रीन होटल, मेरिन ड्राइव
रीजेंसी होटल
होटल ओरिएंटल पैलेस, खार

साधारण बजट के होटल

होटल अप्सरा इंटरनेशनल, सांताक्रुज
होटल ग्रांट, प्रोक्टर रोड
होटल रायल, चैंबूर
होटल रीगल पैलेस टाटा रोड नं. 1
होटल अरोमा, दादर
पूर्णिमा गेस्ट हाउस, जुहू
रेलवे रिटायरिंग रूम, बंबई सेंट्रल
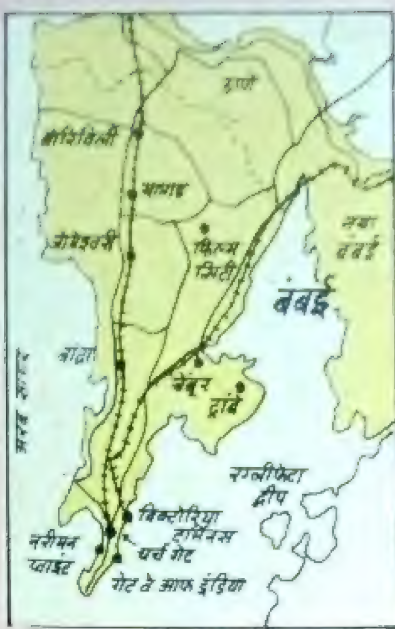
आधारित है. घोड़े पर सवार छत्रपति शिवाजी व स्वामी विवेकानंद की प्रतिमाएं भी यहां स्थापित की गई हैं.

जुहू बीच: बंबई से 20 किलोमीटर दूर यह मनमोहक बीच स्थित है. यह बीच 5 कि.मी. के क्षेत्र में फैला है. बीच के किनारे पर स्थित ताड़ व नारियल के वृक्ष इसे आकर्षक पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं. यह बंबई का प्रसिद्ध पिकनिक स्थल भी है. वैसे अब यह बंबई के मध्य हो गया है, क्योंकि बंबई इस से 15 किलोमीटर आगे तक बसी है.

चौपाटी बीच: बंबई से 4 किलोमीटर दूरी पर यह प्रसिद्ध बीच स्थित है. गणेश चतुर्थी के मेले का आयोजन इसी बीच पर किया जाता है. बीच पर भारत केसरी लोकमान्य तिलक व विट्ठलभाई पटेल की प्रतिमा स्थापित की गई है.

क्या खरीदें?

बंबई देश की मुख्य महानगरी व प्रमुख व्यावसायिक केंद्र है. इसलिए यहां आप के उपयोग की लगभग हर वस्तु उपलब्ध है. हां, यहां खरीदारी करते समय नकली वस्तुओं व ठगी से बचें. खरीदारी के लिए मुख्य क्षेत्र हैं– शहीद भगत सिंह रोड, भुलेश्वर, फिरोजशाह मेहता रोड, मंगलदास मार्किट, जावेरी बाजार, लिंकिंग रोड, बांद्रा आदि.

इन के अतिरिक्त राज्य सरकार व अन्य राज्यों के इंपोरियम से भी हस्तशिल्प की उत्तम वस्तुएं खरीदी जा सकती हैं.

माथेरान

माथेरान बंबई का समीपस्थ हिल स्टेशन है. यह बंबई से केवल 104 कि.मी. दूर है.

यह स्थान 1880 में थाना के कलक्टर एच.पी. मेलेट ने खोजा था. बाद में उन्होंने इसे सुंदर हिल स्टेशन में परिवर्तित कराया. यहां का नैसर्गिक सौंदर्य पर्यटक को हर बार ताजगी देता है. इसी लिए अधिकांश बंबईवासी सप्ताहांत में माथेरान चले आते हैं.

कब जाएं?

यहां मानसून को छोड़ कर अक्तूबर से मई तक कभी भी जाया जा सकता है, लेकिन यहां जाने के लिए अप्रैल और मई दो महीने विशेष रूप से उपयुक्त हैं. यहां का तापमान पूरे वर्ष में 16 डिग्री सें. से कम और 32 डिग्री सें. से अधिक नहीं होता.

कैसे जाएं?

माथेरान जाने के लिए बंबई से नेरल जाइए. नेरल से माथेरान के लिए खिलौने जैसी छोटी गाड़ी चलती है. वैसे नेरल से माथेरान तक की दूरी मात्र 21 कि.मी. है, पर मंथर गति से चलने के कारण 2 घंटे लग जाते हैं.

क्या देखें?

यद्यपि माथेरान बहुत बड़ी जगह नहीं है फिर भी यहां घूमने के लिए इतने अधिक स्थल (प्वाइंट) हैं कि एक बार में सभी नहीं देखे जा सकते. हर बार एक नया प्वाइंट निकल आता है.

यहां लगभग 30 जानेमाने स्थल हैं. इन में से प्रमुख हैं पेनोरमा या पांडुरंग, गारबोट, पोरकुपाइन (सूर्यास्त देखने के लिए उल्लेखनीय) लुइसा, इको, हनीमून वन ट्री हिल, चौक मंकी आदि.

इन में से कई स्थल ऐसे हैं कि जिन के नाम उन्हें खोजने वाले के नाम पर पड़ गए. जैसे मेलेट्स स्प्रिंग, माउंट बेरी, लुइसा प्वाइंट आदि. मंकी प्वाइंट बंदरों से घिरा है. ये बंदर आप के नाश्ते और खाने में भागीदारी करते हैं. इको प्वाइंट अपने नाम के अनुसार प्रतिध्वनि उत्पन्न करता है.

रामबाग: माथेरान ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नहीं है. फिर भी एक किंवदंती है कि वन ट्री हिल के ठीक नीचे रामबाग के जंगल के लिए सीढ़ियां गई हैं. ये सीढ़ियां शिवाजी की सीढ़ियां कहलाती हैं. यह जंगल बहुत घना है. कहते हैं कि जब शिवाजी कोई साहसिक अभियान माथेरान पहाड़ी से शुरू करते थे तो इन्हीं सीढ़ियों का प्रयोग करते थे.

पे मास्टर्स पार्क या रगबी पार्क: यह यहां का प्रसिद्ध पार्क है, जहां सैलानियों की बहुत भीड़ रहती है. पर्यटक विविध दृश्यों का आनंद लेते हैं तथा

बच्चों के साथ खेलतेघूमते हैं.

ओर्लापिया रेसकोर्स: इस रेसकोर्स में मई के महीने में वार्षिक खेलकूद होते हैं तथा प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं. वस्तुतः यह एक घुडदौड़ का मैदान है.

चारलोटी झील: यह सुंदर झील चारों ओर से पहाड़ियों से घिरी है. ऐसा लगता है जैसे पहाड़ियां झील को अपनी बांहों में समेटे हों. इसी झील से माथेरान को पानी की आपूर्ति की जाती है. यह यहां का अति सुंदर पिकनिक स्थल है.

माथेरान की एक विशेषता यह भी है कि यह पूरा स्थल छायादार है. कहींकहीं तो इतनी घनी छाया है कि पर्यटक को रात का भ्रम होने लगता है.

माथेरान : ठहरने के स्थान

अलंकार होटल, एम. जी. रोड.
एलेक्जेंडर होटल, रायगढ़
होटल अशोक, मालेट रोड.
बांबे व्यू, कटिंग रोड, रायगढ़.
ब्राइटलैंड्स, मौलाना आजाद रोड.
गिरि विहार, एम.जी. रोड.
गुजरात भवन होटल, मौलाना आजाद रोड, रायगढ़.
लार्ड सेंट्रल होटल, एम. जी. रोड.

क्या खरीदें?

माथेरान एक बहुत छोटी जगह है जहां जरूरत की चीजें भी आसपास की घाटियों में बसे गांवों से आती हैं. यहां गुड़, चने और मूंगफली से बनी चिक्की बहुत बिकती है और ले जाना न भूलें.

महाबलेश्वर

महाबलेश्वर पश्चिमी भारत का सब से ऊंचा हिल स्टेशन है. इस की प्राकृतिक सुषमा अद्वितीय है. इस के सुंदर बगीचे, झील, घुमावदार सड़कें, सुसज्जित दुकानें और अनगिनत दृश्यावलियां इस का अनमोल खजाना हैं. इसलिए महाबलेश्वर को महाराष्ट्र का 'कशमीर' कहते हैं.

पहले यह पहाड़ी स्थान मालकम पैठ कहलाता था. 1828 में बंबई के गवर्नर सर जान मालकम ने इसे खोजा था इसलिए इस का नाम मालकम पैठ पड़ा. कालांतर में यह महाबलेश्वर नाम से विख्यात हो गया.

कब जाएं?

यो तो महाबलेश्वर का मौसम इतना सुहाना है कि कभी भी जाया जा सकता है लेकिन वहां घूमने का सही समय अक्तूबर से मई तक है. यहां का तापमान 10 डिग्री सेल्सियस कम और 26 डिग्री सेल्सियस से अधिक नहीं होता.

पे. मास्टर्स पार्क माथेरान का सब से प्रसिद्ध पार्क है. ▼
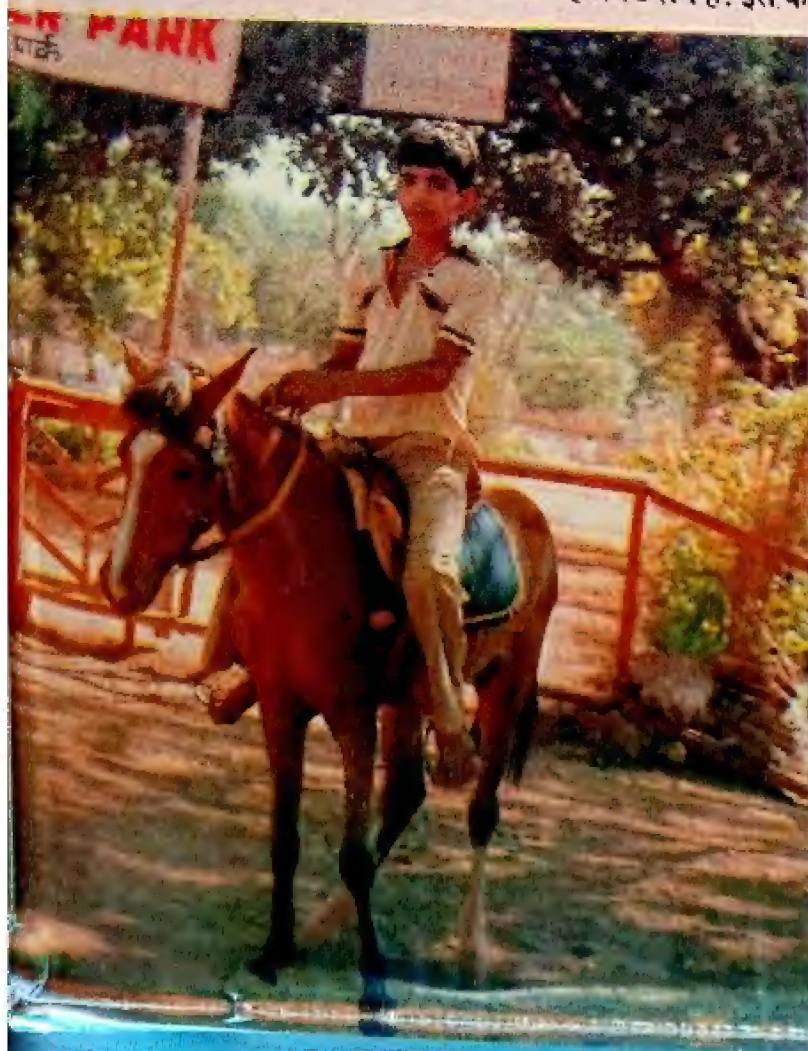
कैसे जाएं?

महाबलेश्वर पूना से 120 कि.मी. दूर है. बंबई से यदि पूना हो कर जाएं तो यह 290 कि.मी. दूर पड़ेगा और मलाड एवं पनवेल हो कर जाएं तो 247 कि.मी.. रेल द्वारा पूना तक जा कर फिर बस या टैक्सी द्वारा भी वहां पहुंच सकते हैं.

कहां ठहरें?

महाबलेश्वर में ठहरने के लिए कई होटल हैं. डीलक्स सूट के अतिरिक्त साधारण होटल भी हैं और कुछ डारमिटरी (शयनशालाएं) भी हैं जहां 10 या 15 रुपए प्रति व्यक्ति की दर से रात में सो सकते हैं. कुछ होटलों के नाम हैं:

क्या देखें?

महाबलेश्वर पहुंच कर ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति की गोद में आ गए हैं. यहां तीन प्रमुख घाट हैं. पहला कर्जत घाट जो एक सुरंग से जुड़ा है, दूसरा खंडाला घाट और तीसरा आधे रास्ते में वाईघाट.

विभिन्न प्वाइंट्स: महाबलेश्वर के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में यहां के प्वाइंट्स हैं, जैसे 'केटम प्वाइंट', 'मरजोरिया प्वाइंट', "हंटर प्वाइंट", लौडविक प्वाइंट", "बेबिघाटन प्वाइंट", हैलेन प्वाइंट", 'विलसन प्वाइंट' आदि. इन स्थानों से घाटी के अति सुंदर दृश्य दिखाई देते हैं. बंबई प्वाइंट से सूर्यास्त का दृश्य अति सुंदर दिखाई देता है. पंचगनी के मार्ग पर केटम प्वाइंट 'सुई के छेद से दृश्य' (नीडल होल सीन) के लिए प्रसिद्ध है. एक बहुत बड़े पत्थर में एक छेद है जहां से घाटी का विहंगम दृश्य दिखाई देता है.

वेण्णा झील: यहां वेण्णा झील है इस में नौका विहार कर सकते हैं. इस के अतिरिक्त लिंगमाला, धोबी, चाइनामैन आदि झरने भी हैं.

पुराने महाबलेश्वर में, एक मंदिर और गौमुख है जहां से महाराष्ट्र की पांच नदियां निकलती हैं. इन में से प्रमुख है कृष्णा.

प्रतापगढ़: महाबलेश्वर से 24 कि.मी. दूर प्रतापगढ़ है. यहां स्थित शिवाजी का किला

महाबलेश्वर पश्चिमी भारत का सब से ऊंचा हिल स्टेशन है ▲

ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है. इस स्थल पर शिवाजी ने अफजलखान का वध किया था. वध स्थल पर अफजलखान का मकबरा बना है. किले के अंदर भवानी का मंदिर भी दर्शनीय है.

पंचगनी: यह महाबलेश्वर से 19 कि. मी. दूर है. महाबलेश्वर से बस या टैक्सी द्वारा जाया जा सकता है. यह उपवनों की छाया, चांदी से चमकते बांस के पेड़ों की कतारों से समृद्ध स्थल हैं. यहां कई स्थलों पर पर्वतों और घाटियों के सुंदर दृश्य दिखाई देते हैं.

इस छोटी सी जगह में 10 स्कूल और अनेक होटल तथा बोर्डिंग हाउस हैं. स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से यहां का मौसम बहुत अच्छा है. —पूनम चतुर्वेदी

महाबलेश्वर: ठहरने के स्थान

होटल अप्सरा, *हालिडे कैंप रोड*
ड्रीमलैंड होटल, *एस.टी. स्टैंड के पास*
होटल अर्चना, *पुलिस स्टेशन के पास*
अमीर हालिडे विलेज, *पुराना महाबलेश्वर*
बेलमेट पार्क हिल रिजोर्ट, *विलसन पाइंट*
मेफेयर, *माजदा बंगला, म्यात रोड*
होटल सेवाय, *महाबलेश्वर क्लब के समीप*
द एक्जीक्यूटिव इन, *एल.सी. डिसूजा रोड*

गोआ

भारत के दक्षिणवर्ती पर्यटन स्थलों में सब से ज्यादा आकर्षक और मनोरम स्थल है गोआ. यह मीलों लंबे खूबसूरत समुद्रतट, नारियल के गगनचुंबी पेड़ों और अनन्नास की हरीतिमा को अपने वक्ष पर अलंकृत किए हुए है. शायद ही

जन्म हुआ है.

कब जाएं?

गोआ में तापमान गरमी में 24⁰ सेल्सियस से ले कर 32⁰ सेल्सियस तक रहता है. यहां अधिक सर्दी नहीं पड़ती. अतः गोआ आने वाले पर्यटकों को किसी भी मौसम में ज्यादा मालअसबाब लाने की आव-

गोआ का दोना पाउला अपने में एक असफल प्रेमी युगल की कहानी समेटे हुए है.

पर डेबोलिन हवाई अड्डा है. पर्यटन के लिए यहां टैक्सी आटोरिक्शा व प्राइवेट बसें उपलब्ध हैं. राज्य परिवहन की बसें भी चलती हैं. विभिन्न पर्यटन एजेंसियां छोटे व बड़े टूर के नाम से गोआ के विभिन्न स्थानों का भ्रमण कराती हैं.

क्या देखें?

पर्यटन की दृष्टि से गोआ को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है– चर्च, मंदिर व समुद्र तट.

गोआ में कोई ऐसा स्थल मिले जो प्राकृतिक सौंदर्य से रिक्त हो.

गोआ एक ऐसा ही राज्य है जो 1961 में करीब 451 वर्षों के पुर्तगाली उपनिवेशी शासन से मुक्त हुआ. करीब 36 हजार वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले गोआ का करीब 120 कि.मी. लंबा इलाका अरब सागर से जुड़ा हुआ है, जिस के कारण गोआ में अनेक मनोरम एवं मौजमस्ती वाले समुद्र तटों या बीचों का

श्यकता नहीं है. वर्षा के मौसम यानी जून से सितंबर को छोड़ कर पर्यटक यहां पर किसी भी मौसम में आ सकते हैं. वैसे पर्यटन की दृष्टि से यहां का मौसम नवंबर से फरवरी तक उचित माना जाता है.

कैसे जाएं?

मीटर गेज रेलवे का सब से अंतिम स्टेशन वास्कोडिगामा है. बंबई से वास्को के लिए स्टीमर सेवाएं भी उपलब्ध हैं. वास्को से तीन कि.मी. की दूरी

रमणीय सागर तटः गोआ का करीब 100 कि.मी. लंबा समुद्रतटीय भाग आकर्षक 'बीचों' के कारण देशीविदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है. स्वर्णिम सूर्य किरणों से झिलमिलाता अरब सागर का जल गोआ की बालू से टकरा-टकरा कर पर्यटकों की प्रसन्नता व आनंद में चार चांद लगा देता है. अनेक बीचों में प्रसिद्ध हैं– केलंगूट, कोल्वा, वैगेटार, बाग-मेलो, मनड्रेम, मोरिज्म, बीटल,

मीरा- मर आदि. पणजी से करीब 15 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित 'केलंगूट' बीच को 'बीचों की रानी' कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. इसे तीन भागों में बांटा गया है. अंजुना बीच या 'हिप्पियों का स्वर्ग,' कैंडोलिम या मछुआरों के लिए सुरक्षित स्थान व औसत पर्यटकों के लिए मुख्य भाग, केलंगूट बीच.

कोल्वा बीच किसी समय हिप्पियों के कारण काफी प्रसिद्ध था. मडगांव से छः कि.मी. की दूरी पर स्थित यह अब मछुआरों का प्रमुख व्यवसाय केंद्र है.

वास्को के समीप डेबोलिन हवाई अड्डे के पास एक अति छोटा लेकिन अत्यंत ही मनोरम बीच है बागमेलो. तट पर ही ओबराय का तीनसितारा होटल है.

दोनापाउला: पणजी के दक्षिण में सात कि.मी. की दूरी पर स्थित दोनापाउला नामक स्थान भी मनोरम है. यह स्थल एक असफल प्रेमी युगल की गाथा को समाहित किए है. प्रेमी युगल की एक पाषाण मूर्ति भी यहां पर स्थित है.

मंदिर: गोआ के मंदिर अपनी विविध स्थापत्य कलाओं व मुख्य द्वार पर स्थित दीप स्तंभों के कारण बहुत आकर्षक प्रतीत होते हैं. इन मंदिरों में से अधिकांश पोंडा में स्थित हैं.

पोंडा में करीब चार सौ वर्ष पुराना श्री मंगेश मंदिर इन सब में ज्यादा आकर्षक है. 'भगवान शिव' को समर्पित यह मंदिर एक छोटी सी टेकरी पर बना है व चारों ओर से मनोरम पहाड़ियों से घिरा है. प्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर के वंश का संबंध इसी मंदिर में था. करीब 10 कि.मी. आगे प्रियाल पोंडा रास्ते पर तीन मंदिरों का एक समूह है.

कावलेम स्थित शांति की देवी शांति दुर्गा व रोड के सामने स्थित श्री रामनाथ व श्री महालक्ष्मी मंदिर इस त्रिकोण के मुख्य भाग हैं. इस के साथ ही साथ कदंब वंशीय समय का एकमात्र शेष स्मृति चिह्न पणजी से 45 कि.मी. दूर स्थित संगम तालूका में विद्यमान है, तंबड़ी सुरला का पाषाण से निर्मित मंदिर.

सतगोपेश्वर का मंदिर: इस में कदंबों के आराध्य शिव संतगोपेश्वर लिंगाकार रूप में विराजमान हैं. छत्रपति शिवाजी द्वारा इस का जीर्णोद्धार कराया गया था. गोआ की एक दक्षिणवर्ती तालूका, केनेकोना में स्थित सुंदर श्रीमल्लिकार्जुन मंदिर हाबू नामक द्रविड़ राजवंश द्वारा बनवाया गया था.

गिरजाघर: गोआ के गगनचुंबी चर्च अपनी विशिष्ट पाषाण स्थापत्यकला के कारण संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है. 'ओल्ड गोआ' या पुराने गोआ में प्राचीनतम गिरजाघरों, मठों व धार्मिक संस्थाओं का समूह है.

इन में सब से ज्यादा उल्लेखनीय है, बाम जीसस की बेसिलिका, जहां पर प्रसिद्ध संत फ्रांसिस जेवियर का पार्थिव शरीर चांदी के ताबूत में सुरक्षित रखा हुआ है. किसी लेप आदि के इस्तेमाल किए बिना सेंट जेवियर का पार्थिव शरीर बिना किसी क्षय के सुरक्षित है. प्रति 10 वर्ष बाद सेंट जेवियर को जनता के दर्शनार्थ निकाला जाता है.

पास में ही निर्मित 'सी कैथेड्रल' अपनी विशाल वेदियों, गुंबदनुमा गर्भगृह और विशाल घंटाघर के साथ खड़ा है. मुरदे रखने के तहखानों के लिए प्रसिद्ध सेंट कजिटेन चर्च अपनी 'कारिनथियान स्थापत्य विधि' से कला प्रेमियों को आकर्षित करने में कोई कसर नहीं छोड़ता. इस के अलावा मेंयूलाइन स्थापत्य कला पर आधारित सेंट फ्रांसिस डि असीसी का कानवेंट सेंट कैथरिन का चैपल, जहां पर अल्बूकर्क ने आदिलशाह को पराजित किया था, आदि भी देखने योग्य हैं.

इन सभी स्थानों के अलावा पणजी का अगुड़ा फोर्ट, जहां पर राज्य शासन का सचिवालय है, जुआरी नदी का सौंदर्य, वास्कोडिगामा का आटोमैटिक लोडिंग प्लेटफार्म आदि भी आप

गोआ की राजधानी पंजिम का सौंदर्य अद्भुत है. ▶

देख सकते हैं. इन सब के अलावा गोआवासियों का सरल व स्नेहमय व्यवहार, काजू व नारियल का बाहुल्य आदि भी आप का मन मोह लेंगे. प्राकृतिक सौंदर्य से सराबोर गोआ निस्संदेह पर्यटन की दृष्टि से एक उत्तम स्थान है •

बंगलौर

ऐतिहासिक दृष्टि से बंगलौर कर्नाटक का विशिष्ट पर्यटन स्थल है. यह हैदरअली और टीपू सुलतान की कर्मस्थली रही है. बंगलौर का पर्यटन वर्ष में कभी भी किया जा सकता है, जून से सितंबर तक छोड़ कर, क्योंकि इन महीनों में बरसात के कारण पर्यटन का कार्यक्रम बनाना ठीक नहीं रहता.

ग्रेनाइट पत्थरों से बना बंगलौर का विधान सभा भवन आधुनिक व पारंपरिक निर्माण कला का अद्भुत मिश्रण है. ▲

यहां अनेक रमणीक उद्यान हैं, जिन के कारण इसे 'उद्यानों का नगर' भी कहा जाता है. वैसे बंगलौर कर्नाटक के 'प्रवेश द्वार,' और 'पेंशनर्स पैराडाइज' के रूप में भी प्रसिद्ध है.

कब जाएं?

बंगलौर का मौसम प्रायः सदाबहार रहता है. अतः बंगलौर का पर्यटन वर्ष में कभी भी किया जा सकता है, जून से सितंबर तक छोड़ कर, क्योंकि इन महीनों में बरसात के कारण पर्यटन का कार्यक्रम बनाना ठीक नहीं रहता.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग से बंगलौर जाने के इच्छुक पर्यटकों के लिए बंबई, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, मदुरै, मंगलौर, कोचीन, हैदराबाद, त्रिवेंद्रम आदि जगहों से प्रतिदिन इंडियन एअर लाइंस के विमान बंगलौर आतेजाते हैं. मैसूर और तिरुपति आदि निकटवर्ती प्रमुख स्थलों तक वायुदूत की सेवाएं भी उपलब्ध हैं.

देश के प्रायः सभी बड़े नगरों से बंगलौर रेलमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से कर्नाटक एक्सप्रेस, (23.20) बंबई से उद्यान एक्सप्रेस (7.55) महालक्ष्मी एक्सप्रेस (17.50) किन्नूर एक्सप्रेस, पटना से मद्रास एक्सप्रेस (एक कोच बंगलौर के लिए) बंगलौर पहुंचने के लिए प्रमुख रेलगाड़ियां हैं. इसी प्रकार मद्रास से वृंदावन एक्सप्रेस, बंगलौरमद्रास एक्सप्रेस आदि गाड़ियां उपलब्ध हैं. इन के अलावा पुणे, हैदराबाद, मैसूर आदि नगरों से भी बंगलौर रेलमार्ग द्वारा जुड़ा है.

दक्षिण भारत के प्रायः सभी प्रमुख नगरों से बंगलौर के लिए बस सेवाएं उपलब्ध हैं, जिन में विभिन्न राज्यों की परिवहन बसें तथा प्राइवेट टूरिस्ट बसें शामिल हैं.

कहां ठहरें?

बंगलौर में ठहरने के लिए होटलों की कोई समस्या नहीं है. यहां पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों प्रकार के होटलों की अच्छी व्यवस्था है. अशोक (कुमार कृपा रोड), हाली डे इन (28,

सैंके रोड), ताज रेसीडेंसी (15, महात्मा गांधी रोड), विंडसर मैनर शेरेटन (25, सैंके रोड), बंगलौर इंटरनेशनल (2 ए/2बी, क्रीसेंट रोड), ईस्टबेस्ट (रेसीडेंसी रोड), नीलगिरि नेस्ट (171, ब्रिगेड रोड), वुडलैंड (5, टैंक रोड) आदि यहां के अच्छे व सुविधाजनक होटल हैं.

इन के अलावा रेलवे रिटायरिंग रूम, वाई, एम.सी.ए. गेस्ट हाउस, ब्रह्म समाज यूथ होस्टल आदि में भी ठहरा जा सकता है.

क्या देखें?

लालबाग: लगभग 240 एकड़ क्षेत्र में फैला लाल बाग 200 वर्ष पूर्व हैदरअली ने लगवाया था, जिसे बाद में टीपू सुलतान ने विकसित किया. यह भारत के अच्छे वानस्पतिक उद्यानों में गिना जाता है. इस में अनेक दुर्लभ पौधे भी हैं. बाग के एक हिस्से में एक सुंदर कृत्रिम झील भी है. बाग में एक ग्लास हाउस भी बना हुआ है लंदन के क्रिस्टल पैलेस की तरह. यहां प्रतिवर्ष जनवरी तथा अगस्त में फलफूल व सब्जियों की राज्य स्तरीय प्रदर्शनी भी आयोजित की जाती है. पर्यटकों के लिए यह बाग प्रातः 8 बजे से सायं 8 बजे तक खुला रहता है.

कब्बन पार्क: ब्रिटिश प्रतिनिधि लार्ड कब्बन के नाम पर यह पार्क 1864 में बनवाया गया था. 300 एकड़ क्षेत्र में फैले इस पार्क में विविध प्रकार के विशाल वृक्षों के साथसाथ बच्चों के खेलने का भी समुचित प्रबंध है. इस रमणीक पार्क में एक ग्रंथालय भी बना है. इसी पार्क में कर्नाटक का उच्च न्यायालय, पर्यटन विकास निगम का रेस्तरां और प्रेस क्लब आफ इंडिया का क्लब भी इसी पार्क में स्थित है.

विधान सौध: यह कर्नाटक राज्य की विधनसभा और सचिवालय का भव्य भवन है, जो नगर के मध्य ग्रेनाइट पत्थर से बना है. कब्बन पार्क के सामने स्थित यह इमारत आधुनिक तथा पारंपरिक निर्माण कला का मिश्रित रूप है. इसे देखने के लिए संबंधित अधिकारी से पूर्वानुमति लेना आवश्यक है.

बुल टेंपल: बुल टेंपल रोड के अंतिम छोर पर है बुगली पहाड़ी, जहां कैंपे गौडा ने बुल टेंपल का निर्माण कराया था. यह मंदिर द्रविड़ वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है. यहां एक पत्थर को काट कर 4.6 मीटर ऊंची और 6.1 मीटर लंबी एक बैल प्रतिमा को बड़ी ही सुंदरता से तराशा गया है.

टीपू का किला: ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण यह किला अपने अतीत में अनेक स्मृतियों को संजोए है. मूलतः यह किला बंगलौर के निर्माता कैंपे गौडा ने 1537 में बनवाया था, जिसे बाद में हैदरअली ने सुदृढ़ता प्रदान की. किले का वर्तमान रूप टीपू सुलतान की देन है. यद्यपि अंग्रेजों की लड़ाई में किले का अधिकांश भाग ध्वस्त हो गया था, फिर भी यह दर्शनीय है. किले में एक संग्रहालय भी है.

विश्वेसरैया औद्योगिक व तकनीकी संग्रहालय: यह नवीन संग्रहालय आधुनिक कर्नाटक के निर्माता एम. विश्वेसरैया को समर्पित है. इस में विज्ञान, उद्योग एवं तकनीक संबंधी वस्तुओं का काफी अच्छा संग्रह है. यह संग्रहालय प्रतिदिन 10 से 5 बजे तक पर्यटकों के लिए खुलता है. यहां सोमवार को अवकाश रहता है.

बनरघट्टा नेशनल पार्क: बंगलौर के निकट ही 104 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विद्यमान यह पार्क प्राकृतिक रमणीयता के लिए प्रसिद्ध है यहां विभिन्न प्रकार के पशुपक्षी तथा जीवजंतु संरक्षित हैं.

नंदी हिल: सागर तल से 1,479 मीटर ऊंची यह पहाड़ी, नगरीय कोलाहल से दूर शांत वातावरण में कुछ क्षण बिताने के इच्छुक पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है. यहां लगभग 1,000 वर्ष पुराने 2 शिव मंदिर हैं. इसी पहाड़ी पर टीपू सुलतान ने एक भव्य भवन बनवाया था, जहां वह गरमियों में विश्राम करता था.

क्या खरीदें?

बंगलौर पर्यटन के दौरान महात्मा गांधी रोड, बिग्रेड रोड, सिटी मार्केट, मैजेस्टिक रसेल मार्केट आदि के साथसाथ सरकारी एंपोरियमों से सिल्क की साड़ियां, ड्रेस मेटेरियल, हथकरघा व हाथी दांत की वस्तुएं, चंदन तथा चंदन से बनी वस्तुएं आदि खरीदी जा सकती हैं.

मैसूर

उद्यानों का नगर' के नाम से प्रसिद्ध यह खूबसूरत पर्यटन स्थल कर्नाटक राज्य में स्थित है. यह स्थल प्राकृतिक सौंदर्य व ऐतिहासिक धरोहर का अद्भुत सामंजस्य प्रस्तुत करता है. मैसूर की पृष्ठभूमि में स्थित चामुंडी पर्वत इसे अद्वितीय भावभंगिमा प्रदान करता है. दशहरे के अवसर पर यहां विशेष सांस्कृतिक आयोजन किया जाता है. विश्व के कोनेकोने से हर वर्ष बड़ी संख्या में पर्यटक यहां पहुंचते हैं. आजकल तमिलनाडु और
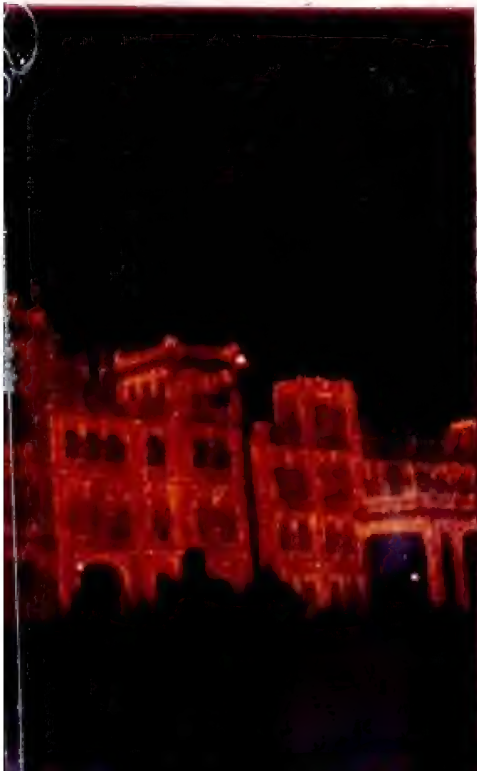
मैसूर का वृंदावन गार्डन अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विख्यात है. ▲

महाराजा मैसूर पैलेस अपनी उत्तम वास्तुकला व प्रकाश व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है. ◄

कर्नाटक के मध्य हो रहे कावेरी विवाद की मुख्य रणस्थली यही क्षेत्र है.

यहां स्थित विशाल महल, गुंबद, मीनारें इतिहास की सजीव झांकी प्रस्तुत करती हैं. सदियों से यह नगर धर्म, शिक्षा व संस्कृति के प्रचार का केंद्र बिंदु रहा है.

कब जाएं?

यहां का मौसम साल भर सुहावना रहता है. इसलिए वर्ष के किसी भी महीने में आप यहां जा सकते हैं.

कैसे जाएं?

देश के अन्य भागों से मैसूर पहुंचने के लिए पहले आप को बंगलौर अथवा हैदराबाद पहुंचना पड़ेगा, जहां के लिए इंडियन एअरलाइंस की सीधी उड़ानें उपलब्ध हैं. बंगलौर से वायुदूत की उड़ान (पी एफ 6.15 प्रातः 11.55) और हैदराबाद, (पी एफ 315 प्रातः 9.30) से मैसूर पहुंचा जा सकता है.

कर्नाटक के लगभग सभी हिस्सों से मैसूर मीटर गेज द्वारा जुड़ा है, बंगलौर जो यहां से 140 कि.मी. दूर है देश के अन्य भागों से रेल मार्ग जुड़ा है. बंगलौर से मैसूर के लिए सीधी रेल सेवाएं उपलब्ध हैं.

राज्य के अन्य भागों से मैसूर के लिए सीधी बस सेवाएं उपलब्ध हैं. बंगलौर, हसन, बांदीपुर, मंगलौर, मुदुमलाई, शिवसुंदरम, सोमनाथपुर आदि स्थानों से मैसूर के लिए सीधी बस सेवा की व्यवस्था है.

कर्नाटक राज्य पर्यटन विकास निगम मैसूर व आसपास के दर्शनीय स्थलों के लिए विशेष बसें चलाता है. ट्रैवल एजेंसियों द्वारा प्राइवेट टैक्सियों की सेवा भी ली जा सकती है. नगर में घूमने के लिए आटोरिक्शा व तांगों का समुचित प्रबंध है. इस के अतिरिक्त मैसूर नगर परिवहन की प्वाइंट टू प्वाइंट बसें भी कई पर्यटन स्थलों से हो कर गुजरती हैं.

क्या देखें?

सेंट फिलोमिनास चर्च

मैसूर: ठहरने के स्थान

होटल मेट्रोपोल, झांसी लक्ष्मीबाई रोड.
होटल हाइवे, न्यू बन्नीमनतप एक्सटेंशन.
होटल आशीर्वाद, नजरबद रोड.
होटल आश्रय, धनवंतरि रोड क्रास.
किंग कोर्ट होटल, झांसी लक्ष्मीबाई रोड.
होटल मधुनिवास, गांधी स्क्वेयर.
होटल मौर्य, हनुमंथा रोड.
पार्क लेन होटल, कर्जन पार्क रोड.
होटल रिट्ज, बगंलौरऊटी रोड.
ललिता महल पैलेस होटल, टी नरसीपुर रोड.
श्रीराम लाज, विनोबा रोड.

गेस्ट हाउस:
चामुंडी गेस्ट हाउस, गवर्नमैंट हाउस कांपलैक्स.
होटल मौर्य, हनुमंत रोड.

धर्मशालाएं:
अग्रवाल धर्मशाला, गोविंद राव मेमोरियल हाल, नजराजा उर्स धर्मशाला.

मैसूर से 3 कि.मी. दूरी पर स्थित यह चर्च, गोथिक शैली में निर्मित है. इस चर्च की खिड़कियों में लगे अभिरंजित शीशे पर्यटकों को आकर्षित करते हैं.

महाराजा पैलेस: मैसूर से 1 कि.मी. दूरी पर यह विशाल महल नगर के मध्य स्थित है. यह महल एक पुराने ध्वस्त महल की नींव पर बनाया गया है. यह महल हिंदूमुसलिम वास्तुकला के मिश्रित रूप का उत्तम उदाहरण है. महल में स्थित दरबार हाल, अंबा विला व विशाल भित्ति चित्र पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करते हैं. रत्नों से जड़ा सिंहासन, शीशे का फर्नीचर आदि ऐतिहासिक वैभव के नमूने हैं. महल में फोटोग्राफी करने पर प्रतिबंध है. यह महल सुबह 10.30 से शाम 5.30 तक खुला रहता है. इसे अवश्य देखें.

गर्वनमेंट सिल्क फैक्टरी: यह मैसूर से 7 कि.मी. दूरी पर स्थित है. यहां विश्व प्रसिद्ध मैसूर सिल्क को बुनते हुए देखा जा सकता है तथा उचित दाम पर सिल्क खरीदा भी जा सकता है. यह फैक्टरी रविवार को बंद रहती है तथा बाकी दिन सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे तक खुली रहती है.

ललिता महल पैलेस: चामुंडी पर्वत के निचले सिरे पर स्थित यह महल मैसूर से 9 कि.मी. दूर है. इस का प्रयोग शाही मेहमानों को ठहराने के लिए किया जाता था. इस महल के गुबंद का निर्माण लंदन के सेंट पाल गिरजाघर की शैली में किया गया है. महल का सूक्ष्म अंलकरण ब्रिटेन के महलों की याद ताजा कर देता है. महल को अब होटल में परिवर्तित कर दिया गया है.

चामाराजेंद्र चिड़ियाघर: मैसूर से 5 कि.मी. दूर यह विशाल चिड़ियाघर स्थित है. 37 हेक्टेयर में फैले इस उद्यान में पक्षियों व अन्य वन्य प्राणियों को स्वछंद विचरण करते देखा जा सकता है. चिड़ियाघर प्रतिदिन सुबह 8.30 से शाम 5.30 तक खुला रहता है.

श्रीरंगापट्टन: मैसूर से 16 कि.मी. दूर यह ऐतिहासिक शहर बसा है. नगर का नाम प्रसिद्ध रंगनाथ मंदिर से पड़ा है. यह नगर कावेरी नदी के समीप एक द्वीप पर स्थित है. यह नगर हैदर अली तथा टीपू सुलतान के राज्य की राजधानी रह चुका है. नगर का मुख्य आकर्षण टीपू सुलतान का महल, विशाल किले तथा मंदिर हैं. टीपू सुलतान व हैदर अली का मकबरा भी यहीं स्थित है.

वृंदावन गार्डन

खूबसूरत उद्यानों व अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध मैसूर नगरी की आभा में एक और कड़ी जोड़ता है वृंदावन गार्डन. यह अद्भुत उद्यान मैसूर से 19 कि.मी. दूर कृष्णसागर बांध के साथ स्थित है. यह गार्डन 20 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फैला है. गार्डन के मुख्य द्वार पर निर्मल जल की मोटी धारा बहती है जो झरना होने का भ्रम पैदा करती है. यह धारा उद्यान में बनी कृत्रिम नहर में गिरती है. नहर में मिल कर यह धारा अंततः कावेरी नदी में समा जाती है. गार्डन में कई छोटेछोटे जलाशयों और फव्वारों की

व्यवस्था है. अफसोस यह है कि कावेरी विवाद व तमिल टाइगर्स की धमकियों के कारण इसे पर्यटकों के लिए बंद कर रखा है. आशा नहीं कि इस वर्ष यह खुल पाएगा.

नीलगिरि की पहाड़ियों में समुद्र तल से 2,240 मीटर की ऊंचाई पर स्थित ऊटी या उधगमंडलम दक्षिण भारत के तमिलनाडु प्रदेश का एक अत्यंत खूबसूरत पर्वतीय स्थल है. 'पहाड़ों की रानी' के नाम से प्रचलित यह प्रदेश देशीविदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने में अत्यंत सक्षम है. दो छोटे तथा शांत पहाड़ी इलाके कुन्नूर तथा कोटागिरि भी यहां नजदीक ही बसे हैं.

ऊटी लेक नौका विहार के लिए उत्तम स्थान है. ▼

कब जाएं?

वैसे तो ऊटी की सैर किसी भी समय की जा सकती है पर अप्रैल से जून तथा सितंबर से नवंबर का समय सर्वोत्तम है. गरमियों में हल्के गरम कपड़े तथा सर्दियों में भारी गरम कपड़े ले जाना न भूलें.

कैसे जाएं?

ऊटी का निकटतम हवाई अड्डा कोयंबटूर में है जो ऊटी से 105 किलोमीटर दूर है. यहां से मद्रास, बंगलौर और कोचीन के लिए नियमित हवाई सेवा उपलब्ध है. कोयंबटूर से बस या टैक्सी द्वारा पर्यटक ऊटी पहुंच सकते हैं.

ऊटी, कुन्नूर और कोटागिरि सभी भारत के प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़े हैं.

ऊटी का निकटतम रेलवे स्टेशन मेट्टूपलायम है जो पर्वतीय रेल द्वारा कोयंबटूर तथा मद्रास से जुड़ा है. यहां से ऊटी तक की पर्वतीय रेल की यात्रा पर्यटक कभी नहीं भुला सकते. चाय बागानों और पर्वतीय हरियाली को देखते हुए पर्यटक इस छोटी पर अद्भुत रेलगाड़ी की 4 घंटे की यात्रा कब पूरी कर लेते हैं उन्हें पता ही नहीं चलता. स्थानीय भ्रमण के लिए टैक्सी एवं बस सेवा सर्वदा उपलब्ध हैं.

कहां ठहरें?

ऊटी में ठहरने के लिए हर तरह के होटल उपलब्ध हैं. इन का किराया पर्यटन के मौसम में ज्यादा तथा वैसे कम होता है.

पाश्चात्य शैली के होटलों

में होटल सेवाय सब से महंगा होटल है. इस के अलावा होटल तमिलनाडु, फर्न हिल इंपीरियल तथा यूथ होस्टल में भी ठहरा जा सकता है. भारतीय शैली के होटलों में होटल दसप्रकाश, वूडलैंड, मयूर सुदर्शन, होटल नटराज, नाहर टूरिज्म होम भी हैं.

अन्य स्थानों में तमिलनाडु कोपरेटिव गेस्ट हाउस, वाई. डब्लू.सी.ए. तथा रेलवे रिटाय-रिंग रूम भी है. समूह में यात्रा करने वालों के लिए डारमेटरी में ठहरना बहुत सस्ता है.

स्थानीय भ्रमण के लिए टैक्सी तथा बस सेवा सदैव उपलब्ध है.

क्या देखें?

डोडाबेटा : यह स्थान नीलगिरि की सब से ऊंची चोटी पर स्थित है. डोडा बेटा तमिल शब्द का अर्थ ही होता है बड़ी चोटी. 2,623 मीटर ऊंची इस चोटी पर खड़े हो कर पहाड़ों पठारों तथा समतल मैदानों के सुंदर दृश्यों का अवलोकन कर सकते हैं.

बोटेनिकल गार्डन : 1847 में स्थापित यह सुंदर वनस्पति उद्यान इतना विशाल है कि इसे अच्छी तरह देखने के लिए काफी समय चाहिए. विभिन्न तरह के सुंदर विदेशी पौधे इस उद्यान को विशिष्ट आभा प्रदान करते हैं. शोध कर्त्ता छात्रों तथा विद्वानों के अध्ययन के लिए इस का बहुत महत्त्व है. उद्यान के मध्य में एक छोटी सी सुंदर झील है.

1824 में निर्मित उपर्युक्त झील के किनारे बच्चे टट्टू की सवारी का आनंद ले सकते हैं तथा यह नौका विहार के लिए भी उत्तम है. इस झील के किनारे फिल्मों की शूटिंग होती रहती है. यह झील पर्यटकों के आकर्षण का सब से बड़ा केंद्र है.

कालहट्टी जल प्रपात : पिकनिक मनाने एवं ट्रैकिंग करने के लिए कालहट्टी जल प्रपात एक सुंदर स्थान है. ऊटी से 14 किलोमीटर दूर स्थित इस जल प्रपात को 36 मीटर की ऊंचाई से गिरते देख कर पर्यटक वहां से हटना भूल जाते हैं.

लिंब्सराक, वैली व्यू : लेडी केनिंग सीट, डार्लफिस नोज वैनलाक डाउन आदि स्थानों से चाय के बागानों, कोयंबटूर के मैदानों, सुंदर केट्टी घाटी तथा मैसूर के पठार आदि स्थानों के सुंदर तथा मनमोहक दृश्यों पर विहंगम दृष्टि डाली जा सकती है.

क्या खरीदें :

कोपरेटिव सुपर मार्केट, म्यूनिसिपल मार्केट ऊटी के अच्छे बाजार हैं जहां से हस्तकला की सामग्री खरीदी जा सकती है. •

कोडैकनाल

पलानी पर्वत माला की गोद में समुद्र तल से 7,000 फुट की ऊंचाई पर बसा कोडैकनाल भारत के लोकप्रिय स्वास्थ्य वर्धक पहाड़ी स्थानों में से एक है. यहां का सदाबहार मौसम, रंगबिरंगे फूल, रस भरे फल, खूबसूरत झील, दूधिया पानी बिखेरते झरने पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं. वह अवाक खड़ा यहां की खूबसूरती को देखता रह जाता है. सब से बड़ी बात तो यह है कि आधुनिक सभ्यता ने अभी इस प्रदेश को अछूता रखा है.

तमिलनाडु में स्थित कोडैकनाल का सब से बड़ा गौरव 12 वर्षों में एक बार खिलने वाला 'कुंरिजी का फूल' है. अंतिम बार यह 1980 में खिला था और इस साल यानी 1992 में इस के खिलने की बारी है. अतः इस साल कोडैकनाल की यात्रा तथा इस फूल को खिलते हुए देखना पर्यटकों के लिए एक

कोडैकनाल झील इस पर्यटन स्थल का प्रमुख आकर्षण है. ▼
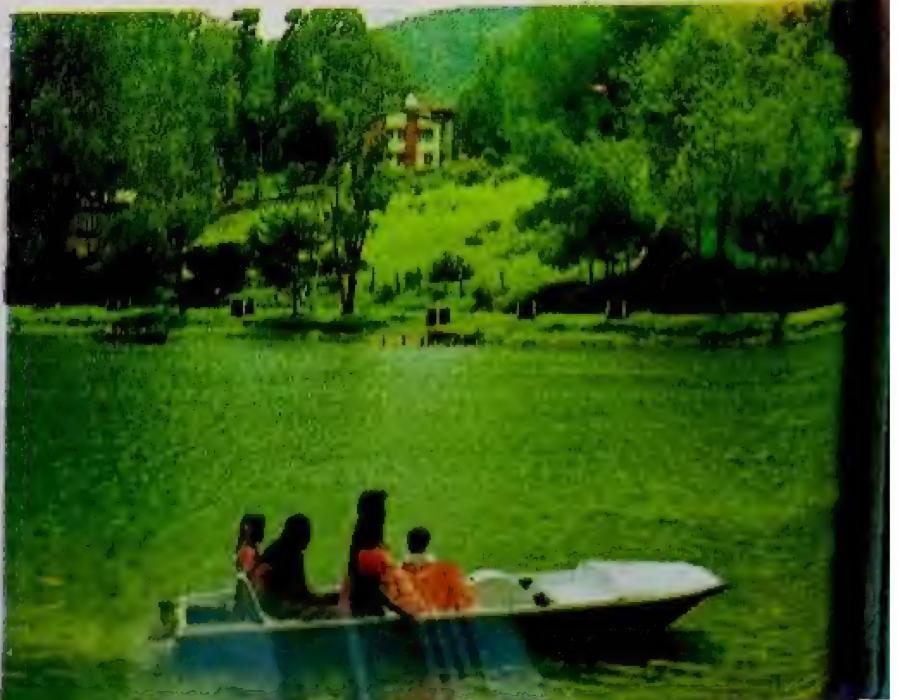
गौरव की बात होगी. इसे देखने के लिए खास तौर पर पर्यटक आते हैं.

कब जाएं?

वैसे तो वर्ष पर्यंत आप यहां पर्यटन के लिए जा सकते हैं, पर अप्रैल से जून तथा सितंबर अक्तूबर के महीने सर्वोत्तम हैं. नवंबर तथा दिसंबर में होने वाली बारिश के कारण उस समय पर्यटन का आनंद नहीं उठा सकते. सर्दियों में गरम कपड़े ले जाना न भूलें. गरमियों में हलके गरम कपड़े जरूरी हैं.

कैसे जाएं?

मदुरै कोडैकनाल का निकटतम हवाई अड्डा है. यह 120 किलोमीटर दूर है. यहां से बस या टैक्सी से कोडैकनाल पहुंचा जा सकता है. यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन कोडै रोड है. यह 80 किलोमीटर दूर है. कोडैकनाल में घूमने के लिए टैक्सियां उपलब्ध रहती हैं. पर्यटन के मौसम में पंधान रोडवेज कारपोरेशन भी स्थानीय दृश्यों के अवलोकन की व्यवस्था करता है.

कहां ठहरें?

कोडैकनाल में पाश्चात्य और भारतीय शैली के विभिन्न होटल हैं. जहां पर्यटक अपनी रुचि एवं सुविधा के अनुसार ठहर सकते हैं. सभी सुविधाओं से युक्त होटल कार्लटन थोड़ा महंगा पर अच्छा है. पाश्चात्य शैली का एक होटल तमिलनाडु भी है. इस के अलावा मिनी काटेज, यूथ होस्टल, बस स्टैंड रेस्ट हाउस, टाउनशिप न्यू रेस्ट हाउस आदि सरकारी आवासगृह हैं, जिन में ठहरने के लिए संबंधित कर्मचारियों की पूर्वानुमति लेना आवश्यक है.

क्या देखें?

झील: स्विट्जरलैंड की झीलों के आधार पर इस सितारानुमा खूबसूरत झील का निर्माण एक अंगरेज ने किया था. यह झील कोडैकनाल का प्रमुख आकर्षण है.

ब्रायंट पार्क: झील के पूर्व में स्थित ब्रायंट पार्क अपने खूबसूरत फूलों, इन के संकरण (हाइब्रिड) तथा कलम बनाने के लिए मशहूर है. कुछ दुर्लभ फूलों के पौधे यहां से निर्यात किए जाते हैं. 12 वर्ष में एक बार खिलने वाला फूल इस साल मई में यहीं खिलने वाला है.

कोकर्स वाक: झील से 1 किलोमीटर दूर कोकर्स वाक एक सुंदर पर्यटन स्थल है. यहां से मदुरै शहर तथा बिजली के प्रकाश में झिलमिलाता पैरियाकुलम शहर का दृश्य बहुत मनभावन तथा आकर्षक लगता है.

कुरिंजी अंदावर मंदिर: झील से 3.2 किलोमीटर दूर बने इस मंदिर के मुख्य देवता 'लार्ड मुरुगन' हैं. इस स्थान से पलानी पहाड़ियों तथा वैगाई डैम का खूबसूरत दृश्य आंखों को झपकने नहीं देता.

वेधशाला (सोलर फिजिकल आब्जरवेटरी): कोडैकनाल के सर्वोच्च शिखर पर स्थित इस वेधशाला की स्थापना 1898 में हुई थी. झील से 3.2 किलोमीटर दूर स्थित यह वेधशाला पर्यटन के मौसम में (अप्रैल, मई व जून में) प्रत्येक दिन खुला रहता है. दूसरे महीनों में यह सिर्फ शुक्रवार को खुला रहता है.

टेलिस्कोप हाउस: पर्यटकों को घाटी के संपूर्ण सौंदर्य के अवलोकन तथा पास के शहरों की सुंदर छवि का आनंद लेने के लिए कोडैकनाल में ही 2 टेलिस्कोप हाउसों का निर्माण किया गया है– एक कुरिंजी अंदावर मंदिर के पास तथा दूसरा कोकर्स वाक के नजदीक. यह पर्यटकों के लिए प्रत्येक दिन खुला रहता है.

पिलर राक्स: झील से 7.4 किलोमीटर दूर कंधे से कंधा मिलाए तीन विशाल चट्टानें खड़ी हैं. 400 फुट की ऊंचाई वाली इन विशाल चट्टानों की खूबसूरती देखते ही बनती है.

क्या खरीदें?

खादी इंपोरियम, हैंडलूम कोओपरेटिव स्टोर, सरकारी सेल्स इंपोरियम तथा कुरिंजी सुपर मार्किट से पर्यटक दक्षिण भारत की हस्तशिल्प की धातु एवं चमड़े की वस्तुएं खरीद सकते हैं.

त्रिवेंद्रम

केरल की राजधानी है त्रिवेंद्रम, जिसे 'दक्षिण भारत का कश्मीर' कहा जाता है. यहां के ऊंचेऊंचे ठंडे पहाड़, हरीभरी घाटियां, झूमते हुए नारियल वृक्ष, विशाल समुद्री झीलें, रबड़ तथा सुपारी के लंबेलंबे पेड़ और दूर तक फैले सागर तट त्रिवेंद्रम को रमणीक नगर की गरिमा ही प्रदान नहीं करते, बल्कि पर्यटकों को अतीव सुखानुभूति भी कराते हैं. नैसर्गिक सौंदर्य के साथसाथ यहां के प्राचीन मंदिर, ऐतिहासिक स्मारक एवं पुरातत्त्वीय महत्त्व के अवशेष भी पर्यटकों

को आकर्षित करते हैं.

कैसे जाएं?

त्रिवेंद्रम के लिए इंडियन एअर लाइंस की दिल्ली से उड़ान (आई सी 167, प्रातः 9.10), बंबई से (आई.सी. 167, दोपहर 12.05), कोचीन से (आई सी 530 प्रातः 11.25), बंगलौर से (आई सी 929, प्रातः 10.45), मद्रास से (आई सी 529 प्रातः 6.00) आदि उड़ान सेवाएं उपलब्ध हैं.

दिल्ली से केरल एक्सप्रेस (12.00 बजे), मद्रास से त्रिवेंद्रम मेल (18.55), बंगलौर से आइसलैंड एक्सप्रेस, बंबई से जयंतीजनता एक्सप्रेस द्वारा सीधे त्रिवेंद्रम तक पहुंचा जा सकता है. वैसे दक्षिण भारत के मंगलौर, एरनाकुलम, कोयंबटूर आदि नगरों से भी त्रिवेंद्रम के लिए रेलें आतीजाती हैं.

केरल राज्य परिवहन की पुरानी तथा भीड़ भरी बसें त्रिवेंद्रम को राज्य के अन्य प्रमुख नगरों से जोड़ती हैं. इन बसों की अपेक्षा प्राइवेट तथा टूरिस्ट बसों द्वारा त्रिवेंद्रम की यात्रा करना अधिक सुविधाजनक रहता है.

कहां ठहरें?

त्रिवेंद्रम में ठहरने के लिए भारतीय एवं पाश्चात्य पद्धति के कई होटल हैं, जिन का किराया देश के अन्य नगरों की अपेक्षा कम तथा सुविधाएं अधिक हैं. उच्च श्रेणी के होटलों में केरल पर्यटन विकास निगम का होटल मसकट, पंकज, लूसिया कांटीनेंटल तथा कोवलम बीच पर कोवलम अशोक बीच रिसोर्ट आदि प्रमुख हैं. अपेक्षाकृत सस्ते आवासों में हैं, नालंदा टूरिस्ट होम, ओंकार लाज, इंटरनेशनल टूरिस्ट होम, यूथ होस्टल, होटल अरिस्टो, कैपीटल टूरिस्ट होम, आर्य भवन आदि.

क्या देखें?

पद्मनाभ स्वामी मंदिर : यह मंदिर भारतीय शिल्प एवं स्थापत्य कला का गौरव है. 1733 में ट्रावनकोर के महाराजा द्वारा द्रविड़ शैली में निर्मित इस मंदिर के ऊपर की छत करीब 40 फुट व्यास के पत्थर से बनी है. इस की आकृति छतरीनुमा है. संपूर्ण मंदिर ग्रेनाइट पत्थर से बना है. इस मंदिर में मुख्य मूर्ति विष्णु की है जो 26 फुट लंबी है और धातु की बनी है. मंदिर की दीवारों पर लकड़ी की जाली और जाली पर पीतल के सैकड़ों दीपदान बने हैं.

पद्मनाभपुरम महल : त्रिवेंद्रम के शानदार अतीत की कहानी कहता है, यहां से 53 किलोमीटर दूर स्थित पद्मनाभपुरम महल, जिसे 18वीं सदी के राजा मार्तंड वर्मा ने बनवाया था. लकड़ी से निर्मित इस महल के दरवाजों, खंभों, मेहराबों आदि पर इतनी बारीक

त्रिवेंद्रम की पूकोट लेक में नौका विहार का आनंद लिया जा सकता है. ▼

एवं शानदार नक्काशी की गई है कि इसे घंटों एकटक निहारते रहने का मन करता है. यह महल सोमवार को बंद रहता है.

जैविक उद्यान : इस जैविक उद्यान की यह विशेषता है कि इस में आम चिड़ियाघर के साथसाथ कलावीर्था, संग्रहालय एवं स्नेक फार्म केंद्रित हैं. चिड़ियाघर में काफी ऊंचाई पर रेलिंग बना कर नीचे जंगल जैसा वातावरण तैयार किया गया, जिस में शेरों का निवास है. इस कृत्रिम जंगल में शेरों का

कोवलम सागर तट त्रिवेंद्रम का विशिष्ट आकर्षण है.

त्रिवेंद्रम के लोक नृत्य पर्यटकों का मन मोह लेते हैं.

स्वच्छंद विचरण देख कर पर्यटक रोमांचित हो उठते हैं.

आर्ट गैलरी सुबह 8 बजे से सायं 6 बजे तक खुली रहती है. इस में राजा रवि वर्मा तथा रूसी चित्रकार रोरिक के चित्रों का अच्छा संग्रह है. साथ ही राजपूत, मुगलिया व तंजौर शैली के भी अनेक चित्र दर्शनीय हैं.

यहां स्नेक फार्म में अनेक देशीविदेशी सर्पों का संग्रह है.

कोवलम सागर तट : त्रिवेंद्रम का विशिष्ट आकर्षण है नगर से 13 किलोमीटर दूर स्थित शानदार आकर्षक समुद्री-तट, जो कोवलम के नाम से जाना ज़ाता है. यहां आरामदेह होटल तथा काटेज बने हुए हैं. प्रत्येक काटेज का द्वार सागर की ओर खुलता है. अन्य सागर तटों की अपेक्षा यह सागर तट काफी स्वच्छ है. यहां सागर का जल भी साफ सा है. यह 'वाटर स्पोर्ट्स' के लिए एक आदर्श जगह है. त्रिवेंद्रम से कोवलम तट तक पहुंचने के लिए सरकारी बसों के अलावा टैक्सियां तथा आटो रिक्शा सुबह 6 बजे से सायं 8 बजे तक आसानी से मिल जाते हैं. एरनाकुलम तथा कन्याकुमारी से भी यहां के लिए सीधी बसें हैं.

अन्य दर्शनीय स्थल :

त्रिवेंद्रम के अन्य रमणीक स्थलों में प्रमुख हैं—नैयर बांध (29 किलोमीटर) जनार्दन मंदिर (54 किलोमीटर), सुचिंद्रम मंदिर (74 किलोमीटर), वैली लैगून (15 किलोमीटर).

कोची बैकवाटर क्षेत्र नारियल के वृक्षों व प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है.

त्रिवेंद्रम का पोनमुडी क्षेत्र अपनी प्राकृतिक छटा में अद्वितीय है.

अन्य आकर्षण:

केरल की अद्भुत प्राकृतिक छटा से पर्यटकों को परिचित कराने के लिए केरल सरकार के पर्यटन विभाग ने राज्य के मुख्य पर्यटन स्थलों को विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित कर बड़े पैमाने पर विकसित किया है. त्रिवेंद्रम के साथ जिन मुख्य क्षेत्रों को विकसित किया गया है वे हैं, कोची क्षेत्र व कोजीकोड क्षेत्र.

कोची क्षेत्र जो कि पहले कोचीन के नाम से जाना जाता था, केरल का प्रमुख व्यावसायिक शहर है. यहां स्थित प्राकृतिक बंदरगाह विश्व की अनुपम बंदरगाहों में से एक है. किसी समय विदेशी व्यापारियों के लिए यह नगर व्यापार का मुख्य केंद्र था.

कोची क्षेत्र में अनेक स्थल पर्यटन की दृष्टि से विकसित किए गए हैं. जिन में मुख्य हैं कोची स्थित डच पैलेस, 400 वर्ष पुराना यहूदी उपासना गृह, अलाप्पजा स्थित विशाल समुद्र तट जहां वार्षिक नौका दौड़ का आयोजन किया जाता है. कोट्टयम में नारियल के पेड़ों की भरमार व उत्कृष्ट हस्तशिल्प की वस्तुओं, थेक्कड़ी के जंगलों में आजाद घूमते हाथी, हिरण व बाघों का अवलोकन, मन्नार के हरेभरे चाय के बागान तथा अधिरापल्ली के मनमोहक झरने भला किस पर्यटक का मन न मोह लेंगे.

कोची क्षेत्र की तरह ही कोजीकोड क्षेत्र को भी मुख्य पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित किया गया है. कोजीकोड स्थान कालीकट के नाम से भी जाना जाता है. पुर्तगाली निवासी वास्को-डी-गामा 1498 में लंबी समुद्री यात्रा कर यहां की ही एक बंदरगाह पर पहुंचा था. इस क्षेत्र में उत्कृष्ट मंदिरों, मसजिदों व गिरजाघरों की भरमार है. लकड़ी उद्योग के लिए भी यह क्षेत्र देश भर में जाना जाता है. पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण हैं बेपौर व काप्पड़ समुद्र तट. वाइनाद, यह स्थल चाय, काफी व रबड़ उद्योग का मुख्य केंद्र है. तेल्लीचैरी, यह ऐतिहासिक महत्त्व का स्थान है. यहां स्थित तेल्लीचैरी किले का निर्माण 18 वीं शताब्दी में हुआ था. एजीमाला प्राकृतिक सौंदर्य से लबालब तथा ऊंचे पर्वतों व सागर के नीले भोर की पृष्ठभूमि में बसा यह मनमोहक स्थल पर्यटकों के स्मृति पटल पर वर्षों छाया रहेगा.

इस त्रिभुजकार भ्रमण के लिए केरल सरकार के पर्यटन विभाग ने राज्य के अनेक भागों से यातायात की समुचित व्यवस्था की है. ●

कंचनजंघा

अंधेरे मुंह
होटल के तारों को छोड़ कर
कल्पनागम्य दूरियों वाले
आकाशीय नक्षत्रों के क्षीण प्रकाश में
चढ़ता हूं पहाड़ी पर
अदृश्य चोटी की ओर
उषाबेला में
कंचनबेला में
कंचनजंघा के दर्शन करने

कभी हलके से टिके हुए
पत्थरों सा फिसलता
कभी आड़ी तिरछी
पगडंडियों सा भटकता
चोटी पर जब पहुंचता हूं
आसपास चट्टानों की गरिमा
तरूओं की हरीतिमा
बढ़ा देती है उत्कंठा
अवगुण्ठन में पर
छिपी बैठी है कंचनजंघा
थोड़ी ही देर में देखता हूं.

हलकी अरुणाई आभा में
उषा लगा रही है
कंचनजंघा को
चंदन का उबटन
कहां है सूरज?
कहां से आया यह उबटन?

अरे! कंचनजंघा के कपोल
अरुणाभ अरूणिम
गोपियों के बीच
कृष्ण के आने पर
जैसे राधा के कपोल
सर्वाधिक अरूणिम

—विश्व मोहन तिवारी

संबल

कहानी • सुधा गुप्ता

उन दिनों मैं रसायनशास्त्र में शोध कर रही थी. जब तक पिताजी का स्थानांतरण नहीं हुआ था, तब तक तो सब ठीक चलता रहा, परंतु अचानक उन के भोपाल जाने का सुन कर सब अस्तव्यस्त सा प्रतीत होने लगा.

क्षण भर को तो मुझे अपने शोध का सपना धूलधूसरित होता प्रतीत होने लगा. पिताजी मुझे दिल्ली जैसे विशाल शहर में अकेला छोड़ कर जाने के पक्ष में नहीं थे. कितने दिन मैं मुंह फुलाए इधरउधर घूमती रही. संयोग से भोपाल जाने से पहले पिताजी के एक मित्र ने हमारी समस्या सुलझा दी. उन के एक मित्र की जानपहचान से मेरा विश्वविद्यालय के छात्रावास में प्रबंध हो गया. मेरा अभिभावक बनना भी उन्होंने स्वीकार कर लिया.

जाने से पहले पिताजी उन के घर गए. उन का धन्यवाद किया और मुझे सावधानी

से रहने का निर्देश देते गए. अपना बोरियाबिस्तर समेट मैं छात्रावास में चली आई. घर से अलग रहने का यह मेरा प्रथम अनुभव था. पहलेपहल तो यह बदलाव मुझे रोमांचित करता रहा, परंतु धीरेधीरे छात्रावास का कड़ा अनुशासन मुझे उदास करने लगा. मन होता कि दौड़ कर मां की गोद में जा समाऊं. परंतु शोध करना मेरे जीवन का लक्ष्य था.

किसी तरह दिन बीतने लगे. मैं खुद को सामान्य करने का प्रयास करने लगी. परंतु जब घर से किसी का पत्र आ जाता, तब मेरा मन बेकाबू होने लगता.

एक दिन मेरे पिताजी के मित्र यानी चाचाजी मेरे पास आए, उन्होंने बताया कि उन का भी तबादला हो गया है. वह बोले, ''मेरी जानपहचान के एक शरीफ इनसान हैं. मैं ने तुम्हारे विषय में उन से बात की है. उन का नामपता मैं तुम्हें दे देता हूं... तुम्हारे पिताजी से भी फोन पर बात कर ली है. अब मेरी जगह वही तुम्हारे अभिभावक होंगे.''

मैं उन के साथ वार्डन के पास गई. उन की सूची में भी मेरे नए अभिभावक का नाम आ गया.

जातेजाते चाचाजी बोले, ''जब भी जरूरत हो, उन के घर फोन कर के तुम उन्हें बुला सकती हो. कृपाल साहब बड़े अच्छे इनसान हैं. घबराना नहीं, बिटिया.''

''जी, चाचाजी.'' उन्हें विदा कर के मैं कमरे में लौट आई. ऐसा लगने लगा, जैसे इस बड़े शहर में बिलकुल अकेली हो गई हूं. चाचाजी के घर कभी गई नहीं थी, परंतु उन का इसी शहर में होने का एहसास ही मेरे लिए काफी सुरक्षा लिए था.

रात खाने पर मेरी सखी जब मुझे बुलाने आई, तब मेरी उदासी उस से छिपी नहीं रह पाई. डबडबाई आंखों से मैं ने उस से

छात्रावास का कड़ा अनुशासन संध्या को उदास करने लगा था परंतु शोध करने का लक्ष्य उसे वहीं रुके रहने पर मजबूर किए हुए था.

कहा, "मन होता है, वापस चली जाऊं. अब तो चाचाजी का भी तबादला हो गया. इतने बड़े शहर में अगर मुझे कुछ हो गया तो क्या होगा. मेरे मातापिता जो इतनी दूर हैं."

"कैसी बातें कर रही है, संध्या." मेरे उदास स्वर पर वह हतप्रभ रह गई, "क्या अब तक मां की गोद में बैठ कर बोतल से दूध पीती रही हो? कब तक मां की उंगली पकड़ कर चलती रहोगी? मुझे देखो, मद्रास से यहां आई हूं पढ़ने... साल होने को आया. मां का मुंह नहीं देखा. अरे, जब पढ़ना है तो मन को तो मारना ही पड़ेगा... और मां क्या सारी उम्र निभा पाएंगी तेरे साथ... चल उठ, खाना खाने चलें."

लंबाचौड़ा भाषण पिला कर वह मुझे घसीटती हुई ले गई. उस की संगत में मैं बात करने का क्या औचित्य था और फिर इन्हें कैसे पता चला? क्या यह इनसान मेरी हर हरकत पर नजर रखता है? अगर रखता है तो क्यों?'

बिना उस के सवाल का उत्तर दिए मैं पुस्तकालय की सीढ़ियां उतर आई. रिकशा किया और हांफती, कांपती छात्रावास पहुंची. सोचने लगी कि अब नहीं जाऊंगी वहां. इतने बड़े शहर में अगर मेरे साथ कोई हादसा हो जाए तो मां को क्या मुंह दिखाऊंगी?

भय के मारे अपनी सखी लक्ष्मी से भी कुछ नहीं कहा. अगर कह देती तो मेरे डरपोक होने पर वह मुझे खूब डांटती.

दीवाली की छुट्टियों में लक्ष्मी अपने घर चली गई. पूरे छात्रावास की लड़कियां

कालेज छात्रावास में रह रही संध्या के अभिभावक के रूप में उस के चाचाजी जिस व्यक्ति को नामजद कर गए थे उसे संध्या ने कभी देखा नहीं था, इसलिए पुस्तकालय में मिला व्यक्ति जब दीवाली पर उस का अभिभावक बन कर छात्रावास में आया तो वह सहम गई और उस ने उस के साथ जाने से मना कर दिया. लेकिन एक दुर्घटना के बाद जब वही व्यक्ति उसे संबल देने आया तो वह सोच में पड़ गई कि आखिर यह व्यक्ति कौन है और क्यों मेरे पीछे पड़ा हुआ है?

सामान्य रहने का प्रयत्न करती, परंतु जब वह व्यस्त होती, तब मुझे अकेलापन बहुत खलता. वार्डन की इजाजत से एक लाइब्रेरी की मुझे सदस्यता मिल गई. खाली समय में मैं वहीं पढ़ने जाने लगी. अपने विषय के अलावा हिंदी साहित्य में मुझे रुचि थी, जिसे पढ़ कर मैं अपना समय बिताने का प्रयास करती रहती.

एक शाम लाइब्रेरी से लौटते हुए अनायास एक विचित्र अनुभव हुआ. एक सज्जन से दिखने वाले पुरुष ने मेरी तरफ किताब बढ़ाते हुए मुझे चौंका दिया, "कल आप इसी उपन्यास के बारे में पूछ रही थीं न? यह लीजिए."

"जी, धन्यवाद." मैं लगभग संभल कर बोली थी. 'अपरिचित व्यक्ति से भला अपनेअपने अभिभावकों से मिलने चली गईं रह गई मैं नितांत अकेली. घर से पत्र आया था जिसे पढ़पढ़ कर मैं पूरा दिन रोती रही. ऐसी उदास दीवाली पहले कभी नहीं बीती थी. वार्डन ने 1-2 बार मुझे अपने कक्ष में बुला भेजा. शिष्टाचारवश मैं वहां गई और थोड़ी देर बैठ कर चली आई. भला मैं उन से क्या बात करती.

शाम होतेहोते मेरे सब्र का प्याला भर गया और मैं तकिया मुंह पर दबा कर बुरी तरह रोने लगी. मां और पिताजी की याद मुझे अत्यधिक तड़पा रही थी. इसी बीच छात्रावास का चौकीदार आया और दरवाजा पीटपीट कर चला गया. जब अच्छी तरह रो चुकी, तब उठी और स्नानागार में मुंह धोने जाने लगी. सहसा

अपने अभिभावक के रूप में पुस्तकालय में मिले युवक को देख कर संध्या चौंक गई.

मनाने घर चलो." वह सहज स्वर में बोले.

लेकिन मैं हतप्रभ सी सोच रही थी कि क्या इन्हीं के बारे में चाचाजी ने कहा था. लेकिन मैं विश्वास कैसे कर लेती. अविश्वास से उन्हें देखती रही और जल्दी से बोली, "आप...आप ने क्यों कष्ट किया. मैं यहीं ठीक हूं... अब तो सारा दिन बीत गया. वार्डन भी तो हैं न. मैं उन्हीं के साथ दीवाली मना लूंगी..."

"घर में सब लोग तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं. मुझे आने में देर हो गई, उस के लिए मैं क्षमा तो मांग ही चुका हूं."

"जी... मैं यहीं ठीक हूं." निर्णय ले चुकी थी मैं उन के साथ न जाने का, सो नहीं गई.

वह चुपचाप उठ कर चले गए. विचित्र सी मानसिक उथलपुथल में मैं ने वार्डन के साथ दीवाली की पूजा की और दीपमाला के बाद रात का खाना खा कर सोने का प्रयास करती रही. अपने अभिभावक को किसी वृद्ध, बुजुर्ग पुरुष के रूप में सोचा था. सोचने लगी, अच्छा ही किया जो उन के साथ नहीं गई. भला किसी पर इस तरह कैसे विश्वास किया जा सकता है?

लेकिन जब मन में समाया हुआ अपराधबोध मुझे सताने लगा, तब उस के बोझ से स्वयं को मुक्त करने के लिए मैं तरहतरह के तर्क दे कर मन को समझाने लगी, 'क्या पता, यह आदमी कृपाल हो भी नहीं. यह भी तो हो सकता है कि कोई और ही उन का नाम ले कर चला आया हो. कहीं

सामने वार्डन को घबराई सी खड़ी देख मुझे अपना चेहरा छिपाना पड़ा.

वह जल्दीजल्दी बोलीं, "क्या बात है संध्या. कृपाल साहब कब से अतिथि कक्ष में बैठे तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं."

"जी... कौन कृपाल साहब?"

"अरे भई, तुम्हारे अभिभावक और कौन... दीवाली पर तुम्हें अपने घर ले जाने के लिए आए हैं. जाओ, उन के साथ चली जाओ." निर्देश देती हुई वह चली गईं.

मैं सोचने लगी, 'मैं क्यों जाऊं उन के घर? न जान न पहचान, कभी उन्हें देखा तक नहीं.'

तभी याद आया कि चाचाजी कोई नाम बता तो रहे थे. अब वार्डन को क्या उत्तर देती. जल्दी से अतिथि कक्ष में गई. सामने पत्रिका में डूबे अपने अभिभावक की सूरत देखी तो जैसे जमीन ही सरक गई पैरों के नीचे से.

बड़ी मुशकिल से बोल सकी, "आप..."

वही पुस्तकालय वाला व्यक्ति मेरे सामने खड़ा था.

"संध्या, माफ करना, मुझे आने में देरी हो गई. मैं तुम्हें लेने आया हूं... दीवाली

यह आदमी मेरा पीछा तो नहीं कर रहा?'

कुछ समय बीता, विश्वविद्यालय का वार्षिक उत्सव आया तो वार्डन ने सभी के अभिभावकों के लिए निमंत्रणपत्र बांटे. कृपाल के नाम का कार्ड मेरे पास पड़ा रहा.

एक दिन लक्ष्मी को साथ लिया और लिखे पते पर स्वयं जा कर निमंत्रणपत्र देने का निर्णय ले लिया. मन में था कि क्यों न एक बार स्वयं अपने अभिभावक से मिल लूं. कम से कम मुझे पता भी तो चले कि इतने बड़े शहर में एक इनसान जो मेरा अभिभावक है, वह कैसा है?

तिपहिया किया और मैं लक्ष्मी के साथ लिखे पते पर जा पहुंची. साफसुथरी कोठी के सामने हम दोनों खड़ी थीं. घर के बाहर 'कृपाल देव' की नामपट्टी चमक रही थी. सकुचाते हुए हम ने गेट खोला, सामने एक वृद्ध अखबार पढ़ने में व्यस्त थे.

''देखा न, यही होंगे मेरे अभिभावक... मुझे तो पहले ही शक था कि वह कोई बदमाश है.'' मैं अपनी सूझबूझ पर इतरा उठी. चश्मा हाथ में लिए वह बुजुर्ग हमारे पाए आए. सम्मानवश मैं ने हाथ जोड़े और अपने विषय में बताया.

''अरे, संध्या बेटी. आओ, तुम से मिलने का अवसर ही नहीं मिला. दीवाली पर भी तुम्हें नहीं ला सके... आओ बेटी, आओ.''

सचाई खुलते ही एक झुरझुरी मेरे पूरे अस्तित्व में दौड़ गई. सोचने लगी कि मैं तो बालबाल बच गई, पता नहीं कौन था वह बदमाश.

''चाचाजी, मैं आप को मिलना चाहती थी, इसीलिए स्वयं चली आई.''

''अच्छा किया, बेटी.'' स्नेह सहित पास बैठा कर वह देर तक मुझ से मेरे परिवार के विषय में पूछते रहे. नौकर से चाय मंगवा कर हमें नाश्ता आदि करवाया. वार्षिक उत्सव में आने का आश्वासन दे कर मुख्य द्वार तक हमें छोड़ने आए.

मानसिक संतोष से अभिभूत मैं हलकीफुलकी हो कर वापस छात्रावास आई और नकली कृपाल साहब की सारी कहानी लक्ष्मी से कह डाली तो हतप्रभ सी वह मेरा मुंह देखती रह गई. मेरे इस अनुभव से वह भी सहम सी गई.

मां और पिताजी को गए अब तक 6 महीने बीत चुके थे. अपने शोध में व्यस्त मैं लगभग सामान्य हो चुकी थी. वार्षिक उत्सव पर कृपाल साहब कहीं नजर नहीं आए. अपने अभिभावक को मेरी नजरें देर तक तलाशती रहीं. आया तो मेरे नाम एक पत्र, जिस में उन्होंने बड़ी सादगी से न आने के लिए क्षमा मांगी थी.

पिताजी की तरफ से कृपाल साहब के विषय में आश्वासन भरे पत्र मुझे अकसर आने लगे. मेरे पहले अभिभावक के माध्यम से ही वह उन्हें अच्छी तरह जानते थे. इसीलिए अब मुझे इतने बड़े शहर में अकेली होने का डर बहुत कम लगने लगा था.

एक दिन मैं अकेली ही उन के घर जा पहुंची. घर में सिवा बूढ़े नौकर के और कोई नहीं था. मुझे बैठक में बैठा कर वह स्वयं व्यस्त हो गया. सामने बरामदे में लकड़ी की अलमारी खुली पड़ी थी, जिस में ढेर सारी किताबें इधरउधर बिखरी पड़ी थीं.

''किताबें इस तरह बिखरी क्यों पड़ी हैं?'' मैं ने नौकर से पूछा.

''क्या बताऊं बिटिया, साहब की अलमारी है... किसी को हाथ ही नहीं लगाने देते. वह यहां नहीं हैं न. अब उन के पीछे ही सफाई करने लगा हूं... देखो तो...'' बड़बड़ाते हुए उस ने उत्तर दिया.

''चाचाजी कब तक आ जाएंगे?'' मैं ने किताबें उलटतेपुलटते हुए पूछा.

अनायास एक डायरी सामने पड़ी दिखी. उसी को उठा कर मैं कुरसी पर बैठ गई. उस के बीच के पृष्ठ दीमक चाट चुकी थी. मैं यों ही पन्नों को पलटने लगी.

नौकर चाय की ट्रे ले आया था, उसे मेज पर रखते हुए बोला, ''सुबह जाते हुए

अपनी अटैची भी साथ लेते गए थे. उन के एक मित्र हैं आगरा में... उन के घर में कोई शादी है... कुछ काम था क्या, बिटिया?"

"ओह, तब तो मैं जाती हूं, वह आए तो कह देना कि मैं आई थी."

"अरे बैठो, चाय तो पी कर ही जाना होगा." चाय पी कर मैं डायरी अलमारी में रखने लगी, तभी एक दीमक खाए अलबम पर नजर पड़ी.

"यह देखो, साहब की शादी का अलबम. कितनी धूल चढ़ी है इस पर." नौकर बड़बड़ाता रहा. मैं शीघ्र ही लौट आई.

तीसरे दिन सुबहसुबह प्रयोगशाला में एक हादसा हो गया. जिन प्रोफेसर के अधीन मैं शोध कर रही थी, उन के साथ कुछ लागतबाजी की वजह से कुछ विद्यार्थियों ने प्रयोगशाला में कुछ विस्फोटक पदार्थ फेंक दिया. मैं दरवाजे के समीप थी, सो उस की चपेट में आ गई. मेरे हाथ, बाहें और चेहरे का कुछ भाग जल गया.

पीड़ा के मारे मैं अचेत हो गई. जब होश आया, तब स्वयं को हस्पताल में पाया. वार्डन और मेरी सखी लक्ष्मी मेरे पास बैठी थीं.

"कोई बात नहीं संध्या, तुम जल्दी अच्छी हो जाओगी."

चेहरे और हाथों के जलने से मैं बुरी तरह रो पड़ी. वार्डन और वह एकदूसरे का मुंह देखती रहीं, मानो सांत्वना के सभी शब्द उन के शब्दकोश में से रिक्त हो चुके हों.

"अब कैसी हैं, संध्या?" किसी अपरिचित स्वर ने मेरा हाल पूछा, तो वार्डन उठ खड़ी हुई, "कोई डर की बात नहीं है... डाक्टर साहब ने कहा है कि घाव धीरेधीरे भर जाएंगे... आप इधर आ जाइए, कृपाल साहब."

दूसरे ही क्षण मेरे सामने वही पुरुष खड़ा था. जी मैं आया, वार्डन से कहूं, यह कृपाल नहीं हैं, यह तो कोई झूठा आदमी है, मगर पीड़ा के कारण कुछ कह न पाई.

"घबराना नहीं संध्या, मैं हूं न. तुम्हारे पिताजी से मैं ने फोन पर बात कर ली है. शीघ्र ही वह यहां पहुंच जाएंगे."

वार्डन उन्हें मेरे पास बैठा कर चली गई, सभी चले गए तो वह मेरे सिरहाने आ बैठे.

"रो रही हो संध्या. अरे, तुम तो बहादुर हो." जेब से रूमाल निकाल कर उन्होंने मेरे आंसू पोंछे.

"तुम 2 बार घर आईं, मगर तुम से मिल ही नहीं पाया. चाचाजी ने बताया था... राम बाबा ने भी बात की थी. आज सुबह जैसे ही फैक्टरी जाने लगा कि वार्डन का फोन आ गया. घबराना नहीं, जीवन में ऐसे छोटेमोटे हादसे तो हो ही जाते हैं."

–क्रमशः

लंदन में वेश्यावृत्ति पर संकट के बादल

वेश्यावृत्ति से जुड़े लोग इस व्यापार से तेजी से फलनेफूलने के कारण अरबपती बनते जा रहे हैं.

लंदन के 33 वर्ष पुराने स्ट्रिप क्लब के संस्थापक पाल रेमंड ने 1958 में 'मैडम जो जो' बार के रूप में व्यवसाय शुरू किया था.

बाद में रेमंड ने वेश्याओं से संबधित 'मेन ओनली एंड एस्कर्ट' सहित 8 पत्रिकाओं पर कब्जा कर लिया, जिन की लगभग 28 लाख प्रतियां प्रतिमाह यूरोप और अमरीका में बिकती हैं. अब तक रेमंड ने सुलभ अश्लील साहित्य, भू संपत्ति एवं यौन प्रदर्शन से संबद्ध 12 करोड़ डालर से अधिक मूल्य का साम्राज्य स्थापित कर लिया है. इसी कारण उन्हें 'वेश्याओं का राजा' माना जाता है.

लेकिन अब कुछ सामाजिक संगठनों ने अश्लीलता एवं वेश्यावृत्ति के विरोध में जन जागरण अभियान चलाया ही नहीं, बल्कि अधिनियम 1985 को लागू करने की मांग भी दोहराई है. इस कानून के अनुसार किसी भी क्षेत्र विशेष में यौन केंद्रों की अधिकता कम करने का विधान है.

जोड़ी अति उत्तम है

व्यंग्य ● जगत सिंह बिष्ट

अंगरेजी में एक कहावत है, जिस का शाब्दिक अर्थ है: विवाह 'स्वर्ग' में तय होते हैं. लेकिन अधिकतर भारतीय विवाह तो आज भी इसी धरती पर नाई और पंडितों के सौजन्य से तय होते हैं.

यहां तक कि अच्छेभले, पढ़ेलिखे और तथाकथित प्रगतिशील परिवार भी रिश्ता तय करने से पहले लड़केलड़की के ग्रहों का मिलान करते हैं. जाहिर है कि यह मिलान किसी धोतीचोटीधारी पंडितजी के कर-कमलों द्वारा ही संपन्न होता है. भले ही पंडितजी कंप्यूटर से जन्मकुंडली मिलाने का दावा करें. सब कुछ उन की बुद्धि और मरजी पर निर्भर करता है. भले ही पंडितजी खुद मिडिल फेल हों लेकिन इंजीनियर और डाक्टर लड़केलड़कियों का भविष्य भी वह ही तय करते हैं.

अगर किन्हीं कारणों से पंडितजी नहीं चाहते कि अमुक रिश्ता फलीभूत हो तो कह देंगे, "शनि महाराज की नजर कुछ

सूरज और चंदा दोपहर के बाद उठते और खाना खाने के बाद पुनः दोनों लेट जाते.

टेढ़ी पड़ रही है. लड़की भी मंगली जान पड़ती है यह रिश्ता यदि हो जाए तो सासससुर के लिए कष्टप्रद सिद्ध होगा."

बस, इतना ही काफी है. रिश्ता बनने के पहले ही टूट जाता है.

इस बीच, यदि कन्यापक्ष से कोई सज्जन थोड़ा मिष्ठान्न और दोएक करकरे नोट ले कर पंडितजी को प्रणाम करे तो बात बदल भी सकती है. पंडितजी चाहे तो राहुकेतु की तिरछी गरदनें पकड़ कर मरोड़ सकते हैं और चुटकी बजाते ही मंगल ग्रह को गलत जगह से उठा कर सही स्थान पर बिठा सकते हैं.

हमारे महल्ले के एक नालायक लड़के के मांबाप बेहद परेशान रहते थे. ज्योंज्यों उन का लड़का जवान हो रहा था, उस के निकम्मेपन में बढ़ोतरी होती जा रही थी. ऐसे में, नेक पड़ोसियों ने मुफ्त सलाह दी, "इस की शादी कर दो, अपनेआप पटरी पर आ जाएगा."

उन्हें कन्या ढूंढ़ने ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ा. हमारे यहां चारों तरफ कन्याएं ही कन्याएं हैं जिन के मांबाप उन्हें किसी खूंटे से बांधने के लिए परेशान हैं. यह देखने की उन्हें फुरसत ही नहीं होती कि लड़का वास्तव में कैसा है, क्या काम करता है और उस में कौनकौन से गुणअवगुण हैं. भले ही इस जल्दबाजी के लिए उन्हें बाकी उम्र पछताना पड़े.

आप को तो मालूम ही होगा कि हर विवाहयोग्य भारतीय कन्या सुंदर, सुशील और गृहकार्य में निपुण होती है. ऐसी ही एक कन्या के मातापिता, उस नालायक लड़के के मातापिता के पास विवाह प्रस्ताव ले कर गए. लड़केलड़की की जन्मकुंडलियों का मिलान किया गया

पंडितजी बोले, ''जोड़ी अति उत्तम है. लड़के और लड़की के 36 में से 32 गुण आपस में मेल खाते हैं. विवाह जितनी जल्दी हो जाए, उतना ही उत्तम है. अगले महीने एक बहुत ही शुभ लग्न है. अगर इसे चूक गए तो साल भर प्रतीक्षा करनी पड़ेगी.''

लिहाजा, चट मंगनी और पट ब्याह हो गया. वरवधू के 32 गुण पंडितजी के कहे अनुसार मेल खाते थे. अगले दिन से ही इन गुणों के मेल ने गुल खिलाने शुरू कर दिए. दुल्हे राजा तो बचपन से निकम्मे और नालायक थे ही, उन की दुलहन रानी उन से भी सयानी निकली.

आइए, अब आप को उन के विवाहित जीवन की कुछ झलकियां दिखाने उन के घर लिए चलते हैं.

लड़के का नाम है सूरज और लड़की का नाम है चंदा. दोनों सो रहे हैं. सुबह के 10 बज चुके हैं और महल्ले के लोग अपनेअपने कामधंधों पर जा चुके हैं.

सूरज और चंदा बेफिक्र हो कर सो रहे हैं. शादी से पहले, सूरज 10-11 बजे थोड़ी देर के लिए उठ कर, दोबारा उबली चाय पी कर, फिर से चादर तान कर दोपहर तक के लिए सो जाता था.

अब शादी के बाद, उस ने चाय पीना भी छोड़ दिया है. सूरज और चंदा दोपहर बाद जागते हैं जब उन के कमरे में तेज धूप आ चुकी होती है. सूरज की मां उन दोनों को खाना गरम कर के देती है. खाना खाने के बाद दोनों पुनः आराम करने के लिए लेट जाते हैं.

सूरज की बूढ़ी मां ने बड़ी उम्मीदों से उस का विवाह रचाया था. सोचा था कि बहू आएगी तो घर के कामकाज में हाथ बंटाएगी लेकिन होना कुछ और ही था.

लड़का अथवा लड़की किसी भी स्वभाव के हों, कोई फर्क नहीं पड़ता. लेकिन यदि कुंडली मिला कर शादी की जाए तो इस का सुख ही निराला होता है. फिर कुंडली मिलाना भी कौन सा मुशकिल काम है? यदि पंडित जी की मनःस्थिति का ख्याल रखा जाए तो वह भी जोड़ी के अति उत्तम मिलान में कोई कसर नहीं छोड़ते.

एक सुबह मां ने चंदा को जगा कर पानी भरने के लिए कहा. बेचारी कोमल चंदा के नाजुक शरीर को पानी की ठंडक बरदाश्त नहीं हुई. वह छींकने लगी. सूरज तुरंत दौड़ कर डाक्टर साहब को घर बुला लाया. उस ने मां से कहा कि चंदा को आराम की सख्त जरूरत है, उस से कोई काम मत करवाना.

चंदा की मां ने सूरज की मां को चिट्ठी लिखी, ''हम ने तो सोचा था कि चंदा की सास अभी जिंदा है. चंदा आराम से रहेगी. दामाद की चिट्ठी पा कर लगता है कि आप उस से काम करवाती हैं, उसे पराई बेटी समझती हैं. यह बात ठीक नहीं है. अगर हमारी बेटी को कुछ हो गया तो उस की जिम्मेदार आप होंगी....''

सूरज के निकम्मेपन से खीझ कर उस के पिता ने एक दिन उसे खूब भलाबुरा कहा और घर से निकल जाने का हुक्म दे दिया.

सूरज की मां सीधीसादी है. उस ने सोचा, जब अपना ही सिक्का खोटा है तो दूसरों को क्या दोष देना.

जब से बहू को छींकें आई थीं, उस ने बिस्तर से उठना ही बंद कर दिया था. बहू के कपड़े तक सूरज खुद धोता और बाहर रस्सी में सुखाने डालता. बीचबीच में जा कर उन्हें उलटतापुलटता और देखता कि कपड़े सूख गए हैं या नहीं.

अपनी खिड़कियों से यह दृश्य देखती महल्ले की महिलाएं मुंह में पल्लू डाल कर हंसतीं.

अपनी घरवाली की इतनी फिक्र करने वाले सूरज को अपने बूढ़े मांबाप और दुनियादारी की कोई परवाह न थी. वे उस से कहकह कर थक गए थे लेकिन वह कोई कामधंधा करने को तैयार नहीं था.

एक दिन खीज कर उस के बूढ़े बाप ने उसे खूब भलाबुरा कहा, यहां तक कि घर से निकल जाने को कह दिया. सूरज आत्महत्या करने की धमकी देने लगा. उस के पिता उस की झूठी धमकियों के आदी हो चुके थे. सूरज यह कह कर घर से चला गया था कि वह रेलगाड़ी के नीचे कट कर अपनी जान दे देगा.

घर में रोनापीटना शुरू हो गया. चंदा छाती पीटपीट कर रोने लगी. सूरज की मां भी दहाड़ें मार कर बिलखने लगी. सूरज के पिता चिल्ला कर कहने लगे, "ऐसी औलाद मर ही जाए तो बेहतर है."

चंदा को यह सब अच्छा नहीं लगा. उस ने भी आत्महत्या करने की ठान ली. कहने लगी कि वह तालाब में डूब कर जान दे देगी. रोतेसिसकते वह तालाब की ओर चल भी दी.

सूरज के बूढ़े मांबाप परेशान हो गए. उन्होंने पड़ोसियों को आवाज लगाई. कुछ पड़ोसी रेल की पटरियों की तरफ सूरज को ढूंढ़ने निकल पड़े और बाकी, विपरीत दिशा में चंदा को मनाने तालाब की तरफ दौड़े. जैसेतैसे दोनों को मना कर घर लाया गया.

इस के बाद दोनों का हौसला और बढ़ गया. जराजरा सी बात पर सूरज अपने मांबाप को आंखें दिखाने लगा. जितना निकम्मा वह शादी से पहले था, अब उस से भी अधिक निकम्मा हो गया.

कुछ ही महीनों में सूरज और चंदा का आपसी आकर्षण भी घटने लगा. अकसर उन में तूतू, मैंमैं और हाथापाई होने लगी. उन का घर कुरुक्षेत्र का मैदान बन गया जिस में रातदिन घरेलू महाभारत की लड़ाई चलती रहती. अब सूरज के मांबाप के बूढ़े कंधों पर मुस्तंडे सूरज के साथसाथ एक निकम्मी और झगड़ालू बहू चंदा को खिलाने का बोझ भी आ पड़ा था. दिनरात वे उस मनहूस घड़ी को कोसते रहते जब उन्होंने पड़ोसियों की सलाह मान कर सूरज और चंदा के विवाह का निर्णय लिया था. वे यह मान कर चल रहे थे कि बहू के कदम दहलीज पर पड़ते ही उन का नालायक बेटा अपनी जिम्मेदारियां समझने लगेगा. पंडितजी ने भी उन दोनों की जन्मकुंडलियों का मिलान कर के कहा था कि यह जोड़ी अति उत्तम है. लेकिन यहां तो सब कुछ उलटा ही हो रहा था.

एक सुबह दानदक्षिणा के चक्कर में पंडितजी उन के घर पधारे. उन्हें देखते ही सूरज की मां उन पर बरस पड़ी, "कैसा दान? और कैसी दक्षिणा? एक तो बेमेल विवाह करवा दिया आप ने, ऊपर से दक्षिणा मांगने आए हैं आप. हम तो बरबाद हो गए. बेटा तो हमारा पहले से ही निकम्मा और नालायक था. बहू भी हमें वैसी ही मिली. सारा कियाधरा (दोष) आप का ही है. आप ने ही इन की जन्मपत्रियों का मिलान कर के कहा था कि जोड़ी अति उत्तम है."

पंडितजी ने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया, "मैं ने आप को पहले ही बता दिया था कि लड़के और लड़की के 36 में से 32 गुण मिलते हैं. जब आप को अपने बेटे के गुणअवगुण मालूम थे तो आप को समझ जाना चाहिए था कि आप की होने वाली बहू के गुणअवगुण भी लगभग वैसे ही हैं. गलती मेरी नहीं आप की ही है. आप को ही अपने बेटे की शादी की जल्दी पड़ी थी." ●

निरंकुशवाद के खिलाफ अफ्रीकावासियों का विरोध

किसी भी देश के निवासियों को हमेशा के लिए गुलाम नहीं बनाया जा सकता. अपने अधिकारों के लिए लड़ने तथा देश की निरंकुश सत्ता के विरुद्ध आवाज उठाने की इच्छा तथा ताकत अब अफ्रीका में भी जड़ पकड़ रही हैं. देश की निरंकुश सत्ता के विरुद्ध संघर्ष पहले कभी इस तरह उभर कर सामने नहीं आया था.

जैरे में कर्नल मोबुटु की सरकार सब से ज्यादा निरंकुश तथा असहिष्णु मानी जाती है, वहां भी 16 उच्च श्रेणी के वकीलों ने 3 सरकारी जजों के ट्रिब्यूनल का सामना कर यह घोषणा कर दी कि अब पानी सिर से ऊपर पहुंच गया है. ये वकील एक अखबार के संपादक के विरुद्ध लगे दोषारोपण का विरोध कर रहे थे, जैरे ने जैसे सरकार के विरुद्ध एक लेख छापा था. इस में यह भी मांग की गई थी कि अमरीका जैरे सरकार को मिलने वाली आर्थिक सहायता में कटौती करे.

केन्या के वकील पाल क्यूटे तथा जान खमीनवा ने राष्ट्रपति मोय से कानून के शासन की स्थापना की मांग की है.

तंजानिया तथा जिंबाब्वे में भी राजनीतिक बहुलवाद के लिए संघर्ष तेजी पर है. नाइजीरिया के पत्रकार जनरल बबनगिडा की सैनिक सरकार पर जोर डाल रहे हैं कि वह 1992 में देश में सिविल शासन की स्थापना की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करें?

तीन घंटे ट्यूशन पढ़ाने के बाद जब मैं घर आया तो विश्राम करने के लिए बैठ गया. अचानक मेरा शरारती छोटा भाई पिचकारी से मुझ पर पानी डालने लगा.

मैं ने उसे डांटते हुए कहा, "इतनी देर बैठने से मेरा पैर सो गया है और तुम्हें शरारत सूझी है."

"इसी लिए तो मैं पानी डाल कर उसे जगाने का प्रयास कर रहा हूं." उस ने भोलेपन से कहा.

—धर्मवीर सालेचा

*

एक दिन हम बस में यात्रा कर रहे थे. मैं ने अपने लिए पूरा और आठ वर्षीय भाई के लिए आधा टिकट लिया. इस पर भाई ने पूछा, "मेरा आधा टिकट क्यों लिया?"

मैं ने यों ही कहा, "तुम ने हाफ पैंट पहनी है न, इसलिए."

"अगर मैं हाफ पैंट उतार दूं तो क्या मेरा टिकट नहीं लगेगा?" भाई ने तर्क दिया तो मैं बगलें झांकने लगा.

—सचिन वर्मा

*

मेरा 10 वर्षीय भाई भारत के मानचित्र को बड़े ध्यान से देख रहा था. मैं ने पूछा, "बताओ, भारत क्या है?"

उत्तर में वह मेरी ओर देखने लगा. मैं ने कहा, "नहीं जानते, भारत एक राष्ट्र है."

"बिलकुल गलत" वह बोला, "राष्ट्र के अंदर 'महाराष्ट्र' कैसे हो सकता है?"

—शशी सिह

*

कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी. हमारे पिताजी ने कहा, "गुड़िया के लिए आज बाजार से गरम मोजे लाएंगे."

"दादाजी, हम गरम मोजे नहीं पहनेंगे. उन से हमारे पैर जल जाएंगे." चार वर्षीया गुड़िया ने तपाक से कहा.

—राजीव शर्मा

*

मैं अपने सात वर्षीय भतीजे के साथ राशन की दुकान पर चीनी लेने गया. दुकान के बाहर बोर्ड पर 'आउट आफ स्टाक' लिखा था. भतीजे ने इस का मतलब पूछा तो मैं ने बताया, "किसी चीज के न होने को 'आउट आफ स्टाक' कहते हैं."

एक दिन कुछ लोग हमारे घर आए. उन्होंने मेरे भतीजे से पूछा, "तुम्हारी मां कहां हैं? नजर नहीं आ रहीं."

"वह आउट आफ स्टाक हैं." उस का उत्तर था.

—राजेश अरोड़ा

*

एक दिन मैं अपनी छः वर्षीया बेटी को 'राजा' और 'राष्ट्रपति' का अंतर समझा रही थी. समझाने के बाद मैं ने उस से पूछा, "बताओ, राजा और राष्ट्रपति में क्या अंतर होता है?"

"राजा तो अपने बाप का बेटा होता है, लेकिन राष्ट्रपति नहीं." उस ने मासूमियत से उत्तर दिया.

—डा. पूनम चतुर्वेदी ●

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

तुरुप चाल

कहानी ● कुमुद भटनागर

"अरे, तुम प्रशांत." स्वाति सीधे उस की आंखों में देखते हुए चहकी.

जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम का विशाल प्रांगण, हजारों दर्शकों और खिलाड़ियों का शोर जैसे स्वाति की सुरमई आंखों और 3 शब्दों के माधुर्य में सिमट कर रह गया.

"तुम बुद्धिजीवी शोधकर्ता इस उछलकूद के मैदान में कैसे?" स्वाति के स्वर में व्यंग्य नहीं आश्चर्य था, "कहीं इसी विषय पर तो शोध करना शुरू नहीं कर दिया कि आखिर खेलकूद पर क्यों इतना पैसा लगाया जाता है और क्यों हजारों लोग इसे देखने आते हैं?"

"अरे, नहीं स्वाति," वह खिसियाई सी हंसी हंसा.

"तो फिर यहां कैसे आ गए?" स्वाति ठुनकी, "बताओ न?"

प्रशांत केवल मुसकरा दिया. अब स्वाति को क्या बताता कि कब से वह उस की तलाश में हर खेल के मैदान और स्टेडियम में भटक रहा है, यह जानते हुए भी कि वहां की अपार भीड़ को खोजना भूसे के ढेर में सूई खोजने के समान है.

पर जैसे सुनहले भूसे में रुपहली सूई अलग चमक जाती है, वैसे ही इसे पूरी उम्मीद थी कि अपार जन समूह में स्वाति अलग ही पहचानी जाएगी और आज आखिर उस की लगन सफल हो ही गई थी. स्वाति मिल ही गई थी और वह भी बगल की सीट पर बैठी हुई.

"अब बताओ भी न कि यहां क्या कर रहे हो?" स्वाति ने फिर छेड़ा.

"अगर कहूं कि तुम्हारी तलाश में
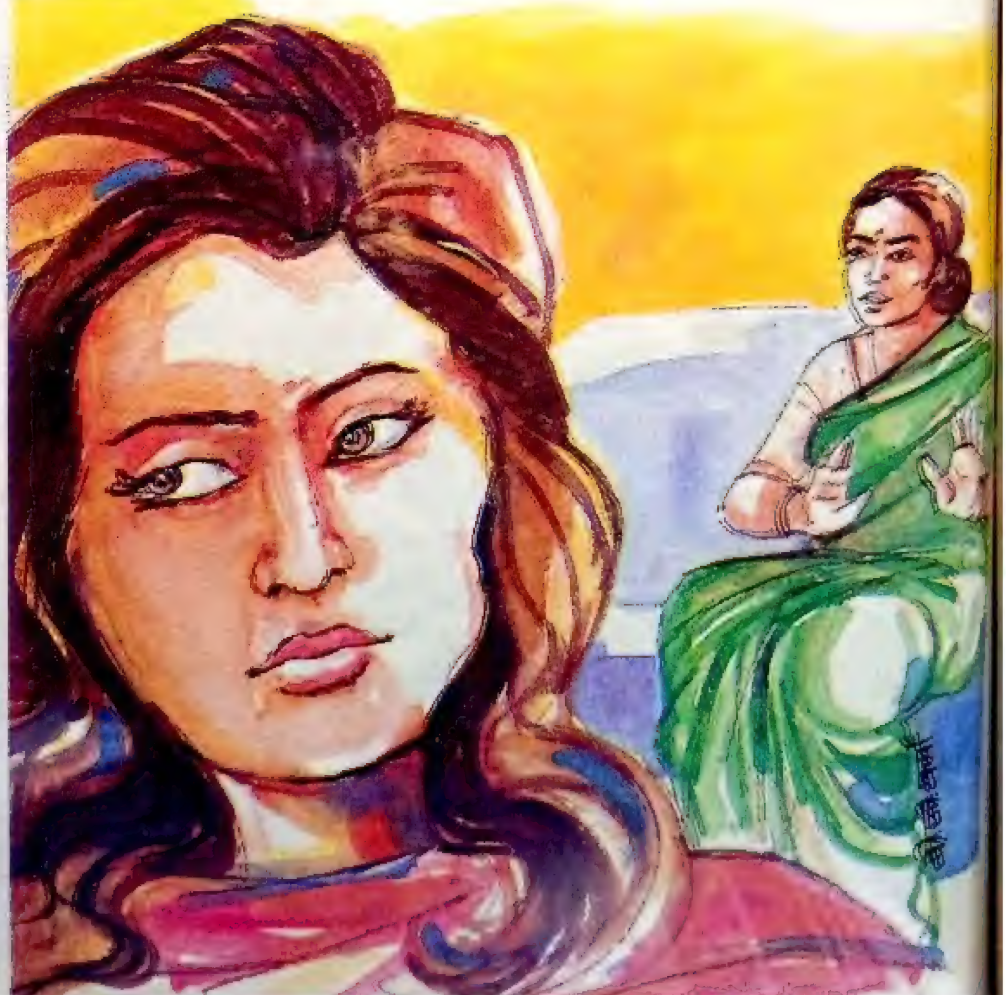
आया हूं तो विश्वास करोगी?"

"जरूर, क्योंकि मेरी तलाश की तो सही जगह यही है. मगर मेरी ऐसी क्या जरूरत पड़ गई जो इस भीड़भड़क्के में खोजने चले आए?"

जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में चल रहे मैच देखते हुए प्रशांत ने स्वाति से कहा, "अगर कहूं कि तुम्हारी तलाश में आया हूं तो विश्वास करोगी."

प्रशांत ने चाहा कि स्वाति को बता दे कि उस की जरूरत उसे कब नहीं थी. लेकिन तब तक खेल शुरू हो चुका था और स्वाति उस की उपस्थिति से बेखबर तन्मय भाव से खेल देखने लगी थी. खेल से स्वाति का इतना लगाव ही तो दोनों के अलगाव का कारण बना था.

पड़ोस में रहने के कारण बचपन से दोनों को एकदूसरे से लगाव था. उस लगाव में न तो प्रणय की कशिश थी और न ही यह भाईबहन वाला प्यार था. अगर दोनों में कुछ रिश्ता था तो बस विश्वास का. बचपन के कंचों और गुड़ियों के आपाधापी के दुख कहतेसुनते दोनों ने कालिज की रैगिंग, अध्यापकों की पक्षपाती प्रवृत्ति, सहपाठियों की गुटबाजी और परिवार की रुढिवादिता के दुख जबतब एकदूसरे से बांटे थे.

हालांकि स्वाति को विज्ञान में कोई रुचि नहीं थी, फिर भी वह बड़ी दिलचस्पी से प्रशांत के विभिन्न प्रयोगों और योजनाओं के बारे में सुनती थी. न ही प्रशांत को खेलकूद का शौक था. उस के खयाल से खेलकूद में व्यर्थ ही समय और शक्ति का नाश होता है. लेकिन फिर भी जब कभी स्वाति का कोई बड़ा मैच होता था तो वह अवश्य समय निकाल कर देखने जाता था और जीतने पर उसे इनाम के तौर पर कुछ उपहार भी दे देता था.

"मेरे पास गाड़ी नहीं है. भाड़े की सवारी में घूमता रहता हूं. आज तुम्हारी गाड़ी में मुफ्त सवारी करूंगा," प्रशांत ने मुसकराते हुए स्वाति से कहा.

जहां उस का काम केवल खोज और शोध करना ही होगा." स्वाति ने उत्तर दिया.

"ऐसी नौकरी फिर मिल चुकी." मां ने मुंह बिचकाया.

"नहीं मां, आजकल तो हर छोटेबड़े शहर और बड़े अंतर्राष्ट्रीय कारखानों में अनेक अनुसंधानशालाएं हैं, जिन में शोध करने के लिए प्रशांत जैसे सिरफिरों को मुंहमांगी तनख्वाह पर रखा जाता है. हो सकता है, प्रशांत को जल्दी ही नौकरी मिल भी जाए... बातचीत चल रही है." स्वाति ने बताया.

लेकिन बचपन और किशोरावस्था में दोनों की जिस घनिष्ठता पर किसी ने कभी ध्यान नहीं दिया था, अचानक ही वही घनिष्ठता जवानी आतेआते सब की आंखों में खटकने लगी. दोनों के अपने कमरे में अकेले बैठ कर बातें करने पर रोक लग गई. स्वाति और प्रशांत को इस से कुछ फर्क नहीं पड़ा. वे सब के बीच में बैठ कर गप्पें लड़ाते रहते.

"यह प्रशांत हमेशा खोजबीन ही करता रहेगा या कभी नौकरी भी करेगा?" एक रोज स्वाति की मां ने पूछा.

"नौकरी तो जरूर करेगा लेकिन वहीं,

"नौकरी मिल जाए तो फिर तुम दोनों की शादी की बात छेड़ें?" मां ने कहा, तो स्वाति चौंक पड़ी, "शादी मेरी और प्रशांत की? क्या बात कर रही हो मां? आप लोगों को यह गलतफहमी कैसे हो गई कि मैं और प्रशांत प्रेमी हैं और शादी करेंगे? इस किस्म की कोई भावना कभी हमारे मन में आई ही नहीं, न कभी हम ने ऐसा कोई सपना ही देखा."

अब मां के चौंकने की बारी थी, "माना कि तुम्हारी और प्रशांत की भावनाएं एकदूसरे के लिए केवल स्नेहमयी हैं पर

प्रशांत और स्वाति पड़ोसी होने के कारण बचपन से ही एकदूसरे के घनिष्ट मित्र बन गए थे परंतु उन दोनों की शादी की बात चलते ही प्रशांत ने ऐसी तुरुप चाल चली जिस ने स्वाति के घर में न केवल तूफान ला दिया बल्कि दोनों को एकदूसरे से बहुत दूर भी कर दिया. पर अचानक प्रशांत ने ऐसा पासा पलटा कि वे सदा के लिए एक हो गए

देखने वालों की नजर में तो बुराई आ सकती है और बोलने वालों की जबान तो कोई पकड़ नहीं सकता. अगर शादी नहीं करनी है तो तुम प्रशांत को राखीबांध भाई बना लो."

"समारोह कर के?" स्वाति हंसी, "समाज को तो तभी पता चल सकेगा. सच कहूं, मेरे दिल में प्रशांत के लिए भाई वाला स्नेह भी नहीं है. ऐसे में दुनिया के लिए फालतू का रिश्ता क्यों गढ़ा जाए? हम दोनों बस अभिन्न मित्र हैं, इस से अधिक और कुछ नहीं."

स्वाति से यह बात सुन कर प्रशांत हंस पड़ा, "अगर शादी एकदूसरे से कर ली तो फिर दोस्ती किस से करेंगे. सुना है, शादी के बाद मियांबीवी दोनों को ही एकदूसरे के दुख रोने को एक कंधे की जरूरत पड़ती है."

स्वाति भी हंस पड़ी, "और यह भी सुना है कि दोस्ती करने की एक उम्र होती है और शादी के लिए तो खैर उम्र का कोई बंधन ही नहीं है."

"स्वाति, अच्छा किया तुम ने कि बात साफ कर दी... क्योंकि मैं तो अभी कई वर्ष तक किसी के साथ भी शादी करने की सोच तक नहीं सकता. मेरे घर वालों को तुम जानती ही हो, एक बार शादी का कीड़ा उन के दिमाग में घुस गया तो अपनी शांति तो चट गई समझो."

प्रशांत की बात पर स्वाति हंस पड़ी.

लेकिन बात स्वाति के कहने भर से खत्म नहीं हुई थी. प्रशांत की नौकरी लगते ही जब उस की मां ने उस की और स्वाति के रिश्ते की बात छेड़ी तो प्रशांत तपाक से बोला, "शादी और वह भी स्वाति से... क्यों भूखा मरवाती हो, मां? वह खेलकूद की दीवानी रसोईघर में खाना पकाने की जगह आलू और थाली से पिंगपांग खेलने लगेगी."

मां हंस पड़ीं, "शादी के बाद सभी लड़कियां बदल जाती हैं. स्वाति भी ठीक हो जाएगी."

"स्वाति ठीक होने वाली नहीं है, मां. उस की शादी करना तो उस के और उस के होने वाले पति के साथ अन्याय करना होगा."

प्रशांत का यह मजाक स्वाति के परिवार तक पहुंचतेपहुंचते इस हद तक विद्रूप हो चुका था कि उन्होंने इसे स्वाति की कड़ी आलोचना समझी जो कहीं भी उस की शादी के लिए बाधक हो सकती थी. स्वयं स्वाति ने भी इसे अपने व्यक्तित्व पर चोट और अपमान समझा.

उन दिनों स्वाति के बड़े भैयाभाभी पूना से आए हुए थे. उन्होंने सलाह दी कि प्रशांत से स्पष्टीकरण मांगने से बात और भी बढ़ेगी. उस से संबंध विच्छेद करना ही ठीक रहेगा और बेहतर होगा कि स्वाति आगे की पढ़ाई उन्हीं के साथ रह कर पूना में करे.

हमेशा हर छोटीबड़ी बात का फैसला प्रशांत से पूछ कर करने वाली स्वाति ने पूना जाने का फैसला स्वयं कर लिया था. प्रशांत को स्वाति के पूना जाने से एक रोज पहले इस बात का पता चला था, "यह पूना जाने का फैसला अचानक कैसे कर लिया, स्वाति?"

"अचानक नहीं प्रशांत, बहुत सोच-समझ कर किया है."

"मगर वहां करोगी क्या?" प्रशांत ने पूछा, "एक राज्य के खिलाड़ी को दूसरे राज्य में मान्यता आसानी से नहीं मिलती."

"उछलनेकूदने के अलावा मुझ में और

वफा का रंग

मैं खोया ख्वाबों में
बेताब इन राहों में,
कभी तो तेरी बेवफाई
वफा का रंग लाएगी.
—अशोक बिड़ला

भी बहुत कुछ करने की क्षमता है, प्रशांत."

उस के इस रूखे जवाब से प्रशांत को बहुत ठेस पहुंची थी और उस ने तटस्थ रहना ही बेहतर समझा था.

लेकिन स्वाति के जाने के बाद उस का दिल भी वहां से उचाट हो गया और उस ने विदेश जाने के लिए भागदौड़ शुरू कर दी. जल्दी ही उसे विदेश जाने के लिए छात्रवृत्ति भी मिल गई और वह चला गया. जाने से पहले वह स्वाति से मिलना चाहता था, लेकिन संपर्क करने की हिम्मत नहीं हुई क्योंकि स्वाति के जाने के बाद उस के परिवार वालों ने प्रशांत और उस के घर वालों से दुआसलाम तक करनी छोड़ दी थी.

विदेश में भी उसे रहरह कर स्वाति की याद आती थी. भारतीय समाचारपत्र मिलते ही वह सब से पहले खेल का पन्ना देखता था कि शायद कहीं स्वाति का नाम दिखाई पड़ जाए.

3 साल बाद घर लौटने पर सब का हालचाल पूछते हुए उस ने स्वाति के परिवार के बारे में भी पूछा.

"करीब डेढ़ साल पहले महेश्वरनाथजी सेवानिवृत्त हो गए, सो वह लड़कों के साथ चले गए. नरेश बंबई में है और राकेश पूना में... सो दोनों में से किसी के पास होंगे." मां ने बताया.

"और स्वाति?"

"वह भी वहीं कहीं है. किसी विज्ञापन कंपनी में काम करती है शायद."

"शायद का क्या मतलब?"

"सुनीसुनाई बता रही हूं क्योंकि स्वाति की शादी को ले कर तू ने जो मजाक किया था, उस का उन्होंने इतना बुरा माना कि जाते हुए भी हम से नहीं मिले. अपना तो कोई संपर्क ही नहीं है अब उन से."

"फिकर मत करो, अब संबंध पुनः बन जाएंगे. मैं स्वाति से शादी करना चाहता हूं. चौंको मत मां, जब तुम लोगों ने बात छेड़ी थी, तब मेरे मन में ऐसी कोई बात नहीं थी या हो भी तो उस समय मैं ने उसे समझा नहीं था. लेकिन स्वाति से दूर जाने के बाद लगा कि उस के बिना जीवन अधूरा है."

"मगर तेरे ही चाहने से तो शादी नहीं हो जाएगी. स्वाति भी तो चाहे तभी न..."

"वह भी चाहती ही होगी, तभी तो उस ने भी अभी तक शादी नहीं की."

"यह तू कैसे कह सकता है?" मां ने चौंक कर पूछा.

"क्योंकि अगर स्वाति की शादी हुई होती तो आसपड़ोस में किसी को तो निमंत्रण आता और वे लोग आप को जरूर बताते."

"हां, यह बात तो है," मां कुछ सोचते हुए बोलीं, "मगर शादी की बात करेगा किस से? उन लोगों का कोई पताठिकाना ही नहीं है."

"वह सब मैं पता लगा लूंगा, मां." प्रशांत ने आश्वासन दिया.

लेकिन पता लगाना इतना आसान नहीं था. राकेश पूना की नौकरी छोड़ चुका था और दिल्ली चला गया था. स्वाति भी उसी के पास थी. लेकिन उन लोगों का दिल्ली का पता न तो स्वाति की किसी सहेली के पास था और न किसी अन्य जानपहचान वाले को उस स्थान विशेष की जानकारी थी.

लेकिन फिर भी प्रशांत ने हिम्मत नहीं

हारी. उस ने भी दिल्ली की एक अनुसंधानशाला में अनुबंध पर काम शुरू कर दिया. जब कभी भी और जहां कहीं भी किसी खेल का अंतर्राष्ट्रीय या राष्ट्रीय प्रदर्शन होता तो वह इस आस से जरूर वहां जाता कि हो सकता है स्वाति दिखाई पड़ जाए, और आज वह मिल ही गई.

"हां, तो बताओ न कि अचानक मेरी तलाश क्यों हो रही है?" स्वाति ने खेल में स्थिरता आते ही पूछा.

"अचानक नहीं स्वाति, तुम्हारी तलाश तो कई वर्षों से कर रहा हूं या यह कहो जब से तुम ने नाता तोड़ा है, तभी से तुम्हारे लिए चातक सा तड़प रहा हूं." प्रशांत धीरे से बोला.

"नाता मैं ने तोड़ा था या पहल तुम्हारी ओर से हुई थी?" स्वाति ने तड़प कर पूछा.

"मैं ने जो भी कहा था, वह क्यों कहा था, यह न तो तुम ने स्वयं पूछने की कोशिश की, न मुझे बताने का कोई मौका दिया," प्रशांत के स्वर की वेदना स्वाति को कहीं दूर तक छू गई.

"चलो, अभी मौका दिए देते हैं."

"यहां?"

"नहीं, कहीं एकांत में बैठेंगे." स्वाति उठ खड़ी हुई.

"और तुम्हारे इस मैच का क्या होगा?"

"जो होगा, वह शाम को टी.वी. पर देख लेंगे."

"यहीं देख लो न, मुझे कोई जल्दी नहीं है."

"मगर मुझे तो है यह जानने की जल्दी है कि बरसों पुराने अनूठे रिश्ते को तुम ने क्यों एक विकृत मजाक में बदल दिया?" स्वाति चलतेचलते धीरे से बोली.

प्रशांत उस के पीछेपीछे चुपचाप बाहर आ गया.

"मेरी गाड़ी तो इधर खड़ी है और तुम्हारी?" स्वाति ने पूछा.

"मेरे पास गाड़ीवाड़ी नहीं है." प्रशांत हंसा, "अकेली जान के लिए निजी वाहन क्या करूंगा? भाड़े की सवारी में घूमता रहता हूं. आज तुम्हारी गाड़ी में मुफ्त सवारी करूंगा."

"जरूर. वैसे गाड़ी मेरी नहीं, राकेश भैया की है, मगर ज्यादातर मैं ही चलाती हूं."

"राकेश भैया क्या कर रहे हैं आजकल?"

"वही, जो मैं कर रही हूं, वीडियो और दूरदर्शन के लिए विज्ञापन फिल्में बनाते हैं. हम लोगों की अधिकतर फिल्में खेलकूद से संबंधित होती हैं." अंतिम वाक्य पर स्वाति ने जोर दिया.

"पहले तो तुम किसी विज्ञापन संस्था में थी न?" प्रशांत ने बात बदलने को पूछा.

"यानी मेरी खोजखबर रखते रहे हो?"

"कोशिश तो मिलने की भी बहुत की लेकिन कोई तुम्हारा पता बताने को ही तैयार नहीं था?"

"पिछले दो सालों में मैं ने अपना पता कई बार बदला है इसलिए किसी को ठीक से मालूम ही नहीं होगा," स्वाति गाड़ी के पास पहुंच कर रुक गई. "लोदी उद्यान में चलें. वहां इस समय भीड़ नहीं होगी. वहां हम दोनों इत्मीनान से बातें कर सकते हैं."

"जहां तुम ठीक समझो, स्वाति. मुझे तो दिल्ली के बारे में खास मालूम ही नहीं है."

"जिन्हें मालूम है, वह भी कुछ खास नहीं जानते, इस के बारे में. अच्छेअच्छे को घनचक्कर बना देता है इस शहर का विस्तार, सर्दीगरमी और बारिश का प्रकोप."

"कह नहीं सकता क्योंकि मैं तो यहां आने से पहले ही तुम्हारे चक्कर में घनचक्कर बन चुका था."

"मेरे चक्कर में? लेकिन मैं तो कब से तुम्हारी जिंदगी से निकल चुकी हूं."

"यह महज तुम्हारा भ्रम है, स्वाति. न तो तुम मेरी जिंदगी से निकली हो, न मैं

तुम्हारी जिंदगी से. हमें एकदूसरे की कितनी जरूरत है, मानसिक रूप से हम एकदूसरे के कितने आश्रित हैं, यह हम ने एकदूसरे से दूर हो कर ही जाना है."

"हमें नहीं, मुझे कहो," स्वाति सड़क पर नजरें गड़ाए हुए सपाट स्वर में बोली, "मैं इस समय तुम्हारे साथ महज इसलिए आई हूं कि मुझे तुम्हारे भद्दे मजाक का स्पष्टीकरण चाहिए."

"यह तो गिनेचुने शब्दों में मैं वहां भी दे सकता था. लेकिन अब जब मुलाकात हो ही गई है तो इत्मीनान से बात कर लेते हैं."

स्वाति चुपचाप गाड़ी चलाती रही. लोदी उद्यान में प्रायः सन्नाटा ही था. फिर भी स्वाति उसे एक अलग कोने में ले गई और बैठते हुए बोली, "हां, तो कहो."

गुणग्राहक

प्रत्येक मनुष्य, जिस से मैं मिलता हूं, किसी न किसी रीति में मुझ से श्रेष्ठ होता है इसलिए मैं उस से कुछ शिक्षा लेता हूं.

—एमसेन

"तुम ने सोचा था कि तुम ने अपनी मां से कह कर कि तुम्हारे मेरे बीच इश्क वगैरह का कोई चक्कर नहीं है, बात खत्म कर दी है." प्रशांत ने स्वाति की आंखों में देखते हुए कहा, "लेकिन यह महज तुम्हारी खुश फहमी थी क्योंकि मेरी नौकरी लगते ही मां ने मुझे बताया था कि तुम्हारी मां वह प्रस्ताव ले कर आई थीं, जिस का उन्हें बरसों से इंतजार था. यानी तुम्हारीमेरी शादी का प्रस्ताव. मैं ने सोचा कि तुम्हारी तरह असलियत [illegible]राने से या यह कहने से कि मेरा शादी [illegible]ने का कोई इरादा नहीं है, बात नहीं बनेगी. सो कुछ ऐसा कहा जाए जो सब के दिमाग से हमारी शादी का खयाल निकाल दे."

"और तुम वह सब कह गए, जिस ने मेरे संपूर्ण व्यक्तित्व का विनाश कर दिया," स्वाति कटुता से बोली, "लोग मां को कहते थे कि अगर बेटी को घरगृहस्थी का काम सिखाया होता तो क्यों प्रशांत जैसा वरघर हाथ से निकलता. मां का घर से निकलना दूभर हो गया था. सच पूछो तो वह शहर छोड़ा ही इस वजह से हम ने. मेरे वहां से जाने के बाद भी लोग मेरे मातापिता को मेरे बारे में पूछपूछ कर परेशान करते रहते थे. सो कब तक सहन करते बेचारे. अपनी जमीजमाई गृहस्थी उठा कर बेटेबहुओं पर आश्रित हो गए."

"ओह, आजकल कहां हैं चाचाजी, चाचीजी?" प्रशांत इतना ही पूछ सका.

"यहीं हैं हम सब, यानी मैं, राकेश भैया, भाभी और पिताजी इकट्ठे ही काम करते हैं."

"बुरा न मानो तो एक बात पूछूं?" प्रशांत ने गहरी सांस खींच कर कहा.

"पूछो."

"क्या मेरा किया बेतुका मजाक पूना तक तुम्हारा पीछा करता रहा, यानी वहां भी लोगों को यह वहम हो गया कि तुम फूहड़ हो?"

"नहीं, ऐसा मैं ने कब कहा..."

"तो फिर वहां जा कर तुम्हारी शादी क्यों नहीं हुई?"

"क्योंकि मैं शादी करने के लिए मानी ही नहीं."

"क्यों?"

"बस, ऐसे ही. इच्छा ही नहीं हुई."

"या कोई पसंद नहीं आया?"

"यह भी कह सकते हो. कभी कोशिश नहीं की किसी को पसंद करने की."

"मगर क्यों?" प्रशांत मुसकराया. "इस का जवाब शायद तुम स्वयं भी न जानती हो, लेकिन मैं तुम्हें बता सकता हूं. मगर तुम ने अभी तक तो यह पूछा ही नहीं कि मैं क्यों तुम्हारे लिए तड़प रहा हूं, क्यों तुम्हारी तलाश कर रहा हूं?"

"कितनी बार तो पूछा, खैर, अब तो समझ ही गई हूं कि उस मजाक की माफी मांगने के लिए ही तुम..."

"नहीं, बल्कि इसलिए कि मैं तुम से शादी करना चाहता हूं."

"मजाक का पश्चात्ताप करने को?" स्वाति ने व्यंग्य से पूछा.

"नहीं, असल में तुम्हारे जाने के बाद मुझे लगा कि मेरी जिंदगी में एक अजीब सा खालीपन भर गया है और यह खालीपन विदेश जाने के बाद और भी गहरा हो गया. यह नहीं कि वहां जाने के बाद मेरी किसी से दोस्ती नहीं हुई या मेरी जिंदगी में कोई लड़की नहीं आई. स्वदेशीविदेशी कई लड़कियों से जानपहचान हुई. लेकिन जहां उन्होंने अंतरंग होने की कोशिश की मैं ने कन्नी काट ली क्योंकि मैं उन में तुम्हें ढूंढ़ता था. वह अभिन्नता, एकदूसरे की रगरग पहचानने की क्षमता, जो बरसों की दोस्ती से आई थी, कुछ ही दिनों की पहचान में कहां से आती?"

"तो तुम्हें उन संपर्कों को बढ़ने देना था."

"उसी की तो इच्छा नहीं होती थी. मेरे अवचेतन मन पर तो तुम हावी थीं, ठीक उसी तरह जिस तरह मैं ने तुम्हारे मनमस्तिष्क पर कब्जा कर रखा है..."

"क्या कहने... मैं तुम से...."

"नफरत करती हूं," प्रशांत ने बात काटी, "यही कहना चाहती हो न. मानता हूं, जरूर करती होगी, लेकिन उस के साथसाथ ही तुम हरेक पुरुष में मेरी छवि भी तलाशती होंगी. तुम ने शादी क्यों नहीं की? महज इसलिए कि तुम सब को दिखाना चाहती थी कि जो कुछ मैं ने कहा था, वह झूठ था. तुम में बहुत कुछ करने की क्षमता है और तुम शादी भी उसी से करोगी जो तुम्हारी सफलता और व्यक्तित्व से प्रभावित हो कर तुम्हारा हाथ मांगेगा?"

स्वाति कुछ नहीं बोली, लेकिन उस के चेहरे पर ऐसे भाव थे, जैसे चोरी करते रंगे हाथों पकड़ी गई हो.

"मैं तुम्हारी सफलता या आज के व्यक्तित्व से प्रभावित हो कर नहीं, बल्कि कालिज के दिनों में जो तुम्हारा व्यक्तित्व था, उस से प्रभावित हो कर तुम्हारा साथ उम्र भर के लिए मांग रहा हूं."

"छोड़ो भी प्रशांत हम दोनों में प्रणय की नहीं बल्कि मित्रता की भावना मौजूद रहती थी." स्वाति लापरवाही से बोली.

"लेकिन हमें एकदूसरे के साथ की ललक तो है? बोलो, है कि नहीं?"

स्वाति ने चुपचाप सहमति में सिर हिलाया.

"तो वह तो बगैर शादी किए पूरी नहीं हो सकती. कुंआरे स्त्रीपुरुष को तो इस तरह बाग में बैठे देख कर भी समाज चरित्रहीन का खिताब दे देगा. फर्ज करो, तुम और मैं कहीं और शादी कर लेते हैं तो क्या तुम्हारे पति या मेरी पत्नी बेरोकटोक

रहस्यमय बालक

यूं तो हर मां अपने बच्चे को साफसुथरा तथा स्वस्थ रखना चाहती है, पर ब्रिटेन में एक ऐसी मां की चर्चा है जिस ने अपने बेटे को 11 साल तक कूड़ेकरकट तथा जानवरों के बीच रखा.

ब्रिटिश पुलिस ने 80 बीमार तथा मरे हुए जानवरों के बीच रह रहे एक रहस्यमय बालक को खोज निकाला है. इस बालक की मां ने 11 सालों से इसे इस गंदगी तथा आतंक भरे माहौल में रखा हुआ था.

कोई व्यक्ति सोच भी नहीं सकता कि बिना किसी की जानकारी के कोई इस तरह रह सकता है. लंदन के अच्छेभले इलाके में रह रहे इस बालक के कमर तक लंबे तथा उलझे बाल हैं.

पड़ोसी बालक की मां से इतने भयभीत थे कि वे संबंधित अधिकारी को इस की सूचना देने से डरते थे.

हमें मिलने देंगे? या तुम और मैं उठतेबैठते उन दोनों में एकदूसरे की छवि नहीं तलाशेंगे? और सच बात तो यह है कि हम दोनों बचपन से एकदूसरे को पसंद करते थे. तभी विभिन्न रुचियां होते हुए भी हम ने एकदूसरे को सहन किया."

"यह तो मानना पड़ेगा." स्वाति धीरे से बोली.

"यह रिश्ता इसलिए प्रणय का रूप नहीं ले सका क्योंकि न तो हम दोनों सस्ते रोमानी उपन्यास पढ़ते थे, न ही फिल्में देखते थे. उस उम्र में जिस रोमांच या उत्तेजना की तलाश में तरुण इश्क, समलैंगिकता या नशीली दवाओं का रोग पालते हैं, वह रोमांच अथवा खुशी तुम्हें कोई मैच जीत कर और मुझे कोई प्रयोग कर के मिल जाती थी. संयोग से पहले कभी एकदूसरे से जुदा होने का मौका भी नहीं आया था. तुम्हारी असल जरूरत तो मैं ने तुम्हारे पूना जाने के बाद महसूस की."

"लेकिन मैं ने तो ऐसा कुछ नहीं समझा..." स्वाति दर्प से मुसकराई.

"क्योंकि तब तुम मुझ से चिढ़ी हुई जो थीं. अब जब नाराजगी दूर हो गई है तो धीरेधीरे समझने भी लगोगी," प्रशांत मुसकराया तो स्वाति हलके से मुसकराई.

"चलो, घर चलते हैं. चाचीचाचा से अपनी उस गुस्ताखी के लिए माफी मांगूंगा. जिसे मैं तुरुप चाल समझा था, वह ऐसा कटने वाला पत्ता निकला, जिस ने पूरी बाजी ही पलट दी," प्रशांत उठते हुए बोला.

"बाजी भले ही कुछ वर्षों के लिए पलट गई हो, लेकिन अगर तुम वह बात न कहते, यानी अपनी तुरुप चाल न चलते तो न तो तुम्हारा मेरा संपर्क टूटता, न तुम्हें मेरी कमी का एहसास होता और न ही तुम मुझे आज दोबारा पटा सकते." स्वाति कुछ पल के लिए झिझकी, फिर शरमा कर बोली, "मैं तुम्हारे लिए कुंआरी थोड़े ही बैठी रहती."

"यानी तुरुप चाल जीत गई." प्रशांत विभोर हो कर बोला. ●

एक भागीरथी हिंदू दर्शन की

लेख • मधुकर एस. भट्ट

मैं गंगोत्री से गोमुख की यात्रा पर था. यह लगभग 18 किलोमीटर की पैदल यात्रा थी. पगडंडी के एक ओर ऊंचे पहाड़ थे और दूसरी ओर नीचे भागीरथी. रास्ते में एक साधु मिले. सहयात्री के रूप में उनसे मित्रता हो गई. उन्होंने पूछताछ शुरू की.

"क्या आप शिव भक्त हैं?"

मैंने उत्तर दिया, "जी नहीं."

"फिर आप किस देवता के भक्त हैं?"

"किसी का भी नहीं."

"तो आप निराकार ब्रह्म में विश्वास रखते होंगे?"

"जी नहीं."

अब उन्होंने शंका भरी निगाहों से घूरते हुए मुझ से सीधा सवाल किया, "आप हिंदू हैं?"

और मैं ने सहजता से उत्तर दिया, "जी हां, शतप्रतिशत."

फिर उन्होंने जिरह जारी रखी, "आप न साकार ब्रह्म में विश्वास रखते हैं और न ही निराकार में, फिर भी आप किस आधार पर अपने को हिंदू कहते हैं?"

"मैं हिंदुस्तान में पैदा हुआ हूं, हिंदू जीवन पद्धति के अनुसार रहता हूं और विचार, चिंतन एवं तर्क की स्वतंत्रता रखता हूं, इसलिए मैं हिंदू हूं."

तब तक हम लोग लगभग 8 किलोमीटर तय कर प्रथम पड़ाव चीड़वासा पहुंच चुके थे. समय प्रातः लगभग 10 बजे का रहा होगा, वहां के एक मात्र झोपड़ीनुमा होटल से गरम पकोड़े एवं चाय लेकर मैं ने साधु महाशय की ओर बढ़ाए. उन्होंने इनकार करते हुए कहा कि वह गोमुख में पवित्र जल से स्नान के पश्चात ही अन्न ग्रहण करेंगे.

मुझे खाते देख कर उन्होंने जानना चाहा कि क्या मैं गंगोत्री से स्नान कर के चला हूं और मेरे 'नहीं' कहने पर उन्होंने मेरा नाम पूछा. नाम से अनुमान लगा कर उन्होंने पूछा, "आप जनेऊ धारण करते हैं?"

मैं ने कहा, "जी हां, विधिवत यज्ञोपवीत के पश्चात मैं बचपन से ही जनेऊधारी था, परंतु अपना ज्ञान विकसित
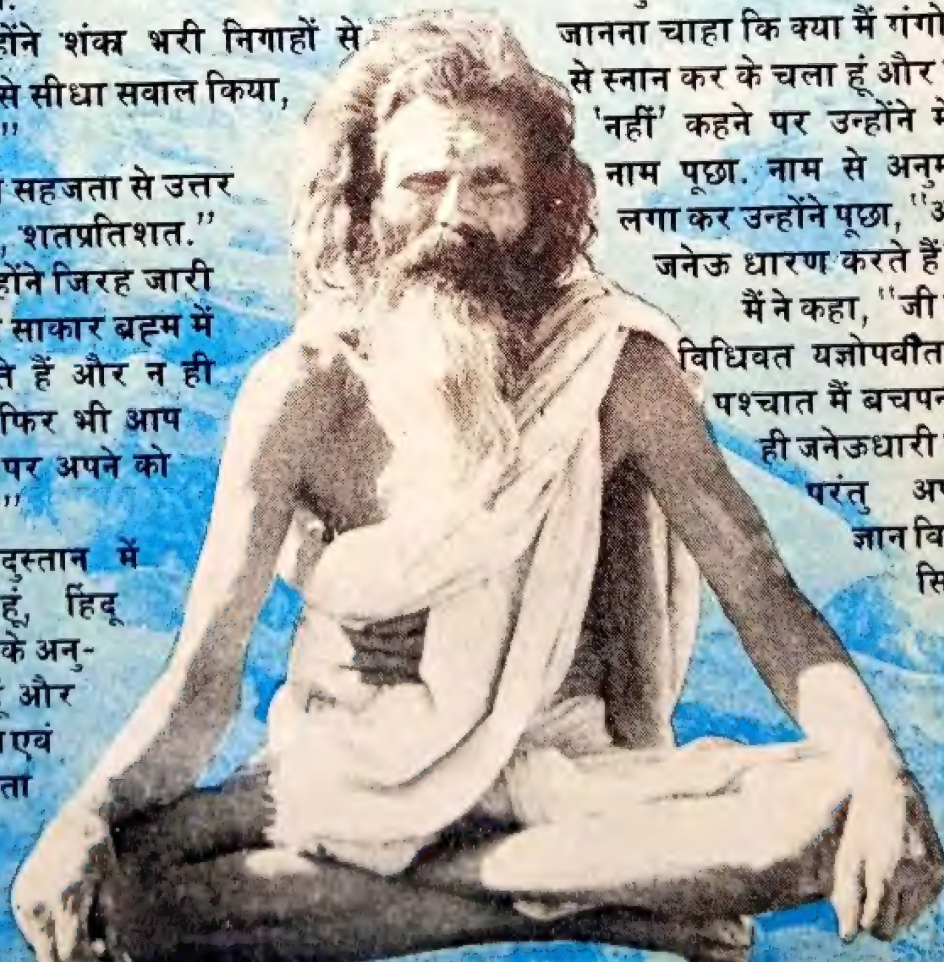
साकार या निराकार ब्रह्म को मानना, पूजापाठ करना अथवा जनेऊ धारण करना हिंदू दर्शन या हिंदू होना नहीं है. इस का एक दूसरा पहलू भी है जिसे जाने व समझे बिना स्वयं को हिंदू कहना केवल धर्मांधता के अलावा और कुछ नहीं. आइए जानें, हिंदू दर्शन की उस भागीरथी को, जिस को धर्मांध लोगों ने उपेक्षित किया है लेकिन वही सत्य है.

होने के बाद जब मैं ने तर्क की कसौटी पर पाया कि उन धागों के बंधन की मेरे लिए कोई उपयोगिता नहीं है तो मैं ने उस से मुक्ति पा ली."

फिर हम लोग आगे बढ़ चले. अब रास्ता बहुत कठिन था. भूस्खलन की वजह से कहींकहीं पगडंडी बहुत संकरी हो गई थी तो कहींकहीं ऐसा प्रतीत होता था कि ऊपर जो चट्टानें अटकी पड़ी हैं वे अभीअभी सिर पर गिर पड़ेंगी. पगडंडी के नीचे भागीरथी के कलकल निनाद के अलावा और कोई स्वर नहीं सुनाई दे रहा था. बर्फ की सफेद चादर ओढ़े पहाड़ की चोटियों का मनमोहक दृश्य भी अंदर के भय को दूर नहीं कर पा रहा था.

उधर साधु महाराज जोरजोर से भगवान का नाम ले कर शायद भयमुक्त होने का प्रयास कर रहे थे. उन की आवाज की कंपन से किसी चट्टान के खिसक पड़ने की आशंका से मैं भयभीत हो रहा था. मैं ने अपनी आशंका जब जाहिर की तो वह सहम से गए और फिर चुपचाप चलने लगे.

मैं भय और भगवान के संबंध पर विचार करने लगा. प्रकृति के अनबुझे रहस्यों से भयभीत आदिमानव ने उन रहस्यों की प्रार्थना प्रारंभ की होगी, 'हे पवन, मुझ पर कृपा करना, हे वर्षा, हे अग्नि, हे पर्वत, अपने प्रकोप से मेरी रक्षा करना.'

फिर मूर्तिकला के विकास के पश्चात इन प्राकृतिक वस्तुओं के प्रतीक विभिन्न मूर्तियों में घड़ कर उन की पूजा, प्रार्थना प्रारंभ की गई होगी. आज भी तो हम दुख में ज्यादा सुमिरन करते हैं. भयभीत हो कर उसे जोरजोर से पुकारते हैं. हारे को हरिनाम का सहारा रहता है और जानेअनजाने अपने द्वारा किए गए दुष्कर्मों के प्रतिफल की आशंका से भयभीत हो कर चीत्कारते हैं, 'हे प्रभु, मेरे पापों को क्षमा करना.'

लगभग एक घंटे की उस त्रासदायिनी पगडंडी की यात्रा से मुक्त हो कर हम लोग खुले रास्ते पर आए. ठंड तो हड्डी तक को कंपा देने वाली थी, पर परिश्रम और भय ने पसीने से तर कर दिया था. साधु की वाणी में अब दम आया और मुसकराहट के साथ बोले, "अरे, आप तो भयभीत हो गए थे. इस शिव के क्षेत्र में मृत्यु भी भाग्यशालियों को ही मिलती है, स्वर्गारोहण के पथ पर मर कर मनुष्य स्वर्ग को ही प्राप्त होता है."

मैं ने भी मुसकराहट के साथ उत्तर दिया, "भय की ग्रंथि से ग्रस्त मनुष्य ने स्वर्ग और मोक्ष जैसी कल्पना तो अच्छी की फिर भी वह भय से मुक्त नहीं हो पाया."

शायद मेरा उत्तर उन्हें अच्छा नहीं लगा. आगे बढ़ने की मुझे सलाह दे कर वह वहीं एक शिला पर विश्राम करने लगे.

लगभग एक घंटे के उतारचढ़ाव के बाद मैं भोजवासा पहुंचा. वहां लाल बाबा के आश्रम में आग पर चढ़े हुए चाय के हंडे का आमंत्रण पा कर वहीं निढाल हो कर बैठ गया. किसी ने मुझे एक गिलास चाय दी. उस लगभग खौलती हुई चाय में भी कोई खास गरमाहट नहीं थी. फिर भी बहुत राहत मिली, कारण रास्ते में प्यास लगने के बावजूद पानी पीने में असमर्थ था. यों तो हर थोड़ी दूरी पर झरने मिल जाते थे पर बर्फ सा ठंडा पानी कंठ के नीचे उतर नहीं पाता था. मेरे अनुरोध पर उन्होंने एक गिलास चाय मुझे और दी.

एक चेले ने मुझे बाबा से मिलने को
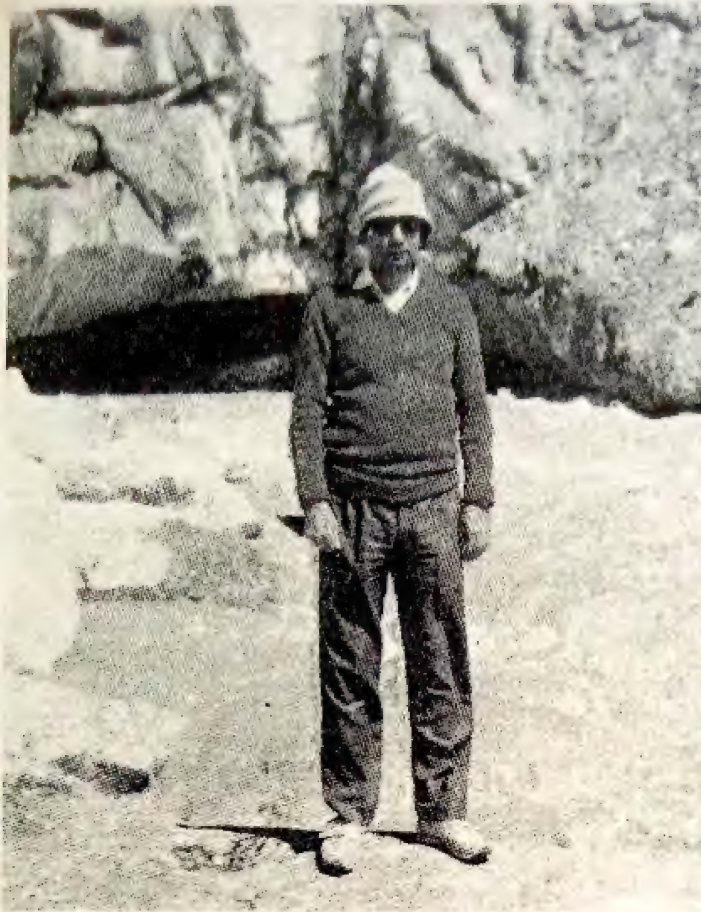
मधुकर एस. भट्ट : गंगा नदी के उद्गम स्थान गोमुख का किसी धर्म से कोई संबंध नहीं.

कहा. लाल बाबा छप्पर के नीचे अपने आसन पर बैठे थे. नमस्कार के बाद मैं उन के सामने की चौकी पर बैठ गया.

बाबा ने मेरा नाम एवं घर का पता पूछा. रांची का नाम सुनते ही उन्होंने वहां के कई महल्लों एवं निवासियों का नाम बताना शुरू किया. मेरी जिज्ञासा पर उन्होंने कहा कि सर्दी के दिनों में वह देश भ्रमण के लिए निकलते हैं और रांची के वे सभी लोग उन के जजमान हैं.

मैंने बाबा से इस दुर्गम स्थान पर आश्रम बनाने का कारण जानना चाहा तो वह बोले, "बस आप लोगों की सेवा के लिए." वैसे वहां ठहरने के लिए अंदर हाल में कंबल, बिस्तर सभी की व्यवस्था थी.

मैं थोड़ी दूर स्थित पर्यटक निवास चला आया. भोजवासा शायद कभी भोजवृक्षों का जंगल रहा होगा परंतु अभी नमूने के लिए दोचार वृक्ष दिखाई दे रहे थे. शायद यादगार रखने के उद्देश्य से उन बचेखुचे वृक्षों की डालियां यात्री बड़ी निर्ममता से तोड़ रहे थे.

पर्यटक निवास में ठहरने एवं भोजन की बहुत अच्छी व्यवस्था थी. कमरे भी कई थे. गढ़वाल पर्यटन विकास निगम ने इस पूरे क्षेत्र में यात्रियों के लिए हर तरह की बहुत ही अच्छी व्यवस्था कर रखी है. निगम के कर्मचारियों का व्यवहार मुझे बहुत अच्छा लगा जो यात्रियों की हर सुविधा के प्रयत्न में लगे रहते थे. यों भी पूरे गढ़वाली लोग मुझे बहुत सरल एवं सच्चे लगे.

पर्यटक निवास से भोजन के पश्चात लगभग 2 बजे मैं वहां से एक सहयात्री के साथ गोमुख के लिए रवाना हुआ. थोड़ी दूर तो पगडंडी बनी थी और फिर थी बंजर भूमि, गाछवृक्ष नाम के लिए भी नहीं थे. पत्थरों पर पथ प्रदर्शक निशानों के सहारे आखिर हम लोग गंगा के उद्गम यानी गोमुख तक पहुंच ही गए.

भोजवासा से गोमुख की दूरी उस समय लगभग 2 किलोमीटर थी. वैसे यह दूरी बर्फ एवं मौसम के अनुसार थोड़ी बहुत घटतीबढ़ती रहती है, ऐसा लोगों ने बताया.

गोमुख एक 20-25 फुट चौड़ी बर्फ की गुफा है जिस के मुख से पूरी वेग से बर्फीला ठंडा पानी बाहर आ रहा है. गुफा के ऊपर वाले पर्वत हिमाच्छादित हैं. हमारे देखतेदेखते दो छोटेछोटे हिमखंड ऊपर से टूट कर उस प्रवाह में गिर गए.

अभी मैं वहां के दृश्यों के चित्र ले ही रहा था कि उस साधु की आवाज आई, "क्यों आप भी यहां पहुंच गए?" अपने गीले कपड़ों को सुखाते वह महाशय एक शिला पर बैठे धूप सेंक रहे थे. मैं ने मुसकराकर उन का अभिवादन किया.

उन्होंने तुरंत अपना दूसरा सवाल

दागा, "परंतु इतना कष्ट उठा कर यहां आने की आवश्यकता ही क्या थी जब आप धर्म में विश्वास नहीं रखते?"

मैं ने संयत होते हुए कहा, "पहली बात तो यह कि गंगा के उद्गम स्थान का किसी भी धर्म से कोई संबंध नहीं. हजारों वर्षों से जो करोड़ोंकरोड़ मानवों के विकास की पोषक रही है उस माता सदृश गंगा के उद्गम को देखने की उत्सुकता मुझ में बचपन से ही रही है. आज मेरी वह इच्छा पूर्ण हुई. दूसरी बात यह कि मैं अपने धर्म का पूरी तरह पालन करता हूं."

साधु महाराज खुश होते हुए बोले, "वाहवाह, मैं पहले ही समझ रहा था कि आप धार्मिक व्यक्ति हैं. लेकिन पता नहीं क्यों हिंदू बुद्धिजीवी इतने कायर होते हैं कि वे अपने को धार्मिक कहने में सकुचाते हैं."

"जी नहीं, आप ने गलत अनुमान लगाया है. मुझे अपने हिंदू होने का गर्व है जिस ने मुझे विचारों की इतनी स्वतंत्रता दी है कि मैं अपने धर्म का मार्ग स्वयं निर्धारित करने में समर्थ हो सका. किसी धर्मग्रंथ में लिखी बातों को ज्ञान की अंतिम सीमा मानने के लिए मुझे विवश नहीं किया गया और न ही किसी धर्मपुरुष की बातों को ईश्वरीय आदेश."

धर्म की परिभाषा

"यहां मूर्ति उपासक भी हिंदू हैं तो मूर्ति की प्रतिष्ठा को नकारने वाले भी उतने ही हिंदू. साकार उपासकों में भी कोई कृष्ण भक्त हैं, कोई राम भक्त, कोई एक के उपासक तो कोई अनेक के, परंतु हैं सभी हिंदू ही. यह हिंदू चिंतन ही है जिस ने हर प्राणी में भगवान का रूप देखा. यहां वृक्षों की भी पूजा की जाती है तो नाग को भी दूध पिलाया जाता है. हिंदू चिंतन की इन्हीं विशेषताओं ने इस भूखंड पर एक से बढ़कर एक विचारक, दार्शनिक एवं वैज्ञानिक उत्पन्न किए. सिंधुघाटी से विकसित होने वाली यह सभ्यता बिनाकिसी जोरजबरदस्ती के स्वतः ही इतने बड़े क्षेत्र पर छा गई. बौद्ध चिंतन को हिंदू विचारधारा की देन मानते हुए हम देखें तो लगभग पूरा एशिया ही इस चिंतन से सराबोर रहा.

"वास्तव में हिंदू जीवन पद्धति वह परिवेश है जो बुद्धि के विकास में उर्वरक का काम करता है. यहां ज्ञान की सारी दिशाएं खुली रहती हैं—कहीं कोई सीमा नहीं, कहीं कोई बंधन नहीं, हर व्यक्ति अपने तरीके से सोचने और समझने के लिए स्वतंत्र है."

साधु महाराज मेरी बातों को बड़े ध्यान से सुन रहे थे. उन्होंने सवाल किया, "आप ने कहा कि आप अपने धर्म का पालन करते हैं तो आप का धर्म क्या है?"

मैं ने कहा, "धर्म किसी भी व्यक्ति या वस्तु के वे गुण हैं जिन्हें धारण कर उस व्यक्ति या वस्तु की पहचान बनती है, जैसे आग के एक अंगारे का धर्म है ताप धारण करना. यदि उस अंगारे में ताप न हो तो क्या आप उसे आग कहेंगे? इसी तरह मेरा धर्म वही है जो एक मनुष्य होने के नाते मुझे धारण करना चाहिए. मुझे गर्व है कि मेरे हिंदू परिवेश ने मुझे अपना धर्म निर्धारण करने का मार्ग दर्शन दिया. मेरे इस धर्म का सार यही है कि मुझे जीने का हक उतना ही है जितना हर दूसरे व्यक्ति को. मैं चाहता हूं कि मैं भी जीऊं और वह भी जीए. किसी दूसरे के सुख को छीन कर मैं अपने को सुखी करना नहीं चाहता. दूसरों से अपने प्रति जैसे व्यवहार की मैं अपेक्षा रखता हूं वैसा ही व्यवहार दूसरे के साथ मैं स्वयं करने का प्रयास करता हूं. न कहीं पाप है और न कहीं पुण्य, न कहीं स्वर्ग है न कहीं नरक. अपने कर्मानुसार सब कुछ मनुष्य स्वयं यहीं भोग लेता है."

साधु महाराज की गेरुआ धोती सूख चुकी थी. उसे लपेटते हुए वह बोले, "धन्य हो, अब तक मैं धर्मांध था, परंतु आज मेरी आंखें खुल गईं" और यह कहते हुए वह अश्रुपूरित नेत्रों के साथ मुझ से लिपट गए.

साधु के मुख से अनायास निकला, "हिंदू दर्शन इस भागीरथी के समान सदा प्रवाहित होता रहे." ●

संयुक्त परिवार नए आयाम

लेख ● प्रभा शर्मा

विज्ञान की प्रगति ने मनुष्य को भौतिक सुखसाधनों से संपन्न तो किया है परंतु साधन प्राप्ति की होड़ ने परिवार की सीमाओं को समेट दिया है. समय के साथसाथ संयुक्त परिवार छोटीछोटी इकाइयों में बिखरते गए जिस से समाज में अनेक विषमताओं व जटिलताओं ने जन्म ले लिया और लोग संयुक्त परिवार के लाभों से वंचित हो गए. इस अलगाववादी एकाकीपन ने अनेक समस्यात्मक परिस्थितियों को जन्म दिया है. अब व्यक्ति समाज का अंग न बन कर उस से कटता जा रहा है.

आज अनेक क्षेत्रों में महिलाएं समान भागीदारी निभा रही हैं. ऐसे में अलग घर बसाने में अनेक प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. घरगृहस्थी का प्रबंध, बच्चों की देखभाल, समय का अभाव सब मिल कर गंभीर समस्याएं उत्पन्न कर देते हैं. साधन प्राप्ति की इस दौड़ का दुष्परिणाम यह होता है कि मातापिता बालकों की ओर ध्यान नहीं दे पाते तथा घर में कोई दिशानिर्देश देने वाला या अंकुश रखने वाला बुजुर्ग न होने से बच्चे व्यसनों के शिकार होने लगते हैं, जिस के दुष्परिणाम

एक समय था जब लोग भौतिक सुखों की चाह में छोटे एकाकी परिवारों की ओर आकर्षित हुए थे लेकिन इस के कई भयंकर परिणाम सामने आए. यही वजह है कि लोग पुनः संयुक्त परिवारों की ओर खिंच रहे हैं. लेकिन इन संयुक्त परिवारों की सफलता तभी संभव है जब इस के नए आयामों को अपनाया जाए.

सारे परिवार को भोगने पड़ते हैं. इसी कारण आजकल लोग फिर संयुक्त परिवार की ओर आकृष्ट हो रहे हैं. चूंकि आज परिस्थितियां बदल गई हैं इसलिए पुराने पैमानों पर जीवन व्यतीत करना व्यावहारिक नहीं है. क्या यह संभव नहीं कि संयुक्त परिवार के मुरझाए वृक्ष को आधुनिकता का जल व खाद दे कर फिर से हराभरा कर उस का रसास्वादन कर सकें?

इस दिशा में हमें नए सिरे से विचार करना होगा तथा संयुक्त परिवार तोड़ने वाले कारणों पर विचार करते हुए उसे आधुनिक परिप्रेक्ष्य में व्यावहारिक बनाना होगा ताकि उस से किसी व्यक्ति विशेष की भावनाओं को ठेस न लगे और उस की स्वतंत्रता में किसी प्रकार की बाधा न पड़े और साथ ही संयुक्त परिवार से संपूर्ण लाभ भी उठाया जा सके.

परिवार के बिखराव की जड़ अधिकतर आर्थिक कारणों के धरातल पर ही फलतीफूलती है. आर्थिक भिन्नता भाईबहनों के मधुर संबंधों में भी कटुता घोल देती है. संयुक्त परिवारों में जहां एक ओर घर खर्च या सुख सुविधाओं को ले कर भेदभाव या वैमनस्य उत्पन्न होता है वहीं साधनों की प्राप्ति, कमाई व खर्च इत्यादि के अनुपात से जो अंतर आता है वह परिस्थिति को जटिल बना देता है. किसी भी परिवार की जड़ों को यदि प्रेम, भाईचारे व एकता के रस से सींचना है तो ऐसे अनेक मुद्दों पर विचार करना होगा.

उत्तरा घर में नईनई आई थी. उस के ससुर सरकारी सेवा से निवृत्त हो चुके थे और 4-5 सौ की पेंशन पाते थे. जेठ सरकारी कर्मचारी थे व जेठानी दो बालकों की मां थी और घर में ही रहती थी. उत्तरा बैंक में कार्यरत थी और घरगृहस्थी का काम भी करती थी. थोड़े महीनों तक तो यों ही चलता रहा, फिर उत्तरा को लगने लगा कि वह तथा उस के पति दोनों कमाते हैं और घर का काम भी करते हैं. दूसरी ओर उस के जेठ अकेले ही कमाने वाले हैं जबकि उन के दोनों बच्चों की पढ़ाई पर भी काफी खर्च हो रहा है. ऐसे में वह और उस के पति सारा वेतन ससुरजी के हाथ में दे कर मूर्ख बन रहे हैं.

धीरेधीरे यह विचार उत्तरा के मन में गहरा होता गया. उसे लगने लगा कि यदि वह और उस के पति अलग रहें तो कुछ बचा भी लेंगे और अपने घर के लिए भी हर महीने कुछ न कुछ खरीद सकेंगे. उस ने दबी जबान में यह बात पति से कही. पति को भी उस की बात ठीक लगी. बस दोनों ने अलग घर बसा लिया. उत्तरा के ससुर को मन ही मन बहुत बुरा लगा, पर वह समझ नहीं पाए कि उन के अलग होने का कारण क्या था.

आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में अनेक सुखसाधनों को जुटाने की कामना करता है. इस तथ्य के साथ यह भी सच है कि उप परिवारों के सदस्य, उन के खर्च तथा धनार्जन के साधन समान होना भी कठिन है. यहीं से संबंधों में दरार पड़ने लगती है और संयुक्त परिवार इकाइयों में बंट जाते हैं, जिस से न केवल उन्नति का मार्ग अवरुद्ध होता है अपितु पारिवारिक माहौल भी तनावपूर्ण हो जाता है. इस का सब से बड़ा दुष्परिणाम बच्चों की मानसिकता पर पड़ता है. यही कारण है कि करुणा, परोपकार इत्यादि गुणों का समाज में अभाव दिखाई पड़ता है.

मानसिक तौर पर स्वस्थ मातापिता ही बच्चों का सही पालनपोषण कर सकते हैं. मानसिक स्वास्थ्य के लिए यह अत्यावश्यक है कि समय के साथसाथ प्रत्येक व्यक्ति

यदि बच्चों के साथ घर में बुजुर्ग रहें तो वे बच्चों की गतिविधियों पर नजर रख सकते हैं और उन्हें भटकने से बचा सकते हैं.

संयुक्त परिवार के लाभों से लाभान्वित होने के लिए हमें चाहिए कि हम उन मूल्यों पर गहराई से विचार करें जिन के कारण पृथक परिवार की लघु इकाई की प्रथा विकसित हुई है. आज हर व्यक्ति अपनी सुविधा के लिए बिना प्रयास ही अनेक साधन जुटाना चाहता है. वह संयुक्त परिवार की संयुक्त संपत्ति का भागीदार बनना चाहता है परंतु उस के प्रति अपने दायित्वों से उदासीन रह कर अपने भविष्य के लिए अलग योजनाएं बनाता है. लेकिन संयुक्त परिवार की प्राचीन पद्धति के अनुसार सब उप परिवारों के मुखिया जब सारी कमाई अपने संयुक्त परिवार के मुखिया को सौंप देंगे तो उन्हें अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को पूरा करने के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ेगा.

शीला रानी की तीनों बहुएं कामकाजी थीं. बच्चों की देखभाल के लिए नौकरानी थी. सभी बहूबेटों को पहली तारीख को अपना संपूर्ण वेतन शीलारानी को देना पड़ता था. शीलारानी के पति भी अभी सेवानिवृत्त नहीं हुए थे. उन का बड़ा घर था. महानगर में किराए की बढ़ती दरों से डर कर सभी बहुएं सास के घर में ही रह रही थीं. पर सारा वेतन यों दे कर पाईपाई को मुहताज होना किसी को भी पसंद न था.

परिणाम यह हुआ कि दफ्तर से लौटने के बाद जिस को जो काम बताया जाता उसे करने के बाद सब अपनेअपने कमरे में चले

अपने विचारों में परिवर्तन लाए.

कुछ दशक पूर्व संयुक्त परिवार की जो परिभाषा थी वह आज की परिस्थितियों में सटीक प्रतीत नहीं होती. आज से दोतीन दशक पूर्व स्त्रियां स्वयं जीविकोपार्जन नहीं करती थीं, केवल जीविकोपार्जन में सहायक होती थीं. आयव्यय का संपूर्ण हिसाब घर के मुखिया के पास रहता था.

परंतु आज परिस्थितियों में बदलाव आ गया है. यदि हम आज भी पुरातन संयुक्त परिवार की प्रणाली पर लकीर के फकीर बने रहेंगे तो उस से अनेक जटिलताएं उत्पन्न होंगी. इन्हीं के परिणामस्वरूप आज समाज में यह बिखराव आ गया है और व्यक्ति का प्रत्येक सोच उस तक ही सिमट कर रह गया है. इस से होने वाले परिणाम से प्रत्येक व्यक्ति अवगत है. यदि उत्तरा के ससुर यह समझते तो वह उत्तरा व उस के पति दोनों का वेतन न लेते रहते. अनुपात में ही उन से धन लेते जिस से वे अपनी आय का अधिक भाग अपनी इच्छा से व्यय कर पाते व परिवार भी न बिखरता.

जाते. कोई किसी से बात कर के खुश न था. अच्छाखासा भरापूरा परिवार होने पर भी खुशहाली न थी.

बच्चे भी दादीदादा के पास न फटकते थे. जब पैसे की बात होती तो बच्चे भी ये बातें सुनते. धीरेधीरे उन के मन में कुछ विचार घर कर गए. उस का दुष्परिणाम यह हुआ कि वे अकसर बाहर रहने लगे. किसी का सम्मान नहीं करते थे और जो जी में आता बोल देते थे.

व्यय का समान बंटवारा जरूरी

व्यक्तिगत इच्छाओं का सम्मान करना अत्यंत आवश्यक है. इस से परिवार के सदस्यों के पारस्परिक संबंधों में मधुरता आएगी. आचारविचार में भिन्नता के कारण कोई घूमने, फिरने, पहनने पर व्यय करना चाहेगा, कोई नहीं. कोई अपने बच्चे को अच्छे विद्यालय में पढ़ाना चाहेगा तो कोई उन की अन्य गतिविधियों पर अधिक व्यय करना चाहेगा. अतएव सारी कमाई को एकत्रित करने पर उपर्युक्त व्यय के बंटवारे से विवाद उत्पन्न हो सकता है, इसलिए लघु परिवारों के मुखियाओं को अपने परिवार के सदस्यों के अनुपात में घर खर्च का हिस्सा देना चाहिए तथा अपनी शेष आय को अपनी इच्छा व योजना के अनुसार खर्च या इकट्ठा करना चाहिए.

जब कई उप परिवार संयुक्त परिवार के मुखिया के साथ एक ही मकान में रहते हैं तो खर्च में समान भागीदारी होने पर मतभेद नहीं होगा. यहां यह भी आवश्यक है कि घर के बूढ़े व बुजुर्ग व आश्रित लोगों के खर्च व देखभाल की जिम्मेदारी भी सभी मिलबांट कर उठाएं. इस से बालकों में बड़ों के प्रति श्रद्धा का भाव प्रस्फुटित होता है.

ऐसे बड़े परिवार में हर व्यक्ति के खानेपीने व रहने संबंधी आवश्यकताओं पर भी विचार करना होगा. उदाहरण के तौर पर, यदि चार भाई अपने परिवारों व मातापिता के साथ एक ही मकान में रहते हैं तथा उन की रसोई एक है तो उन्हें न केवल खर्च अपितु काम का भी समान विभाजन करना होगा. हर व्यक्ति की इच्छा, सामर्थ्य व जरूरत को ध्यान में रखना होगा.

अतिथि कक्ष, फ्रिज, कार इत्यादि उपकरणों का भी मिलबांट कर उपभोग कर सकते हैं. प्रत्येक भाई अपने परिवार के लिए इन सब उपकरणों पर होने वाले धन का कहीं अन्य सदुपयोग कर सकता है. मिलबांट कर चीजों का इस्तेमाल करने से जहां आर्थिक लाभ हैं वहीं भावनात्मक फायदे भी हैं. जैसे, सब सदस्य एकदूसरे से जुड़े रहते हैं और बालकों में भी मिलजुल कर रहने की भावना आती है, जिस से परिवार ही नहीं सारे समाज को लाभ होता है.

यहां इस बात का ध्यान रखना होगा कि जहां उपभोग के लिए सब की साझेदारी है वहीं इन सब उपकरणों के रखरखाव के प्रति भी किसी सदस्य को उपेक्षा नहीं बरतनी चाहिए, अन्यथा संयुक्त परिवार का मकसद ही समाप्त हो जाएगा. बालकों में भी स्वार्थ की प्रवृत्ति पनपने लगेगी.

हमारे पड़ोसी दीनदयाल एक भरेपूरे परिवार के मुखिया हैं. चार विवाहित बेटे हैं तथा तीनों बेटियों की शादी हो चुकी है. चारों बहुएं कामकाजी हैं. दीनदयाल की पत्नी दयावंती को यह पसंद नहीं कि उन के जीतेजी बहुएं अलगअलग चूल्हे जलाएं. उन्होंने घर को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए अच्छा उपाय सोचा. चारों बहुएं व बेटों को पहले ही समझा दिया कि यदि उन्हें कोई भी दिक्कत या शिकायत हो तो सब के सामने चिल्लाने की बजाय उन्हें अकेले में बता दें.

किसी को भी यह अधिकार नहीं कि वह किसी का अपमान करे. शाम का खाना सब एक साथ खाएंगे. बच्चों की जिम्मेदारी उन के मातापिता पर है तथापि उन को पढ़ाने के लिए घर पर एक मास्टर व काम के लिए एक आया का इंतजाम सब मिल कर करें, जिस का खर्च सब बराबर बांट लें. सब प्रति सदस्य 400 रुपया माताजी को दे दें. घर का प्रत्येक कार्य अपनीअपनी पसंद के अनुसार

बंटा हुआ है. राशन लाना, कपड़े धोबी को देना, घर का सामान लाना, बिजली का बिल जमा कराना सब में सब की साझेदारी है. घर के हर सदस्य को पता है कि इस माह उसे कौनकौन से काम करने हैं.

बहूबेटे भी खुश हैं. वे अपने वेतन को अपनी इच्छानुसार बचाते या खर्चते हैं. बच्चे भी दादादादी के साथ खुश हैं. सब के मेहमानों का उसी जोश से स्वागत होता है. यदाकदा सब एकदूसरे को उपहार दे कर भी सौहार्द का वातावरण बनाए रखते हैं. बच्चों का भी स्वस्थ मानसिक विकास हो रहा है.

जिन परिवारों में लोगों के खानेपीने, रहनसहन व कामकाज में अधिक अंतर होता है वहां हर उप परिवार अपने कमरे के ही साथ एक छोटी रसोई बना सकता है. जिस परिवार में कामकाजी महिलाएं हों वहां ऐसी ही व्यवस्था की खासतौर पर आवश्यकता है क्योंकि ऐसे मामलों में सब के खानेपीने का समय अलगअलग होगा.

रसोई की व्यवस्था

मध्यम वर्गीय परिवारों में अधिकतर झगड़े रसोई व उस से जुड़े कामों के कारण ही होते हैं. अतएव जब सब की अलग रसोई होगी तो विवाद की संभावना कम रह जाएगी. ऐसे में प्रत्येक गृहिणी अपनी पसंद व फुरसत के अनुसार खाना पका सकती है. और यदि अधिक कठिनाई न हो तो केवल छुट्टी वाले दिन या तीजत्योहार पर सब एक साथ खाना पका कर खा सकते हैं. यह बदलाव न केवल आनंददायक होगा वरन सब एक ही समय में व्यक्तिगत व पारिवारिक सुख एक साथ भोग पाएंगे.

घर की मुख्य रसोई परिवार के मुखिया के पास ही होनी चाहिए तथा खर्चे का हिसाबकिताब भी उन्हीं को रखना चाहिए. सभी उप परिवारों को खर्च का भाग समय पर उन्हें दे देना चाहिए. इस से कामकाजी महिलाओं की जिम्मेदारी कुछ हद तक कम हो जाएगी. घर की बुजुर्ग महिला के स्वाभिमान की रक्षा होगी तथा बच्चों के मन में भी बड़ों के प्रति श्रद्धा व विश्वास का बीज बोया जा सकेगा. जैसे दीनदयाल व दयावंती के परिवार में बहुओं को घर आते वक्त यह चिंता नहीं होती कि घर में सब्जी ले जानी है, जाने आया आई होगी या नहीं, उस ने बच्चों को खाना भी खिलाया होगा या नहीं अथवा यदि बच्चा बीमार है तो पतिपत्नी में से कौन छुट्टी लेगा आदि.

इस व्यवस्था का अन्य लाभ यह है कि शिक्षित गृहिणियां सप्ताह के बचे दिनों में अपनी इच्छा के अनुसार भोजन बना सकती हैं. उचित लगे तो अन्य सदस्यों को भी खिला सकती हैं. शेष दिनों में बुजुर्ग लोग भी अपने स्वास्थ्य व इच्छा के अनुसार खाना बना सकते हैं. उन के खानेपीने के प्रबंध के लिए सहायक भी रखा जा सकता है तथा सब बारीबारी से उन के लिए काम कर सकते हैं. इस से मेलजोल व प्रेमभाव भी बना रहेगा.

इस प्रकार के संयुक्त परिवारों में प्रत्येक उप परिवार अपनी अलग बचत कर के भविष्य की योजना पूरी कर सकेगा और वर्तमान में भी अपनी आय के अनुसार खापी व पहन सकेगा. इस प्रकार जब सब उप परिवार साथ रहते हुए भी किसी पर निर्भर नहीं रहेंगे और अपनी आमदनी के अनुसार खर्च व बचत करेंगे तो मनमुटाव की नौबत भी कम ही आएगी.

सभी उप परिवार जब घर के मुखिया को समान खर्च देंगे तथा कभीकभी साथ खानापीना व मनोरंजन इत्यादि भी होगा तो बुजुर्ग भी परिवार से जुड़े रहेंगे. वे न केवल शरीर से अपितु मन से भी प्रसन्न व व्यस्त रह सकेंगे. इस प्रकार नातीपोतों के बीच उन का समय कट जाएगा तथा बालकों को भी अकेलेपन व घुटन से छुटकारा मिलेगा. बच्चों की हरकतों पर बुजुर्गों का ध्यान रहेगा तथा बच्चों का सही तौर पर पालन पोषण हो पाएगा व उन के मातापिता भी प्रसन्न रहेंगे. इस से बच्चों में अच्छे संस्कार पड़ेंगे, जिस से न केवल आप के परिवार को अपितु संपूर्ण समाज को लाभ होगा. ●

तन
चंदन
हो
जाए
मई 1992

कहानी • साधना श्रीवास्तव

कमल का आई.ए.एस. में चयन होने से वंदना को लगा कि उस की मुंह-मांगी मुराद पूरी हो गई है. इतनी खुश तो वह वसु का चुनाव होने पर भी न होती.

अपने शयन कक्ष में चांदी के फ्रेम में जड़े लक्ष्मी के चित्र के सामने जा कर वह खड़ी हो गई. चित्र को एकटक निहारती उस की आंखों से आंसुओं की धार बह चली.

आज लक्ष्मी नहीं है, लेकिन उस का बेटा बुलंदियों को चूमता उच्च पद पर पहुंच गया है... उस ने चित्र को संबोधित करते हुए कहा, "मैं ने तुम्हारे साथ जो दुर्व्यवहार किया था उस के लिए तुम ने मुझे क्षमा मांगने तक का मौका नहीं दिया. उस का मैं ने प्रायश्चित करने के लिए कमल को वसु से भी योग्य बनाने की प्रतिज्ञा की थी.

"आज मेरा प्रायश्चित पूर्ण हो गया लक्ष्मी. तुम्हारा बेटा सरकारी नौकरी के सब से उच्च पद का हकदार हो गया है... वैसे तो मैं तुम्हारे ऋण से कभी किसी जन्म

गए. वहां से वापस आने पर वंदना को साथ ले कर सुयश लखनऊ अपनी नौकरी पर चला गया.

वैवाहिक जीवन का प्रथम व खुशनुमा पहर एकदूसरे में खोए, सिमटे, घूमतेघामते बड़े आनंद के साथ व्यतीत होता रहा. धीरेधीरे चार वर्ष सरक गए. अभी उस की गोद सूनी थी. अतः अब वंदना कुछ चिंतित सी रहने लगी थी. घूमनेघामने से भी अब मन भर चुका था.

अब उसे अपने घरआंगन में एक नन्हेंमुन्ने की कमी बहुत खलने लगी थी. उस के साथ अथवा उस से कुछ आगेपीछे उस की जितनी भी सहेलियों का ब्याह हुआ था, उन में लगभग सभी मां बन चुकी थीं. यहां तक कि पिछले वर्ष की ब्याही ममता के भी पांव भारी हो चुके थे.

सुयश उस की पीड़ा को अच्छी तरह समझ रहा था. वह स्वयं भी दुखी था. फिर भी वह वंदना को अकसर समझाता रहता. एक बार उसे विशेष उदास देख कर सुयश बोला, "क्या हमारी उम्र इतनी ढल गई है कि बच्चे की उम्मीद छोड़ दें? इस तरह चिंता करने से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ेगा."

लेकिन जब डाक्टरी जांच के बाद वंदना गर्भधारण करने में सर्वथा अक्षम साबित हुई तो पतिपत्नी दोनों को गहरा आघात लगा. फिर भी उन्होंने इस बात को जगजाहिर नहीं होने दिया.

सुयश में कुछ कमी न निकली. अतः वंदना ने उस को दूसरी शादी कर लेने की सलाह दी. लेकिन सुयश ने उस के हाथ को

प्रायश्चित्त

में भी उऋण न हो सकूंगी... पर मेरे दुर्व्यवहार के लिए मुझे क्षमा कर देना..."

लक्ष्मी के चित्र से बातें करती हुई वंदना उस के प्रति अपार श्रद्धा व सहानुभूति से भर गई. अपनी करनी पर विचार करतेकरते वह व्यथा के सागर में ऐसी डूबी कि बीते दिनों की यादों के झुरमुट में उलझती चली गई.

उस की बड़ी दीदी अर्चना के देवर सुयश अकसर अर्चना के साथ आते रहते थे. उन के बारबार आनेजाने तथा एकदूसरे से मिलने का पर्याप्त अवसर मिलने के कारण दोनों के हृदय में एकदूसरे के प्रति प्रणयअंकुर प्रस्फुटित हो गए थे. फिर तो शीघ्र ही अर्चना की मध्यस्थता से विवाहसूत्र में भी बंध गए.

विवाह के तुरंत बाद नवदंपती सुहागरात मनाने के लिए पहाड़ों पर चले

अपने हाथों में ले कर अपनत्वपूर्ण शब्दों में शिकायत की, "बच्चे नहीं होंगे तो इतनी चिंता क्यों, वंदना? हम ने एकदूसरे को सच्चे दिल से प्यार किया है. सच्ची चाह की समर्पण भावना के साथ जी कर समय काट देंगे."

उस की बातों से वंदना को कुछ राहत सी मिली. फिर भी वह सुयश के वक्ष पर सर टिका कर फफक कर रो पड़ी... "तुम ने तो अभयदान दे दिया सुयश, लेकिन दुनिया वाले अवश्य उंगली उठाएंगे."

बाजार से खरीदारी के लिए निकली वंदना ने एक खिलौने की दुकान के सामने रुक कर सुयश से पूछा, "कहो तो एक बंदूक ले लूं. वह बगल का बंटी है न... आजकल रोज आता है. कह रहा था, हमारे लिए बंदूक ला देना, आंटी."

"ठीक है, ले लो." सुयश ने सहज भाव से कहा. घर आने पर जब उस ने बंटी को बंदूक पकड़ाया तो वह खुशी से नाच उठा. "आप कितनी अच्छी हैं आंटी?" कह कर वह उछलताकूदता बंदूक ले कर सीधे अपने घर चला गया.

पर थोड़ी ही देर बाद वापस आ कर मुंह लटकाए रुंआसी आवाज में बोला, "आंटी, बंदूक वापस ले लीजिए. मम्मी मना करती हैं. कहती हैं कि आप से मैं कुछ न लिया करूं."

बच्चे की बात में सामाजिक उपेक्षा का भाव स्पष्ट जाहिर था. इस से वंदना व सुयश दोनों को बड़ी गहरी ठेस लगी थी.

एक दिन आफिस में भी उस को परेशान देख कर उस से जूनियर राजेश ने पूछा, "आज आप कुछ परेशान से दिख रहे हैं... क्या बात है?"

"कुछ नहीं... सर में हल्का दर्द है." सुयश ने टालना चाहा.

"आप की परेशानी का कारण मैं अच्छी तरह समझता हूं. बुरा न मानिए तो अनाथ आश्रम से एक बच्चा गोद ले लीजिए."

सुयश को लगा... राजेश उस का मखौल उड़ा रहा है... वह कुछ बोला नहीं. केवल एक हलकी पर अर्थपूर्ण दृष्टि राजेश पर डाल कर अपनी फाइलों में उलझ गया.

संध्या समय चाय पीते हुए सुयश ने राजेश की बात का जिक्र किया तो वंदना ने इस पर बिना कुछ टिप्पणी किए सहज भाव से कहा, "सोच कर बताऊंगी."

थोड़ा सा रुक कर उस ने पुनः कहा, "एक सप्ताह का अवकाश ले लो तो देहरादून घूम आएं. मेरी सहेली चित्रा है न, उस का पत्र आया है... बहुत जोर दे कर बुलाया है."

"ठीक है, बस तुम तैयारी कर लो." सुयश जैसे पहले से ही तैयार था. वंदना का बदला मन उसे बहुत अच्छा लगा.

देहरादून के परिवर्तित वातावरण में वंदना व सुयश को काफी कुछ अच्छा सा लगा. चित्रा, उस के पति राकेश, बेटा संजय व बेटी प्रियंका के बीच हंसते, मुसकराते, घूमते, पिकनिक करते समय जैसे पंख लगा कर उड़ने लगा. वंदना को तो

विवाह के चार वर्ष बाद भी जब बच्चा नहीं हुआ तो सुयश और वंदना को अपने जीवन में एक अजीब सा अभाव खटकने लगा. गरीब लक्ष्मी ने कृत्रिम गर्भाधान से दोनों का अभाव तो दूर कर दिया लेकिन बाद में वंदना की फटकार ने उसे काफी मानसिक दुख पहुंचाया. पर एक असामयिक दुर्घटना ने वंदना की सोच के सभी संकुचित दायरे तोड़ डाले और वह एक कभी न समाप्त होने वाले प्रायश्चित्त करने के लिए विवश हो गई.

अंतिम सांसें ले रही लक्ष्मी ने अपने बेटे कमल का हाथ वंदना के हाथ में दे दिया, जैसे कह रही हो कि अब तुम्हारे एक नहीं, दोदो बेटे हैं

विश्वास ही नहीं हो रहा था कि लखनऊ में पहाड़ जैसे लगने वाले दिन यहां पलक झपकते कैसे सरक जाते हैं?

एक दिन चित्रा ने वंदना को सुझाव दिया, "सुयश भाई के स्वस्थ व सक्षम होने का तू कुछ फायदा क्यों नहीं उठा लेती? किसी स्वस्थ महिला को आमंत्रित कर कृत्रिम गर्भाधान द्वारा अपने लिए गुन्ने का प्रबंध क्यों नहीं करा लेती?"

पहले तो वंदना कुछ समझ न सकी पर जब चित्रा की बात उस के पल्ले पड़ी तो उस ने प्रसन्न हो कर चित्रा को बांहों में भर लिया. "तू कितनी अच्छी है चित्रा. मैं पहले क्यों न तुम्हारे पास आ गई?" राकेश और सुयश ने भी चित्रा के सुझाव का स्वागत किया. शीघ्र इसे क्रियान्वित करने के लिए एक पत्रिका द्वारा गुप्त विज्ञापन दे दिया गया... 'कृत्रिम गर्भाधान द्वारा शिशु उत्पन्न करने के लिए एक स्वस्थ महिला की आवश्यकता है. संपूर्ण खर्च की जिम्मेदारी विज्ञापनदाता की... पारिश्रमिक अलग से.'

इस विज्ञापन को पढ़ कर आने वाली महिलाओं में लक्ष्मी भी थी. उसे सुंदर व पूर्ण रूप से स्वस्थ देख कर रोक लिया गया था.

साक्षात्कार में लक्ष्मी ने बताया, "वह लखनऊ में अपनी मां व पांच वर्ष के बेटे कमल के साथ रहती है. दो वर्ष पूर्व एक सड़क दुर्घटना में उस के पति की आकस्मिक मौत के कारण मां, बेटी अड़ोसपड़ोस में कपड़े सिल कर तथा स्वेटर बुन कर अपना गुजरबसर करती हैं. अपने बच्चे को वह अच्छे अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाना चाहती हैं, लेकिन पैसे की कमी के कारण संभव नहीं हो पा रहा है. यह विज्ञापन पढ़ कर, अपने बच्चे का भविष्य बनाने के उद्देश्य से मुझे यहां तक आने को विवश होना पड़ा है."

इश्तहार के नियम व शर्त्त के अनुसार लक्ष्मी वहां रुक गई. प्रसव देहरादून में ही कराने का निश्चय किया गया. वहां वंदना का भी रुकना आवश्यक था, क्योंकि

राकेश व चित्रा दोनों नौकरी करते थे और लक्ष्मी के साथ भी किसी का रहना जरूरी था. दूसरे वंदना चाहती थी कि यह बच्चा दुनिया की नजरों में उस का अपना जाया बच्चा कहलाए. इस सबब से भी वह दूर और एक अपरिचित स्थान पर रहना चाहती थी. ऐसा कर के ही वह इस को गुप्त रख सकती थी.

कृत्रिम गर्भाधान के लिए डाक्टरों के कथनानुसार आवश्यक कार्यों, जरूरतों एवं अन्य अपेक्षित सुविधाओं की पूर्ण व्यवस्था कर सुयश लखनऊ वापस आ गया... लक्ष्मी द्वारा किए गए इस त्यागपूर्ण कार्य में लक्ष्मी के बाद सुयश का योगदान ही प्रमुख था.

समय के साथ लक्ष्मी ने एक पुत्र को जन्म दिया. वंदना, सुयश, चित्रा एवं राकेश सभी प्रसन्न हुए. प्रसवोपरांत लक्ष्मी एक माह और रुकी रही.. तदुपरांत उसे विदा कर दिया गया. पारिश्रमिक के लिए निश्चित दस हजार रुपये उस ने लेने से इनकार कर दिया.

घर से तो वह इस विचार से नहीं चली थी, पर यहां मां की ममता ने सौदा करना स्वीकार न किया. सुयश को यह उचित नहीं प्रतीत हुआ. उस से यहां तक कहा कि... "अपने सोचने के अनुसार इस रकम से अपने बच्चे को वह अच्छी शिक्षा दे सकने में समर्थ होगी." पर जब लक्ष्मी किसी प्रकार तैयार न हुई तो दोनों विवश हो गए.

वंदना कुछ भयभीत सी थी. पैसा न लेने से लक्ष्मी बाद में बच्चे पर अपना अधिकार जताने आ सकती है. लेकिन लक्ष्मी ने इस दृष्टि से भी उसे अभयदान दे दिया कि वह भयभीत न हों. इस तरह का कोई कदम वह कभी नहीं उठाएगी.

हां, बच्चे को छोड़ कर जाते समय उस का दिल अवश्य भर आया. आगे बढ़ते कदमों में जैसे बच्चे के स्नेहममत्व की बेड़ियां पड़ गई हों. पर आंखों में आंसुओं की गंगाजमुना समेटे अपने दिल को पाषाण बना कर धीरे धीरे आगे बढ़ती लक्ष्मी ने आखिरकार चित्रा के बंगले के गेट को पार कर ही लिया.

देहरादून से वापस आने पर सुयश और वंदना ने बच्चे के होने के उपलक्ष्य में एक भारी दावत का आयोजन किया. वंदना बहुत खुश थी... लक्ष्मी के प्रति अनुग्रहित थी, जिस ने उसे समाज के बीच मां बनने और कहलाने का हक दिया था.

इस अवसर पर उस ने बच्चे का नाम अपने और सुयश के नाम के प्रथम अक्षरों को लेकर 'वसु' रखा. सुयश ने वंदना के समक्ष इस उत्सव में लक्ष्मी को भी निमंत्रित करने का प्रस्ताव रखा था. लेकिन वंदना ने मना कर दिया. उसे भय था बच्चे के भेद को वह सब के समक्ष खोल न दे अथवा अपना अधिकार न जताने लगे.

संध्या समय आफिस से आ कर सुयश पलंग की बगल में पड़ी आराम कुरसी पर पैर फैला कर लेट सा गया. वसु सामने पालने में सो रहा था. रसोईघर से आ रही खटपट से उस ने अनुमान लगा लिया कि वंदना चायनाश्ता बनाने में लगी है. थोड़ी देर बाद चाय की ट्रे मेज पर रखती वंदना ने कहा, "देखो, आज तुम्हारी पसंद की केले की पकौड़ियां बना लाई हूं."

"तुम ने कैसे जाना कि आज सचमुच मेरा मन केले की पकौड़ी ही खाने को कर रहा था." मुसकराकर सुयश ने कहा और दोनों खिलखिला कर हंस पड़े. अचानक वंदना कुछ याद करती हुई बोली, "सुनो, आज दोपहर में लक्ष्मी आई थी."

लक्ष्मी का नाम सुन कर सुयश चौंके, "अच्छा, किसलिए?"

"वसु को देखने." वंदना ने लापरवाही से कहा.

"दिखा दिया?"

"नहीं." तेज और कठोर आवाज में बोली वह.

"एक झलक बच्चे को दिखा देने में क्या हर्ज था? आखिर वह भी तो उस की मां ही है." लक्ष्मी के प्रति सहानुभूति प्रकट की सुयश ने.

"एक बार दिखा देती तो वह बारबार आती. झिड़क दिया तो अब कभी आने की हिम्मत नहीं करेगी."

यह समझते हुए भी कि लक्ष्मी ने उस पर कितना बड़ा एहसान किया है, वंदना को बच्चे पर लक्ष्मी के हक की साझेदारी मंजूर न थी. सुयश उस की ऐसी मनःस्थिति देख कर चुप रह गया.

धीरेधीरे 3-4 माह सरक गए. इस बीच लक्ष्मी 3-4 बार सुयश के बंगले पर आई. बच्चे की एक झलक के लिए वह लालायित थी. संयोग से कालबेल बजाने पर हर बार वंदना ही बाहर निकली. पर बच्चे को दिखाने के नाम पर हर बार कुछ न कुछ बहाना बना दिया. विवश लक्ष्मी ने भी आना बंद कर दिया.

उस के अंतिम बार आने की बात जब वंदना ने सुयश को बताई तो वह लक्ष्मी के प्रति कुछ अधिक द्रवित हो उठा. मां के हृदय की पीड़ा का बोध कर उसे कष्ट हुआ. जबकि वंदना स्वार्थवश लक्ष्मी की पीड़ा से अपने को अनभिज्ञ रख रही थी. एक वर्ष से अधिक हो रहा था. लक्ष्मी वसु की एक झलक के लिए तरस गई. यह सोच कर सुयश ने कुछ मन ही मन निश्चय किया.

दूसरे दिन प्रातः वसु को घुमाने के बहाने वह आटो से सीधा लक्ष्मी के घर राजेंद्र नगर पहुंचा. उसे अपने यहां अप्रत्याशित रूप से आया देख कर लक्ष्मी को आश्चर्य हुआ, "आप..."

"हां. सुना आप कई बार गईं पर... आखिर आप भी मां हैं... अतः बच्चे को दिखा देना मैं ने अपना कर्त्तव्य समझा." कहते हुए सुयश ने बच्चे को लक्ष्मी की गोद में पकड़ा दिया."

लक्ष्मी ने शिशु को वक्ष से चिपटा लिया. आंखों से आंसुओं की धार बह चली. सुयश की तरफ देखती अत्यंत अनुग्रहित हो कर वह बोली, "किन शब्दों में आप को धन्यवाद दूं. इतने दिनों बाद बच्चे को देख कर मन और आंखें तृप्त सी हो गई."

"धन्यवाद की बात नहीं है... आप इस की मां हैं. इतना हक तो आप को है ही."

दसपांच मिनट रुक कर सुयश ने पुनः कहा, "आज्ञा दीजिए तो चलूं. अधिक देर करना ठीक नहीं है."

"चाय तो पी लीजिए." लक्ष्मी ने आग्रह किया.

"नहीं, फिर कभी..." कह कर सुयश ने बच्चे के लिए हाथ बढ़ाया. उस की गोद में वसु को सौंपते हुए लक्ष्मी को बड़ी अजीब सी अनुभूति हुई... बच्चे के पिता सुयश हैं और मां स्वयं वह... पर विधि की विडंबना... दोनों के जीवन और रास्ते बिलकुल अलगअलग हैं.

"अच्छा चलता हूं. कोशिश करूंगा कि आगे भी आप से बच्चे को मिलाता रहूं." कह कर सुयश ने एक दृष्टि लक्ष्मी पर डाली और धीरेधीरे वह आटोस्टैंड की तरफ बढ़ गया.

वंदना से इस बात को उस ने गुप्त रखा.

पर आगे उन्हें वसु को दिखाने के उद्देश्य से लक्ष्मी के घर नहीं जाना पड़ा. अपितु लक्ष्मी की मां से दुखद समाचार पा कर वह और वंदना अस्पताल ही पहुंचे. सब्जी लेने गई लक्ष्मी पीछे से आटो के धक्के से गंभीर रूप से घायल हो गई थी. उसे अन्य लोगों की मदद से हस्पताल पहुंचा कर उस की वृद्धा मां सुयश के पास सहायता के लिए गई थी.

लक्ष्मी आपातकक्ष में बेहोश पड़ी थी. उस के शरीर का अधिकांश भाग पट्टी, खप्पचियों तथा प्लास्टर से ढका था. डाक्टर निरंतर उपचार में लगे थे. काफी देर बाद उसे क्षण दो क्षण को चेतना आई थी. पर उस की गंभीर हालत से डाक्टर ने अंदाजा लगा लिया था कि उस की स्थिति उस दीपक जैसी थी जो बुझने से पहले एक बार जोर से प्रज्ज्वलित हो उठता है.

लक्ष्मी ने धीरेधीरे पलकें ऊपर उठाईं... सामने मां व बेटा कमल खड़े दिखे. ठीक उन की बगल में सुयश और वंदना भी थी. सब को उस ने पहचाना भी. इशारे से उस ने कमल व वंदना को अपने करीब बुलाया. बोल सकने में असमर्थ लक्ष्मी की आंखों से आंसुओं की धार बराबर बहती रही. दोनों के करीब आने पर उस ने धीरे से कमल का हाथ वंदना के हाथों पर रख दिया... जैसे कहना चाह रही थी, 'अब वह एक नहीं दो बच्चों की मां है...' और उस की आंखें सदासर्वदा के लिए मुंद गईं.

बड़े सम्मान के साथ सुयश ने लक्ष्मी का अंतिम संस्कार स्वयं किया. उस के बेटे कमल व वृद्ध मां को अपने घर पर ही ले आया.

वंदना को इस बात का पछतावा रह ही गया कि वह लक्ष्मी से अपने अनुचित व्यवहार के लिए क्षमा न मांग सकी. लेकिन उस ने निश्चय किया कि उस के बेटे कमल को वह मां के अभाव का बोध कभी न होने देगी तथा उसे अच्छी से अच्छी शिक्षा दे कर योग्य बनाने का पूरा प्रयास करेगी, जैसा कि लक्ष्मी चाहती थी और यही लक्ष्मी के प्रति उस की सच्ची श्रद्धांजलि व सच्चा प्रायश्चित होगा. •

हाय रे, हमारा समाज

हमारे देश में लगभग एक करोड़ औरतें वेश्यावृत्ति के सहारे कमाई करने के लिए मजबूर हैं. अनुमान के अनुसार, इन की दरें 20 हजार रुपए से ले कर 50 पैसे तक है. सब से अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि पुरुष इस देह सुख को प्राप्त करने के लिए रोज 50 करोड़ रुपए खर्च करते हैं.

इस 50 करोड़ की हिस्सेदारी भी कम आश्चर्यजनक नहीं. इस से पांच करोड़ रुपए पुलिस वालों की जेब में जाता है. 10 करोड़ दलालों की जेब में, 25 करोड़ चकला चलाने वाली मौसियों और बाइयों को तथा जिस्म बेचने वाली औरत को सिर्फ 10 करोड़ रुपए मिलते हैं.

इन वेश्याओं की संख्या 25 से 80 लाख बताई जाती है. कुछ बालिकाएं गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक विषमताओं के कारण इस गैरकानूनी धंधे में फंस गई हैं. देश में लड़कियों की 16 मंडियां हैं, जिन में जानवरों की तरह इन की नीलामी होती है. उन का मूल्य उन की आयु, सुंदरता के आधार पर 3 हजार से 20 हजार रुपए तक तय होता है.

इस बारे में बनाए गए सभी कानून अब तक असफल रहे हैं. कानूनों के कारण तो इन औरतों की स्थिति और खराब है क्योंकि तभी पुलिस, दलालों और बाइयों को अधिकार मिलते हैं. समाज सेवी संस्थाएं भी कुछ कर पाने में असमर्थ हैं क्योंकि हजारों औरतें हर वर्ष स्वयं को अपनी इच्छा से ही इस व्यवसाय को समर्पित करती हैं.

चंपक
नन्हें नागरिकों का मनोरंजक पाक्षिक
4
ग्रीष्म
विशेषांक
मई प्रथम
1992
जून प्रथम
1992
मई द्वितीय
1992
जून द्वितीय
1992
शारीरिक व मानसिक थकान के बाद उनके पढ़ने के लिए ऐसी सामग्री जो भरपूर मनोरंजन दे, ज्ञान बढ़ाए और छुट्टी का सही अर्थ भी समझाए.
इस वर्ष ये विशेषांक प्रकाशित किए जा रहे हैं, पर हर वर्ष से अलग, कुछ नयापन लिए कुछ नई सामग्री के साथ. हर ग्रीष्म विशेषांक अपने आप में अनूठा, मजेदार और रोचक.
अपने बच्चों को अवश्य खरीद कर दें चंपक के ये लुभावने विशेषांक
अतिरिक्त पृष्ठ
पर मूल्य वही
रुपए 5.00
दिल्ली प्रेस प्रकाशन

परीक्षा

कहानी • डा. प्रमोदकुमार सिंह

पंकज दफ्तर से देर से निकला और सुस्त कदमों से बाजार से होते हुए घर की ओर चल पड़ा. वह राह में एक दुकान पर रुक कर चाय पीने लगा. चाय पीते हुए उस ने पीछे मुड़ कर 'भारत रंगालय' नामक नाट्यशाला की इमारत की ओर देखा. सामने मुख्य द्वार पर एक बैनर लटका था, 'आज का नाटक 'शेरे जंग', निर्देशक – सुधीरकुमार.'

सुधीर पंकज का बचपन का दोस्त था. कालिज के दिनों से ही उसे रंगमंच में बहुत दिलचस्पी थी. वैसे तो वह नौकरी करता था, किंतु उस की रंगमंच के प्रति दिलचस्पी जरा भी कम नहीं हुई थी. हमेशा कोई न कोई नाटक करता ही रहता था.

चाय पी कर वह चलने को हुआ तो सोचा कि पंकज से मिल ले. बहुत दिन हुए उस से मुलाकात हुए. उस का नाटक देख लेगा तो थोड़ा मन बहल जाएगा. वह टिकट ले कर हाल के अंदर चला गया.

नाटक खत्म होने के बाद दोनों मित्र फिर चाय पीने बैठे. सुधीर ने पूछा, "यार, तुम इतनी दूर चाय पीने आते हो?"

पंकज ने उदास स्वर में जवाब दिया, "दफ्तर से पैदल लौट रहा था. सोचा, चाय पी लूं और तुम्हारा नाटक भी देख लूं. बहुत दिन हुए तुम्हारा नाटक देखे."

सुधीर ने उस का झूठ ताड़ लिया. पंकज के उदास चेहरे को गौर से देखते हुए

सुषमा ने जोर दे कर पंकज से कहा, "हां, हां! और मैं वहां जा कर तुम्हें तलाक दे दूंगी. तुम जैसे मर्दों को अकेले ही रहना चाहिए."

उस ने पूछा, "तुम्हारा दफ्तर इतनी देर तक खुला रहता है? क्या बात है? इतना बुझा हुआ चेहरा क्यों है?"

पंकज ने 'कुछ नहीं,' कह कर बात टालनी चाही तो सुधीर चाय के पैसे देते हुए बोला, "चलो मैं भी चलता हूं, तुम्हारे साथ. काफी दिन से भाभीजी से भी भेंट नहीं हुई है."

"आज नहीं, किसी दूसरे दिन." पंकज ने घबरा कर कहा.

सुधीर ने पंकज की बांह पकड़ ली, "क्या बात है? कुछ आपस में खटपट हो गई है क्या?"

पंकज ने फिर 'कोई खास बात नहीं,' कह कर बात टालनी चाही, लेकिन सुधीर पीछे पड़ गया. "जरूर कोई बात है, आज तक तो तुझे इतना उदास कभी नहीं देखा. बताओ, क्या बात है? अगर कोई बहुत निजी बात नहीं है तो...?"

पंकज थोड़ा हिचकिचाया. फिर बोला, "निजी क्या? अब तो आम बात हो गई है. असल बात यह है कि आमदनी कम है और सुषमा के शौक ज्यादा हैं. अमीर घर की बेटी है, खर्च की आदत है. परेशान रहता हूं, रोज इसी बात पर किचकिच होती है... दिमाग काम नहीं करता."

"वाह यार," सुधीर उस की पीठ पर हाथ मार कर बोला, "तुम्हें जितनी तनख्वाह मिलती है, क्या उस में 2 आदमियों का गुजारा नहीं हो सकता है?

बस अभी बच्चा 3-4 साल तक पैदा नहीं करना. मैं तुम से कम तनख्वाह पाता हूं, लेकिन हम दोनों पतिपत्नी आराम से रहते हैं. हां, फालतू खर्च नहीं करते."

"वह तो ठीक है, लेकिन इनसान गुजारा करना चाहे तब तो? खर्च का कोई ठिकाना है? जितना बढ़ाओ, बढ़ेगा. सुषमा इस बात को समझने को तैयार नहीं है." पंकज ने मायूसी से कहा.

"यार, समझौता तो करना ही होगा. अभी तो नईनई शादी हुई है, अभी से यह उदासी और झिकझिक. तुम दोनों तो शादी के पहले ही एकदूसरे को जानते थे, फिर इन 5-6 महीनों में ही..."

पंकज उठ गया और उदास स्वर में बोला, "शुरू में तो सब कुछ सामान्य एवं सहज था, किंतु इधर 1-2 महीनों से... अब सुषमा को कौन समझाए."

सुधीर ने झट से कहा, "मैं समझा दूंगा."

पंकज ने घबरा कर उस की ओर देखा. "अरे बाप रे, मार खानी है क्या?"

सुधीर ठठा कर हंस पड़ा, "लगता है, तू बीबी से रोज मार खाता है." फिर वह पंकज की बांह पकड़ कर थिएटर की ओर ले गया, "तो चल, तुझे ही समझाता हूं. आखिर मैं एक अभिनेता हूं. तुझे कुछ संवाद रटा देता हूं. देखना, सब ठीक हो जाएगा."

पंकज को घर लौटने में काफी देर हो गई. लेकिन वह बड़े अच्छे मूड में घर के अंदर घुसा. सुषमा के झुंझलाए चेहरे की ओर ध्यान न दे कर बोला, "स्वीटी, जरा एक प्याला चाय जल्दी से पिला दो, थक गया हूं, आज दफ्तर में काम कुछ ज्यादा था. अगर पकौड़े भी बना दो तो मजा आ जाए."

सुषमा ने उसे आश्चर्य और क्रोध से घूर कर देखा. फिर झट से रसोईघर से प्याला और प्लेट ला कर उस की ओर जोर से फेंकती हुई चिल्लाई, "लो, यह रहा पकौड़ा और यह रही चाय."

पंकज ने बचते हुए कहा, "क्या कर रही हो? चाय की जगह भूकंप कैसे? यह घर है कि क्रिकेट का मैदान है? घर के बरतनों से ही गेंदबाजी... वह भी बंपर पर बंपर."

उस के मजाक से सुषमा का पारा और भी चढ़ गया, "न तो यह घर है और न ही क्रिकेट का मैदान... यह श्मशान है श्मशान."

"यह भी कोई बात हुई. पति दिन भर दफ्तर में काम करे और जब थक कर घर लौटे तो पत्नी उस का स्वागत प्रेम की मीठी मुसकान से न कर के शब्दों की गोलियों और तेवरों के तीरों से करे?"

"यह घर नहीं, कैदखाना है और कैदखाने में बंद पत्नी अपने पति का स्वागत मीठी मुसकान से नहीं कर सकती, पति महाशय."

पंकज ने सुषमा की ओर डर कर देखा. फिर मुसकरा कर समझाने के स्वर में बोला, "यह भी कोई बात हुई सुषमा, घर को कैदखाना कहती हो? यह तो मुहब्बत का गुलशन है."

किंतु सुषमा ने चीख कर उत्तर दिया, "कैदखाना नहीं तो और क्या कहूं? मैं दिनरात नौकरानी की तरह काम करती हूं, अब मुझ से घर का काम नहीं होगा."

"अभी तो हमारी शादी को चंद महीने ही हुए हैं. हमें तो पूरी जिंदगी साथसाथ गुजारनी है. फिर पत्नी का तो कर्तव्य है, घर का कामकाज करना."

आमदनी कम होने और खर्चे ज्यादा होने की वजह से सुषमा और पंकज में अकसर झगड़ा हो जाता था. इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए पंकज के दोस्त सुधीर ने एक नाटक किया तो दोनों का सुप्त प्यार एकाएक उजागर हो उठा.

डाकू नुमा आगंतुक के डर से सुषमा अपने गहनों का बक्सा उसे देते हुए बोली, ''लीजिए हम लोगों के पास यही कुछ गहने हैं, रुपए नहीं हैं.''

सुषमा ने पंकज की ओर तीखी नजरों से देखा, ''सुनो जी, घर चलाना है तो नौकर रख लो या होटल में सोने का इंतजाम करो, नहीं तो इस हालत में तुम्हें पूरी जिंदगी अकेले ही गुजारनी होगी. अब मैं एक दिन भी तुम्हारे साथ रहने को तैयार नहीं हूं. मैं चली...''

सुषमा मुड़ कर जाने लगी तो पंकज उस के पीछे दौड़ा, ''कहां चली? रुको... जरा समझने की कोशिश करो. देखो, अब इतने कम वेतन में नौकर रखना या होटल में खाना कैसे संभव है?''

सुषमा रुक गई. उस ने गुस्से में कहा, ''इतनी कम तनख्वाह थी तो शादी करने की क्या जरूरत थी. तुम ने मेरे मांबाप को धोखा दे कर शादी कर ली. अगर वे जानते कि वे अपनी बेटी का हाथ एक भिखमंगे के हाथ में दे रहे हैं तो कभी तैयार नहीं होते. अगर तुम अपनी आमदनी नहीं बढ़ा सकते तो मैं अपने मांबाप के घर जाती हूं... वे अभी जिंदा हैं.''

पंकज कहना चाहता था कि उस के बारे में पूरी तरह से उस के मांबाप जानते थे और वह भी जानती थी, कहीं धोखा नहीं था. शादी के वक्त तो वह सब को बहुत सुशील, ईमानदार और खूबसूरत लग रहा था. लेकिन वह इतनी बातें नहीं बोल सका. उस के मुंह से गलती से निकल गया, ''यही तो अफसोस है.''

सुषमा ने आगबबूला हो कर उस की ओर देखा, ''क्या कहा? मेरे मातापिता के जीवित रहने का तुम्हें अफसोस है?''

पंकज ने झट से बात मोड़ी, ''नहीं, कुछ नहीं. मेरे कहने का मतलब यह है कि अगर गृहस्थी की गाड़ी का पहिया पैसे के पेट्रोल से चलता है तो उस में प्यार का मोबिल भी तो जरूरी है. क्या रुपया ही सब कुछ है?''

''हां, मेरे लिए रुपया ही सब कुछ है. इस लिए मैं चली मायके. तुम अपनी गृहस्थी

असर

अंजामे सफर देख के रो देता हूं,
टूटे हुए पर देख के रो देता हूं,
रोता हूं कि आहों में असर हो लेकिन
आहों का असर देख के रो देता हूं.
—धनराज शर्मा

में प्यार का मोबिल डालते रहो. अब बनावटी बातों से काम नहीं चलने का. मैं चली अपना सामान बांधने."

सुषमा ने अंदर आ कर अपना सूटकेस निकाल लिया और जल्दीजल्दी कपड़े वगैरह उस में डालने लगी. पंकज बगल में खड़ा समझाने की कोशिश कर रहा था, "जरा धैर्य से काम लो, सुषमा. हम अभी से फालतू खर्च करने लगेंगे तो कल हमारी गृहस्थी बढ़ेगी... बालबच्चे होंगे... लेकिन अभी नहीं... 4-5 साल बाद होंगे न... तो फिर कैसे काम चलेगा?"

सुषमा ने उस की ओर चिढ़ कर देखा, "बीवी का खर्च तो चला नहीं सकते और बच्चों का सपना देख रहे हो, शर्म नहीं आती?"

"ठीक है, अभी नहीं, कुछ साल बाद ही... जब मेरी तनख्वाह बढ़ जाएगी. कुछ रुपए जमा हो जाएंगे. ठीक है न... अब शांत हो जाओ."

किंतु सुषमा अपना सामान निकालती रही. वह क्रोध से बोली, "अब तुम्हारी पोल खुल गई है. मैं इसी वक्त जा रही हूं."

"आखिर अपने मायके में कब तक रहोगी? लोग क्या कहेंगे?"

"लोग क्या कहेंगे, इस की चिंता तुम करो. अब मैं लौट कर नहीं आने वाली."

पंकज चौंक पड़ा, "लौट कर नहीं आने वाली? तुम जीवन भर मायके में ही रहोगी?"

सुषमा ने जोर दे कर कहा, "हांहां, और मैं वहां जा कर तुम्हें तलाक दे दूंगी. तुम जैसे मर्दों को अकेले ही रहना चाहिए."

पंकज हतप्रभ हो गया, "तलाक... क्या बकती हो? होश में तो हो?"

"हां, अब मैं होश में आ गई हूं. बेहोश तो अब तक थी. अब वह जमाना गया, जब औरत गाय की तरह खूंटे से बंधी रहती थी," सुषमा ने चाबियों का गुच्छा जोर से पंकज की ओर फेंका, "लो अपनी चाबियां, मैं चलती हूं."

सुषमा अपना सामान उठा कर बाहर के दरवाजे की ओर बढ़ी. पंकज ने कहा, "सुनो तो रात को कहां जाओगी? सुबह चली जाना, मैं वादा करता हूं..."

उसी वक्त दरवाजे पर जोरों की दस्तक हुई. पंकज ने उधर देखा, "अब यह बेवक्त कौन आ गया? लोग कुछ समझते ही नहीं. पतिपत्नी के प्रेमालाप में कबाब में हड्डी की तरह आ टपकते हैं. देखना तो सुषमा, कहीं वह बनिया उधार की रकम वसूलने तो नहीं आ गया. कह देना कि मैं नहीं हूं."

लेकिन सुषमा के तेवर पंकज की बातों से ढीले नहीं पड़े. उस ने हाथ झटक कर कहा, "तुम ही जानो अपना हिसाबकिताब और खुद ही देख लो, मुझे कोई मतलब नहीं."

दरवाजे पर लगातार दस्तक हो रही थी. "ठीक है भई, रुको खोलता हूं," कहते हुए पंकज ने दरवाजा खोला और ठिठक कर खड़ा हो गया. उस के मुंह से "बाप रे!" निकल गया.

सुषमा भी चौंक कर देखने लगी. एक लंबी दाढ़ी वाला आदमी चेहरे पर नकाब लगाए अंदर आ गया था. उस ने झट से

दरवाजा बंद करते हुए कड़कती आवाज में कहा, "खबरदार, जो कोई अपनी जगह से हिला."

पंकज ने हकलाते हुए कहा, "आप कौन हैं भाई? और क्या चाहते हैं?"

उस आदमी ने कहा, "मैं कौन हूं, उस से तुम्हें कोई मतलब नहीं. घर में जो भी गहना रुपया है, सामने रख दो."

पंकज को ऐसी परिस्थिति में भी हंसी आ गई. "क्या मजाक करते हैं दाढ़ी वाले महाशय, अगर इस घर में रुपया ही होता तो रोना किस बात का था. आप गलत जगह आ गए हैं. मैं आप को सही रास्ता दिखला देता हूं. मेरे ससुर हैं गनपत राय, उन का पता बता देता हूं. आप उन के यहां चले जाइए."

सुषमा बिगड़ कर बोली, "क्या बकते हो, जाइए..."

किंतु आगंतुक ने उन की बातों पर ध्यान नहीं दिया. उस ने बड़े ही नाटकीय अंदाज में जेब से रिवाल्वर निकाला और उसे हिलाते हुए कहा, "जल्दी माल निकालो वरना काम तमाम कर दूंगा. देवी जी, जल्दी से सब गहना निकालिए."

सुषमा चुपचाप खड़ी उस की ओर देखती रही तो उस ने रिवाल्वर पंकज की ओर घुमा दिया, "मैं 3 तक गिनूंगा, उस के बाद आप के पति पर गोली चला दूंगा."

पंकज ने सोचा, 'सुषमा कहेगी कि उसे क्या परवाह. वह तो पति को छोड़ कर मायके जा रही है.' किंतु जैसे ही आगंतुक ने 1...2... गिना, सुषमा हाथ उठा कर बेचैन स्वर में बोली, "नहीं, नहीं, रुको, मैं तुरंत आती हूं."

नकाबपोश गर्व से मुसकराया और सुषमा जल्दी से शयनकक्ष की ओर भागी. वह तुरंत अपने गहनों का बक्सा ले कर आई और आगंतुक के हाथों में देते हुए बोली, "लीजिए, हम लोगों के पास रुपए तो नहीं हैं. ये शादी के कुछ गहने हैं, इन्हें ले जाइए और इन की जान छोड़ दीजिए."

नकाबपोश रिवाल्वर की नली नीची कर के व्यंग्य से मुसकराया, "कमाल है, एकाएक आप को अपने पति के प्राणों की चिंता सताने लगी. बाहर से आप लोगों की अंताक्षरी सुन रहा था. ऐसे नालायक पति के लिए तो आप को कोई हमदर्दी नहीं होनी चाहिए. जब आप को तलाक ही देना है, अकेले ही रहना है तो कैसी चिंता... यह जिंदा रहे या मुर्दा."

सुषमा क्रोध से बोली, "जनाब, आप को हमारी आपसी बातों से क्या मतलब? आप जाइए यहां से."

पंकज खुश हो गया, "यह हुई न बात, ऐ दाढ़ी वाले महाशय, पतिपत्नी की बातों में दखलअंदाजी मत कीजिए. जाइए यहां से."

आगंतुक हंस कर सुषमा की ओर मुड़ा, "जा रहा हूं, लेकिन मेमसाहब, एक और मेहरबानी कीजिए. अपने कोमल शरीर से इन गहनों को भी उतार दीजिए... ये चेन, अंगूठी, झुमका... जल्दी कीजिए."

सुषमा पीछे हट गई, "नहीं, अब मैं तुम्हें कुछ भी नहीं दूंगी."

नकाबपोश ने रिवाल्वर फिर पंकज की ओर ताना, "तो चलाऊं गोली?"

"हुजूर, यह ऐतिहासिक वस्तु नहीं, छः साल पहले नेताजी ने यहां बांध बनाने की नींव रखी थी..."

सुषमा ने चिल्ला कर कहा, "लो, ये भी ले लो और भागो यहां से." वह शरीर के गहने उतार कर उस की ओर फेंकने लगी. नकाबपोश गहने उठा कर इतमीनान से जेब में रखता गया. पंकज भौंचक्का देखता रहा.

आगंतुक ने सब गहने जेब में रखने के बाद सुषमा की कलाइयों की ओर इशारा किया, "अब ये कंगन भी उतार दीजिए."

सुषमा ने दृढ़ स्वर में कहा, "नहीं, ये कंगन नहीं दूंगी."

वे शादी के कंगन थे, जो पंकज ने दिए थे.

आगंतुक ने सुषमा की ओर बढ़ते हुए कहा, "मुझे मजबूर मत कीजिए, मेम साहब. आप ने जिद की तो मुझे खुद कंगन उतारने पड़ेंगे, लाइए, इधर दीजिए."

अब पंकज का पुरुषत्व जागा. वह कूद कर उन दोनों के नजदीक पहुंचा, "तुम्हारी इतनी हिम्मत कि मेरी पत्नी का हाथ पकड़ो? खबरदार, छोड़ दो."

नकाबपोश ने रिवाल्वर हिलाया, "जान प्यारी है तो दूर ही रहो."

लेकिन पंकज रिवाल्वर की परवाह न कर के उस से लिपट गया.

तभी 'धांय' की आवाज हुई और पंकज कराह कर सीना पकड़े गिर गया. आगंतुक के रिवाल्वर से धुंआ निकल रहा था. सुषमा कई पलों तक हतप्रभ खड़ी रही. फिर वह चीत्कार कर उठी, "हत्यारे, जल्लाद, तुम ने मेरे पति को मार डाला. मैं तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगी."

नकाबपोश जल्दी से दरवाजे की ओर बढ़ते हुए बोला, "मैडम, आप नाहक अफसोस कर रही हैं. आप को इस नालायक पति से तो अलग होना ही था. मैं ने तो आप की मदद ही की है."

सुषमा का चेहरा आंसुओं से भीग गया. उस की आंखों में दर्द के साथ आक्रोश की चिंगारियां भी थीं. आगंतुक डर सा गया.

सुषमा उस की ओर शेरनी की तरह झपटी, "मैं तुम्हारा खून पी जाऊंगी. तू जाता कहां है?" और वह उसे बेतहाशा पीटने लगी.

नकाबपोश नीचे गिर पड़ा और चिल्ला कर बोला, "अरे मर गया, भाभीजी, क्या कर रही हैं... रुकिए."

सुषमा उसे मारती ही गई, "हत्यारे, मुझे भाभी कहता है?"

आगंतुक ने जल्दी से अपनी दाढ़ी को नोच कर हटा दिया और चिल्लाया, "देखिए, मैं आप का प्यारा देवर सुधीर हूं."

सुषमा ने अवाक हो कर देखा. वह सुधीर ही था.

सुधीर कराहते हुए उठा, "भाभी जी, केवल यह दाढ़ी ही नकली नहीं है... यह रिवाल्वर भी नकली है."

सुषमा ने फर्श पर गिरे पंकज की ओर देखा.

तब वह भी मुसकराता हुआ उठ कर खड़ा हो गया, "हां, और यह मौत भी नकली थी. अब मैं यह कह सकता हूं कि हर पति को यह जानने के लिए कि उस की पत्नी वास्तव में उस से कितना प्यार करती है. एक बार जरूर मरना चाहिए."

सुधीर और पंकज ने ठहाका लगाया और सुषमा शरमा गई.

सुधीर हाथ जोड़ कर माफी मांगते हुए बोला, "भाभीजी, हमारी गलती को माफ कीजिए. आप दोनों एकदूसरे को इतना प्यार करते हैं... उस में जो थोड़ा व्यवधान हो गया था, उसे ही दूर करने के लिए यह छोटा सा नाटक करना पड़ा."

सुषमा ने हंस कर कहा, "जाओ, माफ किया."

"भाभीजी, आमदनी के अनुसार जरूरतों को समेट लिया जाए तो पतिपत्नी हमेशा प्यार और आनंद से रह सकते हैं." सुधीर ने समझाने के लहजे में कहा तो सुषमा ने हंस कर सहमति में सिर हिलाया.●

मोहभंग

(पृष्ठ 47 का शेषांश)

नहीं, पक्के इरादे की जरूरत होती है... आप से ही तो सीखी है यह बात मैं ने...'' पिंकी तमक कर बोली तो प्रमोद मौन रह गया. अब कुछ और कहनेसुनने की गुंजाइश ही कहां रह गई थी.

मन ही मन पिंकी को ताऊजी के ऊपर गुस्सा आया था. उसे लगा था कि जैसे उन्होंने उस के मातापिता की असमर्थता की ओर आक्षेप किया हो. वह भी दिखा देगी कि कैसे सीमित साधनों में भी बड़ेबड़े ध्येय प्राप्त किए जा सकते हैं.

अपने सारे साजसामान के साथ वह पिता के घर आ गई. दोचार दिन वह काफी खुश रही. बचपन से जो वह चाहती रही थी, वह अब कहीं उसे मिला था. बिट्टू के कमरे में चौतरफा फैली किताबें, कागज, पतंगें, बैट, कंचे, कपड़ों आदि को पहले उस ने ठीक से सहेजा.

फिर एक ओर अपना सामान और किताबें जमाईं. मां की अनुमति से बिट्टू की पढ़ने की मेज पर दूसरी ओर उस ने अपने पढ़ने की व्यवस्था कर ली. कमरे में एक ओर पिंकी ने अपना पलंग लगाया, दूसरी ओर बिट्टू का. पम्मी को मां अपने पास ही सुलाने ले गईं.

बिट्टू को अपने कमरे में पिंकी का अनाधिकार प्रवेश अटपटा लगा था. झुंझला कर वह बोला था, ''दीदी ने मेरी सब चीजें न जाने कहां रख दीं. मिलती ही नहीं हैं...''

''मिलेंगी कहां से... कभी ढंग से कुछ निकालने, धरने की आदत हो तब न ? दीदी ने इतनी मेहनत से तुम्हारा बिखरा सामान सहेज दिया और तुम ऊपर से उस का ही नुक्स निकालते हो, बेशर्म कहीं के...'' मां ने गुस्से से कहा था.

पिंकी के मन में दुख हुआ कि जिस भाई के लिए वह अपनी जान छिड़कती है उसे तो उस का यहां आना जैसे पसंद ही नहीं आया. उस ने मन को समझाया, इस में बिट्टू की भी क्या गलती है, बचपन से आज तक जैसा चाहा है उस ने, वैसा करता आया है. अब वह उसे राह पर लाएगी. धीरेधीरे वह सब समझ जाएगा.

पर बिट्टू को समझाना इतना आसान नहीं था. लड़का होने के नाते जो विशेषाधिकार उसे मिले थे, उन से वह रंचमात्र भी हिलना नहीं चाहता था. पिंकी रात देर तक पढ़ती रहती थी, पर बिट्टू का पढ़ाई से दूर तक कोई वास्ता न था. वह दोस्तों के साथ घूमफिर कर आता तो कुछ देर पम्मी के साथ झगड़ाझंझट करता, खाना खाता और बिस्तर पर आ जाता.

पिंकी चाहती थी कि वह भी उस के साथ मेज की दूसरी ओर बैठ कर पढ़े. पर पढ़ना तो दूर, उसे तो पिंकी का बत्ती जलाए रखना भी पसंद नहीं था. पिंकी जब तक पढ़ती रहती, वह बेचैनी से बिस्तर पर करवटें बदलता रहता. एक दिन वह चीख उठा, ''मां, नींद नहीं आ रही है, सिर दुख रहा है.''

मां बाम ले कर दौड़ी और बेटे के सिर पर मलती हुई बोली, ''पिंकी, बिट्टू को बत्ती जलती हो तो नींद नहीं आती. रोजरोज नींद न आई तो बीमार पड़ जाएगा. कमजोर है बहुत, ध्यान तो रखना ही होगा इस का. तुम क्या दिन में नहीं पढ़ सकतीं?''

पिंकी ने अपनी किताबें उठाईं और बरामदे में आ कर पढ़ने लगी.

उस रात वह सोने आई तो उस के पलंग से उस का तकिया और खेस गायब थे. बिट्टू खेस ओढ़े सो रहा था और तकिया पम्मी लगाए थी. मां से उस ने शिकायत की तो वह बोलीं, ''बड़ों को सहनशील होना चाहिए. छोटे भाईबहन ने कुछ ले लिया तो उस में इतना हंगामा क्यों? बिट्टू को हरारत सी थी, इसलिए मैं ही तुम्हारा खेस उस पर डाल आई हूं. पम्मी तो है ही

नासमझ. लो, तुम मेरा खेस और तकिया ले जाओ."

पिंकी ने गंदे, फटे खेस और तेल से चीकट तकिए को देखा तो बोली, "रहने दो. मुझे गंदा तकिया नहीं चाहिए."

चंदा चिढ़ कर बोली, "बड़ी अच्छी आदत डाली है दीदी ने, भरे घर में रहने लायक ही नहीं रखा. अपनी मां और भाईबहन को ही पराया समझने लगी हो. नहीं चाहिए खेसतकिया तो जाओ, मरो यों ही..."

चंदा ने अपने स्वाभाविक लहजे में कही थी यह बात. बिट्टू और पम्मी को तो वह इस से कहीं ज्यादा डांटती रहती थी. पर पिंकी को ऐसा सुनने की आदत न थी. उस की आंखें डबडबा आईं. बिस्तर पर पड़ेपड़े वह सोचती रही, कितना अंतर है मां और ताईजी में. वह कितनी शालीन, मृदुभाषी हैं. कभी कहा है उन्होंने आज तक उसे अपशब्द?

ताईजी होतीं तो अव्वल तो उस का तकिया और खेस किसी को लेने ही न देतीं. कभी मजबूरी आ भी जाती तो झट से उस के साफ धुला खेस और नया गिलाफ चढ़ा तकिया हाजिर हो जाता.

ताईजी के यहां पलंग पर दूध सी सफेद नरम चादर पर रेशमी जयपुरी रजाई ओढ़ कर सोने का मजा कुछ और ही था. तब क्या उस ने यहां आ कर गलती की है? नहीं, कभी नहीं. अभावों के चलते क्या मांबाप, भाईबहन छोड़ देने चाहिए? फिर नए परिवेश में व्यवस्थित होने में कुछ समय तो लगेगा ही. मां ने ठीक ही कहा है, ताईजी ने उसे एक तरह से सुखसुविधाओं का दास बना दिया है. हर परिस्थिति में रहने लायक उसे छोड़ा ही नहीं है, जिंदगी सिर्फ फूलों की सेज तो नहीं है.

विचारों की ऊहापोह में वह रात देर तक जागती रही. सुबहसुबह उस की नींद लगी ही थी कि मां की आवाज सुनाई दी, "पिंकी,ज़रा दूध तो ले आना." वह अनमनी सी उठी और दूध लेने चली गई. नींद अब खुल ही गई थी, इसलिए वह किताब ले कर बैठ गई. तभी मां फिर बोलीं, "यह सुबहसुबह तू क्या ले कर बैठ गई? इधर आ, जल्दी से 4 परांठे तो बनवा, बिट्टू और पम्मी के स्कूल का समय हो गया है."

पिंकी का मन किताब छोड़ कर उठने का नहीं था, कुछ अधूरा काम पड़ा था जिसे वह पूरा करना चाहती थी, वह बोली, "मैं पढ़ रही हूं मां, मुझे काम नहीं करना है चौके में, इस समय मैं पढ़ूंगी. मेरा काम बाकी है."

"यह भी कोई पढ़ने का समय है? कितनी बार समझाया कि शाम को पढ़ा कर. हर समय घर के कामों से कतराती रहती है. साफ क्यों नहीं कहती कि परांठे बनाना आता ही नहीं. दीदी ने कुछ घर के काम सिखाए हों तब न... बरबाद कर के रख दी लड़की की जिंदगी. एक बात समझ ले तू, किताबें बांचने से जिंदगी नहीं चलती... जिंदगी चलती है घर के इन्हीं कामों से. यह तू ने नहीं सीखा तो रोएगी सारी उम्र. मैं भी आखिर कितना और कब तक करूं?"

पिंकी ने किताब बंद कर दी और चौके में आ गई, ताईजी की बुराई उस से बरदाश्त नहीं होती थी. सोचने लगी, मां न जाने क्यों उन्हें हरदम बुराभला कहती रहती हैं. मां की जगह ताईजी होती तो कहतीं, 'ये दूसरे काम तुम छुट्टी और फुरसत के समय किया करो, पढ़ाई के समय सिर्फ पढ़ाई करो. यह मत समझना कि ये काम जरूरी नहीं हैं. लेकिन मैं बस इतना चाहती हूं कि तुम पढ़ाई और काम के बीच सही संतुलन बैठा कर जिस समय जो जरूरी हो, वही करो.'

पिंकी नहाने गई तो उस ने देखा कि उस का तौलिया अपनी जगह से गायब है. यह जरूर बिट्टू का काम होगा. वह जबतब उस का तौलिया इस्तेमाल कर लेता है. वह समझाती भी है कि किसी दूसरे का तौलिया इस्तेमाल नहीं करना चाहिए.

तब बिट्टू खिलखिला कर कहता है, "पहली बार सुन रहा हूं यह बात. यहां तो सब एक ही तौलिया इस्तेमाल करते हैं."

पम्मी का भी यही हाल था. उस का कंघा, दांतों का ब्रश, चप्पलें कुछ नहीं छोड़ती थी. बालों भरा कंघा देख कर उस को गुस्सा आ गया. जी चाहा कि मां को बुला कर दिखाए, पर फिर कुछ सोच कर चुप रह गई कि मां उसे ही उपदेश देने बैठ जाएंगी.

कहां का दूध और कहां के टोस्ट, पिंकी से तो सुबह कालिज जाते समय ढंग से खाना भी नहीं खाया जाता था. किसी न किसी काम में उलझ कर रोज उसे देर हो जाती. आज तो हद ही हो गई. तैयार हो कर बाहर निकली तो देखा, उस की मोपेड गायब है.

मां ने कहा,"मोपेड बिट्टू ले गया है. पास ही तो है तेरा कालिज.इतनी सी दूर भी क्या पैदल नहीं जा सकती?"

कैसे वह मां को समझाती कि आज उस का पहला पीरियड कितना महत्त्वपूर्ण है. वह जब तक कालिज पहुंची, तब तक आधा पीरियड बीत चुका था.

पिंकी पढ़ाई में पिछड़ने लगी थी. उसे अपना सपना धूमिल होता प्रतीत होने लगा था. उस की बातों में निराशा झलकने लगी थी. हंसताखिलखिलाता चेहरा अब उदास दिखाई देता. मोहक स्वभाव में कड़वाहट घुली प्रतीत होती. अब वह हर बेतुकी बात पर भाईबहन को झिड़क देती.

उधर बिट्टू और पम्मी को दीदी का यह बड़प्पन कतई बरदाश्त न होता. तीनों में वाक् युद्ध छिड़ जाता, जो मां के हस्तक्षेप के बाद ही सुलझता.

'मां उसे ही हमेशा क्यों टोकती है' यह बात पिंकी की समझ में न आती थी.

धीरेधीरे उस की समझ में यह बात आ गई कि मां सब से अधिक बिट्टू को चाहती हैं, क्योंकि वह लड़का है, इस घर का चिराग है. उन के बुढ़ापे का सहारा है. उस की हर बात, हर जिद पूरी करना उन के लिए अति आवश्यक था. भले ही दूसरों को कुछ भी परेशानी उठानी पड़े.

पिंकी के लिए यह एक नया अनुभव था. ताईजी के यहां तो उस ने ऐसा कभी अनुभव नहीं किया था. यह मां आखिर किस

जमाने में जी रही थीं? बिट्टू के बाद मां को पम्मी का अधिक खयाल था. उस का नंबर तीसरा है, यही बात उसे चुभती. उसे लगता कि वह तो गलती कर बैठी ताऊजी का घर छोड़ कर. पर पांव जब आगे बढ़ा ही लिया तो पीछे मुड़ने से तो जगहंसाई ही होगी.

एक दिन ताऊजी आए तो ढेर से फल ले आए. उसे देख कर बोले, "बहुत कमजोर लगती हो इसलिए फल ले आया हूं. तुम्हारी ताई ने कहा है कि पढ़ाई के बीच थोड़े फल जरूर ले लिया करो."

उस का मन भर आया कि इतनी दूर से भी ताईजी को उस का कितना खयाल है. दूसरी शाम वह पढ़ने बैठी तो उस को ताऊजी की बात याद आ गई. फल की टोकरी उस ने टटोली तो संतरा, सेब सब गायब थे. मां का आज व्रत था, कुछ उन्होंने और कुछ बिट्टू और पम्मी ने खा डाले थे. बचेखुचे अंगूर एक प्लेट में ले कर वह पढ़ने की मेज पर जा बैठी.

इधर वह पढ़ाई में मशगूल थी उधर बिट्टू ने जाने कब उस की प्लेट साफ कर

दी. उस ने सिर उठाया तो प्लेट में अंगूर का एक भी दाना नहीं था. उसे बहुत बुरा लगा. सोचने लगी कि यह भी कोई बात हुई. खानेपीने के मामले में तो वह कभी कुछ नहीं कहती. उस का दूध, नाश्ता, सब्जी जबतब बिट्टू, पम्मी चट कर जाते हैं, फिर भी वह चुप रहती है. यहां जब से आई है, न जाने क्यों उस की कुछ खानेपीने की इच्छा ही नहीं होती है. कहां ताऊजी और ताईजी का विशेष आग्रह और कहां यहां जराजरा सी चीज की खींचातानी.

जाने कैसी वितृष्णा ने घर कर लिया था उस के मन में. पर आज जाने क्या हुआ, वह एकदम भड़क उठी. बिट्टू से बोली, "सारे फल तो खा डाले तुम लोगों ने, ये चार अंगूर भी तुम से छोड़े नहीं गए. कितने चाव से ताऊजी लाए थे."

"हां, जैसे हम ने तो फल कभी देखे ही नहीं हैं. पिताजी तो कभी कुछ लाते ही नहीं हैं. ताऊजी की चमची. ऐसे ही ताऊजी के गुण गाने थे तो वहीं रहती न. यहां क्यों आई? हम तो तुम्हें बुलाने नहीं गए थे. खुद ऐसे बनती हो जैसे कुछ खाती ही नहीं. हमें भी पता है कितना छिपाछिपा कर तुम बाहर खाती हो. उस दिन पद्मा के साथ ठेलेवाले से चाट नहीं खा रही थी? हम तो ऐसा नहीं करते, जो खाते हैं, घर में सब के सामने खाते हैं."

"चुप रहो, हमें भी पता है तुम्हारी सब बातें."

"क्या पता है, हमें बताओ तो जरा."

"चोरी से मेरी मोपेड ले कर दोस्तों के घर घूमने गए और उसे तोड़ कर ले आए."

"तो क्या हुआ, पिताजी ने बनवा तो दी फौरन, फिर तुम मुझे कुछ कहनेटोकने वाली कौन होती हो?"

"मैं तुम्हारी बड़ी बहन हूं... बड़ी बहन से ऐसे बात करनी चाहिए, यही तमीज सीखी है तुम ने?"

"मेरी कोई बड़ी बहन नहीं है. होती तो शुरू से हमारे साथ हमारे घर में न रहती. बचपन से अब तक ताऊजी के यहां ऐश फरमा कर अब हम लोगों का हक बांटने यहां आ धमकी हो, मेरी बहन तो सिर्फ पम्मी है." बिट्टू ऊंचे स्वर में बोला.

उस की बात सुनते ही पिंकी चीख पड़ी, "मां, देखो तो बिट्टू को..."

बड़ी देर से मां दोनों की चिखचिख सुन रही थी. वह पिंकी को ही झिड़कते हुए बोली, "क्या जरा सी बात का बतंगड़ बना दिया तुम ने? चार अंगूर उस ने खा लिए तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ा, कल और मंगा दूंगी... खा लेना जी भर के. कैसी स्वार्थी बहन हो तुम? छोटे भाईबहन तुम्हें फूटी आंख नहीं सुहाते. नाहक आई तुम यहां, वहीं रहतीं ताईजी के पास. चार लोगों के बीच तो ऐसे ही रहना होता है. फिर बिट्टू क्यों सुनेगा तुम्हारी बातें? वह मर्द है. कोई लड़की तो नहीं, जो सब से दब कर रहे."

पिंकी के झरझर आंसू बहने लगे. सोचने लगी, मां कितनी संकीर्ण विचारों की हैं. लड़के और लड़की में कितना भेद करती हैं? बिट्टू लड़का है, इसलिए वह कुछ भी कर सकता है और वह लड़की है इसलिए सब कुछ चुपचाप सहना है उसे.

वह घंटों रोती रही. रात खाना भी नहीं खाया. पर पिताजी के अलावा कोई उसे मनाने भी नहीं आया. खाली पेट वह बिस्तर पर करवटें बदलती रही. सारा घर नींद के आगोश में डूबा था. पर मां के कमरे से आवाज आ रही थी.

मां कह रही थी, "यह रोजरोज के झगड़ों से तो मैं तंग आ गई. मैं तो समझी थी कि पिंकी आई है तो कुछ मेरा हाथ बंटाएगी. बोझ हलका करेगी, पर वह तो किताब पकड़े बैठी रहती है. ऊपर से भाईबहन से लड़ती है... आज तो हद ही हो गई. इस से तो अच्छा था कि वह वहीं रहती. बेकार का काम और खर्चा घर में बढ़ गया."

"क्या बकवास करती हो, शर्म नहीं आती अपनी बेटी के लिए ऐसा कहते. भूल गईं कितना रोती थीं तुम पिंकी के लिए और खर्चा तो उस का सारा भैया ही देते हैं."

"रोती थी उस के लिए तब बात दूसरी थी. अब मेरे पास पम्मी है और अपने भाई के खर्चा देने की धौंस मत दो. हम उस के बिना भी अपना काम चला सकते हैं, उन की दया पर नहीं जी रहे हैं हम."

फिर लंबा मौन दोनों के बीच पसर गया. थोड़ी देर बाद मां बोलीं, "सुनो जी, तुम जेठजी से बात करो, क्यों न हम पिंकी की शादी कर दें. 18 की तो हो रही है, एक अच्छा लड़का भी नजर में है, शादी कर दोगे तो सारा झंझट ही खत्म हो जाएगा."

"कैसी बात करती हो तुम, इतनी सी उम्र में शादी? अभी तो उसे पढ़ना है. पी.एम.टी. में बैठने की तैयारी कर रही है. भैया भी यही चाहते हैं और मैं भी यही चाहता हूं. तुम्हारे दो बच्चे तो पढ़नेलिखने में जीरो हैं. एक कुछ बनना चाहती है तो तुम रोड़े अटकाने की सोच रही हो. नहीं, ऐसा हरगिज नहीं होगा."

पिंकी के दिमाग में बवंडर उठ खड़ा हुआ. सोचने लगी कि कहां आ गई वह. जिन्हें अपना मानती आई वे सब तो बेगाने निकले. जिस मां के लिए वह बचपन से तड़पती रही, वही उसे जल्दी से जल्दी दूर करने की योजना बना रही है. उस के चरित्र निर्माण और पढ़ाई का कोई महत्त्व ही नहीं है. क्या इन्हीं अपनों का प्यार पाने के लिए वह ताऊ और ताई का प्यार ठुकरा कर आई है? खून के रिश्तों से ही संबंध प्रगाढ़ नहीं बनते. संबंध बनते हैं, आपसी समझ, त्याग और स्नेह से. एक पिताजी के प्यार के सहारे तो वह अपना लक्ष्य नहीं प्राप्त कर सकेगी यहां. फिर उन की सुनता ही कौन है यहां?

दूसरे दिन छुट्टी थी, पिताजी घर पर ही थे. मां पम्मी के साथ कहीं गई थी और बिट्टू भी घूमने निकल गया था. पिंकी ने झटपट सामान समेटा और तैयार हो गई. सुमोद को कोई हैरानी नहीं हुई. न ही उस ने उसे रोकाटोका. पिंकी को दुख हुआ कि शायद पिताजी भी यही चाहते हैं.

सुमोद बोला, "मैं चलूं क्या तुम्हें छोड़ने?"

"नहीं, मैं अकेली ही आई थी, अकेली ही चली जाऊंगी." पिंकी गुस्से से बोली.

एक बार मैं रेलवे टिकट लेने हेतु लाइन में खड़ा था. लाइन बहुत लंबी थी. तभी तीसरे नंबर पर खड़े एक आदमी ने पूछा, "आप को कहां जाना है?"

"दिल्ली." मैं ने जवाब दिया.

उस ने सहानुभूतिपूर्ण ढंग से मुझ से पैसे ले कर टिकट खरीद कर मुझे दे दिया."

मैं ने उस का शुक्रिया अदा किया और ट्रेन में बैठ गया.

रोहतक स्टेशन पर टिकट निरीक्षक के टिकट मांगने पर मैं ने वह टिकट दिखाया तो उस ने कहा, "यह टिकट तो 7 दिन पुराना है."

मुझे टिकट के मूल्य के साथसाथ जुर्माने के रूप में 50 रुपए भी भरने पड़े.

—सोमनाथ गर्ग

*

एक बार मेरे पति महू से जयपुर की यात्रा ट्रेन के प्रथम श्रेणी के डब्बे में कर रहे थे.

गरमी लगने पर उन्होंने अपना कोट उतार कर खूंटी में टांग दिया. अगले स्टेशन पर उन के पास बैठा आदमी उठा और उन का कोट पहन कर उतरने लगा. यह देख कर मेरे पति ने उसे रोकते हुए कहा, "भाई साहब, आप मेरा कोट पहन कर जा रहे हैं."

इतना सुनते ही वह आदमी झगड़ा करने पर उतारू हो गया, "अजीब बात करते हो... इस पर क्या तुम्हारा नाम लिखा है?"

मेरे पति के काफी समझाने के बावजूद भी वह नहीं माना और कोट पहन कर उतर गया.

—इंदिरा सिंह ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

सरिता

के स्तंभों के बारे में सूचना

सरिता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट और सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पूरा पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी, अतः वापसी के लिए टिकट या टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने का कष्ट न करें. एक से अधिक स्तंभों की सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर भेजी जा सकती है.

भेजी गई सामग्री मौलिक और कम से कम शब्दों में होनी चाहिए. किसी भी पत्रपत्रिका से चुराई हुई या सुनीसुनाई नहीं होनी चाहिए. हर संस्मरण के साथ मौलिकता का निम्न लिखित प्रमाणपत्र अवश्य भेजें. इसे स्पष्ट शब्दों में अलग कागज पर भेजें.

''प्रमाणित किया जाता है कि... शब्दों से आरंभ होने वाली मेरी रचना (अनुभव / चुटकुला / पकवान विधि) नितांत मौलिक है व इसे कहीं से लिया नहीं गया है और पुरस्कार के एवज में इस का प्रकाशन अधिकार (कापीराइट) मैं दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. को दे रहा हूं. स्पष्ट हस्ताक्षर.''

जिन संस्मरणों के साथ मौलिकता संबंधी प्रमाणपत्र संलग्न नहीं होगा उन पर विचार नहीं किया जाएगा

अपने संस्मरण इस पते पर भेजें:

संपादकीय विभाग,
ई–3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली–110055.

उस का मन उदास था फिर भी हलका था. आज उस का पूरी तरह मोहभंग हो चुका था.

बरामदे में ताऊ व ताईजी शाम की चाय पी रहे थे. वह गई और ताई की गोद में सिर रख कर फफक पड़ी, ''मुझे माफ कर दो ताईजी, मैं ने बहुत गलती की, पर अब समझ गई हूं कि आप ही मेरे असली मांबाप हैं... आप ही मेरी मां हैं.''

'मां' शब्द सुनते ही सुबीरा जड़ बन गई. उस की आंखों में ममता का सागर लहरा उठा. विश्वास नहीं हुआ कि यह पिंकी कह रही है.

प्रमोद बोले, ''यह क्या नया नाटक है पिंकी, तुम्हारी ताई यों ही दुखी हैं. क्यों परेशान करती हो उन्हें?''

पिंकी प्रमोद के गले लग कर सुबकने लगी, ''यह नाटक नहीं है पिताजी, सच कह रही हूं. आप ही मेरे पिता हैं. ताईजी मां हैं. मैं गलती पर थी, पर अब असलियत जान गई हूं. अब कभी दुख नहीं दूंगी आप लोगों को, यकीन कीजिए.''

पिंकी के निश्छल आंसुओं में छिपी वेदना प्रमोद ने पढ़ ली. प्यार से उस का गाल थपथपाते हुए वह बोला, ''चलो, उठो. अपने कमरे में जाओ और हाथमुंह धो कर कपड़े बदलो... तब तक तुम्हारी ताईजी चाय बना लाती हैं तुम्हारे लिए.''

''ताईजी नहीं मां. मां, मुझे कुछ खाने को दो न, बड़ी भूख लगी है.'' पिंकी फिर सुबीरा के गले लग गई.

सुबीरा का मन भी भर आया. दोनों हाथों में पिंकी का चेहरा ले कर वह बोलीं, ''लगता है मेरी बेटी ने सुबह से कुछ भी खायापीया नहीं है? देखो चेहरा कैसा कुम्हला गया है. मैं जल्दी से तुम्हारे लिए पूरियां बनाती हूं.''

पिंकी अपने पुराने संसार में लौट आई थी. आज महीनों बाद उसे वह अपनापन मिला था जिस के लिए वहां हरदम तरसती रही थी. ●

संबंध

(पृष्ठ 50 का शेषांश)

लिपटे नवजात शिशु को ले कर बाहर निकली. उसे देखते ही शांति देवी निहाल हो उठीं. उन्हें ऐसा लगा, जैसे शेखर एक बार फिर शिशु बन कर गोद में उतर आया हो.

शेखर ने भी अपनी औलाद का चेहरा देखा. वह चूमना चाहता था, मगर उस की आंखों के सामने बारबार डाक्टर अंजना का उदास चेहरा घूम जाता. वह चाह कर भी उस चेहरे को अपने जेहन से झटक नहीं पा रहा था. आखिर कोई तो बात थी जिस ने डाक्टर को इस खुशी के अवसर पर उदास कर दिया था.

'आखिर क्या बात थी?' शेखर ने जैसे अपनेआप से ही सवाल किया.

''भैया चलो.'' चंचल हड़बड़ाए स्वर में बोली.

''हांहां, चलो,'' शेखर ने धीरे से कहा.

नर्सों ने शिखा को बिस्तर पर लिटाया. जिस नर्स के हाथ में नवजात शिशु था, उस ने उसे पालने में लिटा दिया. शिशु की छोटीछोटी मुट्ठियां भिंची हुई थीं. वह बीचबीच में किलकारी मार उठता. अपनी छोटीछोटी आंखों को पल भर के लिए खोलता और फिर उन्हें और बंद कर लेता.

शेखर उस के पालने के पास खड़ा बड़े गौर से उस की एकएक हरकत देख रहा था. कभी वह अपना नन्हा सा मुंह खोलता तो कभी मुट्ठियां खोल कर झट से इस तरह बंद कर लेता, जैसे किसी को बताना न चाहता हो कि उस की मुट्ठियों में क्या छिपा है.

पर उस की टांगों पर पड़ी पतली चादर स्थिर थी. इतनी देर में वह अपने स्थान से एक बार भी नहीं खिसकी थी.

'क्या इस ने अभी तक एक बार भी अपनी टांगें नहीं हिलाईं?' शेखर ने अपनेआप से सवाल किया, 'जब उस का सारा जिस्म हरकत कर रहा है तो टांगें हरकत क्यों नहीं कर रहीं?'

'नहींनहीं.' एक बहुत बुरे खयाल ने उसे बुरी तरह विचलित कर दिया.

परंतु उस की निगाहें टांगों के ऊपर पड़ी चादर से हटी नहीं.

''नर्स.'' आखिरकार शेखर बोल ही पड़ा.

''कहिए?''

''इस बच्चे की टांगें क्यों नहीं हिल रहीं?''

''ऐसा तो शायद नहीं है...'' नर्स बोली, ''आप को गलतफहमी हो रही होगी.''

''आप चादर हटाइए.''

''लेकिन...'' नर्स ने प्रतिवाद करना चाहा.

''मैं जैसा कहता हूं वैसा ही कीजिए.'' शेखर कठोर स्वर में बोला, ''मैं इस का पिता हूं.''

''क्या बात है, शेखर.'' इस बीच शिखा के पास बैठी शांति देवी भी उस के पास आ गईं. वह बहुत देर से शेखर की हरकत देख रही थीं.

इस बीच नर्स ने नवजात शिशु की टांगों से चादर हटा दी.

शेखर घुटनों के बल वहीं पालने के पास बैठ गया. उस ने शिशु की एक टांग हाथ में ले कर बड़े हौले से उस के तलवे पर इस तरह उंगली फेरी कि शिशु को गुदगुदी का एहसास हो. परंतु शिशु के चेहरे पर शेखर को ऐसा कोई भाव नजर नहीं आया, जो उसे यह विश्वास दिलाता कि उसे गुदगुदी का एहसास हुआ है.

शेखर ने दोबारा उस के तलवों को सहलाया. परंतु शिशु के चेहरे पर कोई भाव इस बार भी नजर नहीं आया.

शेखर का दिल अनायास ही डूबने लगा. कमरा वातानुकूलित होने के बावजूद उस के चेहरे पर पसीने की बूंदें नजर आने

लगीं. एकएक कर उस ने नवजात शिशु की दोनों टांगों के तलुओं को सहलाया, पर एक बार भी शिशु के चेहरे पर उसे कोई भाव नजर नहीं आया.

निराशा की भावना से क्षुब्ध हो कर शेखर ने एक जोर की चिकोटी शिशु के पैरों में काटी. परंतु उस पर इस का भी कोई असर नहीं हुआ.

"नर्स." शेखर धीमे स्वर में फुसफुसाया.

"जी, साहब."

"आप देख रही हैं न?"

"हां."

"इस का क्या मतलब हुआ?"

"मैं अभी डाक्टर को बुलाती हूं."

"नहीं, आप यहीं रुकिए, डाक्टर से मैं स्वयं मिलूंगा."

"क्या हुआ शेखर?" शांति देवी ने पूछा.

खातिरदारी

खातिरदारी जैसी चीज में मिठास जरूर है, पर उस का ढकोसला करने में न तो मिठास है और न स्वाद ही. —शरतचंद्र

"मां, तुम ने भी तो देखा है... क्या तुम कुछ नहीं समझतीं?"

"ऐसा नहीं कहते बेटा, तू डाक्टर से बात तो कर."

"वही करने जा रहा हूं."

"चल, मैं भी चलती हूं."

"नहीं मां, तुम यहीं रहो, शिखा के पास. डाक्टर से मैं बात करूंगा."

"नमस्ते, डाक्टर." शेखर डाक्टर अंजना के कक्ष में घुसता हुआ बोला.

"नमस्ते, बैठिए."

"मैं अभीअभी अपने बेटे की टांगों की जांच कर के आ रहा हूं."

"ओह."

"क्या वही सच है, जो मैं ने महसूस किया है?"

डाक्टर खामोश रहीं.

"आप जवाब क्यों नहीं देतीं? जो सच है, वह कह डालिए."

"आप ने जो महसूस किया है, शायद वही सच है." डाक्टर सपाट स्वर में बोलीं.

शेखर स्तब्ध रह गया. उसे गहरा सदमा लगा था.

"ऐसा क्यों हुआ, डाक्टर?"

"इस का कोई एक कारण बताना संभव नहीं है. पर बच्चे की मां की मानसिक अवस्था भी इस का कारण हो सकती है. दूसरे, कोई प्राकृतिक कारण भी हो सकता है."

"इस का कोई इलाज संभव है?"

"शायद नहीं." डाक्टर सपाट स्वर में बोलीं, "आप एक समझदार व्यक्ति हैं, इसलिए मैं आप से इतने सीधे रूप से कह रही हूं कि बच्चे की टांगें जिस कदर निर्जीव हैं, उसे देख कर मुझे नहीं लगता कि वह कभी अपने पैरों पर खड़ा हो पाएगा. जन्मजात बीमारियां बहुत कम ठीक हो पाती हैं."

"बहुत कम में भी क्या इस का नंबर आ सकता है?" शेखर उद्वेलित स्वर में बोला. "आप जानती हैं, पैसों की कोई कमी नहीं है हमारे पास. कहिए कहां ले जाऊं इसे? बस इस की टांगें ठीक हो जानी चाहिए."

"मुझे तो संभावना बहुत कम नजर आती है. परंतु आप ऐसा कीजिए, डाक्टर सुरेंद्रनाथ को दिखा दीजिए. वह मशहूर शिशु विशेषज्ञ हैं. वही आप को सही मायने में बता सकते हैं कि आप के बेटे की टांगों का इलाज संभव है या नहीं."

शेखर ने तुरंत अपने पारिवारिक डाक्टर से बात की और उन से डाक्टर सुरेंद्रनाथ से अपने बेटे की जांच करवाने के लिए समय लेने का अनुरोध किया.

उसी रात 8 बजे का समय निश्चित हो गया. शेखर ने अपने पिता को भी सारी स्थिति से अवगत करा दिया था.

"ठीक कहते हो बेटा."

डाक्टर सुरेंद्रनाथ ने नवजात शिशु की

टांगों का निरीक्षण किया. उस समय उन के पास डाक्टर अंजना और शेखर के पारिवारिक डाक्टर भी वहीं मौजूद थे.

तकरीबन आधे घंटे तक डाक्टर विभिन्न किस्म के यंत्रों की सहायता से शिशु का निरीक्षण करते रहे. फिर अपने सहयोगी को सब कुछ समेट लेने की आज्ञा दे कर वह कमरे से बाहर निकल गए.

सभी उन के पीछेपीछे बाहर की तरफ लपके.

''क्या हुआ, डाक्टर?'' शेखर ने व्यग्र स्वर में पूछा.

''जो होना था, वह पहले ही हो चुका है.'' डाक्टर सुरेंद्रनाथ तीखे स्वर में बोले.

''आप की बात ठीक है, डाक्टर.'' शेखर के कुछ कहने से पहले ही भगवती प्रसाद बोले. ''सवाल यह उठता है कि अब क्या हो सकता है?''

डाक्टर वहीं गलियारे में ही रुक गए. उन्होंने एक भरपूर नजर सब पर डाली.

फिर वह सपाट स्वर में बोले, ''अब कुछ नहीं हो सकता.''

''ऐसा न कहिए डाक्टर.'' शेखर रुंधे गले से बोला.

''तो क्या कहूं? झूठ बोलूं और इलाज के नाम पर रुपए ऐंठता रहूं.'' एकाएक डाक्टर बहुत ही तीखे स्वर में बोले, ''जब बच्चे का खयाल रखा जाना चाहिए, तब तो आप लोग खयाल रखते नहीं और जब कोई गड़बड़ हो जाती है, तब चाहते हैं कि डाक्टर 'जादू' के जोर से उसे ठीक कर दे.''

''मैं कुछ समझा नहीं, बच्चे के जन्म से पहले हम उस का क्या खयाल रख सकते थे?''

''आप बच्चे की मां का खयाल रख सकते थे,'' डाक्टर गंभीर स्वर में बोले.

''किसी अंग की खराबी के साथ जब बच्चे का जन्म होता है, तो ऐसे केसों में ज्यादातर यही होता है कि मां बच्चे के गर्भ में पड़ने से ले कर उस के जन्म तक मानसिक रूप से असंतुलित सा जीवन गुजारती है या फिर कोई नशा करती है. बच्चे का खयाल किए बिना सिगरेट पीती है. यहां तक कि कुछ औरतें शराब तक पीती हैं. अकसर होता यह है कि अपने पति की हरकतों के कारण कुछ औरतों का मानसिक संतुलन हमेशा गड़बड़ाया रहता है, जिस का सीधा असर बच्चे पर पड़ता है.''

''मैं समझ रहा हूं, डाक्टर.'' शेखर धीमे स्वर में बोला, ''आप ने जो कहा है, उस का एकएक शब्द समझ रहा हूं. अपने आप को बरी करने के लिए नहीं, परंतु आप की जानकारी के लिए बता दूं कि इस के लिए जिम्मेदार मैं नहीं, सिर्फ उस की मां है. मैं ने उसे कई बार समझाया था, परंतु वह कभी न समझी.''

इतना कह कर शेखर वहां रुका नहीं, लंबे डग भरता हुआ वहां से निकल गया.

आज तीसरा दिन था. परंतु शेखर पहले दिन जो एक बार गया तो पलट कर नर्सिंग होम नहीं आया. बस घर में अपने कमरे में पड़ा रहा. जाने कैसेकैसे खयालों के तानेबाने बुनता रहा.

फिर अचानक बैठेबैठे जाने क्या खयाल आया कि उस की आंखों में एक अजीब सी चमक उभर आई. ऐसा लगा, जैसे अभीअभी जो विचार उस के दिमाग के तारों को छेड़ कर गया था, उस ने उसे काफी सुकून पहुंचाया है.

थोड़ी ही देर बाद शेखर डाक्टर अंजना के कक्ष में बैठा था.

''कहिए, कैसे आना हुआ.'' डाक्टर बोलीं.

''मैं ने कुछ सोचा है.'' शेखर धीरे से बोला.

''किस मामले में?''

''अपने बेटे के इलाज के मामले में.''

''लेकिन उस का...''

''यही कहेंगी न कि उस का इलाज संभव नहीं है?''

''हां.''

''इसी लिए तो मैं ने सोचा है. पूरी गंभीरता से सोचा है.''

"ऐसा क्या सोचा है, आप ने?"

"उसे मार डालिए." शेखर फुसफुसाया.

"जी?" डाक्टर अंजना ऐसे बोलीं, जैसे शेखर की बात समझ न सकी हों.

"मैं ने कहा, खत्म कर दीजिए उसे."

"शेखर" डाक्टर अंजना तीव्र स्वर में बोलीं, "आप पागल तो नहीं हो गए हैं, जो एक डाक्टर को ऐसी बात कह रहे हैं?"

"नहीं, मैं पागल नहीं हुआ हूं. वह जिंदा रह कर करेगा क्या? जीवन भर एक कुर्सी के सहारे अपने जिस्म को घसीटने के सिवाय वह कर क्या सकेगा? घायल कुत्ते की तरह इधरउधर डोलता रहेगा. नहीं चाहिए मुझे ऐसी औलाद. इस से तो मैं बेऔलाद अच्छा." शेखर उत्तेजित स्वर में बोला.

"आप समझदार इनसान हो कर भी ऐसी बातें कर रहे हैं?"

"हां, तभी तो ऐसी बातें कर रहा हूं. सोचिए डाक्टर, जरा गंभीरता से सोचिए. इस बच्चे के होने या न होने का क्या लाभ है?" शेखर डाक्टर को समझाने वाली मुद्रा में बोला, "यह अपंग बच्चा इस दुनिया में रह कर किस का भला करेगा. यह न अपना कुछ भला कर पाएगा और न किसी दूसरे का. जब तक जीएगा, दूसरों के सहारे जिंदगी गुजारेगा. ऐसे में इस के जीने का क्या अर्थ है?"

"इसे भी जीने का पूरा अधिकार है." डाक्टर अंजना उत्तेजित स्वर में बोलीं, "इसे भी जीने का उतना ही अधिकार है, जितना कि आप को और मुझे. अपंगों के पैदा होते ही मार डालने की परंपरा आप के घर में होगी, परंतु जब डाक्टरी पढ़ाई गई थी, तब मुझे जीवन देना सिखाया गया था, लेना नहीं. सिर्फ जीवन दे सकती हूं, ले नहीं सकती. समझे आप?"

"मैं आप को इस काम की पूरीपूरी कीमत दूंगा."

"शेखर," डाक्टर अंजना बहुत ही गरम स्वर में बोलीं, "आप अभी और इसी वक्त इस कमरे से बाहर निकल जाइए, वरना एक डाक्टर को हत्या करने के लिए उकसाने के जुर्म में मैं आप को गिरफ्तार करवा दूंगी."

"मुझे नहीं मालूम था कि डाक्टर भी दिल से सोचते हैं, दिमाग से नहीं." शेखर उदास स्वर में बोला, "आप यदि यह सोच रही हैं कि एक अपंग को मरवा कर मैं कोई अपराध कर रहा हूं तो आप सरासर गलत सोच रही हैं. वैसे मैडम, मेरे एक सवाल का जवाब देना चाहेंगी आप?"

"इच्छा तो नहीं, पर जानना चाहती हूं कि आप के विकृत दिमाग में अभी और क्याक्या है?"

"मैडम, कल यह बच्चा जवान होगा और अपनेआप को पहिएदार कुर्सी पर पाएगा तब यदि उस ने यह सवाल कर दिया कि जब मैं जन्म से ही अपंग था तो आप ने मुझे मार क्यों नहीं डाला, मुझे जिंदा क्यों रखा? तब मैं उसे क्या जवाब दूंगा?"

"तब उसे कह दीजिएगा कि जो आप नहीं कर सके, अब वह खुद कर ले. परंतु ऐसी किसी कल्पना से आप को किसी का जीवन छीन लेने का कोई अधिकार नहीं मिलता. अब मेहरबानी कर के यहां से चले ही जाइए."

शेखर, शिखा से मिले बिना ही वापस घर चले जाना चाहता था, परंतु वह ऐसा न कर सका.

क्रमशः

सरिता के विरामचिह्न व अंक

सरिता व अन्य सहयोगी पत्रिकाओं में जो अंक प्रयोग में लाए जाते हैं वे अंगरेजी के नहीं बल्कि हिंदी के ही अंतर्राष्ट्रीय रूप वाले अंक हैं और संसार की सभी प्रमुख भाषाओं व अधिकांश भारतीय भाषाओं में उन का प्रयोग होता है. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी में इन्हीं के प्रयोग का प्रावधान है.

इन अंकों का प्रयोग उसी प्रकार आवश्यक है, जिस प्रकार समय नापने के लिए पल, घड़ी के बजाए सेकेंड, मिनठ और घंटे: तिथि, चैत्र, वैसाख और संवत की जगह तारीख, जनवरी, फरवरी और ग्रिगोरी सन: दूरी के लिए अंगुल, गिरह, गज और कोस की जगह मिलीमीटर, सेंटीमीटर और किलोमीटर, वजन या भार के लिए रत्ती, माशा, तोला, छटांक, सेर व मन के बजाए ग्राम और किलोग्राम.

आज के मशीनी व कंप्यूटर युग में अंकों के इस स्वरूप के बिना काम नहीं चल सकता और कंप्यूटर के बिना किसी देश या जाति की प्रगति नहीं हो सकती. इस प्रकार इन अंकों का प्रयोग अंगरेजियत या साहबी का प्रदर्शन नहीं है, हिंदी भाषा को प्रगति देने और इसे एक आधुनिक, सशक्त, अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाने के लिए एक कदम है.

सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. इस से जगह बचती है और यह सुंदर भी लगती है. कहा जाता है कि यह विदेशी है. पर वास्तविकता यह है कि हिंदी में वर्तमान में प्रयोग किए जाने वाले सभी विरामचिह्न विदेशी हैं—बिंदु को छोड़ कर. , : ; — - '' " ! इत्यादि सभी गैर हिंदी हैं, जब कि बिंदु अनुस्वार के रूप में और ड़ ढ़ के नीचे लग कर पूर्ण रूप से विशुद्ध हिंदी का है. जब अन्य विरामचिह्न बाहर से लिए जा सकते हैं तो शुद्ध देशी बिंदु ने क्या गुनाह किया है?

हिंदी लिपि को अधिक सरल, व्यावहारिक व सारे भारत में सर्वमान्य बनाने के लिए इस में अभी कई परिवर्तन आवश्यक हैं—जैसे छोटी इ जिस के कारण लिखने, टाइप करने व छपाई करने के प्रवाह में बहुत बाधा पड़ती है. संयुक्त अक्षर के साथ तो इसे पढ़ना भी कठिन होता है. इस का स्थान भी अक्षर के दाईं ओर होना चाहिए.

इसी प्रकार शिरोरेखा का प्रश्न है. जब तक सारी लिखाई हाथ से होती थी, तब तक तो यह ठीक था—जैसे रस्सी बांध कर कपड़े लटका दिए. पर अब इस शिरोरेखा के कारण हिंदी के अक्षरों के (जिस में अंगरेजी और संसार की लगभग सभी प्रमुख भाषाएं लिखी जाती हैं) हजारों रूप (टाइप फेस) हैं, हिंदी के कठिनाई से चार या पांच.

आज संसार राकेट की गति से आगे बढ़ रहा है. आप बैलगाड़ी का पहिया पकड़े बैठे रह कर जीवित नहीं रह सकते.

यदि हिंदी वाले अपनी पुरानी लीक व रूढि से हटने को तैयार नहीं होंगे तो हिंदी के शत्रु ही साबित होंगे. ●

आखिर कब तक

कहानी • विनी जावेद

कैनेडियन एयर लाइंस का बोइंग विमान मांट्रियल के डोरवेल एयरपोर्ट से उड़ान भरने के लिए 'रनवे' पर तेजी से दौड़ता जा रहा था और शंकर के विचार उसी गति से पीछे की ओर दौड़ रहे थे.

10 साल बीत गए, पर कल की ही बात लगती है, जब वह दिल्ली से मांट्रियल आया था, काम की तलाश में. उस के घर में कोई भी ऐसा नहीं था, जिस ने उस के इस फैसले का स्वागत किया हो. अपनी लंबी बेरोजगारी के कारण उस ने यह निर्णय लिया था. हालांकि मन में बहुत सारी शंकाएं थीं, परदेश की सैकड़ों कहानियां थीं और साथ ही अकेलेपन का एहसास.

पर आत्मविश्वास से भरा शंकर ऐसी ही एक उड़ान से इसी रनवे से होता हुआ मांट्रियल पहुंच गया था. उस दिन उस के पास अपने नाम, पासपोर्ट और थोड़े से पैसों के सिवा अगर कुछ था तो कुछ कर गुजरने की चाह और इसी चाह ने उसे 16 घंटे की उड़ान की थकान का एहसास भी न होने दिया.

एयरपोर्ट बस से उतर कर वह पैदल ही अपना एकमात्र सूटकेस हाथ में ले कर परदेश में अपने अस्थायी घर वाई.एम.सी.ए. की खोज में चल पड़ा था.

दूसरे दिन वह अपनी उस मंजिल की खोज में चल पड़ा जिसे वह खुद नहीं जानता था. शुरूशुरू में वह कोई भी काम करने के लिए तैयार था. इसी उधेड़बुन में वह न जाने कितनी देर चलता रहा. उस के विचारों का सिलसिला तब टूटा, जब वह किसी से टकरा गया और बेसाख्ता उस के मुंह से निकल गया, "माफ कीजिएगा."

अभी वह अपनी मूर्खता पर हंसने ही जा रहा था कि यहां 'माफ कीजिएगा' समझने वाला कौन है कि स्नेहपूर्वक कहे गए शब्द 'कोई बात नहीं' सुन कर चौंक पड़ा.

उस के सामने एक गोरा, लंबा और आकर्षक व्यक्ति मुसकराते हुए उस की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ा रहा था.

"मैं अनवर हूं, यहां के बैंक आफ कामर्स में सहायक मैनेजर हूं और आप?"

"मैं शंकर हूं. कल ही दिल्ली से यहां पहुंचा हूं."

"ओह, तो आप यहां के लिए नए हैं. क्या किसी खास काम से कहीं जा रहे हैं? आइए, मैं आप को आप की मंजिल तक पहुंचा देता हूं?"

'मंजिल?' शंकर मन ही मन मुसकराया और शब्द स्वयं ही उस के विचारों का रूप ले कर उस की जबान पर आ गए, "काश, मेरी कोई मंजिल होती."

अनवर ने उस का हाथ थाम लिया और बोला, "लगता है, आप बहुत परेशान हैं. अगर आप जल्दी में न हों तो मेरे साथ चलिए. मुझे थोड़ी खरीदारी करनी है. फिर घर चलेंगे. मेरी पत्नी और बेटी आप से मिल कर बहुत खुश होंगे."

अनवर के प्यार और अपनेपन के प्रभाव से बंध कर शंकर कब उस के साथ खिचता चला गया, उसे पता ही न चला. अनवर खरीदारी भी करता रहा और शंकर को मांट्रियल शहर भी दिखाता रहा.

अनवर की गाड़ी जैसे ही उस के घर के सामने रुकी, उस की प्यारी सी बेटी तरन्नुम 'अब्बा आ गए, अब्बा आ गए' कहती उस के पैरों से लिपट गई.

उस दिन शंकर अनवर के घर से रात का खाना खा कर ही निकल सका. अनवर सुरैया और तरन्नुम के स्नेह ने कुछ ही देर में उसे सब भुला दिया. शंकर को लग रहा था, जैसे वह अपने घर में बैठा ठहाके लगा रहा हो. अनवर उस से दिल्ली के बारे में पूछता रहा और उसी बीच शंकर को पता चला कि अनवर का परिवार पुरानी दिल्ली में 'छत्ता नवाब साहब' महल्ले में रहता था, जहां उन का बहुत बड़ा हवेलीनुमा घर था.

पर 1947 के देश विभाजन ने अनवर के परिवार को घर से बेघर कर दिया और वे लोग शरणार्थी बन कर पाकिस्तान चले गए. उस समय अनवर छोटा था, पर आज भी उसे सब कुछ ऐसे याद था, जैसे कल की बात हो.

पाकिस्तान में अनवर के पिता को काफी दौड़धूप के बाद छोटी सी नौकरी मिली और कई साल शरणार्थी शिविर में बिताने के बाद वे लोग एक छोटा सा घर बना सके थे.

फिर अनवर अपनी मेहनत और लगन से एम.काम. कर के यहां आ पहुंचा. उस के भेजे पैसों से उस के पिता और छोटे भाई ने अच्छा कारोबार जमा लिया. अब कराची में उन की बिजली के सामान की खूब बड़ी सी दुकान, 'बाथ आइलैंड' कालोनी में शानदार मकान, गाड़ी वगैरह सब कुछ है.

शंकर ने भी अपने और अपने घर वालों के बारे में बताया. उसे विदा करते हुए अनवर ने उस से वादा किया कि 2-4 दिनों के अंदर ही उसे कोई न कोई काम जरूर दिला देगा.

2 दिन बाद अनवर ने शंकर को फोन किया कि कल वह उस के दफ्तर में आ जाए. उस के लिए खुशखबरी है.

दूसरे दिन सवेरे शंकर अनवर के दफ्तर पहुंचा तो वह उसी का इंतजार कर रहा था. अनवर ने हंसते हुए उस का स्वागत किया और उसे साथ ले कर बाहर निकल पड़ा. 'ट्यूबस्टेशन' पर ट्रेन का इंतजार करते हुए अनवर ने शंकर को बताया कि उस के एक परिचित ने शंकर के लिए काम का इंतजाम किया है और वह उसे वहीं ले जा रहा है.

3-4 स्टेशनों के बाद एक बड़े खूबसूरत से स्टेशन पर अनवर उसे ले कर उतर पड़ा और चलतेचलते समझाने लगा कि रोज काम पर आते समय वह मेरी ट्रेन पकड़ कर यहां पैलेस डेस कांग्रेस स्टेशन पर उतर सकता है.

चलती सीढ़ी से ऊपर आने पर एक बहुत ही शानदार कई मंजिला इमारत की ओर इशारा करते हुए अनवर ने बताया कि यही कांग्रेस सेंटर है, जिसे फ्रेंच में 'पैलेस डेस कांग्रेस' कहते हैं. अनवर ने उसे बताया कि मांट्रियल क्यूबेक प्रदेश में है, जो फ्रेंच बहुल इलाका है. इसलिए यहां पर अधिकतर फ्रेंच शब्दों का प्रयोग होता है.

इसी तरह बातें करतेकरते वे एक मोड़ घूम कर कांग्रेस सेंटर में पीछे एक बड़ी दुकान 'स्टीकस म्यूजिक स्टोर्स' पर पहुंच गए. यह वाद्ययंत्रों की एक बहुत बड़ी दुकान थी. मैनेजर माइकल फरेरा अनवर को बैठने को कह कर शंकर को उस का काउंटर दिखाने ले गया.

कुछ ही देर में शंकर को सब समझा कर फरेरा ने अनवर को भी उसी के काउंटर पर बुला कर कहा, ''अनवर, मैं चाहता हूं कि शंकर के पहले ग्राहक आप ही बनें.''

अनवर ने हंसते हुए शंकर से एक 'म्यूजिक सिंथेसाइजर' पैक करने के लिए कहा. जब शंकर ने पैकेट अनवर के हाथ में 'मैर्क्सी' (फ्रेंच में धन्यवाद) कहते हुए दिया तो सभी खिलखिला कर हंस पड़े.

उस दिन के बाद से शंकर ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा. अनवर के बैंक में होने की वजह से हर कदम पर उसे बहुत मदद मिली. वह 6 दिन तक जीतोड़ मेहनत करता और इतवार का पूरा दिन अनवर के परिवार के साथ गुजारता. वे ईद, बकरीद, होली, दीवाली साथसाथ मनाते और एकदूसरे के सुखदुख बांट लेते. देखने वाले यही समझते कि सब एक ही परिवार के सदस्य हैं.

देखते ही देखते दिन महीनों में और महीनें वर्षों में बदलते गए. एक दिन शंकर ने अनवर को एक निमंत्रण पत्र दे कर चौंका दिया. निमंत्रण था, मांट्रियल के सब से फैशनेबुल और महंगे मार्केट सेंट कैथरीन में 'इंडिया स्टोर्स' के उद्घाटन का. खूब धूमधाम से उद्घाटन हुआ. अनवर का सारा परिवार हर पल उस के साथ रहा. कुछ ही समय बाद 'इंडिया स्टोर्स' की शाखाएं टोरेंटो, अलबर्टा, औंटेरियो लावल से होती हुई सारे कनाडा में फैल गईं.

एक दिन शंकर ने भावुक हो कर अनवर से कहा, ''अनवर भाई, यह सब कुछ आप की मदद से ही हुआ है. मैं नहीं जानता कि आप के एहसानों का बदला मैं कैसे चुकाऊंगा?''

अनवर ने उसे गले लगा कर कहा, ''एहसान पराए लोग करते हैं. अपने तो बस साथ देते हैं और साथ का बदला तो बस

हवाई जहाज से उतर कर शंकर ने जैसे ही टैक्सी ली तो ड्राइवर ने उसे बताया कि शहर में दंगे हो रहे हैं. शंकर सोच में पड़ गया कि जब मैं और अनवर विदेश में भाइयों की तरह रह सकते हैं तो दोनों संप्रदायों के लोग अपने देश में मिलजुलकर क्यों नहीं रह सकते?

चांदनी चौक का नाम सुनते ही ड्राइवर ने कहा, "नहीं साहब, मैं ने उधर नहीं जाना. उस इलाके में कर्फ्यू लगा हुआ है."

साथ होता है. हम लोग हमेशा इसी तरह साथसाथ हंसीखुशी रहें."

एक दिन अनवर दफ्तर से घर लौट रहा था कि उस की कार का एक्सीडेंट हो गया. उसे जब होश आया तो वह मांट्रियल के सब से बड़े अस्पताल में था. आंख खुलते ही उसे जो चेहरे दिखाई पड़े, वे शंकर, सुरैया और तरन्नुम के थे.

शंकर उस से लिपट कर सिसक पड़ा था, "अनवर भाई, यह क्या हो गया?" पर जल्दी ही उस ने खुद को संभाल लिया और हंसते हुए बोला, "क्या यार जरा सी चोट आई और 2 दिन बेहोश पड़े रहे."

फिर एक महीना कैसे बीत गया, पता ही नहीं चला. शंकर ज्यादातर उस के पास रहता और अपने हाथों से उस की सेवा करता. हस्पताल के डाक्टर ने एक दिन कहा था कि तुम्हारे भाई जैसे सेवाभावी इनसान दुनिया में बहुत कम होते हैं. सुन कर अनवर और शंकर हंस पड़े थे.

घर आ कर शंकर को कुछ याद नहीं रहा सिवाय शब्द 'भाई' के, सच ही तो कहा था डाक्टर ने. शायद सगे भाईयों में भी इतना प्यार, इतना अपनापन नहीं हो पाता है. उस रात शंकर सारी रात सोचता रहा कि अनवर के परिवार को अपना देश छोड़ कर शरणार्थी बनना पड़ा. धर्म और राजनीति के नाम पर इनसानियत, प्यार और मुहब्बत को बांट दिया गया. फिर भी अनवर के मन में भारतीयों के लिए या भारत के लिए कोई गुस्सा या नफरत नहीं है. क्या जरूरत थी कि एक भारतीय की वह इतनी मदद करता, जबकि भारत से

जुड़ी उस की यादें कितनी तीखी और दर्दनाक थीं.

दूसरे दिन सवेरे उस ने अनवर से पूछ ही लिया था. थोड़ी देर तो वह चुप बैठा रहा, मानो अपने विचारों को एकत्र कर रहा हो. फिर बोला, "शंकर, जब हम भाग कर कराची पहुंचे तो जिन 'धर्म भाईयों' के सहारे हम ने अपना वतन छोड़ा था, उन्होंने हमें 'मुहाजिर' का नाम दिया और अपनापन तो दूर, उन्होंने हमें परेशान ही किया. एक तो हम ऐसे ही लुट चुके थे, ऊपर से पाकिस्तानियों का व्यवहार देख कर हम बिलकुल ही टूट गए. अपनापराया, देश या मजहब कुछ भी सच नहीं है. सच है तो सिर्फ इनसानियत, प्यार, अपनापन. जिस के लिए मैं तरसा हूं. बस वही बांटने की कोशिश करता हूं सब को."

"कृपया ध्यान दें. कुछ ही पलों में हमारा जहाज नई दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने जा रहा है. सूचना के अनुसार, वहां का मौसम साफ है और भारतीय समय के अनुसार हम रात के 2.45 पर वहां उतरेंगे. आप से अनुरोध है कि अपनीअपनी पेटियां बांध लें और कृपया धूम्रपान न करें."

इस उद्घोषणा ने शंकर के विचारों का तानाबाना तोड़ दिया और अब एकएक पल काटना उस के लिए मुशकिल हो रहा था. वह इस बार बिना किसी पूर्व सूचना के भारत आ रहा था और इसीलिए रोमांच और खुशी ज्यादा थी.

उस ने हिसाब लगाया कि कस्टम इत्यादि से निबटतेनिबटते 4 बज जाएंगे और जब वह टैक्सी से घर पहुंचेगा तो 5.30 हो रहे होंगे. बाबूजी बैठक में चाय का प्याला ले कर अखबार देख रहे होंगे. जब वह चुपचाप घर पहुंच कर उन के पैर छुएगा तो सारे घर में खुशी की लहर दौड़ जाएगी. बड़े भैया, भाभी और छोटी बहन रंजना सभी खुशी से झूम उठेंगे और मां तो बस रो ही पड़ेगी खुशी से.

विचारों की इन्हीं लहरों में डूबतेउतरते शंकर सारी औपचारिकताएं पूरी कर के एयरपोर्ट से बाहर निकला और सामने खड़ी पहली टैक्सी के ड्राइवर को सामान रखने का इशारा करते हुए घर का पता बताने लगा.

'चांदनी चौक' का नाम सुनते ही ड्राइवर के सामान रखते हाथ रुक गए.

"नहीं साहब, मैं ने उधर नहीं जाना. आप को मालूम नहीं, उस इलाके में शाम 6 बजे से सवेरे 6 बजे तक का कर्फ्यू लगा है. अरे साहब, कल भी 3 मारे गए. पर अभी 2 और कटेंगे, तब हिसाब बराबर..."

"साहब, आप का नाम क्या है?"

"शंकर."

"ओह, तब ठीक है. आप नहीं जानते, यहां कितना खूनखराबा हुआ है. इस बार जब से दंगे भड़के हैं. हमारे 5 आदमी मार दिए गए, 3 का बदला तो हो गया. अब 2 और मरें तब हिसाब पूरा हो. 1-2 दिन में ही हो जाएगा. बाकी इलाकों में तो हमारा ही पलड़ा भारी है."

शंकर को जैसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था. टैक्सी ड्राइवर कुछ बोलता जा रहा था और उस का सामान निकाल कर वापस ट्राली पर रखता जा रहा था.

"साहब, सवेरे तक इंतजार करो, फिर जाना," कहते हुए ड्राइवर दूसरे यात्री की तरफ बढ़ गया.

शंकर अपने ही देश में अपने इस स्वागत के लिए तैयार नहीं था. आज वह अपने घर में स्वतंत्रतापूर्वक चलफिर नहीं सकता था. यहां के शंकर और अनवर एकदूसरे के खून के प्यासे हैं. दोनों को ही लाशों का हिसाब बराबर करना है. पर यही शंकर और अनवर परदेश में इनसानियत, भाईचारे और मुहब्बत की डोर में कैसे बंधे हुए थे?

यदि परदेश में अनवर और शंकर एक ही डाली के दो फूल हैं तो अपने वतन में कांटे बन कर एकदूसरे को कब तक लहूलुहान करते रहेंगे? आखिर कब तक?●

इधर उधर

समाजवादी जनता पार्टी का वैधानिक रूप

कांग्रेस के सहयोग से 6 महीनों के लिए प्रधान मंत्री की कुरसी पर आरूढ़ रहे चंद्रशेखर कांग्रेस की आर्थिक नीतियों से इतने दुखी थे कि लोकसभा में शक्ति परीक्षण के ठीक 2 दिन पूर्व वाराणसी में जोरजोर से घोषणा कर दी कि उन की 5 सदस्यीय पार्टी शक्ति परीक्षण में सरकार के खिलाफ मतदान करेगी. परंतु दिल्ली पहुंचते ही उन की जनता पार्टी के वैधानिक अध्यक्ष डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी के सामने नहीं चल सकी और पार्टी को नरसिंह राव सरकार के बचाव के लिए मतदान के समय सदन से अनुपस्थित रहना कानूनी मजबूरी बन गई.

हुआ यों कि जनता दल से अलग हो कर चंद्रशेखर ने समाजवादी जनता पार्टी का गठन तो कर लिया लेकिन चुनाव जनता पार्टी के टिकट पर लड़ा था. अतः कानूनी रूप से समाजवादी जनता पार्टी के चंद्रशेखर सहित पांचों लोकसभा सदस्य जनता पार्टी के हैं. और सदन में उसे इसी आधार पर मान्यता मिली हुई है. अतः वैधानिक रूप से डा. स्वामी ही पार्टी के अध्यक्ष हैं जो इस समय नरसिंह राव सरकार का समर्थन करते हैं. अतः पार्टी के लिए अध्यक्ष के निर्देशों की अवहेलना करना कठिन हो गया.

चंद्रशेखर ने डा. स्वामी की सत्ता स्वीकार कर ली और सदन में सरकार का विरोध करने के बजाय मतदान के समय अनुपस्थित रहना ही बेहतर समझा.

ज्ञानी जैलसिंह का सिक्का

भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह की इन दिनों रेसकोर्स स्थित प्रधान मंत्री निवास पर आमदरफ्त काफी बढ़ गई है. आमदरफ्त में यह तेजी पंजाब चुनाव के समय आई थी जो अब भी कायम है.

कहा जाता है कि ज्ञानीजी इन दिनों प्रधान मंत्री के अनौपचारिक राजनीतिक सलाहकार की भूमिका अदा कर रहे हैं. पंजाब चुनाव के समय लोकसभा और विधानसभा के उम्मीदवारों के चयन में इन की भूमिका रही है. अब वह पंजाब समस्या के समाधान की दिशा में सरकार के एकमुस्त पैकेज के बारे में भी सलाहमशविरा देने का काम कर रहे हैं. बताने वाले कहते हैं कि प्रधान मंत्री उन की बातों को संजीदगी के साथ सुनते हैं.

बूटा सिंह के गृह मंत्री के कार्यकाल में राष्ट्रपति होने के बाद भी तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने उन्हें पंजाब की राजनीति से अलगथलग रखा था परंतु नरसिंह राव के प्रधान मंत्री बनने के बाद उन का राजनीतिक सिक्का चल पड़ा है.

वैसे सोनिया गांधी इन दिनों पूरी तौर से राजीव गांधी की सचित्र जीवनी तैयार करने में व्यस्त हैं और उन्होंने कांग्रेसी नेताओं से मिलनाजुलना बंद कर रखा है, फिर भी उन की मुलाकातें फाउंडेशन के कामकाज के सिलसिले में नरसिंह राव से होती रहती हैं.

जवाहर भवन बनाम राजीव भवन

संसद भवन के निकट रायसीना रोड पर कांग्रेस का प्रस्तावित मुख्यालय जवाहर भवन धीरेधीरे राजीव भवन के रूप में परिवर्तित हो रहा है. अब तक भवन की दूसरी और तीसरी मंजिलें ही राजीव फाउंडेशन के पास थीं, अब पहली मंजिल भी राजीव इंस्टीट्यूट को प्रदान कर दी गई है. यह भवन अंततः सोनिया के मुख्यालय के रूप में काम करेगा.

जवाहर भवन का निर्माण कांग्रेस के शताब्दी वर्ष में राजीव गांधी की पहल पर शुरू कराया गया था. प्रधान मंत्री एवं पार्टी अध्यक्ष पी.वी. नरसिंह राव ने सोनिया गांधी को स्पष्ट संकेत दे दिया है कि जवाहर भवन पूर्ण रूप से राजीव गांधी की स्मृति के लिए समर्पित है और इसे कांग्रेस का मुख्यालय बनाए जाने का कोई इरादा नहीं है.

उत्तर प्रदेश के कांग्रेसी नेताओं की दुर्गति

इन दिनों उत्तर प्रदेश के सभी छोटेबड़े कांग्रेसी नेताओं की हालत काफी पतली है. पिछले 45 वर्षों में यह पहला मौका है कि केंद्र में इन नेताओं को पूछने वाला कोई नहीं है. राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री दोनों ही दक्षिण भारत के हैं. केंद्रीय मंत्रिपरिषद में भी उत्तर प्रदेश का कोई प्रतिनिधित्व नहीं है. प्रधान मंत्री ने जिन जितेंद्र प्रसाद को अपना राजनीतिक सलाहकार बना रखा है, उन का प्रदेश की राजनीति में कोई वजूद नहीं है.

उत्तर प्रदेश के अनेक पराजित नेता अपने राजनीतिक पुनर्वास की तलाश में राजधानी में डेरा डाले दिखाई पड़ते हैं, परंतु उन्हें यह आभास होने लगा है कि उत्तर प्रदेश से सत्ता का केंद्र खिसकने के बाद उन की स्थिति अनाथ बच्चों जैसी हो गई है. फिर भी महासमिति के तिरुपति अधिवेशन को देखते हुए उन में कुछ हौसला बढ़ा है और वे कार्यसमिति और संसदीय बोर्ड के चयन में अपनी भूमिका को प्रभावी बनाने के लिए नए जुगाड़ में लग गए हैं.

उन की निराशा इस बात से बढ़ी है कि अर्जुन सिंह जैसे मध्य प्रदेश के नेता उत्तर प्रदेश को वीरविहीन मान कर प्रधान मंत्री पद की आकांक्षा में शिकारगाह के रूप में उपयोग करने से नहीं चूक रहे हैं. है न दुर्गति राज्य कांग्रेस की.

भाजपा के साधु सांसद

लोकसभा में भारतीय जनता पार्टी के आधा दर्जन सांसद, जिन्होंने पिछले चुनाव के बाद गेरुआ वस्त्रों के साथ सदस्यता ग्रहण की

थी, कुछ अनुभवों के बाद उन्हें छोड़ कर श्वेत वस्त्रों पर उतर आए हैं. उन में से कइयों ने पाजामा अपना लिया है.

लोकसभा सदस्य साध्वी उमा भारती ने अब गेरुआ वस्त्रों के बजाय सलवारकुरता पहनना शुरू कर दिया है. साड़ी पहनना उन्होंने पहले ही शुरू कर दिया था.

वेश परिवर्तन के बारे में पूछे जाने पर इन साधुसंतों ने बताया कि गेरुआ वेश के कारण उन्हें लोग सदन की कारर्वाई में गंभीरता से नहीं लेते हैं और वे पूरे सदन से अलग ही दिखाई पड़ते हैं. लगता है कि इस बारे में उन्हें पार्टी नेताओं की ओर से भी सुझाव दिया गया था.

सीताराम केसरी का घटता असर

कांग्रेस पार्टी के कोषाध्यक्ष एवं कल्याण मंत्री सीताराम केसरी के लिए कुछ खराब दिन शुरू हो गए हैं. उन के बजाय उन की कनिष्ठ कल्याण मंत्री कमला प्रभारी का मंत्रालय में दबदबा बढ़ रहा है. प्रधान मंत्री तक उन की पहुंच बन गई है तथा प्रधान मंत्री कार्यालय उन को तरजीह देने लगा है.

उधर कांग्रेस संगठन में भी उन का असर घटता नजर आ रहा है. पार्टी के तिरुपति अधिवेशन के लिए नए कोषाध्यक्ष की तलाश शुरू है. इस पद के लिए रामेश्वर ठाकुर और मुरली देवड़ा की चर्चा शुरू हो गई है.

केसरीजी दशकों से कोषाध्यक्ष के पद पर आसीन हैं. लोग यही पूछा करते थे कि उन में ऐसा कौन सा गुण है कि उन्हें बदला नहीं जा सकता. लेकिन अब लगता है कि उन के बदलाव की बारी आ गई है.

कांग्रेसी बताते हैं कि प्रधान मंत्री केसरी के मंडल समर्थक तौरतरीकों से प्रसन्न नहीं हैं और उन्हें लगता है कि केसरी ने कल्याण मंत्रालय को मंडल मंत्रालय बना रखा है.

गृह मंत्री शंकरराव चह्वाण का महाराष्ट्रवाद

गृह मंत्री शंकरराव चह्वाण की निगाहें केंद्र में वरिष्ठ मंत्री होने के बाद भी महाराष्ट्र और मराठा बिरादरी के आसपास घूमती रहती है.

नरसिंह राव सरकार में गृह मंत्री बनने के बाद उन्होंने मौका मिलते ही सब से पहले महाराष्ट्र के अपने विश्वस्त अधिकारी माधव गोडबोले को गृह सचिव बनवाया परंतु इस से काम पूरा न होते देख कर एम.के. नारायण के रिटायर होते ही महाराष्ट्र के एक दूसरे अधिकारी वी.सी. वैद्य को इंटेलीजेंस ब्यूरो का प्रधान बनवा दिया.

इस सब के बावजूद उन्हें राजधानी दिल्ली में भी अपने किसी विश्वस्त अधिकारी की जरूरत थी. दिल्ली पुलिस कमिश्नर की जगह खाली हुई तो महाराष्ट्र केडर के आई.पी.एस. अधिकारी एम.बी. कौशल को ले आए. वह कभी गृह मंत्री के गृह जिले नांदेड़ के एस.पी. थे और उन के पुत्र अशोक चह्वाण के दोस्त रहे हैं. अब कौन कह सकता है कि चह्वाण साहब का गृह मंत्रालय पर पूरा नियंत्रण नहीं है.

—समदर्शी ●

पाठकों की समस्याएं

मैं 49 वर्षीय, एक सरकारी कर्मचारी हूं और 4 बच्चों का पिता हूं. समस्या यह है कि 4 माह पूर्व मेरी पत्नी का स्वर्गवास हो गया. मेरे 4 बच्चों में सब से बड़ी लड़की बी.ए. अंतिम वर्ष, दूसरी बी.ए. प्रथम वर्ष, लड़का 11 वीं एवं छोटी लड़की छठी कक्षा में पढ़ती है. घर में मां भी नहीं है. मेरा जीवन सूना हो गया है. कृपया मुझे उचित मार्ग सुझाएं?

पत्नी के न रहने से वास्तव में आप को परेशानी होती होगी. आप के पत्र का मकसद एकदम साफ नहीं है फिर भी आप ने शायद यह इशारा किया है कि आप क्या इस परिस्थिति में दूसरी शादी कर लें. हमारे विचार से अब दूसरी शादी करना ठीक नहीं होगा क्योंकि इतनी बड़ी आयु के बच्चे नई मां से तालमेल नहीं बिठा पाएंगे और तब हो सकता है आप और भी परेशान हो जाएं. आप को अपने बच्चों के भविष्य को बनाना है. आप की बड़ी बेटी काफी बड़ी हो चुकी है. एकदो वर्ष में आप को उस के विवाह की चिंता होगी. बच्चों के साथ मिल कर बैठने से, उन की समस्याएं सुलझाने से आप का ध्यान बंटेगा. सवाल रहा घर की देखरेख का तो आप की बेटियां घर व्यवस्था संभाल सकती हैं. समय बीततेबीतते घर का वातावरण भी ठीक हो जाएगा.

मैं गांव में रहता हूं और अपने ही गांव की एक लड़की से प्रेम करता हूं पर उस को देख कर ही बहुत ज्यादा घबराहट होती है, क्या करूं?

आपने पत्र में अपनी आयु के विषय में तो लिखा नहीं फिर भी यह सलाह आप को दी जा सकती है कि प्रेम के चक्कर में व्यर्थ ही पड़ कर दो जीवन तनावमय बना देंगे. प्रेम कोई ऐसा काम नहीं जिसे करना जरूरी हो. आप उसे देख कर घबरा जाते हैं, फिर भी प्रेम करना चाहते हैं. कुछ बात समझ में नहीं आई. बेहतर यही है इस चक्कर से ध्यान हटा कर अपना भविष्य बनाएं. याद रखिए, अच्छे भविष्य पर ही प्रेम की सार्थकता टिकी है.

मैं 22 वर्षीया दो बच्चों की मां हूं. छोटी उम्र में विवाह हुआ था. समस्या यह है कि पिछले एक वर्ष से मैं घर नहीं संभाल पा रही. मेरे पति भी इस वजह से परेशान हैं. कृपया बताएं गृहस्थी से तालमेल कैसे बिठाऊं?

दरअसल 17 वर्ष की आयु में आप की शादी हुई होगी जब आप गृहस्थी संभालने के लिए परिपक्व नहीं थीं. अब बच्चे हो जाने के बाद गृहस्थी का काम और भी बढ़ गया होगा. गृहस्थी का काम यदि आप पतिपत्नी आपस में सहयोग से करें तो समय भी अच्छा कटेगा और परेशानी भी छूमंतर हो जाएगी.

मेरी शादी हुए 3 वर्ष हो गए हैं. मैं एक 8 माह के पुत्र की मां हूं. मेरे पति मुझे कहीं ले कर नहीं जाते. पहले कहते थे कि मैं सुंदर हूं, कोई कुछ कर देगा. अब मेरा रंग दब जाने पर कहते हैं कि तुम्हें साथ ले जाने से मेरी बेइज्जती होगी. मैं इस व्यवहार से चिड़चिड़ी हो गई हूं. उन्हें अपशब्द कह देती हूं. फिर तो घर में तनाव हो जाता है. सास का मुंह भी फूल जाता है, पति का भी. वैसे मेरे साससमुर व पति बेहद अच्छे हैं, फिर भी ऐसा क्यों हो जाता है. मैं स्वयं शिक्षित हूं पर बेहद तनाव में रहती हूं, क्या करूं?

आप दरअसल बिना बात ही इतना तनाव झेल रही हैं. लगता है पुत्र हो जाने के बाद आप सजबन कर नहीं रहतीं, तभी पति चिढ़े रहते हैं. आमतौर पर ऐसा होता है. आप स्वयं अच्छी प्रकार से बनठन कर रहिए और पति से दोस्ती का व्यवहार रखिए, उन से प्रेम कीजिए, अपशब्द न बोलिए. कुछ दिन बाद वह स्वयं आप को घुमाने की पेशकश करेंगे.

मैं बी.ए. द्वितीय वर्ष का छात्र हूं. सहपाठिनी से प्रेम करता हूं और दोनों परिवार विवाह के लिए सहमत हैं. समस्या यह है कि लड़की के बाल कटे हैं जबकि मैं लंबे बाल पसंद करता हूं. लड़की कहती है कि मैं पहले फिल्म निर्देशक बनूं तब वह बाल लंबे करेगी. क्या उस से प्रेम करना छोड़ दूं या फिल्म निर्देशक या

निर्माता बनूं, सलाह दें.

दरअसल आप दोनों की बात एकदम बचकानी है. वास्तविक जीवन से इस का कोई लेनादेना नहीं है. आप दोनों ही नहीं जानते कि फिल्म निर्माता व निर्देशक क्या होते हैं. अभी आप दोनों अपरिपक्व हैं और जीवन की सच्चाइयों से अनभिज्ञ हैं. यह सब तभी तक है जब तक आप जीवन के संघर्ष में उतरते नहीं. फिलहाल आप उस के बालों पर और वह आप पर टिप्पणी न कर के पढ़ाई में ध्यान लगाएं. आप पढ़ कर कुछ बन गए फिर जिंदगी जीने का नजरिया ही बदला महसूस होगा.

मैं 30 वर्षीय विवाहित दो बच्चों की मां हूं. मैं अपने पति से बेहद प्यार करती हूं और कोई भी बात उन से नहीं छिपाती. समस्या पति के मित्र को ले कर है जो कि विवाहित और बच्चों का बाप है पर मेरी ओर आकर्षित है. उस ने कुछ आपत्तिजनक हरकतें भी की हैं. इस बात को मेरे पति भी जानते हैं. चूंकि वह मेरे पति का अच्छा मित्र है इसलिए मैं ने अपने पति से कह दिया है कि उसे कुछ न कहें. मैं उस मित्र की बात इसलिए हंस कर टाल जाती हूं कि कहीं उलझन न हो. पर शायद वह इसे मेरी सहमति समझता है. उस की पत्नी कुछ नहीं जानती. क्या करूं?

इस सारी समस्या को तूल आप के ही द्वारा दिया गया है बेशक यह अनचाहे अनजाने में हुआ हो. आप अभी यह नहीं समझ पा रही हैं कि यही बात एक दिन आप के जीवन को बरबाद कर देगी. अजीब बात है कि आप के पति यह जानते हैं और आप ने भी पति को उस मित्र से कुछ कहने को मना शायद इसलिए कर दिया कि कहीं उन की दोस्ती न टूट जाए. आप का यह फैसला ठीक नहीं था. यही बात आप के पति को कभी भी खटक सकती है. उस मित्र की बात पर भूल कर भी न हंसें, एकदम गंभीर बनी रहें और जरूरत पड़ने पर उसे करारी डांट लगा कर सबक भी सिखा दें. आप के हंसने को वह निश्चित रूप से आप की सहमति मान रहा है. आखिर आप उस पर इतनी कृपा क्यों कर रही हैं? अपने मन को टटोलिए और कभी भी इस छिछोरेपन को न अपनाइए. आप एक विवाहित जिम्मेदार महिला हैं. भविष्य में उस मित्र से बेरुखी का व्यवहार अपनाएं. आप के पति को भी यह ठीक ही लगेगा. उन की अच्छी मित्रता की सार्थकता तभी है जब वह आप से शालीनता से पेश आए. आप का दृढ़ व्यवहार ही सब समस्या सुलझा सकता है, वरना याद रखिए आप की तनिक भी ढील आप के जीवन में विष घोल देगी. यों भी पुरुष शंकालु प्रकृति के होते हैं. इसलिए संभल कर चलना आप के लिए जरूरी है.

मैं एक अविवाहित युवती हूं. कुछ माह बाद विवाह होने वाला है. समस्या यह है कि मेरी जन्मपत्री में लिखा है कि मेरे लिए मंगल का दोष है इसलिए मंगली लड़के से शादी होनी चाहिए. जबकि वह लड़का जिस से मेरी शादी हो रही है मंगली नहीं है. इस से कुछ अनिष्ट तो नहीं हो जाएगा, यही चिंता चैन नहीं लेने दे रही. क्या शादी से इनकार कर दूं? अगर लड़के वालों को पता चल गया कि मैं मंगली हूं तो क्या होगा, सलाह दें?

खेद का विषय है कि इतना पढ़ लिख कर भी हम अंधविश्वास का राग अलापते रहते हैं. पत्री के मिलान की बात कोई तर्कपूर्ण नहीं है. आप शायद जानती नहीं कि हमारे ही समाज में कई वरवधुओं की जन्मपत्रियां शतप्रतिशत मिलने के बाद भी उन के वैवाहिक जीवन नारकीय बने हुए हैं. इसलिए इस बात को दिमाग से निकाल कर अपने अच्छे स्वभाव से ससुराल वालों का हृदय जीतें. वैवाहिक जीवन की सफलता की सही मायनों में कुंजी भी यही है.

मैं 25 वर्षीय विवाहिता एक बच्ची की मां हूं. विवाह को 5 वर्ष हो गए हैं. समस्या यह है कि 3 साल से मेरे पति मुझ से नहीं बोल रहे. मेरे हाथ का खाना भी नहीं खाते. पूछती हूं तो चुप रह जाते हैं. क्या करूं?

हो सकता है आप के किसी व्यवहार या आप की किसी आदत से वह परेशान हों. आप अपना व्यवहार बदल कर देखिए. बेहतर यही होगा किसी विश्वसनीय रिश्तेदार को मध्यस्थ बना लें. कई बार ऐसा भी होता है कि बच्चा होने के बाद पत्नियां हरदम बच्चे में ही उलझी रहती हैं, जिस से पति उपेक्षित महसूस हो कर चिढ़ जाते हैं. इस समस्या का हल आप स्वयं ही कर सकती हैं.

– कंचन

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जासकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★★ बेटा

निर्माता : इंद्रकुमार और अशोक ठकरिया
निर्देशक : इंद्रकुमार
संगीत : आनंद मिलिंद
मुख्य कलाकार : अनिल कपूर, माधुरी दीक्षित, अरुणा ईरानी, अनुपम खेर और लक्ष्मीकांत बेर्डे.

अच्छी फिल्म बनाने के लिए ढेर सारे कलाकारों की जरूरत नहीं होती, गिनेचुने कलाकारों से ही यह काम हो सकता है, यह साबित कर दिखाया है इस फिल्म के निर्माताओं ने. 'बेटा' निस्संदेह एक अच्छी फिल्म है. दरअसल यह फिल्म मनोरंजन करने की नीयत से ही बनाई गई है. इसे हम षड्यंत्रों से भरी पारिवारिक फिल्म कह सकते हैं.

राजू (अनिल कपूर) की मां उसे जन्म देते ही मर जाती है. उस का पिता उस के लिए विमाता (अरुणा ईरानी) को लाता है. इस दूसरी मां की नजर राजू की जायदाद पर है जिसे उस की मां मरते वक्त राजू के नाम कर गई थी. वह राजू को गंवार बना देती है और अपने पति को पागल करार दे कर एक कोठरी में बंद कर देती है. बड़ा हो कर राजू मां का अंधभक्त बन जाता है. उस की शादी पढ़ीलिखी लड़की सरस्वती (माधुरी दीक्षित) से हो जाती है. सरस्वती को जब राजू की विमाता के षड्यंत्रों का पता चलता है तो वह राजू को इस चंगुल से छुड़ाने का बीड़ा उठाती है और अंततः राजू की विमाता को इस बात का एहसास करा देती है कि राजू उस का सौतेला बेटा तो है लेकिन अपने सगे बेटे से बढ़ कर है.

तकनीकी दृष्टि से यह फिल्म अच्छी बनी है. अच्छा गीतसंगीत कहीं भी बोर नहीं होने देता. हालांकि इस फिल्म में भी आम फिल्मों की तरह सभी फार्मूले मौजूद हैं लेकिन ये फार्मूले मुख्य विषय पर हावी नहीं हो पाए हैं.

फिल्म का निर्देशन कुछ हद तक अच्छा है. निर्देशक ने आधी फिल्म तो अनिल कपूर पर केंद्रित की है और आधी अरुणा ईरानी और माधुरी दीक्षित पर. उसे जब भी मौका मिला है उस ने अनिल कपूर की प्रतिभा को दिखा दिया है. साथ ही उस ने माधुरी दीक्षित की मनमोहक अदाओं से दर्शकों को लुभाया भी है. अरुणा ईरानी की खलनायकी अदा दिखा कर तो उस ने कमाल ही कर दिया है.

फिल्म के संवाद कमलेश पांडे ने लिखे हैं जिन्हें अच्छा कहा जा सकता है. संपादन भी कसा हुआ है. छायांकन भी काफी अच्छा है. लक्ष्मीकांत बेर्डे ने दर्शकों को काफी हंसाया है. आउटडोर शूटिंग देखने लायक है.

अभिनय की दृष्टि से अरुणा ईरानी नंबर एक पर है. माधुरी दीक्षित का काम भी तारीफ करने लायक है. अनुपम खेर

कामेडी दिखाने के चक्कर में फिसड्डी रह गया है. अन्य कलाकार साधारण हैं. अनिल कपूर के लिए अब भोलेभोले युवक की भूमिकाएं ही रह गई हैं. वह कोशिश तो करता है राज कपूर बनने की लेकिन बन नहीं सकता.

फिल्म के गीत समीर ने लिखे हैं जिन्हें आनंद मिलिंद ने अच्छी धुनें दी हैं. दोतीन गीत अच्छे हैं.

O विरोधी

निर्मातानिर्देशक : राजकुमार कोहली
संगीत : अनु मलिक
मुख्य कलाकार : धर्मेंद्र, सुनील दत्त, अरमान कोहली, हर्षा, अनिता राज, प्रेम चोपड़ा, अमजद खान, रूपा गांगुली, शक्ति कपूर, किरणकुमार और रजा मुराद.

'विरोधी' का निर्माण निर्मातानिर्देशक राजकुमार कोहली ने सिर्फ अपने बेटे अरमान कोहली को फिल्मों में प्रवेश दिलाने के लिए ही किया है. बिना सोचेसमझे कि उस के बेटे में प्रतिभा है भी या नहीं, उस ने अपने बेटे को इस पहली फिल्म में ही सुपरस्टार बनाने की कोशिश की है. चलो माना, बेटे के लिए हर निर्माता ऐसा ही करता है, लेकिन फिल्म में और कुछ भी तो होना चाहिए न. इस में तो फूहड़पन के अलावा कुछ है ही नहीं, बस हिंसा ही हिंसा है, इसलिए इसे देखने का कोई लाभ नहीं है.

फिल्म 'विरोधी' के एक दृश्य में अरमान कोहली और हर्षा : अधकचरा अभिनय.

फिल्म की कहानी काल्पनिक है, जिस का जिंदा पात्रों से कोई लेनादेना नहीं है, ऐसा फिल्म के शुरू में कहा गया है. शेखर (धर्मेंद्र) पुलिस इंस्पेक्टर है. राज (अरमान कोहली) उस का भाई है और पुलिस कमिश्नर (सुनील दत्त) की बेटी पिंकी (हर्षा) से प्रेम करता है. मुख्य मंत्री व अन्य तीन मंत्री अपने बेटों के साथ मिल कर राज के सामने ही शेखर की हत्या कर देते हैं. अंत में राज उन चारों मंत्रियों व उस के सैकड़ों गुंडों को मार कर पिंकी का हाथ थाम लेता है.

फिल्म उद्योग के जितने भी खलपात्र हैं, इस फिल्म में भरे पड़े हैं और नायक अरमान कोहली ने सभी को आसानी से मौत के घाट उतार दिया है– है न अस्वाभाविक बात. चलो यह मान भी लें लेकिन बाप निर्देशक को क्या कहें जिसे फिल्मों में निर्देशन देने का अच्छाखासा अनुभव है. उस ने फिल्म में सभी कुछ दिखाने के चक्कर में बंटाधार कर दिया. 'चुम्मा दे दे,' रोमांस, हत्याएं, बलात्कार आदि सब अग्रिम पंक्ति के दर्शकों के लिए ही है.

फिल्म का संपादन भी गड़बड़ा गया है, फिल्म में पार्श्व शोर इतना है कि सिर भारी हो जाता है. संवादों में भी दम नहीं है. छायांकन थामस.ए. जेवियर ने किया है, जिस में कोई नयापन नहीं है.

अभिनय की दृष्टि से न तो अरमान कोहली और न ही हर्षा जंची है. वैसे अरमान कोहली को दोतीन फिल्में और मिल गई हैं लेकिन लगता नहीं कि वह कुछ कर पाएगा. धर्मेंद्र और सुनील दत्त के अभिनय में ललकार नजर नहीं आई. लगता है, वे अब बूढ़े हो चले हैं. रूपा गांगुली अब सिर्फ बलात्कार दृश्यों के लिए ही रह गई है. सभी खलपात्र नाटकीय लगते हैं. फिल्म के गीत देव कोहली ने लिखे हैं. 'नैन कबूतर' को छोड़ कर कोई गीत चलने वाला नहीं है. ●

जोरू का गुलाम

पति जोरू का गुलाम
पत्नी स्वतंत्र
यही तो है
संसार सुख का मंत्र...
आने के बाद आफिस से
करना घर काम
दिनभर थकी पत्नी को
थोड़ा देना आराम
यही तो है
संसार सुख का मंत्र...

भरना रोज पानी
कहना हाय मेरी रानी
टीवी फ्रिज के लिए
लाना ब्लैक मनी
यही तो है
संसार सुख का मंत्र...
कभी ले जाना होटल
कभी लाना साड़ी
पैदल मत जाना
बैठने को होना गाड़ी
यही तो है
संसार सुख का मंत्र...
सिनेमा देखने जाना
टिकट निकालना बालकनी के
देखने देना उसे आराम से
बाहर बच्चे संभाल के
यही तो है.
संसार सुख का मंत्र...

-मीना खोंड

व्यक्तिगत विज्ञापन
वैवाहिक विज्ञापन
वर चाहिए

कुर्मी क्षत्रिय कन्या, 23 वर्षीया, गौरवर्ण, सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व, छरहरी, 167 सें.मी., एलएल.बी., हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पिता राज्य सरकार में उच्च पदेन अधिकारी. विज्ञापन केवल उत्तम चयन हेतु है. लिखें: वि.नं. 4221, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सारस्वत ब्राह्मण, 26, 160, 2,500/-, बी.काम., बैंक सेवारत, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु नियोजित गैरपंजाबी वर. शीघ्र विवाह. वि.नं. 4222, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 23, 155, बी.काम. आनर्स, हेतु इंजीनियर, डाक्टर, सरकारी अधिकारी, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 4223, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रांची निवासी, साहू, शौंडिक वैश्य, 22/157, स्नातक (विज्ञान), गेहुआं रंग, स्लिम, सुंदर, सुशील, मेधावी कन्यार्थ सुशिक्षित, आत्मनिर्भर वर चाहिए. जातिबंधन एवं दहेज नहीं. वि.नं. 4224, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 24 वर्षीया, एम.ए., सुंदर कन्या हेतु वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4225, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार, उ.प्र. निवासी, 24, 150, ग्रेजुएट, साफ रंग, घरेलू कार्यों में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए. वि.नं. 4226, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, रंग गेहुआं, 4'-8" कद, छोटा, एम.ए., गृहकार्य में दक्ष, सौम्य ब्राह्मण कन्या हेतु बारोजगार, सवर्ण वर चाहिए. प्रांतीयता कोई बंधन नहीं. स्थानीय को प्राथमिकता. वि.नं. 4227, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, बी.ए., 39, 157, नर्सरी स्कूल में कार्यरत हेतु सुयोग्य वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 4228, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन (ओसवाल), 25, 140 सें.मी., सुंदर, स्मार्ट, गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष, प्रतिष्ठित राजस्थानी, व्यावसायिक परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 4229, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन (ओसवाल), 29, 140 सें.मी., सुंदर, स्मार्ट, गृहकार्य में दक्ष, प्रतिष्ठित राजस्थानी व्यवसायी परिवार की कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 4230, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (ठाकुर), 28, 169, अध्ययनरत, पीएच.डी., अमरीकन ग्रीनकार्ड होल्डर, प्रतिष्ठित परिवार कन्यार्थ वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 4231, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 23, 165, एम.ए. (अंगरेजी), बी.एड., संगीत प्रभाकर, गौरवर्ण कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 4232, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25, 158, एम.ए., साफ रंग, गृहकार्यकुशल, सुंदर कन्या हेतु अधिकारी, इंजीनियर, सुस्थापित, व्यापारी वर चाहिए. पिता राजपत्रित अधिकारी. वि.नं. 4233, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मौर्य, कुशवाहा, 26, 143, मास्टर आफ फाइन आर्ट्स (चित्रकला), गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, अस्थायी प्रवक्ता, कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, अधिकारी वर चाहिए. पिता व भाई प्रथम श्रेणी अधिकारी. दहेज, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 4234, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 21½, 153, सुंदर, गोरी, बी.एससी., बी.एड. अध्ययनरत, गृहकार्यनिपुणार्थ दिल्ली या आसपास सजातीय वर चाहिए. पूर्ण विवरण प्रथम बार में. वि.नं. 4277, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, सौम्य, आकर्षक, डाक्टर युवती, 24, 157, हेतु सजातीय, सुंदर, डाक्टर वर चाहिए. वि.नं. 4278, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 5'-3", 2,200/-, एम.फिल. (अध्ययनरत), सरकारी नेत्रहीन अध्यापिका हेतु वर चाहिए. आंशिक विकलांगता स्वीकार्य. वि.नं. 4368, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, क्रिश्चियन, बिहारवासी, मैट्रिक, सुंदर, रंग साफ, घरेलू, संतान अनिच्छुक कन्यार्थ संतान अयोग्य, दहेज विरोधी कार्यरत वर. जातिबंधन नहीं. पहली बार सविवरण हिंदी में. वि.नं. 4369, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, 29 वर्षीया, 157 सें.मी., एम.ए., आकर्षक, सुशील, गृहकार्यदक्ष, म.प्र. निवासी, निस्संतान, विधवा, पति की दुर्घटना में मृत्यु, प्रतिष्ठित, संपन्न, संभ्रांत, पारिवारिक कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. जन्मकुंडली एवं पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4370, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कसेरा/ताम्रकार, 27½, 155 सें.मी., एम.ए. (अंगरेजी), मंगली कन्यार्थ उपयुक्त वर हेतु सविवरण लिखें: वि.नं. 4371, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल मित्तल, 19 वर्षीया, 160, बी.काम. दूसरा वर्ष अध्ययनरत, पिता उच्चस्तरीय व्यवसायी, गोरी, स्लिम, आकर्षक, कन्या हेतु उच्च व्यवसायी या उद्योगपति वर चाहिए. विवाह अति उत्तम. विज्ञापन चयन हेतु. वि.नं. 4372, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 30 वर्षीया, 158 सें.मी., सुंदर, बाईं गाल पर बचपन का मामूली निशान, विधवा, एक चार वर्षीय स्वस्थ, सुंदर पुत्र, हेतु कार्यरत/व्यवसायी वर.

निस्संतान, तलाकशुदा, विधुर स्वीकार्य. शीघ्र अच्छी शादी. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 4373, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रौनियार वैश्य, 20, 150, बी.ए. आनर्स अध्ययनरत, गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, पिता इंजीनियर, हेतु सेवारत/व्यवसायी वर. वि.नं. 4374, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 23, 156, एम.ए., बी.एड., रंग साफ, आकर्षक कन्या हेतु सजातीय, अग्रवाल वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. वि.नं. 4375, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बरनवाल (वैश्य), 20, 162, गौरवर्ण, सुंदर, स्लिम, स्मार्ट, सुसंस्कृत, गृहकार्यकुशल, मधुर स्वभाव, स्नातक, प्रतिष्ठित पारिवारिक कन्यार्थ सुंदर, अधिकारी वर. (विज्ञापन उत्तम चयनार्थ). वि.नं. 4376, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 23, 152, एम.काम., सुंदर, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, शासकीय सेवारत कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. पिता बंबई में गजेटेड अधिकारी. वि.नं. 4377, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 22½, 168 सें.मी., बी.ए., बी.एड., सुंदर, गोरी कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. वि.नं. 4378, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, मुदगिल गोत्रीय, 28/160, एम.ए., बी.एड., 2,500/-, राजकीय अध्यापिका, आकर्षक, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, स्वावलंबी, सरकारी सेवारत, निजी व्यवसाय, दहेज विरोधी वर. अति साधारण विवाह. वि.नं. 4379, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 23, 155 सें.मी., बी.काम., इकहरी, सुशील, आकर्षक, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ निर्व्यसनी, आत्मनिर्भर, 29 से कम उम्र वर. लिखें: वि.नं. 4380, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुरसिख (खत्री), पोस्ट ग्रेजुएट, 27, 160, आकर्षक, रंग साफ, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. पिता भारतीय खाद्य निगम में द्वितीय श्रेणी आफीसर. वि.नं. 4381, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 160, राजपूत, मांगलिक, एम.ए. अध्ययनरत, सुंदर, गोरी, स्लिम कन्या हेतु शिक्षित, सजातीय, सेवारत वर चाहिए. वि.नं. 4382, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार (अहिरवार), 25 वर्षीया, बी.ए., 152 सें.मी., गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. वि.नं. 4383, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सोनकर, ग्रेजुएट, 25, 160, 50, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित, सुंदरी हेतु सेवारत वर. वि.नं. 4384, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 34, 155 सें.मी., मैट्रिक तक, रंग गोरा, अविवाहित, आगरा निवासी हेतु विधुर, कानूनी तलाकशुदा भी स्वीकार. वि.नं. 4385, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 155, भारद्वाज, एम.ए. अंगरेजी, गौरवर्ण, सुंदर, संभ्रांत परिवारीय कन्यार्थ सजातीय, योग्य, पश्चिमी उत्तरप्रदेशीय वर चाहिए. वि.नं. 4386, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण, 27 वर्षीया, 5'-3", गोरी, गृहकार्य-निपुण, शाकाहारी, हिंदी भाषी कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, उच्च शासकीय अथवा व्यवसायी वर चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 4387, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इकलौती, सुंदर, अग्रवाल, विधवा कन्या, 25 वर्षीया, लंबी, गोरी, ग्यारहवीं पास, 3 वर्षीय पुत्र की मां हेतु जीवनसाथी. कोई बंधन नहीं. दहेज नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 4388, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गर्ग गोत्र, 23, 150, बी.काम., इंटीरियर डिजाइनिंग डिप्लोमा युक्त, सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, तलाकशुदा (कुंआरी), कलकत्तावासी, संपन्न परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य, अग्रवाल, माहेश्वरी वर चाहिए. वि.नं. 4389, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मालाकार, 23, 155 सें.मी., बी.ए. इकोनोमिक्स, बी.एड., गोरी, सुशील, सुसंस्कृत, गृहकार्य में दक्ष, मध्यम परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 4390, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (चौहान), 22/154, बी.ए. डिप्लोमा, फैब्रिक्स पेंटिंग, अति सुंदर, गोरी, प्राइवेट स्कूल शिक्षिका, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु दहेज विरोधी, सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 4391, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मेरठ के उद्योगपति, भारद्वाज परिवार की कन्या, सुंदर, साफ रंग, 24, 167, कानवेंट, एम.ए., गृहकार्य, कार चलाना आदि हेतु पढ़ालिखा, व्यवसायी, उद्योगपति, अच्छी सर्विस वाले वर पक्ष पत्रव्यवहार करें. वि.नं. 4392, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर वैश्य, मांगलिक, 23, 157, गोरापन, एम.ए. (गोल्ड मेडलिस्ट), आई.ए.एस. 1991, मुख्य परीक्षा के परिणाम की प्रतीक्षारत, हेतु आई.ए.एस. 'अ' श्रेणी राजकीय सेवारत वर चाहिए. अग्रवाल, अन्य वैश्य भी स्वीकार्य. जन्मकुंडली अति आवश्यक. दहेज लोभी कष्ट न करें. वि.नं. 4393, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 27/155, 2,500/-, एम.ए., बी.एड., एल.आई.सी., सेवारत कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. दिल्लीवासी, राजकीय सेवारत को वरीयता. वि.नं. 4394, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीया, सुंदर, प्रतिष्ठित परिवार, एम.बी.बी.एस. डाक्टर कन्या योग्य, सरकारी, उच्चाधिकारी या तत्सम अनुरूप जोड़ीदार चाहिए. निस्संतान विधुर,

तलाकशुदा भी विचारणीय. वि.नं. 4395, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 22, 150, एम.ए., गोल्ड मेडलिस्ट, सुंदर, गेहुआं, स्लिम, स्मार्ट, पिता प्रथम श्रेणी अधिकारी, कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 4396, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत कच्छवाह, 22½, 158, एम.ए., सुंदर कन्या हेतु सेना, इंटेलिजेंस, कस्टम पुलिस अधिकारी वरीयता. लिखें: वि.नं. 4397, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 150, एम.ए., बी.एड., (शोधार्थी), सुंदर, गृहकार्यदक्ष, निजी फ्लैट, पिता राजपत्रित अधिकारी, विकलांग पैरों (पोलियो) अकेली, कन्यार्थ सेवारत, अलीगढ़ ट्रांस्फरेबिल, ग्रेजुएट, 32 वर्ष तक ही लिखें: वि.नं. 4398, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेपाली (गुरूंग), 23 वर्षीया, 155, एम.काम., स्मार्ट. कन्यार्थ सुशिक्षित, उत्तम सेवारत, अच्छे परिवारीय वर चाहिए. वि.नं. 4399, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22½ वर्षीया, राजपूत, 5'-3", उत्तर प्रदेश निवासी, एम.ए., बी.एड., गेहुआं, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सौम्य कन्या हेतु सजातीय, द्वितीय श्रेणी, समकक्ष या उच्च पद पर कार्यरत वर चाहिए. शीघ्र अच्छा विवाह. वि.नं. 4400, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राठौर (तेली), मंगली, 24, 153, फेयर, आकर्षक, डिप्लोमा, इलेक्ट्रिक इंजीनियर (प्रथम श्रेणी), ए.एम.आई. अध्ययनरत, कानवेंट शिक्षित, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, व्यवसाय, सेवारत, स्मार्ट वर चाहिए. वि.नं. 4401, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, 29, 165, संतान रहित, तलाकशुदा, सौम्य स्वभाव, एम.ए., एम.एच.सी., सौंदर्य विशेषज्ञ, शिक्षण कार्यरत, निजी एम.आई.जी. मकान, मध्य प्रदेशवासी कन्यार्थ उपयुक्त प्रस्ताव आमंत्रित. शीघ्र एवं उत्तम विवाह. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 4402, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, अग्रवाल, आकर्षक, एम.ए., निस्संतान, तलाकशुदा हेतु उच्च पदस्थ, इंडस्ट्रीयलिस्ट वर. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 4403, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24½, 156, राजपूत, बी.काम., कानवेंट शिक्षित, सुसंस्कृत, सभ्य, गेहुई रंग, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष हेतु सुयोग्य वर चाहिए. दहेज लोलुप न लिखें. वि.नं. 4404, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबईवासी, खूबसूरत कन्या, 24, 152, कानवेंट शिक्षित, एम.काम., बी.एड., मांगलिक, लेक्चरर, उच्च नाई परिवारीय कन्या हेतु प्रोफेशनल वर चाहिए. जन्मपत्रिका सहित लिखें: वि.नं. 4405, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, एम.ए. पास कन्या, पिता उच्च पदाधिकारी लिमिटेड कंपनी में, वास्ते सजातीय, शिक्षित व ऊंची फैमिली का लड़का चाहिए. शीघ्र लिखें, अच्छा विवाह. वि.नं. 4406, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाऊंनी ब्राह्मण, 22/153, स्नातक, गेहुआं वर्ण, कंप्यूटर कंपनी में कार्यरत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. नौएडा स्थित, निजी फ्लैट, भाई नौसेना एवं बैंक अधिकारी. वि.नं. 4407, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, संभ्रांत, उच्च शिक्षित परिवारीय, 27,50,156,3,000=+, पी.जी. कंप्यूटर डिप्लोमा, पारंगत शार्टहैंड, टाईपिंग, स्मार्ट, आत्मविश्वासी, सांवली, सुपरवाइजर, प्रतिष्ठित कंपनी, कन्यार्थ इंजीनियर, एम.बी.ए., सी.ए., सी.एस., डाक्टर, अधिकारी, पब्लिक सेक्टर, बैंक, प्रतिष्ठित संस्थारत वर. वि.नं. 4408, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण ब्राह्मण, 23, 159, एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, म.प्र. निवासी, प्रतिष्ठित परिवार, कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, शासकीय सेवारत, अधिकारी, आत्मनिर्भर वर चाहिए. उपजातीय बंधन नहीं. संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 4409, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 152 सें.मी., बी.ए. आनर्स, गोरी, स्लिम, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, भूमिहार ब्राह्मण हेतु सजातीय, आधुनिक विचारों वाला कार्यरत वर चाहिए. वि.नं. 4410, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 151 सें.मी., हलका गेहुआं रंग, आकर्षक, सुशील, गृहकार्यदक्ष, साहू, मंगलिक, डा. एम.बी.बी.एस., कन्या वरिष्ठ अधिकारी की पुत्री, शीघ्र विवाह हेतु डाक्टर, इंजीनियर, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 4411, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 152, जाटव, बी.ए., आकर्षक, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर, सेवारत अधिकारी अथवा अन्य किसी अर्द्ध सरकारी संस्थान में कार्यरत वर चाहिए. प्रतिष्ठित परिवार, शीघ्र विवाह. वि.नं. 4412, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता निवासी महेश्वरी बी.ए. कानवेंट 20 वर्षीया 160 सें.मी. सुंदर गोरी, स्लिम, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु सी.ए. इंजीनियर उच्च व्यवसायी वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 4413, सरिता नई दिल्ली-110055.

बिहारी 29, बी.ए. 28 बी.ए. आकर्षक कन्याओं के लिए स्मार्ट यू.पी./बिहारी इंजीनियर, डाक्टर बिजनैसमैन आफीसर वर चाहिए. पिता संपन्न औटोमोबाइल बिजनैसमैन उत्तम विवाह वि.नं. 4414, सरिता नई दिल्ली-110055.

जायसवाल कलवार 24, 164, 2600/- केंद्रीय कर्मचारी कन्यार्थ सजातीय वर. वि.नं. 4415, सरिता,

नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

राजपूत (ठाकुर), 32, 178, कार्यरत इंजीनियर, अमरीकन ग्रीनकार्ड होल्डर, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 4321, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (लोहार), 28, 160, 3,000/-, बी.एससी., बी.ए.एम.एस., चिकित्सक हेतु गौरवर्ण, सुंदर कन्या चाहिए. पिता केंद्रीय सरकारी प्रतिष्ठान में कार्यरत. दहेज, जातिबंधन नहीं. बी.एससी. (बायलोजी) या बी.ए.एम.एस. को प्राथमिकता. संपूर्ण विवरण सहित. वि.नं. 4322, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 184, गोत्र उपमन्यु कान्यकुब्ज ब्राह्मण, प्रतिष्ठित, शिक्षित परिवार, सरकारी सेवारत, एकाउंटेंट, आय 2,200/- मासिक, हेतु शिक्षित वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 4323, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 186, मारवाड़ी अग्रवाल (गोयल), बी.काम., एम.बी.ए., प्रतिष्ठित, संपन्न शिक्षित, आधुनिक विचारधारा व समस्त आधुनिक साधन संपन्न, दहेज विरोधी परिवार, निजी व्यवसाय, वर हेतु शिक्षित, मृदुभाषी वधू चाहिए. कृपया पूर्ण विवरण भेजें. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. वि.नं. 4324, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोली (हिंदू बुनकर) अनुसूचित जाति, 28, 162, ग्रेजुएट, निजी सेवारत, वेतन, 4,500/-, दिल्लीवासी, स्वस्थ युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यनिपुण वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. सजातीय को प्राथमिकता. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4325, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोयंबटूरवासी ओसवाल जैन, मांगलीक, 29, 180, आकर्षक, निजी व्यवसाय, आय पांच अंकों में, युवक हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4326, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 171, मध्यमवर्गीय, उपन्यासकार, (चेहरे, शरीर के 50% पर सफेद दाग) बिहारवासी हेतु सुशिक्षित, प्रगतिशील, लेखन सहयोगिनी वधू, तलाकशुदा (बच्चे नहीं), छुपने योग्य दाग की भी स्वीकार्य. उच्चवर्गीय परिवार का घरजंवाई बनना भी स्वीकार्य. जाति, धर्मबंधन नहीं. संपूर्ण विवरण भेजें. वि.नं. 4327, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 165, गर्ग बीसा अग्रवाल, एम.ए., निजी, होलसेल व्यवसाय, उत्तम आय, हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष, शिक्षित, पारिवारिक, सजातीय वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4328, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मित्तल, 27, 176 सें.मी., निजी व्यवसाय, गेहुआं, हायर सेकैंड्री, संयुक्त परिवार, हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सुशील वधू चाहिए. वि.नं. 4329, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 5'-4", 3,000/-, आठवीं, टेलर की निजी दुकान, युवक हेतु कन्या चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 4330, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रौनियार वैश्य, 27, 168, 4,000/-, बिहारवासी, सरकारी सेवारत, प्रतिष्ठित, संपन्न, बी.काम., एलएल.बी., शाकाहारी हेतु सुंदर, सुशील, गौरवर्ण महत्वाकांक्षिणी, लंबी, मेधावी, स्नातक, संस्कारी, स्वजातीय वधू. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ, संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 4331, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गहोई वैश्य (गुप्ता), 26 एवं 24 वर्षीय, आकर्षक एवं गौरवर्ण, मैकेनिकल एवं इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियर्स (सरकारी सेवारत, प्रथम श्रेणी), प्रतिष्ठित परिवार से संबद्ध, पिता उ.प्र. में जिला जज, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, प्रतिभाशाली, सरल स्वभाव की कन्या चाहिए. शासकीय सेवारत प्रथम अथवा द्वितीय श्रेणी को प्राथमिकता. कृपया संपूर्ण बायोडाटा भेजें. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 4332, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाट, 23, 170, 1,750/-, केंद्रीय अर्द्धसुरक्षा बल में सेवारत को सजातीय जीवनसाथी चाहिए. कोर्ट मैरिज मान्य. वि.नं. 4333, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, अविवाहित, 29, 158, 4,000/-, बी.ई., सिविल इंजीनियर, सरकारी सेवारत, दिल्ली, हेतु खूबसूरत सेवारत वधू, दहेज नहीं. साधारण विवाह. वि.नं. 4334, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुशिक्षित, सामाजिक कार्यकर्ता, 46, विधुर, निजी छोटी संस्था, हेतु जीवनसाथी, जीवधारियों, शांति एवं विकास की इच्छुक, धर्म, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 4335, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खंडेलवाल, दृष्टिहीन, सरकारी सेवारत, 37, 170, 3,500/-, शहर में निजी मकान, हेतु शिक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. निस्संतान तलाकशुदा भी स्वीकार्य. वि.नं. 4336, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45, तलाकशुदा, लंबा, शिक्षित, ग्रीनकार्डधारी, आर्थिक संपन्न, निजी व्यवसाय, धूम्रपान एवं मद्यपान रहित हेतु आकर्षक कन्या/महिला से वैवाहिक संबंध आमंत्रित, फोटो सहित लिखें: 19019 PACIFIC HIGH WAY S. BOX 114, SEATTLE, WA 98188. U.S.A.

महत्त्वपूर्ण शानदार जीवनशैली यू.एस.ए., अमरीकन नागरिक, प्रसन्नतादायक, सुहावना नवयुवक (क्लीन), पंजाबी, धनाढ्य, इंजीनियर इच्छुक हेतु गरीब, साधारण, सुंदर, लगभग 18-23, स्वयं लिखित हवाईपत्र, नयननक्श, रंगीन तसवीर प्रथम बार. MR. Sindhu, 1201, Sunnydale. San Francisco CA 94134 USA.

यादव, 22, निजी व्यवसाय, मासिक आय

6,000/-, हेतु उच्च परिवार की कन्या चाहिए. वि.नं. 4342, सरिता, नई दिल्ली–110055.

माहेश्वरी, 30, 168, 10,000/-, निजी व्यवसाय, रायपुरवासी युवक हेतु सुंदर, माहेश्वरी कन्या चाहिए. वि.नं. 4416, सरिता, नई दिल्ली–110055.

जैन (श्वेतांबर), 27½ वर्षीय, 171 सें.मी., राजस्थानवासी, निजी व्यवसाय, आकर्षक व्यक्तित्व, आय 5,000/- रु. प्रतिमाह, युवक के लिए सुंदर, सुशील एवं शिक्षित, सजाति, दहेजबंधन नहीं, वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4417, सरिता, नई दिल्ली–110055.

हिंदू, 32, 160, अविवाहित, इंटरमीडिएट, स्वस्थ, सुंदर, निजी व्यवसायी के प्रबंध निर्देशक, मासिक आय पांच अंकीय, स्वयं निर्णायक हेतु सुयोग्य, गोरी, सुंदर गृहकार्यदक्ष, गरीब या मध्यमवर्गीय परिवार से जीवनसाथी चाहिए. अधिक से अधिक उम्र 26, लंबाई 160, शिक्षा स्नातक, दहेज/जातिबंधन नहीं. पूर्ण विवरण प्रथम बार में लिखें: वि.नं. 4418, सरिता, नई दिल्ली–110055.

स्वर्णकार, 25, 170 सें.मी., सुंदर, स्मार्ट, शिक्षित व्यवसायी युवक के लिए सुयोग्य कन्या चाहिए. संपूर्ण विवरण के साथ लिखें: वि.नं. 4419, सरिता, नई दिल्ली–110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, 31, 168, एम.काम., एलएल.बी., व्यवसायी मार्बल उद्योग, म.प्र. निवासी, मासिक आय पांच अंकीय, हेतु गौरवर्ण, सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4420, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 167, 2,300/-, दृष्टिबाधित, राष्ट्रीयकृत बैंक में स्टेनो/टाईपिस्ट हेतु योग्य वधू चाहिए. वि.नं. 4421, सरिता, नई दिल्ली–110055.

दर्ज, 26, 5,000/-, ग्रेजुएट, व्यापार, स्मार्ट, निजी संपत्ति, सुंदर, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. वि.नं. 4422, सरिता, नई दिल्ली–110055.

पोरवाल (जैन श्वेतांबर) 27½, वर्षीय, 171 सें.मी., निजी व्यवसाय, आकर्षक व्यक्तित्व, आय 5,000/- प्रतिमाह, युवक के लिए सुंदर, सुशील एवं शिक्षित, सजाति, दहेजबंधन नहीं, वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4423, सरिता, नई दिल्ली–110055.

30, 5'-2" 2,600/-, एम.ए., सरकारी कार्यरत, संपन्न परिवारीय, दृष्टिहीन युवक हेतु शिक्षित कन्या चाहिए. विधवा, तलाकशुदा, आंशिक विकलांगता स्वीकार्य. बच्चा नहीं. वि.नं. 4424, सरिता, नई दिल्ली–110055.

सैनी माली, 40 वर्षीय, अलवर निवासी, सर्विस, एम.ई.एस. (फिटर), 3,000/-, संपन्न परिवार, वधू चाहिए. खुद का मकान, बंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4425, सरिता, नई दिल्ली–110055.

27, 160, गौरवर्ण, अच्छा व्यक्तित्व, ग्रेजुएट, महाराष्ट्रीयन, हैदराबाद निवासी, व्यवसायी, 5,000/- मासिक, शाकाहारी हेतु गौरवर्ण, स्लिम, सुंदर, सुशील वधू. जाति, दहेजबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. वि.नं. 4426, सरिता, नई दिल्ली–110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 24 वर्षीय, 165, स्मार्ट, स्वयं का अच्छा व्यवसाय, कार, कोठी युक्त, युवक हेतु केवल अति सुंदर, मृदुभाषी, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए. मारवाड़ी को प्राथमिकता. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु लिखें: वि.नं. 4427, सरिता, नई दिल्ली–110055.

साहू (वैश्य) युवक, 24, 159, बी.एससी., डिप्लोमा इन कंप्यूटर साइंस (यू.के.), आनर्स प्रोग्राम इन सिस्टम्स मैनेजमेंट (एन.आई.आई.टी.), प्रतिभाशाली, कंप्यूटर के निजी व्यवसाय में स्थित, साधन संपन्न, प्रतिष्ठित परिवार, गांव में फार्म हाउस, पिता प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, बहन अमरीका स्थित, इकलौते युवक हेतु उच्च शिक्षित, सुंदर, वधू चाहिए. विदेश स्थित कन्या को वरीयता. वि.नं. 4428, सरिता, नई दिल्ली–110055.

गौड़ ब्राह्मण, कालिज प्राध्यापक, 35, 163, 6,000/- प्रतिमाह, तलाकशुदा के लिए उपयुक्त जीवनसाथी चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. लड़की के गुणों ही को वरीयता. साधारण/रजि. विवाह को प्राथमिकता. कृपया लिखें: वि.नं. 4429, सरिता, नई दिल्ली–110055.

यादव, 27, 178, व्याख्याता, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, स्मार्ट वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. सविवरण लिखें: वि.नं. 4430, सरिता, नई दिल्ली–110055.

35 वर्षीय, 167 सें.मी., गेहुआं, 3,000/-, प्रतिमाह, शासकीय सेवारत, दो बच्चे हेतु जीवसंगिनी चाहिए. विधवा, परित्यक्ता स्वीकार. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 4431, सरिता, नई दिल्ली–110055.

169 सें.मी., 25 वर्षीय, स्मार्ट, आकर्षक, परमानेंट वे इंसपेक्टर हेतु अति सुंदर, गौरवर्ण, स्मार्ट, शिक्षित, अग्रवाल परिवारीय कन्या चाहिए. वि.नं. 4432, सरिता, नई दिल्ली–110055.

कान्यकुब्ज, 26 वर्षीय, 176 सें.मी., आई.ई.एस., टेली कम्युनिकेशन में डिवीजनल इंजीनियर, म.प्र. निवासी युवक हेतु प्रतिष्ठित परिवारीय, इंजीनियरिंग पास, सुंदर ब्राह्मण वधू चाहिए. वि.नं. 4433, सरिता, नई दिल्ली–110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 30, 180, एम.एससी., एम.ए. (डबल), विधि एवं शोधकार्य अध्ययनरत, स्वयं का फार्म व्यवसाय, हेतु सजातीय, शिक्षित, सुंदर, आकर्षक, गौरवर्ण वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 4434, सरिता, नई दिल्ली–110055.

अग्रवाल, 27, 170, 4,000/-, बी.एससी., आई.सी.डब्ल्यू.ए., एकाउंट आफीसर, भारत सरकार

उपक्रम, स्मार्ट, आकर्षक युवकार्थ, सुशिक्षित, स्लिम, गोरी, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, भारतीय संस्कारों की घरेलू वधू चाहिए. कन्या को वरीयता. सविवरण लिखें: वि.नं. 4445, सरिता, नई दिल्ली–110055.

यादव, 28, 157, गेहुआं. बी.एससी., संगीत प्रभाकर, दूरदर्शन आकाशवाणी कलाकार, निजी सुप्रतिष्ठित व्यवसाय, आय 5 अंकों में, सुशील, आकर्षक, निर्व्यसनी, युवक हेतु सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चुनाव हेतु लिखें: वि.नं. 4436, सरिता, नई दिल्ली–110055.

25 वर्षीय, अति संपन्न, प्रतिष्ठित माहेश्वरी, दिल्ली निवासी, कपड़ा व्यवसायी के लिए गृहकार्य में दक्ष, सेवाभावी, सुशील, वैश्य जाति की वधू चाहिए. (दहेज नहीं.) लड़के को कैलसियम की कमी से मिरगी के दौरे आते हैं. लड़का करोड़ों की संपत्ति का मालिक है. गुजरात में बड़ा व्यापार है, निजी बंगला, कार है. विवाह में कन्या पक्ष का कुछ भी खर्चा नहीं होगा. लिखें: वि.नं. 4437, सरिता, नई दिल्ली–110055.

माहेश्वरी, 26 वर्षीय, 170 सें.मी., एम.काम., प्रतिष्ठित, संपन्न परिवारीय, स्वयं का व्यापार, युवक हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी वधू चाहिए. विज्ञापन केवल उत्तम चयन हेतु, केवल माहेश्वरी परिवार ही संपर्क करें. वि.नं. 4438, सरिता, नई दिल्ली–110055.

सरयूपारीण, 30 वर्षीय, 5′-7″, चार्टर्ड एकाउंटेंट, व्यवसायरत, सुंदर युवक हेतु सजातीय, आकर्षक, सुंदर, सुशील एवं शिक्षित कन्या चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 4439, सरिता, नई दिल्ली–110055.

28, 160, 2,100/-, सुंदर, सुशील, प्रतिष्ठित कंपनी में कार्यरत, नाई, स्नातक, युवक हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित, कार्यरत वधू चाहिए. पिता विश्वविद्यालय में अधिकारी. वि.नं. 4440, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 29, 165, स्मार्ट, गौरवर्ण, इंजीनियर, सेवारत राष्ट्रीय प्रतिष्ठान, हेतु स्मार्ट, सुंदर, सुशिक्षित, कार्यरत वधू चाहिए. परिवार के सदस्य इंजीनियर, डाक्टर तथा अन्य अधिकारी. वि.नं. 4441, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 26, 171, 3,500/-, स्मार्ट, ग्रेजुएट, सहायक अधिकारी, पिता वरिष्ठ अधिकारी, हेतु वधू चाहिए. वि.नं. 4442, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गर्ग गोत्र, 30, 165, आकर्षक, प्रतिष्ठित थोक व्यवसायी, विधुर (एक चार वर्षीया कन्या) हेतु खूबसूरत, गोरी, नम्र स्वभाव की सजातीय कन्या की तलाश. वि.नं. 4443, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, वशिष्ठ गोत्रीय, डाक्टर, 29, 178, 4,000/-, एम.डी., मेडिकल रिसर्च आफीसर हेतु सुंदर, एम.बी.बी.एस. वधू चाहिए. उपजातीय बंधन नहीं. विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4444, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 165, 2,300/-, यादव युवक, बी.एससी., मेरठ निवासी, तृतीय श्रेणी, केंद्रीय सेवारत हेतु सजातीय, मध्यम परिवार की, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4445, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अरोड़ा पंजाबी, कटनी म.प्र., 27, 175, बी.काम., एलएल.बी., केंद्र कर्मचारी, 4,000/-, गोरा, स्मार्ट, वि.नं. 4446, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्म क्षत्रिय, 28, 162, 3,500/-, साइट इंजीनियर, प्रा.लि., हेतु सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 4447, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गंडास जाट, 30, 178, बैंक कार्यरत (नजदीक दिल्ली), विधुर (लड़की 5-8 वर्ष) हेतु सजातीय, शिक्षित कन्या चाहिए. वि.नं. 4448, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंघल 26, 5′-6″, हरियाणावासी, व्यवसायी, संपन्न वर हेतु सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू. वि.नं. 4449, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, कुंआरा, स्नातक, शाकाहारी, सच्चरित्र, सुंदर, दायित्वमुक्त हेतु जीवनसंगिनी चाहिए. व्यापारी परिवार ही लिखें. जाति, आयु, विधवा, तलाकशुदा कोई बंधन नहीं. पारिवारिक, निजी व्यवसायरत, युवती निस्संकोच स्वयं भी पत्रव्यवहार कर सकती है. शीघ्र विवाह, लड़की की इच्छानुसार लड़का कहीं भी स्थायी रूप से रह सकता है. सुखी जीवन का आश्वासन. वि.नं. 4450, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, कुंआरे नवयुवक के लिए मंगली वधू चाहिए. शीघ्र सादा विवाह, कोई बंधन नहीं. वि.नं. 4451, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, अमरीका निवासी, ग्रीनकार्ड के लिए प्रयासरत, कंप्यूटर लेक्चरर, 35, 170, पुत्र हेतु सुशील, सुंदर, गोरी, स्लिम वधू चाहिए. अमरीका जा सकने वाली को प्राथमिकता. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु, प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4452, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 2,500/-, दृष्टिहीन, स्वस्थ नवयुवक, इंडियन एयरलाइंस में कार्यरत, हेतु जातिबंधन रहित वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 4453, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अरोड़ा, 27, 5′-6″, हायर सेकेंडरी, रंग साफ, व्यवसायरत युवक हेतु सुंदर, पंजाबी वधू चाहिए. वि.नं. 4454, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, कंवर, निजी मकान, 30, 170, 3,500/-, बैंक सेवारत, 29, 175, विकास अधिकारी, जीवन बीमा हेतु माहेश्वरी/अग्रवाल, सुंदर, गौरवर्ण, कार्यरत, गृहकार्यदक्ष वधुएं चाहिए. वि.नं. 4455, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 26, ग्रेजुएट, व्यवसायरत, संपन्न,

प्रतिष्ठित परिवार, युवक हेतु सुंदर, सुशील वधू चाहिए. प्रथम बार सविवरण लिखें: वि.नं. 4456, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (कहार), 24, 165 सें.मी., आर्मी कैप्टन हेतु सुंदर, स्लिम, संभ्रांत, सुशिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4457, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबई निवासी, आयु 29, कद 152, वेतन 4,000/-, शिक्षा मैट्रिक, गरीब परिवार, दुबई में कार्यरत, हेतु कुंआरी, विधवा, तलाकशुदा, बेसहारा, अनाथ भी लिखें. जातपांत का उल्लेख नहीं. अपना फोटो सहित पत्र लिखें: RAJNI KANT. P. BOX-1366, AL-AIN. ABU-DHABI. U.A.E.

ब्राह्मण, 31, 164, म.प्र. निवासी, मेडिको, नेत्र विशेषज्ञ, शासकीय सेवारत हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. मेडिको को प्राथमिकता. वि.नं. 4458, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल मंगली 27, 165, 3,500/-, केंद्रीय कर्मचारी हेतु सजातीय वधू, वि.नं. 4459, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22½, 180, 5,200/-, खूबसूरत, उदार, विचारवान, दिल्ली निवासी, चार्टर्ड एकाउंटेंट हेतु बुद्धिमान, सुंदर, लंबी, प्रगतिशील कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 4460, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, सुखवाल ब्राह्मण, स्मार्ट, बी.काम., कंपनी सेक्रेटरी फाइनल हेतु स्मार्ट, प्रोफेशनल, डिग्रीधारी (अध्ययनरत), सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 4461, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन अध्यापक, 30, 165 सें.मी., 3,000/-, हेतु वधू चाहिए. दहेज नहीं. वि.नं. 4462, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, उत्तरप्रदेशीय, 25, 165, स्नातक, निजी व्यवसाय (जमशेदपुर), गौरवर्ण, आकर्षक हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित, सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 4463, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, 27, 166, 3,400/-, एम.ए., राजकीय अध्यापक हेतु सुशील वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. आंशिक विकलांगता स्वीकार्य. वि.नं. 4464, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बैस राजपूत, 27, 170, मांगलिक, विकास अधिकारी एवं 24, 168, इंजीनियर, सरकारी सेवारत युवकों हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्याएं चाहिए. वि.नं. 4465, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, 162 सें.मी., 3,500/-, मासिक, एम.ए., सुंदर, अविवाहित (सम्माननीय परिवार) युवक हेतु सुदर्शन, शारीरिक संबंध, अनिच्छुक जीवनसंगिनी. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 4466, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तंबोली समाज, डबल ग्रेजुएट, बैंक सेवारत संपन्न परिवार युवक हेतु शिक्षित, सुसंस्कृत, मृदु, आत्मविश्वासी, स्वाभिमानी, मानवसेवा प्रेरित, परिवार की चुनौतियों का साहस समझदारी से हल खोजने, परिवार के भाईबहनों को ममतानुसार बांटने वाली, सजातीय, आयु लगभग 25 वर्षीया, कन्या. शीघ्र विवाह. वि.नं. 4467, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ग्वालियर (म.प्र.) निवासी, 30, 5'-6", 61, 3,500/-, सिविल इंजीनियर के लिए अति सुंदर, सेवारत वधू चाहिए. विधवा और तलाकशुदा भी विचारणीय है, कोई बंधन नहीं. वि.नं. 4468, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण ब्राह्मण, 27, 178, एलएल.बी., व्यवसायरत, म.प्र. निवासी, प्रतिष्ठित परिवार, स्थाई संपत्ति, इकलौते पुत्र हेतु शिक्षित, सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 4469, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू सिख वीर राजपूत मेकै./प्रोड. इंजीनियर, एक एच.एन.सी. डिप्लोमाधारी इंजीनियरिंग में, उम्र 21, कद 5'-10½", अति स्मार्ट, रूप हेतु खूबसूरत कन्या, तर्कसंगत शिक्षा, सम्मानीय परिवारीय पृष्ठभूमि एवं इंगलैंड (यू.के.) में स्थापित होने की इच्छुक. जातिबंधन नहीं. प्रविष्टियां कृपया अपना विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4470, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, नागपुर निवासी, दादू परिवार, 27, 172, 5,000/-, बी.टेक. (सिविल), प्रतिष्ठित प्राइवेट संस्था में कार्यरत पुत्र हेतु खूबसूरत, ग्रेजुएट, घरेलू कन्याओं के मातापिता से वैवाहिक पत्राचार आमंत्रित. केवल कन्या विचारणीय. लिखें: वि.नं. 4471, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, तलाकशुदा, पंजाबी अरोड़ा, दिखने में 30 वर्षीय, 158 सें.मी., युवक, 2 बच्चे लड़का (14) लड़की (9), उच्च व्यवसाय, निजी कोठी, कार, आय पांच अंकीय, हेतु सजातीय वधू. बिना बच्चों की तलाकशुदा, विधवा, बांझ स्वीकार्य. शीघ्र साधारण विवाह मंदिर में. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 4472, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाऊंनी, 27 वर्षीय, पराशर गोत्रीय, पन्त युवक, एम.एससी., साइन्टिफिक आफीसर हेतु कुलीन सुन्दर मृदुभाषी सुशिक्षित कार्यरत गृहकार्यदक्ष, व्यवहारकुशल वधू चाहिए. जन्मपत्री के साथ लिखें: वि.नं. 4473, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 25½ वर्षीय, 163 सें.मी., 4,500/-, बी.ई. इलैक्ट्रानिक एम.बी.ए., राज्य सरकार सेवारत युवक हेतु योग्य जीवनसाथी चाहिए. वि.नं. 4474, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न, अमरीका बसे मातापिता, 33, 178 सें.मी., 28, 180 सें.मी., हैंडसम, कंप्यूटर प्रोफेशनल, हिंदीभाषी, पुत्रों सहित शीघ्र विवाह हेतु आ रहे हैं. कोई बंधन नहीं. देहली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश,

राजस्थान में बसे परिवारों को प्राथमिकता. जन्मतिथि, ताजा फोटो सविवरण आवश्यक. कन्या स्वयं लिख सकती है. BOX 16081, ATLANTA. GA 30321 U.S.A.

35, 180, जर्मनी स्थाई निवासी, हिंदू युवक हेतु लंबी, पतली, सुंदर कन्या चाहिए. परिवार दिल्ली में, जातिबंधन/दहेज नहीं. REST. EVEREST, PETER STR—13, 5000 KOLN-I GERMANY.

वरवधू चाहिए

सरयूपारीण ब्राह्मण, उ.प्र. प्रतिष्ठित परिवार, 22, 163, गोरी, स्लिम, स्नातक, गृहकार्यदक्ष कन्या एवं 29, 175, 7,000/-, आकर्षक, पब्लिक सेक्टर, प्रथम श्रेणी इंजीनियर हेतु सुयोग्य वरवधू. वि.नं. 4350, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई ब्राह्मण, 30 वर्षीय, 165 सें.मी., हायर सेकेंड्री, 1,500/- मासिक आय, गौरवर्ण युवक हेतु वधू, 28, 26, 24 वर्षीया, एम.ए. युवतियों हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 4475, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौऋषि, 26, एम.काम., 2,000/-, बैंक सेवारत, गृहकार्यदक्ष, गेहुआं रंग कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर या उच्च व्यवसायी वर चाहिए, एवं 28, बी.ई., 4,000/-, हेतु शिक्षित, सुयोग्य, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. जातिबंधन आवश्यक नहीं. वि.नं. 4476, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल अग्रवाल, म.प्र. वासी, संपन्न परिवारीय, 24 वर्षीया, 5′-3″ बी.ई. इलेक्ट्रीकल, एम.बी.ए. प्रथम श्रेणी, सुंदर, आकर्षक, सुशील कन्यार्थ समकक्ष, सुशिक्षित, संपन्न, कुलीन वर एवं 23 वर्षीय, 5′-8″, बी.काम., डी.बी.एम. प्रथम श्रेणी पास, इंगलिस मीडियम, स्मार्ट, चतुर, निजी बड़ा व्यवसायी, युवकार्थ सुंदर, सुशिक्षित, शाकाहारी, कुलीन परिवारीय, सुयोग्य वधू चाहिए. वि.नं. 4477, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत तोमर, 30, 158, मध्य प्रदेश शासकीय सेवारत, महिला, शल्य चिकित्सक कन्या हेतु डाक्टर वर एवं 28, 170, भारतीय सेना में स्थायी कमीशन, बी.ई. इंजीनियर हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 4478, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विज्ञापनदाताओं के लिए सूचना

1. सरिता में वैवाहिक व गोद विज्ञापनों की दर 5.00 रु. प्रति शब्द है. अंगरेजी पाक्षिक वूमंस ईरा में 3.50 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 2.00 रु. अतिरिक्त यानी 7.00 रु. प्रति शब्द होगा.

गोद विज्ञापन

हिंदू व्यवसायी परिवारीय हेतु दो साल या आसपास की आयु का लड़का गोद चाहिए. वि.नं. 4479, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

आवश्यकता युवा दंपती को पर्यटन हेतु महिला/पुरुष साथी व गाइड चाहिए. लिखें: वि.नं. 4354, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आवश्यकता हरिद्वार स्थित परिवार को एक सुशिक्षित, स्वस्थ महिला ट्यूटर की, परिवारीय सहभागिता, उचित सम्मान, समुचित पारिश्रमिक. लिखें: वि.नं. 4355, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय, विधुर, राज कर्मचारी हेतु महिला चाहिए. जाति, धर्म प्रतिबंधहीन, पारिवारिक सदस्य समान सुविधा. लिखें: वि.नं. 4480, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बंबई निवासी, सरकारी इंजीनियर, एकाकी व्यक्ति (36 वर्षीय) के गृहकार्य हेतु स्मार्ट एवं मृदुस्वभावी महिला, सहायिका (20-30 वर्षीया) चाहिए. उचित वेतन, परिवार सदस्या सा व्यवहार तथा सुविधाएं. विवरण सहित लिखें: पोस्ट आफिस बाक्स 117237, बंबई-400071.

आर्थिक व कानूनी लेखक/संवाददाता

हिंदी में आर्थिक व कानूनी विषयों पर अधिकारपूर्वक लिखने का अनुभव रखने वाले लेखकों/संवाददाताओं की आवश्यकता है. दिल्ली से बाहर रहने वाले अंशकालीन कार्य के लिए संपर्क पर सकते हैं.

नमूने की रचना के साथ लिखें:
सरिता
झंडेवाला ऐस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

व्यवसाय

जापानी तकनीक सम्मोहनीय (सचित्र) विजिटिंग कार्ड सौ पीस बनवाएं डेढ़ सौ रु. कंप्यूट्रानिक्स प्रिंटर्स, मेनका स्टूडियो इंटरनेशनल, मनियर, बलिया-277207.

अमरीकन ज्ञान पर अपना नाम, पता 1,000 उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं. जिन के बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 60/-, वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग) कुलदीप सिंह, 32, दी माल, अमृतसर-143017.

Scanned with CamScanner